जॉयस मेयर

बीस लाख से अधिक प्रतियाँ विक्रय की गई पुस्तकों की लेखिका

मन की युद्धभूमि

मन में लड़ाई को जीतना

मन की युद्धभूमि

मन की युद्धभूमि

मन में लड़ाई का जीतना

जॉयस मेयर

JOYCE MEYER MINISTRIES®

Nanakramguda, Hyderabad 500 008

If you purchase this book without a cover you should be aware that this book may have been stolen property and reported as "unsold and destroyed" to the publisher. In such case neither the author nor the publisher has received any payment for this "stripped book."

Unless otherwise indicated, all Scripture quotations are taken from *The Amplified Bible* (AMP). *The Amplified Bible, Old Testament,* copyright ©1965, 1987 by the Zondervan Corporation. *The Amplified New Testament,* copyright © 1954, 1958, 1987 by The Lockman Foundation. Used by permission.

Scripture quotations marked NKJV are taken from *The New King James Version* of the Bible. Copyright © 1979, 1980, 1982 by Thomas Nelson, Inc., Publishers. Used by permission.

Scripture quotations marked NKJV are taken from the *King James Version* of the Bible.

Copyright © 2012 by Joyce Meyer Ministries - Asia

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed, or transmitted in any form or by any means, or stored in a database or retrieval system, without the prior written permission of Joyce Meyer Ministries - Asia.

Joyce Meyer Ministries - Asia
Nanakramguda, Hyderabad - 500 008
Phone: +91-40-2300 6777
Website: www.jmmindia.org

Battlefield of the Mind - *Hindi*
Winning the Battle in Your Mind

Printed at:
Caxton Offset Pvt. Ltd.
Hyderabad-500 004

समर्पण

मन की युद्धभूमि को मैं अपने बड़े बेटे डेविड को समर्पित करना चाहती हूँ।

मैं यह जानती हूँ कि मेरी तरह तुम भी अपने मन में संघर्षों से जूझते रहते हो। मैं तुम्हें इस क्षेत्र में प्रतिदिन बढ़ता हुआ भी देखती हूँ और मैं यह जानती हूँ कि तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम विजय का अनुभव भी कर रहे हो।

मैं तुम से प्रेम करती हूँ डेविड मुझे तुम पर गर्व है। इसी प्रकार लगे रहो!

विषय सूची

भाग I *मन का महत्व*

प्रस्तावना 11

1 मन एक युद्धभूमि है 15

2 एक महत्वपूर्ण आवश्यकता 27

3 हियाव न छोड़ें! 33

4 धीरे धीरे कर के 39

5 सकारात्मक बनें 45

6 मन को जकड़नेवाली आत्माएँ 57

7 जो आप सोच रहे हैं उसके विषय में सोचें 63

भाग II *मन की स्थितियाँ*

प्रस्तावना 73

8 मेरा मन सामान्य कब होता है? 77

9 एक विचलित और भटकनेवाला मन 85

10 एक अव्यवस्थित मन 93

11 एक संदेहपूर्ण और अविश्वासी मन 103

12 एक चिन्तित और उत्कण्ठित मन 117

13 एक दोष लगाने वाला, समालोचक और संदेहपूर्ण मन 131

14 एक निष्क्रिय मन 147

15 मसीह का मन 159

भाग III *जंगल की मानसिकताएँ*

प्रस्तावना 183

16 जंगल की मानसिकता # 1: "मेरा भविष्य मेरे भूत और मेरे वर्तमान से निर्धारित होता है।" 189

17 जंगल की मानसिकता # 2: "मेरे बदले कोई और करे मैं उत्तरदायित्व नहीं लेना चाहता।" 197

18 जंगल की मानसिकता # 3: "कृपया कर हर चीज़ सरल बना दें; कठिन चीज़ें मुझसे नहीं हो सकती।" 209

19 जंगल की मानसिकता # 4: "मेरा बस में नहीं; मैं कुड़कुड़ाने का, दोष लगाने का और असंतोष प्रगट करने का आदि हो गया हूँ।" 217

20 जंगल की मानसिकता # 5: "मुझे किसी भी चीज़ के लिए प्रतीक्षा न कराएँ, मैं हर एक चीज़ तुरन्त पाने के योग्य हूँ।" 227

21 जंगल की मानसिकता # 6: "मेरा व्यवहार हो सकता है कि गलत हो, परन्तु इस में मेरा दोष नहीं।" 237

22 जंगल की मानसिकता # 7: "मेरा जीवन बहुत दुःखी है; मुझे स्वंय पर दया आती है क्योंकि मेरा जीवन नष्ट भ्रष्ट है!" 249

23 जंगल की मानसिकता # 8: "मैं परमेश्वर की आशीषों के पात्र नहीं, क्योंकि मैं लायक नहीं हूँ।" 257

24 जंगल की मानसिकता # 9: "जब हर एक व्यक्ति मुझसे बेहतर दशा में है तो मै क्यों न जलन और ईर्ष्या रखूँ?" 267

25 जंगल की मानसिकता # 10: "मैं इसे अपने ढंग से करूँगा या बिलकुल नहीं करूँगा।" 277

नोट्स 283

सन्दर्भ सूची 285

लेखिका के विषय में 286

भाग I

मन का महत्व

प्रस्तावना

क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं। इसलिये हम कल्पनाओं का, और हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।

2 कुरिन्थियों 10:4—5

हम किस प्रकार अपने विचारों के महत्व को भली भांति व्यक्त कर सकते हैं जिस से कि नीतिवचन 23:7 का सही अर्थ निकल सके: **क्योंकि जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है...?**

जितना अधिक मैं परमेश्वर की सेवा करती हूँ और उसके वचन का अध्ययन करती हूँ, उतना ही अधिक मैं विचारों और शब्दों के महत्व को पहचान जाती हूँ। इन विषयों का अध्ययन करने के लिए मैं पाती हूँ कि पवित्र आत्मा मेरी सदैव अगुवाई करता है।

मैंने कहा है, और मैं विश्वास करती हूँ कि यह सत्य है, कि जब तक हम इस पृथ्वी पर हैं तब तक हमें विचारों और शब्दों के क्षेत्रों में अध्ययन करने की आवश्यकता होगी। चाहें हम किसी भी क्षेत्र में कितना ही अधिक क्यों न जानते हों फिर भी बहुत सी नयी चीज़ें हमें सीखने को मिलती हैं और जो बातें हम पहले ही से जानते हैं उन्हें भी नयी तरह से जानने की आवश्यकता होती है।

नीतिवचन 23:7 का वास्तविक अर्थ क्या है ? किंग जेम्स अनुवाद कहता है, **जैसा वह** (एक व्यक्ति) **अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है...** एक अन्य अनुवाद के अनुसार, "एक व्यक्ति जैसा अपने मन में विचार करता है, वैसा ही वह बन जाता है।"

सभी कार्यों का अगुवा मन है। रोमियों 8:5 इसे स्पष्ट करता है: **क्योंकि शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं, परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं।**

हमारे कार्य हमारे विचारों के ही सीधे परिणाम हैं। यदि हमारा नकारात्मक मन है, तब हमारा जीवन भी नकारात्मक ही होगा। दूसरी ओर, यदि हम अपने

मन को परमेश्वर के वचन के द्वारा नया कर लेते हैं, तब रोमियों 12:2 की प्रतिज्ञा को हम अपने अनुभव के द्वारा परमेश्वर की भली भाती और सिद्ध इच्छा को अपने जीवन में मालूम कर लेंगे।

मैंने इस पुस्तक को तीन खण्डों, में बांट दिया है। पहला खण्ड विचारों के महत्व को बताता है। मैं आपके हृदय में सदैव के लिए इस बात को दृढ़तापूर्वक बैठा देना चाहती हूँ, कि जो विचार आप कर रहें हैं उन विचारों को सोचना प्रारम्भ करने की आप को आवश्यकता है।

बहुत से मनुष्य अपने जीवन में जिन समस्याओं को अनुभव करते हैं वह सारी समस्याएं उनके सोचने के तरीके के कारण ही होती हैं। शैतान प्रत्येक को गलत तरीके से सोचने के लिए बाध्य करता है, परन्तु हमें उस पर ध्यान नहीं देना चाहिए। कौन से विचार पवित्र आत्मा को भाते हैं और कौन से नहीं यह बात हमें सीखनी है।

2 कुरिन्थियों 10:4–5 स्पष्टरूप से बताता है कि हमें परमेश्वर के वचन को अधिकाई से जानना चाहिए ताकि हम इस बात की भली भांति तुलना कर सकें कि हमारे मन में क्या है और परमेश्वर के मन में क्या है; ऐसा विचार जो स्वयं को परमेश्वर के वचन से ऊपर उठाता हो और हमें तुरन्त ऐसे विचार का बहिष्कार करना है और यीशु मसीह की बंधुवाई में ले आना है।

मैं प्रार्थना करती हूँ कि यह पुस्तक आपको ऐसा करने में आपकी सहायता करेगी।

मन एक युद्धभूमि है। यह अति आवश्यक है, कि हम अपने विचार और परमेश्वर के विचार को एक से रखें। इसके लिए समय और अध्ययन दोनों की हमें आवश्यकता होगी।

निराश हो कर इसे छोड़ न दें, क्योंकि अंश–अंश कर के आप बदलते जा रहे हैं। जितना अधिक आप भले के लिए अपने मन को बदलते हैं उतना ही अधिक आप का जीवन भले के लिए बदलता जाएगा। जब आप अपने विचारों में अपने लिए परमेश्वर की भली योजना देखने लगते हैं, आप फिर उसमें चलना भी आरम्भ कर देंगे।

अध्याय

1

मन एक युद्धभूमि है

अध्याय 1

मन एक युद्धभूमि है

इफिसियों 6:12 में हम देखते हैं कि हम एक युद्ध में हैं। इस पद के अध्ययन से हमें यह पता चलता है कि हमारा यह युद्ध दूसरे मनुष्यों से नहीं बल्कि शैतान और उसकी शक्तियों से है। हमारा वह शत्रु शैतान हमें अपने षडयंत्र और धोखे से हराने का प्रयत्न करता है।

क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।

इफिसियों 6:12

शैतान झूठा है। यीशु उसके विषय में कहता **है...वह झूठा है वरन् झूठ का पिता है** (यूहन्ना 8:44)। वह आप से और मुझ से झूठ बोलता है। वह हम से हमारे विषय में, दूसरे लोगों के विषय में और हमारी परिस्थितियों के विषय में बताता है जिनमें सच्चाई नहीं। वह हमें सम्पूर्ण झूठ एक ही बार में नहीं बताता है।

वह बड़ी चतुराई के साथ हमारे मन में अशुद्ध विचार, शंकाएं, भय, भ्रम, तर्क और भिन्न–भिन्न गलत सिद्धांत भरना प्रारम्भ कर देता है। वह सावधानीपूर्वक और धीमी गति से कार्य करता है (क्योंकि इस प्रकार की सुनियोजित योजनाओं में समय लगता है)। याद रखें उसके पास उसके युद्ध की एक नीति है। उसने एक लम्बे समय से हमारा अध्ययन कर रखा है।

वह जानता है कि हमें क्या अच्छा लगता है और क्या नहीं। वह हमारी असुरक्षा, हमारी दुर्बलताओं और हमारे भय को जानता है। वह जानता है कि हम किस चीज़ से अत्याधिक विचलित हो जाते हैं। वह हमें पराजित करने में कितना भी समय लगाने में इच्छुक रहता है। शैतान का शक्तिशाली गुण है धैर्य।

गढ़ों को ढा देना

क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं।

इसलिये हम कल्पनाओं का, और हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं, और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।

2 कुरिन्थियों 10:4–5

शैतान हमारे मनों में अपनी कपट नीति और धोखे द्वारा "गढ़ों" को बनाने का प्रयत्न करता है। यह गढ़ एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें हम गलत विचारों द्वारा केद हो जाते हैं।

इस खण्ड में, प्रेरित पौलुस हमें बताता है कि शैतान के इन गढ़ों पर विजय प्राप्त करने के लिए हमारे पास हथियार हैं। हम इन हथियारों के विषय में बाद में और भी सीखेंगे परन्तु अभी इस बात पर ध्यान दें कि एक बार फिर हम— आत्मिक युद्ध में व्यस्त हैं। पद 5 हमें स्पष्टरूप से यह बताता है कि यह युद्ध भूमि जहाँ यह युद्ध हो रहा है, कहाँ है।

इस पद का एक दूसरा अनुवाद कहता है कि तर्क का खण्डन करने में हमें इन हथियारों का प्रयोग करना है। शैतान हम से तर्क करता है, अपने सिद्धांत और विचार हमारे सामने प्रस्तुत करता है। यह सारी प्रक्रिया मन में चलती रहती है।

मन एक युद्धभूमि है।

परिस्थिति का सारांश

अभी तक हमने देखा कि:

1. हम एक युद्ध में व्यस्त हैं।
2. हमारा शत्रु शैतान है।
3. मन एक युद्धभूमि है।
4. हमारे मन में गढ़ स्थापित करने के लिए शैतान बड़ी चतुराई से कार्य करता है।
5. वह अपनी रणनीति एवं धोखे से ऐसा करता है (सुनियोजित योजना और कपट द्वारा)
6. उसे कोई शीघ्रता नहीं; वह अपनी योजना को पूरा करने के लिए अपना पूरा समय लेता है।

उसकी योजना को अब हम स्पष्ट रूप से एक दृष्टांत द्वारा परखें।

मेरी का पक्ष

मेरी (Mary) और उसका पति जॉन (John), एक सुखी वैवाहिक जीवन नहीं बिता रहे हैं। हर पल उनके बीच में एक कलह है। वे दोनों क्रोध और कटुता और बदला लेने की भावना से भरे हुए हैं। उनके दो बच्चे हैं जो इस घर की समस्या से प्रभावित हैं। इस कलह को उनके विद्यालय के कार्यों में और उनके व्यवहार में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। एक बच्चे को पेट का कोई रोग लग गया है।

मेरी की समस्या यह है कि वह जॉन को घर के प्रधान के रूप में नहीं देखना चाहती। वह स्वयं घर के प्रधान के रूप में रहना चाहती है। सारे निर्णय वह स्वयं लेना चाहती है। वित्तीय सम्बन्धी समस्त कार्य और बच्चों का अनुशासन वह अपने ही हाथ में रखना चाहती है। वह नौकरी करना चाहती है जिससे उसके भी पास "अपना" पैसा हो। वह अधिकार जताने वाली, कटु वचन बोलने वाली और आत्मनिर्भर है।

अब आप सोच रहे होंगे, "मेरे पास इसका उत्तर है, उसे यीशु को जानने की आवश्यकता है।"

वह उसे जानती है। मेरी ने यीशु को पाँच वर्ष पूर्व अपना उद्धाकरर्त्ता के रुप में ग्रहण किया था। तब जॉन से उसके विवाह को तीन वर्ष हो चुके थे।

"क्या आप का यह अर्थ है कि यीशु को उद्धारकर्त्ता के रुप में ग्रहण करने के बाद भी मेरी में कोई परिवर्तन नहीं आया है?"

हाँ, परिवर्तन आया है। वह यह विश्वास करती है कि वह स्वर्ग जाएगी इसके बावजूद कि उसका बुरा व्यवहार हर पल उसे धिक्कारता रहता है। उसके पास अब एक आशा है। यीशु से मिलने से पूर्व वह दुखी ओर निराश थी; परन्तु अब वह केवल दुःखी है।

मेरी यह जानती है कि उसका व्यवहार गलत है। वह बदलना चाहती है। उसने दो व्यक्तियों की सलाह भी ली है, और क्रोध, विरोध, कटुता और क्षमा न करने की आदत पर विजय प्राप्त करने के लिए उसने अपने लिए प्रार्थनाएँ भी करवायीं हैं। फिर भी उसमें कोई बदलाव क्यों नहीं आया?

इसका उत्तर रोमियों 12:2 में पाया जाता है: **इस संसार के सदृश न बनो;**

परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।

मेरी के मन में गढ़ हैं। वर्षों से वह वहीं हैं। वह यह नहीं समझ पाती कि वह वहाँ कैसे पहुँच गए। वह यह जानती है कि उसे विद्रोही, अधिकारिक और चिड़चिड़े स्वभाव वाली नहीं होना चाहिए, परन्तु वह यह नहीं जानती कि अपना स्वभाव बदलने के लिए वह क्या करे। ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ विशेष परिस्थितियों में वह कुछ ऐसा कर बैठती है जिन पर उसका कोई नियंत्रण नहीं।

मेरी को अपनी प्रतिक्रियाओं पर कोई नियंत्रण नहीं, क्योंकि वह अपने विचारों पर नियंत्रण नहीं लगाती। वह अपने विचारों पर नियंत्रण नहीं लगाती क्योंकि शैतान ने उसके आरम्भिक जीवन में उसके मन में गढ़ स्थापित कर दिया हैं।

शैतान अपनी सुनियोजित योजनाओं को और धोखे को उसके अन्दर बाल्यावस्था में ही डाल दि थीं। मरियम के जीवन में भी बाल्यावस्था ही से समस्याएं आनी आरम्भ हो गयीं थीं।

मेरी के पिता अत्याचारी थे, और जब मरियम बच्ची ही थी, तब ही से उसे अत्यधिक डाँटा और मारा करते थे। यदि वह कोई गलती करती थी, तब वह अति क्रोधित हो जाते थे। कई वर्षों तक वह विवश होकर अपने पिता की यातनाएँ सहती रही। उसकी माँ के प्रति भी उसके पिता का व्यवहार ठीक नहीं था। मरियम का भाई तो जैसे कोई गलती ही नहीं करता था। ऐसा प्रतीत होता था जैसे उस पर पिता का अनुग्रह था क्योंकि वह एक लड़का था।

जब वह सोलह वर्ष की हो गयी तब शैतान अपने झूठ उसके मन में कुछ इस प्रकार डालने लगा: "पुरूष स्वयं को वास्तव में बहुत कुछ समझते हैं। वह सब एक ही से होते हैं; तुम उन पर विश्वास नहीं कर सकती हो। वे तुम्हें चोट पहुँचाएगे और तुमसे अनुचित लाभ लेने का प्रयत्न करेंगे। यदि तुम पुरूष होती, तुम्हारे जीवन में भी ऐसा ही होता। तुम जो चाहती, कर सकती थी। तुम लोगों को आदेश दे सकती थी, उन पर अपना अधिकार जता सकती थी, और उनके साथ किसी भी प्रकार का व्यवहार कर सकती थीं और कोई भी (विशेषकर पत्नियों और बेटियों को छोड़कर) तुम्हारा कुछ नहीं कर सकता था।"

परिणामस्वरूप मेरी ने मन में यह ठान लिया: "जब मैं यहाँ से चली जाऊँगी, तब कोई भी मुझ से फिर इस प्रकार का व्यवहार नहीं कर पाएगा!"

उसके मन की युद्धभूमि में शैतान ने युद्ध प्रारम्भ कर दिया था। इन दस वर्षों

में मेरी के मस्तिष्क में सैंकड़ों, हज़ारों और इससे भी अधिक बार यह विचार घूमने लगे कि यदि मैं विवाह कर लूँ तब मैं एक सुदृढ, सुशील अति सुन्दर पत्नी बन सकती हूँ। यह है वह अव्यवस्थित जीवन जिसमें मरियम स्वयं को पाती है। वह क्या कर सकती है? हम में से प्रत्येक ऐसी परिस्थिति में क्या कर सकता है?

वचन के हथियार

...यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे! तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।

यूहन्ना 8:31-32

यहाँ यीशु हमें बताता है कि किस प्रकार हम शैतान के झूठ पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। हमारे भीतर जो परमेश्वर की सच्चाई है उस के विषय में हम जानें, अपने मन को उसके वचन के द्वारा नया करें, फिर 2 कुरिन्थियों 10:4,5 में वर्णित हथियारों का प्रयोग करते हुए उन गढ़ों को और उन सभी चीज़ों को जो स्वयं को परमेश्वर से ऊँचा स्थान देती हैं, ढा देना है।

यह सारे "हथियार" परमेश्वर का वचन है जो हमें शिक्षा, टेप, सभा, उपदेश, वचन के अध्ययन द्वारा मिल जाते हैं। परन्तु हमें इस वचन में बढ़ते रहना है जब तक कि पवित्र आत्मा की प्रेरणा द्वारा हम इस बात को समझ न जाऐं। मरकुस 4:24 में यीशु कहता है**...जिस नाप (अध्ययन और विचार के) से तुम नापते (सच्चाई जो तुम सुनते हो) हो उसी से तुम्हारे लिये भी नापा (सद्गुण और ज्ञान) जाएगा...**मैं फिर इस बात को दोहराती हूँ कि हमें वचन के हथियारों का प्रयोग करते रहना चाहिए।

दूसरे दो आत्मिक हथियार जो हमारे पास हैं वह है प्रशंसा और प्रार्थना के। किसी भी युद्ध की योजना से अधिक शीघ्रता से शैतान की पराजय प्रशंसा से होती है, परन्तु यह प्रशंसा हृदय की गहराईयों से निकलनी चाहिए न कि केवल होठों से। प्रशंसा और प्रार्थना दोनों में ही वचन सम्मिलित होता है। उसकी भलाई और उसके वचन के द्वारा हम परमेश्वर की प्रशंसा करते हैं।

प्रार्थना, परमेश्वर के मस्तिष्क से सम्बन्ध स्थापित करना है। इससे हम परमेश्वर के पास आते हैं और अपनी समस्याओं के समाधान हेतु परमेश्वर से सहायता माँगते हैं।

यदि हम एक कार्य साधक प्रार्थना का जीवन चाहते हैं, तो हमें पिता के साथ एक अच्छा वैयक्तिक सम्बन्ध विकसित करना होगा। इस बात को जानें कि वह आप से प्रेम करता है, वह दया और करूणा से भरा हुआ है और वह आपकी सहायता करेगा। यीशु को जानिए। वह आपका मित्र है। उसने आप के लिए अपनी जान दे दी। पवित्र आत्मा को जानिए। वह सहायक के रूप में सदैव आप के साथ है। उसे आप अपनी सहायता करने दीजिए।

अपनी प्रार्थनाओं को परमेश्वर के वचन से भरना सीखिए। उसके पास आने का आधार, परमेश्वर का वचन और हमारी आवश्यकता ही है।

वचन का भिन्न—भिन्न प्रकार से प्रयोग में लाना ही हमारा हथियार है। जैसा कि 2 कुरिन्थियों में, पौलुस हमें बताता है, हमारे हथियार शरीर के हथियार नहीं, वे आत्मिक हैं। हमें आत्मिक हथियारों की आवश्यकता है क्योंकि हमारी यह लड़ाई आत्मिक है वरन स्वयं शैतान से है। यीशु ने भी जंगल में शैतान को हराने के लिए वचन का प्रयोग किया था (लूका 4:1—13)! प्रत्येक बार जब शैतान उससे झूठ बोलता था, यीशु का उत्तर होता था, "लिखा है" और वचन को बता देता था।

जब मेरी इन हथियारों का प्रयोग करना सीख जाएगी तब वह अपने मन में बनाए हुए शैतान के गढ़ों को ढाना आरम्भ कर देगी। वह सत्य को पहचान जाएगी और सत्य उसे स्वतंत्र कर देगा। तब वह जान जाएगी कि सभी पुरूष उसके शारीरिक पिता जैसे नहीं। कुछ हो सकते हैं परन्तु सभी नहीं। उसका पति जॉन वैसा नहीं। जॉन मरियम से अत्याधिक प्रेम करता है।

जॉन का पक्ष

अब हम जॉन के विषय में देखें। उसके पास भी समस्याएँ हैं जो कि मेरी और उसके विवाह में, घर में और परिवार में बाधक बन गयी हैं।

जॉन को अपनी स्थिति परिवार के मुखिया के रूप में देखनी चाहिए। परमेश्वर भी उसे घर के याजक के रूप में देखना चाहता है। जॉन का नये सिरे से जन्म भी हो चुका है और वह अच्छी तरह जानता है कि परिवार कैसे चलाया जाता है। वह जानता है कि उसे अपनी पत्नी को घर, बच्चे और वित्तीय सम्बन्धी कार्यों को चलाने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। वह यह सब कुछ

जानता है परन्तु वह कुछ नहीं करता और अपने को केवल पराजित समझता है और टी.वी. और खेलकूद के कार्यक्रमों में स्वयं को व्यस्त रखता है।

जॉन अपने उत्तरदायित्वों से कतराता है क्योंकि उनका सामना करने से उसे घृणा होती है। वह एक निष्क्रिय व्यवहार अपना लेता है यह सोचकर कि "यदि मैं इस दशा को ऐसे ही अकेला छोड़ दूँ तो सम्भवतः यह स्वयं ही ठीक हो जाएगा।" अथवा वह कोई ठोस कदम न उठा कर अपने को दोषमुक्त मान लेता है, यह कहकर कि "मैं इसके विषय में प्रार्थना करूँगी।" निःसंदेह प्रार्थना अच्छी है, परन्तु वहाँ नहीं जहाँ हम अपने उत्तरदायित्वों से बचने के लिए इसका प्रयोग करने लगते हैं।

अब मुझे इस बात को स्पष्ट करना है जब मैं यह कहती हूँ कि जॉन को, परमेश्वर द्वारा दी हुई घर में उसकी स्थिति को भली–भांति ग्रहण कर लेना चाहिए, मेरा यह अर्थ नहीं कि, घर में वह स्वयं को एक शक्तिमान के रूप में देखना प्रारम्भ कर दे और अपना प्रभुत्व स्थापित करने लगे। इफिसियों 5:25 हमें सिखाता है कि एक पुरूष को अपनी पत्नी से वैसा ही प्रेम रखना चाहिए जैसा मसीह ने अपनी कलीसिया से प्रेम किया था। जॉन को अपने उत्तरदायित्वों को निभाना चाहिए, इन उत्तरदायित्वों के साथ ही अधिकार आता है। उसे अपनी पत्नी के प्रति दृढ़ होना चाहिए–प्रेममयी दृढ़ता। उसे मरियम को यह विश्वास दिलाना चाहिए कि यदि वह परमेश्वर पर सम्पूर्ण विश्वास करती है तो उसे इस बात का आभास होने लगेगा कि सब पुरूष उसके पिता जैसे नहीं होते।

मेरी की तरह जॉन के मन में भी कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जिन के द्वारा शैतान को यह अवसर मिल जाता है कि शैतान उसे अपना कैदी बना ले। जॉन के मन में भी एक युद्ध चल रहा है। मरियम की तरह उसको भी बाल्यावस्था में धिक्कारा गया था। अधिकार जताने वाली उसकी माँ की जुबान अत्याधिक कटु थी और प्रायः जॉन से कहा करती थी, "जॉन तुम बहुत ही अव्यवस्थित हो, तुम अपने जीवन में कुछ नहीं कर पाओगे।"

जॉन अपनी माँ को प्रसन्न करने का बहुत प्रयत्न करता था (जैसे सभी बच्चे करते हैं) क्योंकि माँ की सहमति पाने के लिए वह लालायित रहता था, परन्तु जितना अधिक वह प्रयत्न करता उतनी ही अधिक त्रुटियाँ भी कर देता था। भद्दापन उसकी आदत बन गयी थी इसी कारण उसकी माँ हर समय

उसे "भद्‌दा" कहा करती थी। वह अपनी माँ को प्रसन्न करने का इतना अधिक प्रयत्न करता था कि वह कार्य करते समय अधीर हो जाता था और उसके हाथ से वस्तुएँ छूट कर गिर जाती थीं और इस प्रकार उसकी यह योजना असफल हो जाती थी।

जिन बच्चों को वह अपना मित्र बनाना चाहता था वे उसे अस्वीकार कर देते थे। ऐसा हम में से बहुतों के जीवन में भी कभी न कभी होता है, परन्तु जॉन इससे पूरी तरह टूट चुका था क्योंकि अपनी माँ द्वारा वह पहले ही अस्वीकृत किया जा चुका था।

जब वह अपने हाईस्कूल के वर्षों में था तब भी वह एक लड़की द्वारा ठुकराया जा चुका था जिसे वह अत्याधिक चाहता था। इस प्रकार इन सब घटनाओं का लाभ उठाते हुए शैतान ने उसके मन में अपने गढ़ बना दिए थे। जॉन के पास साहस की कमी हो गयी और वह एक शर्माने वाला, डरपोंक और मूक व्यक्ति बन गया।

जॉन एक निम्न प्रकार का साधारण सा व्यक्ति बन गया जो ऐसा कोई भी कार्य नहीं करता था जिससे उसकी एक अलग पहचान स्थापित हो सके। वह ऐसा सोचने लगा था कि, "आप जो सोच रहें हों उसे दूसरों को बताने की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि वे आपकी बात पर कोई ध्यान नहीं देंगे। यदि आप चाहते हों कि वे आप को स्वीकार करें तब आप को वही करना होगा जिसे वे लोग चाहते हैं।"

कई बार किसी न किसी समस्या पर उसने अपना पहलू रखने का प्रयत्न किया था परन्तु प्रत्येक बार उसे पराजय का सामना करना पड़ा। अतः उसने यह निर्णय कर लिया कि अब वह प्रयत्न ही नहीं करेगा।

"अन्त में तो मुझे पराजित ही होना है इसलिए कोई भी कार्य मैं क्यों प्रारम्भ करूँ?" यह उसकी सोच बन गयी।

इसका उत्तर क्या है ?

प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिये भेजा है कि बन्दियों को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार

करूँ और कुचले हुओं को छुड़ाऊँ और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूँ।

लूका 4:18–19

जॉन और मेरी की इन समस्याओं को देखते हुए यह कल्पना करना कठिन नहीं कि उन का पारिवारिक जीवन किस प्रकार का होगा। याद करिए, मैंने कहा था कि उनके जीवन में बहुत अधिक कलह ने जन्म ले लिया था। अधिकतर कलह से लड़ाई उत्पन्न नहीं हुआ करती। कलह से घर में एक क्रोध का वातावरण बन जाता है जिसे हर व्यक्ति महसूस तो करता है परन्तु उससे निपटना नहीं चाहता। घर का समस्त वातावरण भयानक हो जाता है और यहीं शैतान को बहुत पसन्द है।

जॉन और मेरी और उनके बच्चों का अब क्या होगा? क्या वे इसे ठीक कर सकेंगे? वे मसीही हैं–यह शर्म की बात होगी यदि उनका विवाह और परिवार इस प्रकार नष्ट हो जाएँ। वास्तव में यह उन्हीं पर निर्भर करता है। इस विषय में निर्णय लेने के लिए पवित्र शास्त्र के यह पद जो लूका 8:31,32 में पाए जाते हैं उनकी सहायता कर सकते हैं। यदि वे परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते रहें, वे सत्य को पहचान जाएँगे और उस सत्य पर कार्य करते हुए वे स्वतंत्र हो जाएँगे। परन्तु उन दोनों को सर्वप्रथम स्वयं के प्रति सच्चाई का सामना करना है अपने भूतकाल की सच्चाई को जानना है जैसा कि परमेश्वर उन पर प्रगट करता है।

वचन के द्वारा सच्चाई सदैव प्रगट होती है परन्तु दुःख इस बात का है कि लोग प्रायः इसे ग्रहण नहीं करते। अपने अवगुणों का सामना करना और उनसे निपटना एक दुखदायी प्रक्रिया है। अधिकतर लोग अपने अनुचित व्यवहार को उचित ठहराते हैं। वे अपने भूतकाल का ही अनुसरण करते हैं जिससे उनके जीवन में एक नकारात्मक व्यवहार आ जाता है।

हमारा भूतकाल हमें यह तो बता सकता है कि हम पीड़ा में क्यों हैं परन्तु इसे हम अपने दासत्व का कारण नहीं ठहरा सकते।

हर एक व्यक्ति को दासत्व के बंधन से स्वतंत्र करने के लिए यीशु अपनी प्रतिज्ञाओं को पूर्ण करने के लिए सदैव हमारे पास खड़ा है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विजय की अन्तिम रेखा तक वह हमारे साथ चलेगा यदि हम उसके साथ चलने के लिए इच्छुक हों।

समाधान

तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है! परमेश्वर सच्चा हैः और वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको।

1 कुरिन्थियों 10:13

मैं यह आशा करती हूँ कि आप इस दृष्टान्त से समझ जाएँगे कि शैतान किस प्रकार इन परिस्थितियों का लाभ उठा कर हमारे जीवन में गढ़ों को स्थापित कर देता है, किस प्रकार हमारे मनों की युद्धभूमि में लड़ाई छेड़ देता है। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि इन गढ़ों को ढा देने के लिए हमारे पास आत्मिक हथियार हैं। परमेश्वर हमें असहाय नहीं छोड़ देता। 1 कुरिन्थियों 10:13 में परमेश्वर हम से प्रतिज्ञा करता है कि वह हमें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, परन्तु प्रत्येक परीक्षा के साथ वह हमारा निकास भी करेगा।

हम में से एक हो सकता है मरियम अथवा जॉन की भांति हों। मुझे विश्वास है कि हम में से अधिकतर इस स्थिति से सम्बन्ध रखते हों। उनकी समस्याएँ उनके व्यवहार और विचारों में हों। उनका बाहरी व्यवहार आन्तरिक जीवन का एक प्रतिबिम्ब होता है। शैतान यह भली भांति जानता है कि यदि वह हमारे विचारों को नियंत्रण में कर सकता है तो हमारे कार्यों पर भी अपना नियंत्रण कर सकता है।

आपके जीवन में भी हो सकता है ऐसे गढ़ हों जिन्हें तोड़ना आवश्यक है। मुझे आपको उत्साहित करते हुए यह कहना है कि "परमेश्वर आप की ओर है।" आपके मन की युद्ध भूमि में एक लड़ाई चल रही है। परन्तु सुसमाचार यह है कि परमेश्वर इस लड़ाई में आपकी ओर है।

अध्याय

2

एक महत्वपूर्ण आवश्यकता

एक महत्वपूर्ण आवश्यकता

अध्याय
2

> *क्योंकि जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है...*
>
> नीतिवचन 23:7

पवित्र शास्त्र का यह एक पद हमें बताता है कि यह कितना आवश्यक है कि हम उचित रीति से विचार किया करें। विचारों में शक्ति होती है और नीतिवचन का लिखने वाला बताता है कि विचारों में कार्य क्षमता होती है। यदि हमारे विचार यह निर्धारित करते हैं कि हम कैसे हैं तब यह हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए कि हम सही विचार करें।

यह अति आवश्यक है कि हमारे विचार परमेश्वर के वचन के अनुकूल होने चाहिए।

आप सकारात्मक जीवन और नकारात्मक मन नहीं रख सकते।

शरीर का मन एवं आत्मा का मन

> **क्योंकि शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं!**
>
> **रोमियों 8:5**

रोमियों का आठवां अध्याय हमें सिखाता है कि यदि हम शरीर की बातों पर मन लगाते हैं तब हम शरीर के अनुसार चलते हैं, परन्तु यदि हम आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं तब हम आत्मा द्वारा चलाए जाते हैं।

इसको दूसरी तरह से देखें: यदि हम नकारात्मक अनुचित एवं गलत शरीर के विचार रखेंगे तब हम आत्मा द्वारा नहीं चलाए जा सकते। ऐसा प्रतीत होता है कि एक विजयी मसीही जीवन जीने के लिए परमेश्वर के विचार रखना अति आवश्यक है।

कभी–कभी ऐसा समय आता है जब हम मनुष्य उन आवश्यक बातों पर ध्यान देने में आलस कर जाते हैं जिन पर ध्यान देना अत्याधिक आवश्यक

है। परन्तु जब हम यह जान जाते हैं कि यदि इस मुद्दे को यूँ ही छोड़ दें तो उसके भयानक परिणाम होंगे तब हम उस के विषय में क्रियाशील हो जाते हैं।

उदाहरणार्थ आपका एक बैंक आपको यह बताता है कि आपने अपने खाते से 850 डालर अधिक निकाल लिए हैं तब आप तुरन्त अपनी इस समस्या का समाधान करना चाहेंगे। छानबीन करने के बाद आपको पता चलता है कि आपने अपने बैंक में जमा खाते में डालर जमा नहीं किए थे जिसे आप सोच रहे थे कि आप जमा कर चुके हैं। आप तुरन्त डालर लेकर बैंक में जमा करने भागते हैं ताकि आप किसी समस्या में न फँस जाएँ।

इसी प्रकार आप भी मन को नया कर लें। यदि आप वर्षों से गलत ढंग से विचार कर रहे हों तब आपका जीवन एक अव्यवस्थित जीवन बन कर रह जाएगा। आपको इस बात को समझना अति आवश्यक है कि *आप का जीवन तब तक व्यवस्थित जीवन नहीं बन सकता जब तक आपका मन व्यवस्थित नहीं हो जाए।* शैतान ने जो आपके मन में गढ़ बना लिए हैं उनको तोड़ने के लिए आपको सचेत और गम्भीर होना होगा। वचन, प्रशंसा और प्रार्थना के हथियारों का प्रयोग करें।

आत्मा के द्वारा

...न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा...यहोवा का यही वचन है।

जकर्याह 4:6

स्वतंत्रता प्राप्त करने का सबसे कारगर तरीका है परमेश्वर से सहायता माँगना और कई बार माँगना है।

प्रार्थना (माँगना) आपके पास एक हथियार है। केवल संकल्प के द्वारा आप किसी दशा का समाधान नहीं कर सकते। संकल्प तो करना है परन्तु यह संकल्प पवित्र आत्मा के द्वारा होना चाहिए, शरीर के प्रयत्न द्वारा नहीं। पवित्र आत्मा आपका सहायक है–उसकी सहायता लीजिए। उस पर विश्वास कीजिए। आप केवल अपने ही द्वारा हल नहीं निकाल सकते।

एक महत्वपूर्ण आवश्यकता

एक विश्वासी के लिए सही सोचना आवश्यक है। यह महत्वपूर्ण आवश्यकता

वह चीज़ है जिस के बिना हम जीवित नहीं रह सकते जिस प्रकार जीवन के लिए हृदय की धड़कन एवं रक्त चाप आवश्यक है। इनके बिना जीवन नहीं।

प्रार्थना और वचन के द्वारा परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संगति रखना—इस सच्चाई को वर्षों पूर्व परमेश्वर ने मुझ पर प्रगट किया था। इन चीज़ों को करने में मुझे स्वयं को अनुशासित करना पड़ रहा था जिससे मैं कठिनाइयों का सामना कर रही थी तभी परमेश्वर ने मुझे बताया कि यह जीवन के लिए कितना आवश्यक है। जिस प्रकार मेरा भौतिक जीवन कुछ आवश्यक चीज़ों पर निर्भर है उसी प्रकार मेरा आत्मिक जीवन परमेश्वर के साथ नियमित रूप से समय बिताने पर निर्भर है। एक बार जब मैंने यह जान लिया कि उसके साथ संगति रखना कितना आवश्यक है तब मैंने इसे अपने जीवन में प्राथमिकता दे दी।

इसी प्रकार जब मैंने यह जान लिया है कि विजयी जीवन जीने के लिए सही सोचना कितना आवश्यक है तब से मैं अपने विचारों को अत्याधिक सतर्कता के साथ गम्भीरता पूर्वक सोचने लगी हूँ।

जैसा आप सोचते हैं, वैसे ही आप हैं

यदि पेड़ को अच्छा कहो, तो उसके फल को भी अच्छा कहो, या पेड़ को निकम्मा कहो, तो उसके फल को भी निकम्मा कहो; क्योंकि पेड़ अपने फल ही से पहचाना जाता है।

मत्ती 12:33

बाइबल कहती है कि पेड़ अपने फलों से ही जाना जाता है।

हमारे जीवन में भी यह सत्य है। विचारों में फल लगते हैं। अच्छे विचार अच्छे फल हमारे जीवन में लाते हैं। बुरे विचार बुरे फल जीवन में लाते हैं।

वास्तव में आप किसी व्यक्ति का व्यवहार देख कर ही यह जान जाते हैं कि उसके जीवन में किस प्रकार के विचारों का आधिपत्य है। एक नम्र दयावान व्यक्ति के विचार निम्न स्तर के और दोष लगाने वाले नहीं होते। उसी प्रकार एक दुष्ट व्यक्ति के विचार अच्छे और प्रिय नहीं होते।

नीतिवचन 23:7 याद रखिए और अपने जीवन में इनको उतार लीजिए: जैसा आप अपने मन में विचार करते हैं वैसे ही आप हैं।

अध्याय

3

हियाव न छोड़ें!

हियाव न छोड़ें! *अध्याय 3*

> *हम भले काम करने में साहस न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।*
>
> गलतियों 6:9

आप के जीवन और मन की दशा चाहें कितनी भी बुरी क्यों न हो, हियाव न छोड़ें। शैतान ने जो क्षेत्र आप का चुरा लिया है उसे फिर से वापस ले लें। आवश्यकतानुसार एक बार में एक इंच कर के वापस ले लें अपनी योग्यतानुसार नहीं अपितु परमेश्वर के अनुग्रह के आधीन रह कर ऐसा करें ताकि परमेश्वर की इच्छानुसार आप को इसका परिणाम प्राप्त हो।

गलतियों 6:9 में प्रेरित पौलुस हमें लगे रहने के लिए उत्साहित करता है। त्यागने वाला न बनें। हियाव छोड़ देने वाला आत्मा न रखें। परमेश्वर ऐसे लोगों को खोज रहा है जो उसके साथ चलने के लिए तैयार हैं।

पूरा करें

> **जब तू जल में होकर जाए, मैं तेरे संग संग रहूँगा और जब तू नदियों में होकर चले, तब वे तुझे न डुबा सकेंगी; जब तू आग में चले तब तुझे आँच न लगेगी, और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी।**
>
> **यशायाह 43:2**

यदि आप अपने जीवन में चाहें जैसा भी अनुभव क्यों न कर रहे हों कैसी भी परिस्थिति का सामना क्यों न कर रहे हों, मै आप को उत्साहित करती हूँ कि लगे रहें, हियाव न छोड़ें!

हबक्कूक 3:19 के अनुसार परमेश्वर हमारे पाँव को हरिणों के समान बना देता है वह हमें ऊँचे स्थानों पर चलाता **(भय से एक स्थान पर चुपचाप खड़ा नहीं रखता परन्तु चलाता है) है।**

परमेश्वर हमारे साथ रह कर हमारी आत्मिक उन्नति में सहायता करता है और हमें सामर्थ्य प्रदान करता है एवं कठिनाईयों की घड़ी में हिम्मत न हारने के लिए हमें उत्साहित करता है।

छोड़ देना तो बहुत सरल हैः मगर लगे रहने के लिए विश्वास की आवश्यकता है।

चुनाव आपको करना है!

मै आज आकाश और पृथ्वी दोनों को तुम्हारे सामने इस बात की साक्षी बनाता हूँ, कि मैंने जीवन और मरण, आशीष और शाप को तुम्हारे आगे रखा है; इसलिये तू जीवन ही को अपना ले, कि तू और तेरा वंश दोनों जीवित रहें।

व्यवस्थाविवरण 30:19

हज़ारों तरह के विचार प्रति दिन हमारे सम्मुख लाए जाते हैं। मन को नया करना होगा ताकि वह आत्मा का अनुसरण करे, शरीर का नहीं। हमारा सांसारिक एवं शारीरिक मन इतना अधिक स्वतंत्र हो गया है कि हमें गलत तरीके से सोचने के लिए कुछ भी प्रयत्न नहीं करना पड़ता।

दूसरी ओर, हमें उद्देश्यपूर्ण चुनाव सही विचारों का करना है। जब हमने यह पूर्णतया निर्णय कर लिया कि हमारा मन परमेश्वर के मन जैसा ही रहे तब हमें सदैव सही विचारों का ही चयन करना होगा।

जब हम यह अनुभव करना आरम्भ कर दें कि मन की लड़ाई अत्याधिक कठिन है, और हम इसे नहीं लड़ सकते, तब हमें इस प्रकार के विचार को उखाड़ कर फेंक देना होगा, इसके विपरीत हमें यह सोचना होगा कि हम यह लड़ाई पूरी कर सकते हैं न केवल हमें यह सोचना है कि हम यह लड़ाई पूरी कर सकते हैं अपितु हमें यह भी निर्णय करना है कि हमें यह लड़ाई छोड़ नहीं देनी है। शंकाओ और भय के आक्रमण से घिरे हुए, हमें एक दृढ़ निर्णय लेना है और कहना है, "मैं कभी भी हियाव नही छोडूँगा। परमेश्वर मेरी ओर है, वह मुझ से प्रेम करता है, और वह मेरी सहायता कर रहा है।"

अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में मुझे और आपको कई चुनाव करने होंगे। व्यवस्थाविवरण 30:19 में परमेश्वर ने अपने लोगों को यह बताया था कि उसने उनके सामने जीवन और मृत्यु दोनों रखे हैं और उन्हें जीवन को चुनने के लिए प्रेरित करता है। और नीतिवचन 18:21 में हमें यह बताया गया है कि **जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनों होते हैं और जो उसे काम में लाना जानता है वह उसका फल भोगेगा।**

हमारे विचार हमारे शब्द बन जाते हैं। इसलिए यह अति आवश्यक है कि हम जीवनदायिनी विचारों का ही चयन करें। जब हम ऐसा करेंगे तब सही शब्द ही हमारे मुँह से निकलेंगे।

हियाव न छोड़ें!

जब लड़ाई अनन्त प्रतीत होने लगे और आप यह सोचने लगें कि आप यह लड़ाई नहीं लड़ सकते, तब यह याद रखिए कि आप को अपना यह सांसारिक और शारीरिक मन को नया बनाना है ताकि वह वैसा ही सोचना आरम्भ कर दे जैसा परमेश्वर सोचता है।

असम्भव? *नहीं!*

कठिन? *हाँ!*

ज़रा सोचिए, आपकी टीम में आपकी ओर परमेश्वर है। मुझे विश्वास है कि वह सबसे अच्छा कम्प्यूटर प्रोग्रामर है। (आपका मन कम्प्यूटर की भाँति है जिसमें आपके सम्पूर्ण जीवन काल का कूड़ा प्रोग्राम किया हुआ है)। परमेश्वर आपके ऊपर कार्य कर रहा है आपके विचारों को नियंत्रित करेगा यदि आप उसको ऐसा करने का निमंत्रण देंगे। वह आपके मन को नया कर रहा है। उसके साथ केवल सहयोग कीजिए और *हियाव न छोड़िए।*

इसे निश्चित रूप से समय लगेगा, और ये आसान नहीं होगा अगर आप परमेश्वर कि तरह सोचने का तरीका चुनते हो, तो आप सही दिशा में जा रहे हो। कुछ करने के लिए आप समय व्यथीत कर रहे होंगे, तो यह ठिक है, आप आगे कि ओर बढ़ रहे हो, नाकि वही पुरानि बिघडी हुई स्थिति जो आपके जीवन में थी।

मुड़िए और अधिकार में कर लीजिए !

हमारे परमेश्वर यहोवा ने होरेब के पास हम से कहा था, तुम लोगों को इस पहाड़ के पास रहते हुए बहुत दिन हो गए हैं; इसलिए अब यहाँ से कूच करो, और एमोरियों के पहाड़ी देश को, और क्या अराबा में, क्या पहाड़ों में, क्या नीचे के देश में, क्या दक्खिन देश में, क्या समुद्र के किनारे, जितने लोग एमोरियों के पास रहते हैं...

सुनो, मैं उस देश को तुम्हारे सामने किए देता हूँ; जिस देश के विषय यहोवा ने अब्राहम, इसहाक, और याक़ूब, तुम्हारे पितरों से शपथ खाकर कहा था कि मैं इसे तुम को और तुम्हारे बाद तुम्हारे वंश को दूँगा, उसको अब जाकर अपने अधिकार में कर लो।

व्यवस्थाविवरण 1:6–8

व्यवस्थाविवरण 1:2 में, मूसा ने इस्राएलियों को बताया था कि कनान (प्रतिज्ञा की भूमि) देश की सीमा तक पहुँचने की यात्रा अब केवल ग्यारह दिन की है, परन्तु फिर भी वहाँ पहुँचने में उन्हें चालीस वर्ष लग गए। फिर पद 6 में उसने उनसे कहा "परमेश्वर हम से यूँ कहता है, 'तुम लोगों को इस पहाड़ के पास रहते हुए बहुत दिन हो गए हैं।' "

क्या आप को भी उस पहाड़ पर रहते हुए बहुत दिन हो गए हैं ? क्या आपने भी ग्यारह दिन की यात्रा को पूरा करने में चालीस वर्ष बिता दिए हैं ?

मेरे स्वयं के जीवन में, मैं अब पूर्णतया जाग गयी हूँ और मुझे ऐसा लगता है कि मैं कहीं भी नहीं जा रही थी। मैं बिना विजय की मसीही थी। जॉन और मेरी की तरह मेरे भी मन में गलत धारणाएँ और मानसिक गढ़ वर्षों के अन्तराल में बन गए थे। शैतान ने मुझ से झूठ बोला था और मैंने उस पर विश्वास कर लिया था। इस कारण मैं धोखे में जी रही थी।

मैं भी इस पहाड़ पर बहुत समय से थी। मैंने भी चालीस वर्ष बिता दिए जब कि यह एक छोटी यात्रा हो सकती थी यदि मैं परमेश्वर के वचन की सच्चाई को जान जाती।

परमेश्वर ने मुझे यह दिखाया कि इस्त्राएली जंगल में भटकते रहे क्योंकि उनकी मानसिकता जंगली थी—एक गलत तरीके से सोचना, जिसने उन्हें बन्धुआ बना लिया था। हम इस विषय को आगे के अध्याय में देखेंगे परन्तु अभी मैं आप को एक विशिष्ट निर्णय लेने के लिए उत्साहित करती हूँ कि आप अपना मन नया करें और अपने विचारों का चयन सावधानीपूर्वक करें। मन में ठान लें कि आप हियाव न छोड़ेंगे जब तक विजयी न हो जाएँ और अपने उत्तराधिकार को प्राप्त न कर लें।

अध्याय
4

धीरे धीरे कर के

धीरे धीरे कर के

अध्याय 4

तेरा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को तेरे आगे से धीरे धीरे निकाल देगा; तो तू एकदम से उनका अन्त न कर सकेगा, नहीं तो बनैले पशु बढ़कर तेरी हानि करेंगे।

व्यवस्थाविवरण 7:22

आपका मन धीरे धीरे नया होगा अतः निराश न हों यदि आप को यह लगता हो कि प्रगति बहुत धीमी है।

प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने से थोड़ा पहले परमेश्वर ने इस्त्राएलियों से कहा था कि वह धीरे धीरे उनके शत्रुओं को उनके सामने से निकाल देगा नहीं तो बनैले पशु उनके बीच बहुत अधिक संख्या में बढ़ जाएँगे।

मैं विश्वास करती हूँ कि घमण्ड ही वह "पशु" है जो हमें समाप्त कर देता है यदि हमें स्वतंत्रता अति शीघ्र मिल जाती है। वास्तव में यह अच्छा होता है यदि एक बार में एक ही क्षेत्र में स्वतंत्रता पाने के लिए हम कार्य करें। इस प्रकार से प्राप्त हुई स्वतंत्रता को हम अधिक समझ पाएँगे, तब हम जान जाएँगे कि यह वास्तव में परमेश्वर का वरदान है जिसे हम अपनी सामर्थ्य द्वारा नहीं पा सकते।

स्वतंत्रता से पहले दुःख

अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिसने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिये बुलाया, तुम्हारे थोड़ी देर तक दुःख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवन्त करेगा।

1 पतरस 5:10

हमें "थोड़ी देर तक" दुःख क्यों उठाना है? मैं विश्वास करती हूँ कि जिस घड़ी हम यह जान जाते हैं कि हमारे सामने जो समस्या है जब तक यीशु हमें छुड़ा नहीं लेता हमें दुखों का सामना करना है परन्तु जब हम स्वतंत्र हो जाते हैं तब हमें और भी अधिक आनन्द होता है। जब हम स्वयं से कुछ करने का प्रयत्न करते हैं तब हम असफल हो जाते हैं और तब हम यह महसूस करते हैं कि हमें उसकी प्रतीक्षा करनी चाहिए, हमारे हृदय धन्यवाद और प्रशंसा से

भर जाते हैं जब वह खड़ा होता है और हमारा कार्य करता है जो हम स्वयं नहीं कर सकते।

दण्ड की आज्ञा नहीं

अंतः अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं! (क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं।)

रोमियों 8:1

जब आप बुरे दिनों से गुज़र रहे हों तब आप धिक्कार ग्रहण न करें। शीघ्र उठ कर खड़े हो जाएँ, धूल झाड़ें और नए सिरे से फिर आरम्भ करें। जब एक छोटा बच्चा चलना सीखता है वह कई बार गिरता है फिर उसके बाद वह ठीक तरह से चलना सीख जाता है और आनन्दित होता है। हांलाकि जब वह गिरता है तो रोता भी है परन्तु एक बात उसकी यह अच्छी है कि वह फिर खड़ा हो जाता है और चलने का फिर प्रयत्न करने लगता है।

हमारे मन को नया होने से रोकने के लिए शैतान हर प्रकार का प्रयत्न करेगा। वह यह भली भाँति जानता है कि एक बार यदि हम सही विचारों का चयन करना सीख जाएँगे और बुरे विचारों को अस्वीकार कर देंगे तब हमारे ऊपर से उसका नियंत्रण समाप्त हो जाएगा। वह हमें रोकने के लिए हमें धिक्कारेगा और निरूत्साहित करेगा।

जब धिक्कार हमारे सम्मुख आए तब "वचन के हथियार" का प्रयोग करें। रोमियों 8:1 का उदाहरण दें, शैतान और आप स्वयं को यह याद दिलाएं कि आप शरीर के अनुसार नहीं चलते परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं। शरीर के अनुसार चलने का अर्थ है स्वयं पर भरोसा करना, आत्मा के अनुसार चलने का अर्थ है परमेश्वर पर भरोसा रखना।

जब आप असफल हो जाएँ (जो कि आप होंगे) इसका अर्थ यह नहीं कि आप दुर्बल हो गए। इसका सरल अर्थ यह है कि आप हर चीज़ सही तरीके से नहीं करते। हम सब को यह सत्य जान लेना चाहिए कि हम में सामर्थ के साथ साथ दुर्बलताएँ भी हैं। अपनी दुर्बलताओं में मसीह को शक्तिमान होने दीजिए; अपनी दुर्बलताओं के दिनों में उसे अपनी शक्ति बनने दीजिए।

मैं फिर कहती हूँ *धिक्कार ग्रहण न करें।* आप सम्पूर्णतया विजयी होंगे, परन्तु इसमें समय लगेगा क्योंकि यह धीरे धीरे ही होगा।

निरूत्साहित न हों

हे मेरे प्राण, तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर आशा लगाए रह; क्योंकि मैं उसके दर्शन से उद्धार पाकर फिर उसका धन्यवाद करूँगा।

भजन संहिता 42:5

निरूत्साह आशा को नष्ट कर देता है, इसी कारण शैतान सदैव हमें निरूत्साहित करने का प्रयत्न करता है। आशा बिना हम हियाव छोड़ देते हैं और यह ही शैतान हम से चाहता है। बाइबल हमें बार बार बताती है कि हमें निरूत्साहित और साहसहीन नहीं होना है। परमेश्वर जानता है कि हम विजयी कभी नहीं हो पाएँगे यदि हम निरूत्साहित हो जाते हैं अतः वह सदैव हमें उत्साहित करता है जब भी हम किसी योजना पर कार्य करना प्रारम्भ करते हैं, वह हमसे कहता है, "निरूत्साहित न हों।" परमेश्वर चाहता है कि हम उत्साहित रहें निरूत्साहित नहीं।

जब निरूत्साह और धिक्कार आप को घेर लेते हैं तब आप अपने विचार जीवन की परीक्षा करें। किस प्रकार के विचार आप सोच रहे हैं? क्या वे ऐसे तो नहीं?

"मैं यह नहीं कर पाऊँगा, यह अत्याधिक कठिन है। मैं सदैव असफल हो जाता हूँ। सब कुछ वैसा ही रहता है कुछ भी नहीं बदलता है। मैं निश्चित हूँ कि अन्य लोगों को अपना मन नया करने में इतनी समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता होगा। अच्छा होगा कि मैं यह छोड़ दूँ। मैं प्रयत्न करते करते थक गया हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर मेरी नहीं सुनता। हो सकता है वह मेरे कार्य करने के ढंग से निराश हो गया हो और इसी कारण मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं देता।"

यदि आपके भी विचार ऐसे ही हैं, तो कुछ आश्चर्य नहीं कि आप भी निरूत्साहित हो जाएँगे और धिक्कार के आधीन हो जाएँगे। याद रखिए आप वैसे ही बन जाते हैं जैसा आप सोचते हैं। निरूत्साहित विचार करने से आप निरूत्साहित हो जाएँगे। धिक्कार वाले विचार सोचने से आप धिक्कार के आधीन हो जाएँगे। अपने विचार बदलिए और तब आप स्वतंत्र हो जाएँगे!

नकारात्मक ढंग से सोचने के स्थान पर आप इस प्रकार सोचें:

"हांलाकि, चीज़ें बहुत धीमी गति से चल रही हैं परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि फिर भी मैं प्रगति कर रहा हूँ। मुझे निश्चय है कि मैं सही मार्ग पर हूँ

जो मुझे स्वतंत्रता की ओर ले जाएगा। कल का दिन एक बहुत बुरा दिन था। मैं दिन भर गलत ढंग से विचार करता रहा था। हे पिता, मुझे क्षमा कर और आगे बढ़ते रहने में मेरी सहायता कर।" मैंने एक गलती की थी पर अब मैं यह गलती दोबारा नहीं करूँगा। यह एक नया दिन है। परमेश्वर, तू मुझ से प्रेम करता है। तेरी दया हर सुबह नयी होती है।

"मैं निरूत्साहित होने को अस्वीकार करता हूँ। मैं धिक्कार को भी अस्वीकारता हूँ। हे पिता, बाइबल कहती है कि तू मुझे मत धिक्कार। तूने यीशु को मेरे स्थान पर मरने के लिए भेजा। मैं ठीक हो जाऊँगा—आज का दिन एक महान दिन होगा। सही विचारों का चयन करने में तूने आज मेरी सहायता की।"

मुझे निश्चय है कि इस प्रकार की सकारात्मक, प्रसन्नचित्त परमेश्वर जैसी सोच में आप अवश्य ही विजय की अनुभूति कर सकते हैं।

हम हर एक चीज़ तुरन्त ही चाहते हैं। हमारे भीतर धैर्य का फल है परन्तु उसको हमने बाहर कर दिया है। हमें छुटकारा देने के लिए कभी कभी परमेश्वर अपना पूरा समय लेता है। प्रतीक्षा के इस कठिन समय का उपयोग वह हमारे विश्वास को बढ़ाने के लिए करता है और धैर्य को अपना उत्तम कार्य करने देता है (याकूब 1:4) परमेश्वर का समय सिद्ध है। वह कभी देर नहीं करता।

यहाँ एक दूसरा अच्छा विचार है सोचने के लिए: "मैं परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि वह मेरे अन्दर कार्य कर रहा है चाहें जैसा भी मैं अनुभव करूँ या परिस्थितियाँ कैसी भी क्यों न दिखें। परमेश्वर ने एक अच्छा कार्य मुझ में प्रारम्भ कर दिया है, और वह इस को अन्त तक पहुँचाएगा" (फिलिप्पियों 2:13; 1:6)।

इस प्रकार आप अपने वचन के हथियार का प्रयोग गढ़ों को ढा देने में कर सकते हैं। मैं आपसे अनुग्रह करती हूँ कि न केवल आप सही विचार करें परन्तु चिल्ला कर आप उन्हें स्वीकार भी करें।

याद रखें, परमेश्वर आपको धीरे धीरे छुड़ा रहा है, अतः निरूत्साहित न हों और धिक्कार का अनुभव न करें यदि आप से कोई गलती हो जाती है।

अपने आप में धीरज रखें!

अध्याय

5

सकारात्मक बनें

अध्याय
5

सकारात्मक बनें

> *...जैसा तेरा विश्वास है, वैसा ही तेरे लिये हो...*
>
> मत्ती 8:13

सकारात्मक मन सकारात्मक जीवन का निर्माण करता है। नकारात्मक मन नकारात्मक जीवन का निर्माण करता है। सकारात्मक विचार सदैव विश्वास और आशा से भरे होते हैं। नकारात्मक विचार सदैव भय और संदेह से भरे होते हैं।

कुछ लोग आशा करने में भयभीत होते हैं क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में चोट खाई है। बहुत बार वे निराशा का सामना कर चुके हैं और अब उन्हें नहीं लगता कि वे एक और दु:ख का सामना कर पाएँगे। इसी कारण उन्होंने आशा छोड़ दी है ताकि वे और निराश न हों।

इस प्रकार आशा को अलग कर चोट खाने से वे बचे रहते हैं। निराशा चोट पहुँचाती है। अतः बहुत से लोग चोट खाने से बचने के लिए आशा को अस्वीकार कर देते हैं वे यह विश्वास करते हैं कि उनके साथ कभी भी कुछ अच्छा नहीं होगा। इस प्रकार के व्यवहार से उनकी जीवन शैली नकारात्मक हो जाती है। प्रत्येक चीज़ नकारात्मक बन जाती हैं क्योंकि उनके विचार नकारात्मक हैं। नीतिवचन 23:7 **याद करिएः जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है...**

कई वर्षों पहले, मैं भी अत्याधिक नकारात्मक थी। मैं सदैव कहा करती थी यदि लगातार मैं दो सकारात्मक विचार सोचूँ तो मेरा मन पीड़ा में फँस जाएगा। मेरी सम्पूर्ण सोच कुछ इस प्रकार की थीः "यदि आप कुछ भी अच्छा घटने की आशा नहीं करते, तब आप बिल्कुल भी निराश नहीं होंगे जब ऐसा नहीं होगा।"

मैंने अपने जीवन में कई निराशाओं का सामना किया है—बहुत सी नष्ट भ्रष्ट करने वाली घटनाएँ मेरे साथ घटी हैं—मैं यह विश्वास करने में भयभीत हो जाती थी कि कुछ अच्छा भी हो सकता है। हर बात के लिए मेरा दृष्टिकोण बहुत ही नकारात्मक था। जैसे मेरे सारे विचार नकारात्मक थे वैसे ही मेरे बोल और मेरा जीवन भी था।

जब मैं वास्तव में वचन का अध्ययन करने लगी और परमेश्वर पर विश्वास करने लगी तब पहली बात जो मैंने सीखी वह यह कि मुझे नकारात्मक व्यवहार को छोड़ना होगा।

मत्ती 8:13 में यीशु हमें बताता है कि जैसा हम विश्वास करते हैं वैसा हमारे लिए हो जाएगा। **जो भी मैं विश्वास करती थी वह सब नकारात्मक था** इसी कारण बहुत सी नकारात्मक घटनाएँ मेरे साथ घटीं।

इसका यह अर्थ नहीं कि मैं और आप केवल सोचने के द्वारा हर एक वह वस्तु प्राप्त कर सकते हैं जिसे हम चाहते हैं। परमेश्वर के पास हम में से हर एक के लिए एक सिद्ध योजना है और हम अपने विचार और शब्दों द्वारा उसे अपने नियंत्रण में नहीं ले सकते। परन्तु हमारी सोच और बोल उसकी इच्छा और योजना के अनुरूप होने चाहिए जो उसने हमारे लिए ठहरा रखी है।

यदि आप को इसकी कल्पना नहीं कि परमेश्वर की इच्छा आप के लिए क्या है तब आप ऐसा सोच सकते हैं, "मैं परमेश्वर की योजना नहीं जानता, परन्तु यह जानता हूँ कि वह मुझ से प्रेम करता है। जो भी वह करता है अच्छा ही होगा और उससे मुझे आशीष मिलेगी।"

अपने जीवन के विषय में सकारात्मक ढंग से सोचना आरम्भ कर दें।

प्रत्येक परिस्थिति में सकारात्मक रहने का प्रयास करें। चाहें आप के जीवन में इस क्षण कुछ भी अच्छा न हो रहा हो परमेश्वर पर आशा रखें कि वह ऐसी परिस्थिति में भी कुछ भला ही ले कर आएगा जैसा कि उसने अपने वचन में प्रतिज्ञा की है।

सब बातें भलाई उत्पन्न करती हैं

हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।

रोमियों 8:28

पवित्र धर्मशास्त्र यह नहीं कहता कि सारी बातें भली हैं परन्तु कहता है कि सारी बातें *मिल कर भलाई उत्पन्न करती हैं।*

मान लीजिए आप बाजार जाने की योजना बना रहे हैं। आप मोटरकार में बैठ जाते हैं परन्तु वह स्टार्ट नहीं होती। इस परिस्थिति को आप दो तरीके से देख सकते हैं। आप कह सकते हैं, "मैं जानता था। यह कभी सफल नहीं होता। हर बार जब मैं कुछ करने की सोचता हूँ तब सब अव्यवस्थित हो जाता है। मुझे मालूम था कि यह बाज़ार जाने का कार्यक्रम एकाएक समाप्त हो जाएगा। मेरी सारी योजनाओं के साथ सदैव ऐसा ही होता है।" अथवा आप यह भी कह सकते हैं, "मैं बाज़ार जाना चाहता था, परन्तु ऐसा लगता है कि मैं अभी नहीं जा सकता। मैं थोड़ी देर के बाद चला जाऊँगा जब मोटरकार ठीक हो जाएगी। इस बीच मैं ऐसा विश्वास करता हूँ—कि इस कार्यक्रम का बदलना मेरे लिए कुछ अच्छा ही लाएगा। हो सकता है कोई कारण हो जिससे मुझे आज घर पर ही रहना हो, अतः अपना समय यहाँ अब मैं आनन्दपूर्वक बिता रहा हूँ।"

रोमियों 12:16 में प्रेरित पौलुस हमें बताता है कि हमें लोगों और चीज़ों के साथ सांमंजस्य बना कर रखना है। इसका अर्थ यह है कि हमें यह सीख लेना चाहिए कि हम उस व्यक्ति की भांति बन जाए जो योजनाएँ बनाता है परन्तु यदि वह योजनाएँ सफल न हों तो वह निराश भी नहीं होता।

अभी कुछ दिनों पहले इस नियम को अभ्यास में लाने का एक सुअवसर मुझे मिला था। डेव और मैं फ्लोरिडा में लेकवर्थ में थे। हम तीन दिन से वहाँ प्रभु की सेवकाई कर रहे थे और अब हम अपना सामान बांध रहे थे ताकि समय से हवाई अडड़े पहुँच जाएँ। मैने चुस्त पाजामा, ब्लाऊस और सपाट जूते पहनने का विचार कर रखा था ताकि मैं इस यात्रा को आराम के साथ पूरी करूँ।

मैं तैयार होना शुरू हुई परन्तु मुझे वह चुस्त पाजामा नहीं मिल सका। हमने सारी जगह उसे ढूँढा अन्त में वह अलमारी के बिलकुल नीचे मिला। वह हैंगर पर से गिर पड़ा था और बुरी तरह मुचड़ गया था हम अपने साथ प्रेस भी लाए थे और मैंने उस पाजामे को प्रेस के द्वारा ठीक करने का प्रयत्न किया। फिर मैंने पहन कर देखा परन्तु वह अच्छा नहीं लग रहा था। अब मेरे पास दूसरा चुनाव था ड्रेस और उसके साथ एड़ी वाला जूता।

ऐसी परिस्थिति में मैं यह अनुभव कर रही थी कि मेरी भावनाएँ बिगड़ती जा रही हैं। आप देख रहे हैं कि जो हम चाहते हैं वह हर समय हमें नहीं मिलता और तब हमारी भावनाएँ बदलने लगती हैं और हमारा व्यवहार नकारात्मक हो

जाता है। मैंने तुरन्त यह जान लिया कि मेरे पास एक चुनाव है। मैं चिड़चिड़ा सकती हूँ क्योंकि जिस प्रकार की मैंने योजना बनाई थी उस प्रकार यह घटनाएँ नहीं घट रही थीं अथवा मैं इस परिस्थिति से सांमजस्य स्थापित कर सकती हूँ और अपनी वापसी यात्रा का आनन्द उठा सकती हूँ।

सकारात्मक व्यक्ति के साथ भी ऐसा हो सकता है कि जैसा वह सोचता है वैसा घटित न हो। परन्तु सकारात्मक व्यक्ति स्वयं को उसी में आनन्दित रखता है चाहें जैसा भी क्यों न हो। नकारात्मक व्यक्ति किसी भी चीज़ में कभी भी आनन्दित नहीं होता।

नकारात्मक व्यक्ति किसी को भी अच्छा नहीं लगता। हर एक योजना के प्रति वह आशाहीन रहता है। वह एक कठिन मनुष्य प्रतीत होता है। वह चिड़चिड़ाता है दूसरों में दोष ढूँढता है। चाहें कितनी ही अच्छी बातें क्यों न हो रही हों वह उस में भी कुछ ऐसा ढूँढ निकालता है जो सबके लिए बाद में समस्या बन जाती है।

किसी समय मैं भी कभी इस नकरात्मकता की चरम सीमा पर थी, मैं एक ऐसे घर में गयी जो कि नया सजाया गया था, आस पास सुन्दर सुन्दर वस्तुओं की प्रशंसा करने के बदले मैं वहाँ एक ऐसा कोना ढूँढ रही थी जहाँ पर मुझे कुछ गन्दगी दिख जाए अथवा दीवार का पेपर कहीं ढीला दिख जाए। मैं अब बहुत प्रसन्न हूँ—कि यीशु ने मुझे जीवन में अच्छी वस्तुओं का आनन्द उठाने के लिए स्वतंत्र कर दिया है। अब मैं ऐसा विश्वास करती हूँ कि उसके ऊपर विश्वास और आशा रखने से बुरी बातें भी अच्छी बातों में बदल जाती हैं।

यदि आप एक नकारात्मक व्यक्ति हैं, *धिक्कार का अनुभव न करें।* धिक्कार नकारात्मक होता है। मैं आप से यह बातें बाँट रही हूँ। जिससे कि आप अपने नकारात्मकता की समस्या को पहचान जाएँ और परमेश्वर पर विश्वास रखें जो आप को इस समस्या से छुड़ाएगा।

स्वतंत्रता का मार्ग वहीं से आरम्भ होता है जब हम अपनी समस्या का सामना करते हैं और उससे डर कर भागते नहीं। मुझे विश्वास है यदि आप एक नकारात्मक व्यक्ति हैं तो इसका भी एक कारण है। परन्तु याद रखिये बाइबल के द्वारा मसीही होने के कारण, अब आप एक नए व्यक्ति हैं।

एक नया दिन!

इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है; पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं।

2 कुरिन्थियों 5:17

जब आप एक "नई सृष्टि" बन गए हैं, अब आप को वह सब पुरानी बातें जो यीशु में आप के नए जीवन को प्रभावित करती हैं, छोड़ देनी हैं। यीशु में नया जीवन पा कर आप एक नई सृष्टि बन गए हैं। परमेश्वर के वचन के अनुरूप आपको अपना मन नया करना है। आप के लिए भली बातें होंगी।

आनन्द करें! यह एक नया दिन है!

पवित्र आत्मा का कार्य

तौभी मैं तुम से सच कहता हूँ कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा; परन्तु यदि मैं जाऊँगा, तो उसे तुम्हारे पास भेजूँगा।

वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरूत्तर करेगा।

यूहन्ना 16:7–8

नकारात्मकता से स्वतंत्र होने में सबसे कठिन हिस्सा है सच्चाई का सामना करना और कहना, "मैं एक नकारात्मक व्यक्ति हूँ और मैं बदलना चाहता हूँ। मैं स्वयं नहीं बदल सकता, परन्तु मैं यह विश्वास करता हूँ–कि परमेश्वर मुझे बदलेगा यदि मैं उस पर विश्वास करूँ। मैं जानता हूँ इस में समय लगेगा और मैं स्वयं से निरूत्साहित नहीं होऊँगा। *परमेश्वर ने मुझ में एक अच्छा कार्य करना आरम्भ कर दिया है और वह इसे अन्त तक पहुँचाएगा"* (फिलिप्पियों 1:6)।

जब भी आप नकारात्मकता का अनुभव करें तब पवित्र आत्मा से कहें कि वह हर बार आप को दोषी ठहराए। यह उसके कार्य का एक हिस्सा है। यूहन्ना 16:7–8 हमें सिखाता है कि पवित्र आत्मा हमें पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में दोषी ठहराता है। जब आप स्वयं को दोषी मान लेते हैं तब परमेश्वर से अपने लिए सहायता माँगे। ऐसा न सोचें कि आप यह कार्य स्वयं कर सकते हैं। उस पर निर्भर रहें।

हांलाकि मैं अत्याधिक नकारात्मक थी, परमेश्वर ने मुझे सिखाया कि यदि मैं उस पर विश्वास करूँ तो वह मुझे सकारात्मक बना देगा। अपने मन को सकारात्मक ढंग से रखने के लिए मुझे अत्याधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। अब मुझे नकारात्मकता बिलकुल पसन्द नहीं। यह उस मनुष्य की तरह है जो धूम्रपान करता हो। कई बार जब एक धूम्रपान करने वाला मनुष्य धूम्रपान करना छोड़ दे फिर वह सिगरेट सहन नहीं कर सकता। मैं भी इसी प्रकार हो गयी हूँ। मैंने भी कई वर्षों तक धूम्रपान किया, परन्तु धूम्रपान छोड़ने के बाद अब मैं धुएं की गंध भी सहन नहीं कर सकती।

यही मेरे नकारात्मकता के साथ है। मैं एक अत्याधिक नकारात्मक व्यक्ति थी। और अब मुझे नकारात्मकता बिलकुल भी पसन्द नहीं, इसके प्रति मैं आक्रमणकारी बन जाती हूँ। जब से मुझे इस नकारात्मक मन से छुटकारा मिला है तब से मैंने अपने जीवन में कई भले बदलाव देखे हैं अब मैं हर एक नकारात्मक चीज़ का विरोध करती हूँ।

मैं वास्तविकता का सामना करती हूँ और आपको भी ऐसा करने के लिए उत्साहित करती हूँ। यदि आप अस्वस्थ हैं तो यह न कहिए, “मैं अस्वस्थ नहीं हूँ” क्योंकि यह–सत्य नहीं, परन्तु आप कह सकते हैं, “मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर मुझे चंगाई दे रहा है।” आप को यह नहीं कहना है, “मेरी दशा बिगड़ती जा रही है और लगता है अन्त में मुझे अस्पताल जाना होगा,” इसके बदले आप यह कह सकते हैं, “परमेश्वर की चंगाई की सामर्थ मुझे में कार्य कर रही है, मैं विश्वास करता हूँ कि मैं अब स्वस्थ हो जाऊँगा।”

हर एक चीज़ में सतुंलन होना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं कि आप अपने सकारात्मक व्यवहार के साथ थोड़ा सा नकारात्मक व्यवहार भी मिला लें, परन्तु इसका अर्थ यह है कि ‘‘एक तैयार’’ मन रखें जिससे आप सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों परिस्थितियों का सामना कर सकें।

एक तैयार मन

ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूँढते रहे कि ये बातें योंही हैं कि नहीं।

प्रेरितों 17:11

बाइबल कहती है कि हमें एक तैयार मन रखना है। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर की हमारे लिए जो भी इच्छा है, उसके लिए हमें अपना मन खुला रखना है।

उदाहरण, एक जवान महिला, जिसे मैं जानती हूँ, एक टूटे हुए सम्बंध के दुख का अनुभव कर रही थी। वह और जवान मनुष्य यह निर्णय कर चुके थे कि अभी वह विवाह नहीं करेंगे और वे प्रार्थना कर रहे थे कि परमेश्वर क्या हम आपस में मिलते रहें या नहीं। जवान महिला सम्बन्ध बनाए रखना चाहती थी और सोचती थी, विश्वास करती थी और आशा करती थी कि उसका मंगेतर भी ऐसा ही सोच रहा होगा।

मैंने उसे सलाह दी कि यदि बातें वैसी नहीं होतीं जैसा वह चाहती है उसके लिए वह अपना "मन तैयार" रखे। उसने कहा, "क्या यह नकारात्मक नहीं होगा?"

नहीं, बिलकुल नहीं!

नकारात्मकता तो वह है जब हम सोचें, "मेरा जीवन समाप्त हो गया है, मुझे अब कोई नहीं चाहेगा। मैं असफल हो गयी हूँ, अतः अब मैं सदैव के लिए नष्ट हो गयी हूँ।"

सकारात्मक मनुष्य कुछ ऐसा कहेगा, "मैं वास्तव में दुखी हूँ कि ऐसा हुआ, परन्तु मैं परमेश्वर पर विश्वास करती हूँ। मुझे आशा है कि मैं और मेरा मित्र अभी भी मिल सकते हैं। मैं आशा करती हूँ कि हमारा सम्बन्ध एक बार फिर ठीक हो जाएगा, परन्तु इन सब बातों में परमेश्वर की सिद्ध इच्छा पूरी हो। यदि सब बातें वैसी नहीं घटतीं जैसा मैं चाहती हूँ तब भी *मैं जिऊँगी,* क्योंकि यीशु मुझ में जीवित है। थोड़ी देर के लिए यह कठिन होगा परन्तु मुझे परमेश्वर पर विश्वास है। मुझे विश्वास है कि अन्त में सब भला ही होगा।"

इस प्रकार सकारात्मक होते हुए एक तैयार मन से आप तथ्यों का सामना कर सकते हैं।

यह ही सतुंलन है।

आशा का बल

उसने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया, इसलिये कि उस वचन के अनुसार कि "तेरा वंश ऐसा होगा", वह बहुत सी जातियों का पिता हो।

वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ।

और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की।

रोमियों 4:18–20

डेव और मैं विश्वास करते हैं कि हमारी सेवकाई मसीह की देह में प्रत्येक वर्ष बढ़ती जाएगी। हम सदैव अधिक से अधिक लोगों की सहायता करना चाहते हैं। परन्तु हम यह भी जानते हैं कि यदि परमेश्वर की कोई दूसरी योजना है, और वर्ष के अन्त में हमारी कुछ भी वृद्धि नहीं हुई है तब हम इस स्थिति को, अपना आनन्द नियंत्रित करने की अनुमति कभी नहीं देंगे।

हम अनेक चीज़ों के लिए विश्वास करते हैं, परन्तु इन सब के परे, हम किसी पर विश्वास भी करते हैं। वह 'किसी' यीशु है। हम प्रायः यह नहीं जानते कि क्या होने वाला है। हम केवल इतना जानते हैं कि इससे हमारे लिए सदैव अच्छा ही होगा!

जितना अधिक मैं और आप सकारात्मक बन जाते हैं, उतना ही अधिक हम यीशु के साथ बहते जाएँगे। परमेश्वर अवश्य ही सकारात्मक है और उसके साथ साथ बहने के लिए हमें भी सकारात्मक होना पड़ेगा।

आप की परिस्थितियाँ बुरी हो सकती हैं। आप सोच रहे होंगे, "जॉयस, यदि आप मेरी दशा जानतीं, तो आप मेरा सकारात्मक होने के विषय में आशा भी नहीं करतीं।"

मैं आपको रोमियों 4:18–20 पढ़ने के लिए उत्साहित करती हूँ जहाँ यह लिखा है कि अब्राहम ने अपने बूढ़े शरीर की दशा और सारा के गर्भ की मरी सी दशा पर विचार किया। शारीरिक तौर से कोई भी आशा की किरण नहीं थी परन्तु फिर भी उसे विश्वास में आशा थी।

एक नकारात्मक परिस्थिति के प्रति अब्राहाम बहुत ही सकारात्मक था।

इब्रानियों 6:19 हमें बताता है कि आशा प्राण का लंगर है। आशा वह बल है जो हमें परीक्षा के समय में दृढ़ रखता है। आशा कभी न छोड़ें। यदि आप आशा छोड़ देते हैं तो आप का जीवन अस्त व्यस्त हो जाएगा। यदि आप का जीवन अस्त व्यस्त है क्योंकि आप के पास कोई आशा नहीं तो आशा

करना आरम्भ करें। भयभीत न हों। मैं यह प्रतिज्ञा तो नहीं करती कि आप जैसा चाहेंगे वैसा ही घटित होगा। मैं यह प्रतिज्ञा नहीं कर सकती कि आप भी निराश नहीं होंगे। परन्तु निराशा के समय में भी आप आशा कर सकते हैं और सकारात्मक बने रहें। आप स्वयं को परमेश्वर के आश्चर्यकर्म वाले क्षेत्र में ले जाएँ।

अपने जीवन में आश्चर्यकर्म की आशा रखें।

अच्छी चीज़ों की आशा रखें!

पाने की आशा रखें

तौभी यहोवा इसलिये विलम्ब करता है कि तुम पर अनुग्रह करे, और इसलिये ऊँचे उठेगा कि तुम पर दया करे। क्योंकि यहोवा न्यायी परमेश्वर है; क्या ही धन्य हैं वे जो उस पर आशा लगाए रहते हैं।

यशायाह 30:18

पवित्र शास्त्र का यह खण्ड मेरा प्रिय खण्ड बन गया है। यदि आप इस पर मनन करेंगे, यह एक बड़ी आशा ले कर आएगा। इसमें परमेश्वर कह रहा है कि वह ऐसे व्यक्ति की खोज में है जो दयालु हो, परन्तु वह कटु स्वभाव वाला एवं नकारात्मक मन वाला व्यक्ति नहीं हो सकता। वह ऐसा होगा जो चाहता हो कि परमेश्वर उसके साथ भला करे।

बुराई की भविष्यवाणी

"बुराई की भविष्यवाणी" क्या है?

एक बार प्रातः परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने के बाद मैं बाथरूम में अपने बाल संवार रही थी तब मुझे ऐसा लगा कि मेरे आस पास के वातावरण में कुछ बुरा घटने वाला है। वास्तव में ऐसा अनुभव मुझे बहुत बार हुआ था।

मैंने परमेश्वर से पूछा, "यह कैसा अनुभव है जो मेरे साथ सदैव रहता है?"

"बुराई की भविष्यवाणी", उसने उत्तर दिया।

मुझे पता नहीं चला कि इसका अर्थ क्या था न मैंने पहले कभी ऐसा सुना था। थोड़ी ही देर के बाद मुझे नीतिवचन 15:15 **में यह पद मिला दुखियारे के**

सब दिन दुःख भरे रहते हैं, परन्तु जिसका मन प्रसन्न रहता है, वह मानो नित्य भोज में जाता है।

मैंने उस समय यह अनुभव किया कि बुरे विचार और भविष्यवाणियों से मेरा अधिकतर जीवन दुखित था। हाँ, मेरे सामने कठिन परिस्थितियाँ थीं, और अगर नहीं भी थीं तब भी मैं दुखी थी क्योंकि मेरे विचार मेरे दृष्टिकोण को ज़हरिला बना रहे थे और मेरे जीवन के आनन्द को छीन रहे थे।

अपनी जीभ को बुराई से दूर रखें!

क्योंकि "जो कोई जीवन की इच्छा रखता है, और अच्छे दिन देखना चाहता है, वह अपनी जीभ को बुराई से, और अपने होंठों को छल की बातें करने से रोके रहे..."

1 पतरस 3:10

यह पद स्पष्टरूप से हमें बताता है कि जीवन का आनन्द, अच्छे दिन देखना, एक सकारात्मक मन और बोल रखना यह सब आपस में जुड़े हुए हैं।

चाहे आप कितना भी नकारात्मक क्यों न हो और चाहें कितने दिनों से ऐसे हों, मैं जानती हूँ कि आप बदल सकते हैं क्योंकि मैं बदल गयी। इसमें समय लगा और पवित्र आत्मा की ढेर सी सहायता मिली।

आप के साथ भी ऐसा होगा।

जो भी हो परमेश्वर पर विश्वास रखें—और सकारात्मक बने रहें।

अध्याय

6

मन को जकड़नेवाली आत्माएँ

अध्याय 6

मन को जकड़नेवाली आत्माएँ

> *किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ।*
>
> *तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से सारी परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।*
>
> फिलिप्पियों 4:6–7

एक बार मैं परमेश्वर के साथ चलते हुए ऐसे स्थान पर पहुँच गयी जहाँ कुछ बातों पर विश्वास करने में मुझे बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ रहा था जबकि पहले उन ही बातों पर मैं विश्वास करती थी। मैं नहीं समझ पायी कि मुझे क्या हो गया है इसका परिणाम यह हुआ कि मैं पूरी तरह अव्यवस्थित हो गई। जितना अधिक समय तक मैं इस दुर्गति में रही उतना ही अधिक मैं अव्यवस्थित होती चली गई। मेरे अन्दर अविश्वास बहुत तीव्र गति से बढ़ रहा था। मैं अपनी बुलाहट पर प्रश्न करने लगी; मैंने सोचा कि परमेश्वर ने जो दर्शन मुझे मेरी सेवकाई के लिए दिखाया है उसे मैं खोती जा रही हूँ। मैं दुखी हो गई (अविश्वास सदैव दुख लाता है)।

दो दिन तक लगातार मैंने इन शब्दों को अपनी आत्मा द्वारा सुना, *"मन को जकड़नेवाली आत्माएँ।"* पहले दिन तो मैंने इस पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। परन्तु दूसरे दिन चार पाँच बार फिर मैंने *"मन को जकड़नेवाली आत्माएँ"* के बारे में सुना।

मैं उन सब लोगों के द्वारा जिनके मध्य मैंने सेवकाई का कार्य किया था यह जानती थी कि अधिकांश विश्वासी अपने मन के कारण समस्याओं का सामना करते हैं। मैंने सोचा कि पवित्र आत्मा मुझे उस आत्मा के विरूद्ध जिसका नाम है "मन को जकड़ना" मसीह की देह के लिए प्रार्थना करने की अगुवाई कर रहा है। अतः मैं यीशु के नाम में मन को जकड़नेवाली उन आत्माओं के विरूद्ध प्रार्थना करने लगी। अभी प्रार्थना करते हुए कुछ ही मिनिट हुए थे, मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरे स्वयं के मन में एक विशाल छुटकारा आ गया हो। यह सब बड़ा नाटकीय था।

मन को जकड़ने वाली आत्माओं से छुटकारा

प्रायः प्रत्येक छुटकारा जो परमेश्वर ने मुझे दिया है प्रगति करता जा रहा है और ऐसा परमेश्वर के वचन पर विश्वास करने के द्वारा होता है। यूहन्ना 8:31,32 और भजन संहिता 107:20 मेरी गवाही हैं। यूहन्ना 8:31,32 में यीशु कहता है... "**यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।**" भजन संहिता 107:20 परमेश्वर के विषय में यूँ कहता है, **वह अपने वचन के द्वारा उनको चंगा करता और जिस गड़हे में वे पड़े हैं, उससे निकालता है।**

परन्तु इस बार मैंने यह अनुभव किया और तुरन्त जान लिया कि मेरे मन में कुछ हुआ है। कुछ ही मिनिटों में मैं उन सभी बातों पर फिर से विश्वास करने लगी जिन बातों पर प्रार्थना से पूर्व विश्वास करने के लिए मुझे संघर्ष करना पड़ता था।

मैं आपको एक उदाहरण देती हूँ। मन को जकड़ने वाले शैतान के आक्रमण से पूर्व मैं विश्वास करती थी कि परमेश्वर के वचन के अनुसार, मेरे जीवन और मेरी सेवकाई में कोई अन्तर इस कारण नहीं होना चाहिए क्योंकि मैं फेन्टन मिसूरी की एक महिला हूँ जिसे कोई नहीं जानता था। (गलतियों 3:28)। जब परमेश्वर चाहता है वह द्वार खोल देता है। जिसे कोई बन्द नहीं कर सकता (प्रकाशित वाक्य 3:8) और मैं सारे विश्व में व्यवहारिक, छुटकारे वाले संदेश जो उसने मुझे दिए हैं सुनाऊँगी।

मैं विश्वास करती थी कि मुझे यह सुअवसर प्राप्त होगा कि मैं रेडियो पर सारे राष्ट्र को सुसमाचार सुनाऊँगी। पवित्र शास्त्र के द्वारा मैं यह जानती थी कि परमेश्वर दुर्बल और मूर्ख चीज़ों द्वारा बुद्धिमानों को व्यग्र कर देता है (1 कुरिन्थियों 1:27) मुझे विश्वास था कि परमेश्वर मुझे बीमारों को चंगाई देने के लिए इस्तेमाल करेगा। मुझे विश्वास था कि हमारे बच्चे सेवकाई के लिए इस्तेमाल किए जाएँगे। मैं विश्वास करती थी उन सब अद्‌भुत चीज़ों पर जिन्हें परमेश्वर ने मेरे हृदय में रख छोड़ा था।

लेकिन, जब मन को जकड़ने वाली आत्मा ने मुझ पर आक्रमण किया तो मुझे ऐसा लगा कि मैं वह सब कुछ जैसे भूल गई हूँ जिन पर मैं विश्वास करती

थी। मैं इस प्रकार सोचने लगी, “हाँ मैंने वह सब कुछ प्राप्त कर लिया है। मैं ऐसा इसलिए विश्वास करती थी क्योंकि मैं ऐसा ही चाहती थी, परन्तु संभवतः ऐसा नहीं होगा।” परन्तु जब आत्माएँ चली गयीं, तब फिर से विश्वास करने की मुझमें योग्यता वापस आ गयी।

विश्वास करने का निर्णय करें

इसी रीति से आत्मा (पवित्र) भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर, जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिये विनती करता है।

रोमियों 8:26

मसीही होने के नाते हमें विश्वास करने के लिए निर्णय करना सीखने की आवश्यकता है। परमेश्वर हमें उन चीजों के प्रति विश्वास (आत्मा का एक उत्पाद) देता है जिन्हें प्रायः हम अपने मन के अनुकूल नहीं पाते। हमारा मन प्रत्येक चीज़ में कब, क्यों और कहाँ कैसे ये जानना चाहता है। जब परमेश्वर द्वारा ऐसी समझ नहीं दी जाती है, तब मन ऐसी बातों पर विश्वास नहीं करता जिन्हें वह समझ नहीं सकता।

प्रायः ऐसा होता है, कि एक विश्वासी अपने हृदय (भीतरी मनुष्य) में तो किसी चीज़ के बारे में *जानता* है परन्तु उसका मन उस विषय के विरूद्ध लड़ाई छेड़ देता है।

मैंने बहुत पहले ही यह निर्णय ले लिया था कि जो कुछ वचन कहता है उस पर विश्वास करूँ और रिहमा (प्रकाशित वचन) जिसे परमेश्वर ने मुझे (जो बातें उसने मुझ से बोली हैं और जो प्रतिज्ञाएँ उसने मुझ से व्यक्तिगत रूप से की हैं) दिया है उस पर विश्वास करूँ, चाहें मैं उन के विषय में क्यों, कब और कहाँ न समझ पाई हूँ अथवा किस प्रकार यह मेरे जीवन में कार्य करेगा, तब भी उस पर विश्वास करूँ।

परन्तु यह बात जिस के लिए मैं संघर्ष कर रही थी कुछ भिन्न थी, यह निर्णय के बाहर थी। इन मन को जकड़ने वाली आत्माओं से मैं बंधी हुई थी और विश्वास नहीं कर पा रही थी।

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने पवित्र आत्मा द्वारा मुझे यह सिखाया कि किस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए, और उसकी सामर्थ मुझे मिली हांलाकि मैं यह नहीं जानती थी कि मैं अपने लिए प्रार्थना कर रही थी।

मुझे निश्चय है कि इस क्षण आप यह पुस्तक पढ़ रहे हैं क्योंकि आपकी अगुवाई की गयी थी। आप भी इस क्षेत्र में समस्याओं का सामना कर रहे होंगे। यदि हाँ, तो मैं आपको यीशु के नाम में प्रार्थना करने के लिए उत्साहित करती हूँ। उसके लहु की सामर्थ द्वारा "मन को जकड़नेवाली आत्माएँ" हराई जाएँगी। जब भी आप इस क्षेत्र में कठिनाइयों का अनुभव करें, इसी प्रकार प्रार्थना करें।

जब भी हम आगे बढ़ने का प्रयत्न करते हैं शैतान अपने तीरों की बौछार हम पर करता है। अपने विश्वास की ढाल को उठा लें और याद करें याकूब 1:2–8 जो हमें सिखाता है कि हम परीक्षा में परमेश्वर से बुद्धि माँग सकते हैं और वह हमें बुद्धि देगा और हमें दिखाएगा कि हमें क्या करना है।

मेरे साथ एक समस्या थी, मैंने कभी ऐसे तीर का सामना पहले नहीं किया था। परन्तु परमेश्वर ने मुझे प्रार्थना करना सिखाया और मैं स्वतंत्र हो गयी।

आप के साथ भी ऐसा ही होगा।

अध्याय

7

जो आप सोच रहे हैं उसके विषय में सोचें

जो आप सोच रहे हैं उसके विषय में सोचें

अध्याय 7

मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूँगा, और तेरे मार्गों की ओर दृष्टि रखूँगा।

भजन संहिता 119:15

परमेश्वर का वचन हमें सिखाता है कि हम अपना समय किस प्रकार सोचने में व्यतीत करें।

भजन संहिता के लिखने वाले ने कहा है कि वह परमेश्वर के उपदेशों पर ध्यान लगाता है। इसका अर्थ है कि परमेश्वर के मार्गों पर उसके उपदेशों पर और उसकी शिक्षाओं पर सोचने और उनका मनन करने में वह अपना अधिकांश समय व्यतीत करता है। भजन संहिता 1:3 कहता है कि वह व्यक्ति जो ऐसा करता है, वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है। **और अपनी ॠतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिये जो कुछ वह पुरूष करे वह सफल होता है।**

परमेश्वर के वचन के बारे में विचार करना अति लाभप्रद है। जितना अधिक समय कोई व्यक्ति वचन पर ध्यान करने में लगाता है, उतना ही अधिक वचन में से वह फसल काटता है।

आप क्या सोचते है इसके प्रति आप सावधान रहें!

चौकस रहो कि क्या सुनते हो! जिस नाप (विचार और अध्ययन का) से तुम नापते हो (सच्चाई जो तुम सुनते हो) उसी से तुम्हारे लिये भी नापा (गुण और बुद्धि) जाएगा, और तुम को अधिक दिया जाएगा।

मरकुस 4:24

कितना अद्‌भुत वचन है! यह हमें बताता है कि जितना अधिक समय हम परमेश्वर के वचन को पढ़ने, सुनने और उस पर विचार करने में लगाते हैं उतना ही अधिक, उसे करने के लिए, हमें सामर्थ और योग्यता मिल जाती है। जो हमने पढ़ा और सुना है उसे समझने के लिए उतना ही अधिक ज्ञान हमें

मिल जाता है। मूल बात यह है कि जितना अधिक हम परमेश्वर के वचन पर ध्यान देंगे उतना ही अधिक उस से हमें प्राप्त होगा।

इस प्रतिज्ञा की ओर विशेष रूप से ध्यान दें कि सद्‌गुण और ज्ञान जो हमें प्राप्त होता है वह इस बात पर निर्भर है कि परमेश्वर के वचन का कितना अध्ययन और मनन हम करते हैं।

वाइन का बाइबल के शब्दों का शब्दकोष कहता है कि किंग जेम्स अनुवाद में ग्रीक शब्द ड्यूनामिस जिसका अर्थ है "शक्ति" का अनुवाद "सद्‌गुण"[1] किया गया है। स्ट्रोंग की बाइबल की संदर्भ तालिका के अनुसार ड्यूनामिस का अनुवाद है "योग्यता।"[2] अधिकांश लोग परमेश्वर के वचन में इतनी गहराई तक नहीं जाते। परिणाम स्वरूप वे यह समझ नहीं पाते कि वे शक्तिशाली मसीही के रूप में विजयी जीवन क्यों नहीं जी पा रहे हैं।

सच्चाई यह है कि अधिकांश लोग वचन के अध्ययन में उतना प्रयत्न नहीं करते जितना करना चाहिए। वे बाहर जा कर अन्य लोगों से वचन सुनते हैं। वे प्रचार के टेप तो सुनते हैं और कभी कभी बाइबल भी पढ़ लेते हैं, परन्तु वचन को अपने जीवन का एक हिस्सा बना लेने के लिए पूरी तरह से समर्पित नहीं हैं, और न ही इस विषय पर कभी विचार करते हैं।

शरीर मूलतः आलसी होता है और अधिकांश लोग कुछ नहीं में से भी कुछ चाहते हैं (बिना प्रयत्न के) वास्तव में इस तरीके से यह कार्य नहीं हो सकता है। मैं फिर से कहती हूँ कि एक व्यक्ति को वचन में से वही मिलेगा जैसा वह उस में रखने के लिए इच्छुक है।

वचन पर ध्यान लगाएँ

क्या ही धन्य (आनन्दित, भाग्यशाली, समृद्ध और ईर्ष्या उत्पन्न करने योग्य) है वह पुरूष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता; और न ठट्ठा करनेवालों की मण्डली में बैठता है।

परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है।

भजन संहिता 1:1–2

वेबसटर के अनुसार *ध्यान* शब्द का अर्थ है 1. चिन्तन करना 2. योजना बनाना अथवा मन में इच्छा करना...गम्भीर विचारों में "डूब जाना[3] *बाइबल के शब्दों का वाईन का शब्दकोष* कहता है कि *ध्यान* का अर्थ है चिन्ता करना, अभ्यास करना, परिश्रमी होना, चिन्तन करना, कल्पना करना कार्य करने के पूर्व विचार कर लेना[4]।"

नीतिवचन 4:20 कहता है, **हे मेरे पुत्र, मेरे वचन ध्यान धरके सुन, और अपना कान मेरी बातों पर लगा।** यदि हम नीतिवचन 4:20 और शब्द *ध्यान* की परिभाषाओं को मिला दें तो हम देखते हैं कि परमेश्वर के वचन पर ध्यान देने का अर्थ है चिन्तन करना, अभ्यास करना और अपने मन में गम्भीरता से विचार करना। मुख्य बात यह है कि यदि हम वह करना चाहते हैं जो परमेश्वर का वचन कहता है, तब हमें उस पर विचार करने के लिए समय व्यतीत करना होगा।

पुरानी कहावत याद कीजिए "अभ्यास से ही मनुष्य सिद्ध बनता है"? हम अपने जीवन के किसी भी क्षेत्र में बिना अभ्यास के प्रवीण नहीं हो सकते; तो क्यों हम मसीही धर्म को भिन्न होने की आशा करते हैं?

ध्यान लगाने से सफलता का निर्माण होता है

> **व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिये कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।**
>
> **यहोशू 1:8**

यदि आप अपने कार्यों में सफल और समृद्ध होना चाहते हैं तो बाइबल कहती है कि आप को परमेश्वर के वचन पर दिन रात ध्यान देना चाहिए।

परमेश्वर के वचन पर मनन करने में आप कितना समय व्यतीत करते हैं? यदि आप अपने जीवन के किसी क्षेत्र में समस्याओं का सामना कर रहे हैं तो इस प्रश्न का ईमानदारी से दिया गया उत्तर उसका कारण बता देगा कि क्यों।

अपने जीवन के अधिकांश वर्षों में मैंने उस बारे में नहीं सोचा कि मैं क्या सोच रही थी। मैंने केवल वही सोचा जो मेरे मस्तिष्क में आया। मुझे यह मालूम नहीं था कि शैतान मेरे मन में विचार डाल सकता है। मेरे मस्तिष्क में या तो

झूठ भरा हुआ था जिसे शैतान ने मुझे बताया था अथवा मूर्खतापूर्ण बातें थीं जिन पर विचार करना अपना समय नष्ट करना था। शैतान मेरे जीवन को नियंत्रित कर रहा था क्योंकि वह मेरे विचारों को नियंत्रित कर रहा था।

जो आप सोच रहे हैं उस पर विचार करें!

इनमें हम भी सब के सब पहले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर और मन की इच्छाएँ पूरी करते थे, और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे।

इफिसियों 2:3

पौलुस हमें यहाँ चेतावनी देता है कि हमें शरीर की लालसाओं में जीवन नही बिताना है, अथवा मन की इच्छाएँ पूरी नहीं करना है, शारीरिक मन के विचार नहीं रखने हैं।

हांलाकि मैं एक मसीही थी फिर भी मैंने अपने विचारों पर नियंत्रण रखना नही सीखा था और इस कारण मैं समस्याओं में घिरी हुई थी। मैं उन चीज़ों के विषय में सोचती रहती थी जिससे मेरा मन व्यस्त रहे परन्तु वे सकारात्मक प्रभाव नहीं ला रहे थे।

मुझे अपने सोचने के तरीके को बदलने की आवश्यकता थी।

एक बात जो परमेश्वर ने मुझे मन की युद्धभूमि के विषय में बतायी उससे मेरे जीवन में एक मोड़ आया। उसने कहा, "तुम क्या सोच रही हो इसके विषय में सोचो।" जब मैंने ऐसा करना आरम्भ किया तब मुझे शीघ्र ही समझ में आ गया कि मैं अपने जीवन में इतनी अधिक समस्याओं से क्यों घिरी हुई थी।

मेरा मन अस्तव्यस्त था!

मैं गलत चीज़ों के विषय में सोच रही थी।

मैं गिरजे गयी और कई वर्षों से ऐसा कर रही थी परन्तु जो मैं सुनती थी उस पर कभी विचार नहीं किया था। यह एक कान से प्रवेश कर दूसरे कान से निकल जाता था। मैं प्रत्येक दिन पवित्र शास्त्र पढ़ा करती थी, परन्तु जो पढ़ती थी उस पर विचार नहीं करती थी। मैं वचन पर ध्यान नहीं दे रही थी। मैं जो सुन रही थी उस पर विचार और मनन नहीं कर रही थी। इसी कारण मेरे भीतर ज्ञान और सद्‌गुण का विकास नहीं हो रहा था।

परमेश्वर के कार्यों पर मनन कीजिए

हे परमेश्वर हम ने तेरे मन्दिर के भीतर तेरी करूणा पर ध्यान किया है।
भजन संहिता 48:9

दाऊद ने कई बार परमेश्वर के अद्‌भुत कार्यों पर ध्यान देने के लिए कहा–परमेश्वर के विशाल कार्य। उसने कहा कि वह परमेश्वर के नाम, उसकी करूणा और अन्य बातों के विषय में सोचता था।

जब वह उदासीनता का अनुभव कर रहा था, तब उसने भजन संहिता 143:4,5 में लिखा :

मेरी आत्मा भीतर से व्याकुल हो रही है; मेरा मन विकल है। मुझे प्राचीनकाल के दिन स्मरण आते हैं, मैं तेरे सब अद्‌भुत कामों पर ध्यान करता हूँ, और तेरे काम को सोचता हूँ।

इन पदों में हम देखते हैं कि दाऊद ने अपनी व्याकुलता और खिन्नता की समस्या पर ध्यान नहीं लगाया परन्तु इसके विपरीत बीते हुए दिनों के अच्छे समय को याद किया, परमेश्वर के कार्यों पर मनन किया। दूसरे शब्दों में उसने अच्छी बातों पर विचार किया और इस कारण उसकी व्याकुलता समाप्त हो गयी।

इसे कभी न भूलें–*आपकी विजय में आपके मन का एक महत्वपूर्ण योगदान है।*

मैं जानती हूँ कि हमारे जीवन में विजय केवल परमेश्वर के वचन से पवित्र आत्मा की सामर्थ के कार्य से ही आती है। परन्तु इस कार्य का एक बहुत बड़ा हिस्सा हमें करना है। परमेश्वर और वचन के अनुसार सोच कर हम ऐसा कर सकते हैं। यदि हम ऐसा नहीं करते तो हम कभी भी विजयी नहीं होंगे।

मन के नया हो जाने से बदलते जाइए

इस संसार (वर्तमान युग) के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।
रोमियों 12:2

इस खण्ड में प्ररित पौलुस कह रहा है कि यदि हम अपने जीवन में परमेश्वर की भली और सिद्ध इच्छा देखना चाहते हैं तो हमें अपना मन नया करना

होगा। कैसा नया? परमेश्वर के तरीके से सोचने के लिए नया। इस नए तरीके से सोचने के कारण हम बदलते जाएँगे, जैसा परमेश्वर हमें चाहता है। यीशु ने अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा हमारे बदल जाने की संभावना का मार्ग खोल दिया। मन के नया हो जाने की प्रक्रिया द्वारा यह बात हमारे जीवन में सत्य बन जाती है।

अव्यवस्था को दूर रखने के लिए मुझे यह कहना है कि, सही तरह से सोचने का उद्धार से कोई लेना देना नहीं। उद्धार केवल यीशु के लहु, क्रूस पर उसकी मृत्यु और उसके पुनरूत्थान से सम्बन्ध रखता है। बहुत से लोग आज स्वर्ग में होंगे क्योंकि उन्होंने यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता करके ग्रहण किया है परन्तु इन में से अधिकांश लोगों ने विजय का अनुभव नहीं किया होगा अथवा परमेश्वर ने उनके जीवन के लिए जो अच्छी योजना बनायी थी उसका आनन्द नहीं उठाया होगा क्योंकि उन्होंने अपना मन उसके वचन के अनुसार नया नहीं किया था।

कई वर्षों तक, मैं भी उन मनुष्यों में से एक थी। मेरा नये सिरे से जन्म हो चुका था। मैं स्वर्ग जा रही थी। मैं गिरजे जाती थी और एक धर्म का अनुसरण कर रही थी परन्तु मेरे जीवन में विजय नहीं थी। इस का कारण यह था कि मैं गलत बातों पर विचार किया करती थी।

इन बातों पर विचार करें।

इसलिए, हे भाइयो, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, अर्थात, जो भी सद्‌गुण और प्रशंसा की बातें हैं उनपर पर ध्यान लगाया करो।

फिलिप्पियों 4:8

किन किन बातों पर हमें विचार करना चाहिए इस विषय पर बाइबल हमें विस्तारपूर्वक निर्देश देती है। मुझे यह निश्चय है कि आप पवित्र शास्त्र के इन पदों में देख सकते हैं कि हमें अच्छी बातों के बारे में और उन चीज़ों के बारे में जिनसे हमारा उत्थान होता है, पतन नहीं, सोचने के निर्देश दिए गए हैं।

हमारे विचार, हमारे व्यवहार और हमारी मनोवृत्ति को प्रभावित करते हैं। हर एक बात जो परमेश्वर हमें बताता है वह हमारे भले के लिए ही है। वह

जानता है कि किस बात से हम आनन्दित होंगे और किस बात से दुखी। जब एक व्यक्ति बुरे विचारों से भरा होता है तो वह दुखी होता है और मैंने अपने व्यक्तिगत अनुभव से यह सीखा है कि यदि कोई व्यक्ति दुखी है तो वह दूसरों को भी दुखी कर देता है।

आप को नियमानुसार सूची बनानी चाहिए और स्वयं से यह पूछना चाहिए, "मैं क्या सोच रहा हूँ?" कुछ समय आप अपने 'विचार जीवन' का परीक्षण करें।

आप क्या विचार कर रहे हैं इस के बारे में सोचना बहुत मूल्यवान है क्योंकि शैतान प्रायः लोगों को धोखा देता है और वह ऐसा सोचने लगते हैं कि उनकी समस्याओं और दुख का कारण कुछ और है जबकि वास्तविक कारण कुछ और होता है। वह चाहता है कि वे इस प्रकार सोचें कि जो उनके आस पास घटित हो रहा है उसी के कारण वह दुखी हैं परन्तु जो उनके भीतर हो रहा है (उनके विचार) उसके कारण वे दुखी हैं।

कई वर्षों तक मैं ऐसा विश्वास करती थी कि मैं यदि दुखी हूँ तो दूसरे लोगों के कार्यों के कारण दुखी हूँ। मैं अपने दुख के लिए अपने पति और अपने बच्चों को दोषी ठहराती थी। यदि वे भिन्न होते, यदि वे मेरी आवश्यकताओं पर ध्यान देते, यदि वे घर के कार्यों में और अधिक हाथ बंटाते तो मैं अधिक सुखी होती। मैं ऐसा सोचती थी। फिर मैंने सत्य का सामना किया और जाना कि इन में से कोई भी बात मुझे दुखी नहीं बनाती यदि मैं ठीक व्यवहार रखूँ। मेरे विचार ही मुझे दुखी बनाए हुए थे।

मैं फिर आप से कहती हूँ कि *आप क्या सोच रहे हैं इस पर विचार कीजिए।* आप को अपनी कुछ समस्याओं का समाधान मिल जाएगा और आप स्वतंत्रता के मार्ग पर चलने लगेंगे।

भाग II

मन की स्थितियाँ

प्रस्तावना

> *...परन्तु हम में मसीह का मन है...*
>
> 1 कुरिन्थियों 2:16

आप के मन की स्थिति क्या है ?

क्या आपने इस बात को पहचाना कि आपके मन की दशा बदलती है? हो सकता है किसी समय आप शान्त हों और कभी चिन्तित। अथवा आपने कोई निर्णय कर लिया हो और इसके प्रति आप निश्चित हों और बाद में आपका मन एक अव्यवस्थित दशा में आ जाता है उन चीज़ों के प्रति जिन के बारे में पहले आप बिलकुल स्पष्ट और निश्चित थे।

मेरे जीवन में भी कई बार ऐसा समय आया जब मैंने इन बातों का अनुभव किया। कभी ऐसा प्रतीत होता था कि बिना किसी समस्या के मैं परमेश्वर पर विश्वास करती हूँ फिर संदेह और अविश्वास बर्बरतापूर्ण ढंग से मुझे सताते थे।

क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि मन भिन्न भिन्न दशाओं में रह सकता है, मुझे आश्चर्य होता था कि कब मेरा मन सामान्य रह पाएगा? मैं यह जानना चाहती थी कि सामान्य रहना क्या है ताकि जब असामान्य विचार मेरे पास आएँ तब मैं तुरन्त उन से निपटना सीख सकूँ।

उदाहरणार्थ, एक विश्वासी के लिए समालोचक, संदेहपूर्ण, दण्डनीय मन असामान्य समझा जाना चाहिए। फिर भी मेरे जीवन का एक मुख्य अंश मेरे लिए तो सामान्य ही था—हांलाकि ऐसा नहीं होना चाहिए था। इसकी मैं आदी हो चुकी थी मेरे विचार गलत थे जिससे मेरे जीवन में बहुत सी समस्याएँ थी, मुझे यह नहीं मालूम था कि मेरी सोच में कुछ गलती थी।

मैं यह नहीं जानती थी कि मैं अपने 'विचार जीवन' के प्रति कुछ भी कर सकती हूँ। मैं एक विश्वासी थी और कई वर्षों से थी परन्तु मुझे अपने 'विचार जीवन' के बारे में कोई जानकारी नहीं थी अथवा एक विश्वासी के मन की उचित दशा के विषय में भी कुछ नहीं जानती थी।

हमारे के अनुभव के साथ हमारे मनों का नया जन्म नहीं हुआ है इन्हें नया बनाना है (रोमियों 12:2)। जैसा कि मैंने कई बार कहा है कि मन का नया

होना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें समय लगता है। जब आप इस पुस्तक का अगला भाग पढ़ेंगे और आप को जब यह पता चल जाएगा कि अधिकांश समय आपका मन असामान्य अवस्था में उस व्यक्ति के लिए रहता है जिसने यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता मान रखा है तब आप तनिक भी विचलित न हों। समस्या को पहचानना ही उसके सामाधान का प्रथम कदम होता है।

कई वर्षों पूर्व मैं परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्धों के प्रति अत्याधिक गम्भीर थी और तब ही से उसने मुझे बताया कि मेरी समस्याओं की जड़ मेरा गलत ढंग से सोचना ही है। मेरा मन अव्यवस्थित था। मुझे संदेह था कि जैसा इस को होना चाहिए क्या अब कभी वैसा हो पाएगा—और यदि हो भी गया तो अधिक दिनों तक वैसा नहीं रह पाएगा।

मैं यह सोचकर विचलित हो गयी कि मैं गलत विचारों के नशे में फंस चुकी हूँ। मैं इन गलत विचारों को हटाने का प्रयत्न करती थी परन्तु वे फिर मेरे मन में आ जाते थे। परन्तु अंश अंश करके मुझे इन से छुटकारा और स्वतंत्रता मिल गयी।

आपके मन के नया हो जाने के विरूद्ध शैतान आक्रमणकारी का रवैया अपनाएगा परन्तु आप प्रार्थना और इस विषय का अध्ययन तब तक करते रहें जब तक आप विजय का अनुभव न करने लगें।

आपका मन सामान्य कब होता है? क्या इसको हर जगह घूमते रहना है अथवा जो आप कर रहे हैं उसी पर इसे अपना ध्यान लगाना है? क्या आप विचलित और अव्यवस्थित होना चाहेंगे अथवा शान्त हो कर उस दिशा की ओर ध्यान लगाएँगे जिसे आप अपने जीवन में देखना चाहते हैं। क्या आपका मन संदेह और अविश्वास से भरा होना चाहिए, क्या आप चिन्तित और भयभीत होने चाहिए। अथवा परमेश्वर की सन्तान होने के कारण अपनी सारी चिन्ताएँ उस पर डाल देनी चाहिए (1 पतरस 5:7)?

परमेश्वर का वचन हमें सिखाता है कि हमारे पास मसीह का मन है। आप क्या सोचते हैं उसका मन कैसा था जब वह इस पृथ्वी पर था—न केवल परमेश्वर के पुत्र की तरह परन्तु मनुष्य के पुत्र की तरह भी?

प्रार्थना के भाव में *मन की युद्धभूमि* के अगले भाग में जाइए। मैं विश्वास करती हूँ कि इससे आप की आँखें खुल जाएँगी और आप सामान्य और असामान्य मनों को पहचान जाएँगे जो कि यीशु के शिष्य के लिए आवश्यक है जिसने विजय में चलने का निर्णय ले लिया हो।

अध्याय
8
मेरा मन सामान्य कब होता है?

मेरा मन सामान्य कब होता है? *अध्याय* 8

यहाँ यह ध्यान दें कि पौलुस प्रार्थना करता है कि आप की और मेरी "हृदय की आँखें" खुल जाएँ जिससे हमें ज्ञान प्राप्त हो जाए। कई चीज़ों का अध्ययन करने के उपरान्त मैं "हृदय की आँखों" को मन मानती हूँ।

कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पहचान में ज्ञान और प्रकाश की आत्मा दे,

और तुम्हारे मन की आँखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि उसकी बुलाहट की आशा क्या है, और पवित्र लोगों में उसकी मीरास की महिमा का धन कैसा है।

इफिसियों 1:17,18

मसीही होने के नाते, हमारा मन किस दशा में होना चाहिए? दूसरे शब्दों में एक विश्वासी के मन की सामान्य दशा कैसी होनी चाहिए? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए हमें मन और आत्मा के विभिन्न कार्यों को देखना होगा।

परमेश्वर के वचन के अनुसार मन और आत्मा एक साथ कार्य करते हैं: इसको मैं "मन के द्वारा आत्मा की सहायता करना" का सिद्धान्त मानती हूँ।

इस सिद्धांत को ठीक तरह से समझने के लिए हम यह देखेंगे कि एक विश्वासी के जीवन में यह किस प्रकार कार्य करता है।

मन—आत्मा का सिद्धान्त

मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की आत्मा जो उसमें है? वैसे ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा।

1 कुरिन्थियों 2:11

जब एक व्यक्ति मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता कर के ग्रहण करता है तब पवित्र आत्मा उस में वास करने आ जाता है। बाइबल हमें सिखाती है कि पवित्र आत्मा परमेश्वर का मन जानता है। जिस प्रकार से किसी व्यक्ति के

विचारों को केवल उसका आत्मा जो उसके अन्दर है, जानता है, उसी प्रकार परमेश्वर के मन को केवल परमेश्वर का आत्मा ही जानता है।

क्योंकि पवित्र आत्मा हमारे अन्दर वास करता है, और क्योंकि वह परमेश्वर का मन जानता है अतः उसका एक उद्धेश्य यह है कि वह हमें परमेश्वर के ज्ञान और उसके प्रगटीकरण के बारे में बताता है। यह ज्ञान और प्रगटीकरण हमारे आत्मा को मिल जाता है और हमारा आत्मा हमारे हृदय की आँखों को खोल देता है जो कि हमारा मन है। यह सब पवित्र आत्मा करता है अतः हम व्यवहारिक स्तर पर समझ सकते हैं कि आत्मिक तौर से हमें क्या मिला है।

सामान्य अथवा असामान्य?

विश्वासी होने के नाते हम आत्मिक हैं एवं हम शारीरिक भी हैं। शारीरिक, आत्मिक को नहीं समझ पाता है। अतः यह अति आवश्यक है कि हमारे मन प्रकाशित हो जाएँ और हम इस बात को जान लें कि हमारी आत्मा में क्या हो रहा है। पवित्रआत्मा हमें प्रकाशित करता है, *परन्तु मन बहुधा उसे समझ नहीं पाता जो आत्मा हमें बताना चाहता है। क्योंकि वह अत्याधिक व्यस्त रहता है।* अत्याधिक व्यस्त मन असामान्य होता है। मन जब विश्राम की दशा में होता है तब वह सामान्य होता है—रिक्त नहीं परन्तु विश्राम में।

मन चिन्ता, भय, तर्क आदि से भरा हुआ नहीं होना चाहिए। यह शान्त, प्रसन्न और स्थिर होना चाहिए। जब हम इस पुस्तक के दूसरे भाग में जाते हैं तो हम मन की कई असामान्य अवस्थाओं का निरीक्षण करेंगे और हम पाएँगे कि यह अवस्थाऐं हमारे स्वयं के मन की ही हैं।

यह समझना अति आवश्यक है कि मन को सामान्य अवस्था में रखना आवश्यक है जैसा कि इस अध्याय में वर्णित है। अपने मन की अवस्थाओं से इस की तुलना कीजिए और तब आप देखेंगे कि पवित्र आत्मा द्वारा बहुत थोड़ा हमें क्यों दर्शाया गया है और क्यों हम बुद्धि और दर्शन की कमी का अनुभव करते हैं।

याद करें, पवित्र आत्मा एक विश्वासी के मन को प्रकाशित करता है। पवित्र आत्मा परमेश्वर की सूचनाओं को व्यक्ति की आत्मा तक पहुँचाता है और यदि उसका मन और आत्मा एक दूसरे की सहायता कर रहे हैं तब वह दैवीय ज्ञान और सत्य प्रगटन में चल सकता है। परन्तु यदि उसका मन अत्याधिक व्यस्त

है वह इस बात को नहीं जान पाएगा जो परमेश्वर उसे उसकी आत्मा द्वारा बताने का प्रयत्न कर रहा है।

धीमा शब्द

उसने कहा, "निकलकर यहोवा के सम्मुख पर्वत पर खड़ा हो।" और यहोवा पास से होकर चला, और यहोवा के सामने एक बड़ी प्रचण्ड आँधी से पहाड़ फटने और चट्टानें टूटने लगीं, तौभी यहोवा उस आँधी में न था; फिर आँधी के बाद भूकम्प हुआ, तौभी यहोवा उस भूकम्प में न था।

फिर भूकम्प के बाद आग दिखाई दी, तौभी यहोवा उस आग में न था; फिर आग के बाद एक दबा हुआ धीमा शब्द सुनाई दिया।

1 राजा 19:11-12

बहुत वर्षों तक मैंने परमेश्वर से प्रार्थना की, थी कि पवित्र आत्मा द्वारा जो मेरे अन्दर वास करता है, मुझ पर अपने सत्य को प्रगट कर। मैं जानती थी कि यह प्रार्थना पवित्र शास्त्रीय थी। मैं वचन पर विश्वास करती थी और मुझे निश्चय था कि मैं जो माँगूगी मुझे प्राप्त होगा। फिर भी अधिकांश समय मुझे ऐसा प्रतीत होता था जैसे मैं "आत्मिक मूर्ख" हूँ। तब मैंने यह सीखा कि पवित्र आत्मा जो कुछ भी मुझ पर प्रगट करना चाहता है उसे मैं ग्रहण नहीं कर पा रही थी क्योंकि मेरा मन अत्याधिक व्यस्त और जंगली था।

कल्पना कीजिए कि किसी कमरे में दो मनुष्य हैं। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को धीमे शब्दों में कोई रहस्य बताने का प्रयत्न कर रहा है। यदि उस कमरे में कोई तीव्र ध्वनि भरी हुई है तो वह मनुष्य उस संदेश को नहीं सुन पाएगा जबकि संदेश सुना दिया गया है। जब तक वह ध्यान से नहीं सुनेगा वह उस संदेश को नहीं सुन पाएगा।

परमेश्वर की आत्मा और हमारी आत्मा का बातचीत करने का भी यह ही तरीका है। पवित्र आत्मा मृदु भाषी है। अधिकांश समय में वह हमसे उसी प्रकार बात करता है जिस प्रकार वह भविष्यवक्ता से बोला था—एक "धीमे शब्द" के द्वारा। अतः यह अति आवश्यक है कि हम स्वयं को उस दशा में रखना सीख जाएँ जिस दशा में हम उसका शब्द सुन सकें।

आत्मा और मन

अतः क्या करना चाहिए? मैं आत्मा (पवित्र आत्मा जो मेरे अन्दर है) से भी प्रार्थना करूँगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूँगा...

1 कुरिन्थियों 14:15

"मन के द्वारा आत्मा की सहायता" सिद्धान्त को समझने का सबसे अच्छा तरीका है प्रार्थना के विषय में सोचना। इस पद में प्रेरित पौलुस ने कहा है कि वह आत्मा और बुद्धि दोनों से प्रार्थना करता है।

मैं समझती हूँ कि पौलुस क्या कह रहा है क्योंकि मैं भी ऐसा ही करती हूँ। मैं प्रायः आत्मा (अपरिचित भाषा में) में प्रार्थना करती हूँ थोड़ी देर जब मैं इस प्रकार प्रार्थना कर लेती हूँ तब मेरे मन में विचार आता है कि अब अंग्रेजी (मेरी परिचित भाषा) में प्रार्थना करूँ। मैं विश्वास करती हूँ कि इस प्रकार मन आत्मा की सहायता करता है। वे दोनों मिल कर कार्य करते हैं ताकि मुझे परमेश्वर का ज्ञान और बुद्धि मिल जाए ताकि मैं इसको भली प्रकार समझ सकूँ।

कभी कभी इसका विपरीत भी हो जाता है। कई बार ऐसा होता है जब मैं प्रार्थना करना चाहती हूँ और स्वयं को परमेश्वर के सम्मुख रख देती हूँ। यदि मेरी आत्मा में कोई विशेष तनाव नहीं है तब मैं अपने मन से प्रार्थना करना प्रारम्भ करती हूँ। मैं परिस्थितियों और कुछ मुद्दों के लिए जिन्हें मैं जानती हूँ प्रार्थना करती हूँ। कभी कभी यह प्रार्थनाएँ अरोचक प्रतीत होती हैं—मेरी आत्मा द्वारा कोई सहायता नहीं मिलती। मुझे संघर्ष करना पड़ता है अतः मैं दूसरे विषय पर चली जाती हूँ जिसे मैं पहले से ही जानती हूँ।

मैं ऐसा करती रहती हूँ जब तक पवित्र आत्मा जो मेरे अन्दर है मेरे साथ किसी मुद्दे को नहीं ले लेता। जब वह ऐसा करता है तब मैं यह जान जाती हूँ कि अब वह इस मुद्दे पर प्रार्थना करना चाहता है। इस प्रकार मेरा मन और मेरी आत्मा मिल कर कार्य करते हैं एक दूसरे की सहायता करते हुए परमेश्वर की इच्छा को पूरी करते हैं।

अन्य भाषाएँ और उनका अर्थ

इस कारण जो अन्य भाषा बोले, वह प्रार्थना करे कि उसका अनुवाद भी कर सके।

इसलिये यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूँ, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नही देती (यह फल नहीं लाती और किसी को लाभ नही होता)।

1 कुरिन्थियों 14:13–14

दूसरा उदाहरण जहाँ आत्मा और मन मिल कर काम करते है वह है अन्य भाषाओं में बोलना और उनका अर्थ भी बताना।

जब मैं अन्य भाषाओं में बात करती हूँ मेरा मन फल रहित होता है जब तक परमेश्वर मुझे अथवा और किसी को उस का अर्थ बताने की, जो मैं बोल रही हूँ, समझ न दे दे, और तब मेरा मन फलदायक बन जाता है।

कृपया इसे अपने मन में उतार लें कि भाषाएँ और उनका अनुवाद वरदान नहीं हैं। संदेश को शब्द व शब्द उतार देना अनुवाद होता है जबकि व्याख्या में एक व्यक्ति उस ज्ञान को बताता है जो दूसरे व्यक्ति ने कहा है, परन्तु व्याख्या करने वाला उसे अपनी शैली और अपने व्यक्तित्व के अनुसार उसे बताता है।

यहाँ मैं एक उदाहरण प्रस्तुत करती हूँ—बहन स्मिथ गिरजे में एक अन्य भाषा में संदेश दे रही हैं। यह उनकी आत्मा से आ रहा है परन्तु न तो वह और न ही कोई अन्य व्यक्ति जानता है कि वह क्या कह रही हैं। परमेश्वर ने वह संदेश समझने की बुद्धि मुझे दे दी है, परन्तु एक सामान्य तरीके द्वारा। जब मैं विश्वास में सामने आयी और जो बोला गया था उस की व्याख्या करना आरम्भ किया तब मैंने वह संदेश सबको समझा दिया। परन्तु यह मेरे विशेष ढंग से बताने के कारण हुआ।

आत्मा (अन्य भाषा में) में प्रार्थना करना और उसकी व्याख्या करना यह एक अद्भुत तरीका है "मन द्वारा आत्मा की सहायता" सिद्धान्त को समझने का। आत्मा जो भी कहता है मन को उसकी समझ दी गयी है।

अब इस बात पर विचार करें: यदि बहन स्मिथ एक अन्य भाषा में बोलती है और उसकी व्याख्या करने के लिए परमेश्वर किसी को ढूँढ रहा है, वह मेरे पास से निकल जाएगा यदि मेरा मन अत्याधिक व्यस्त और जंगली है और परमेश्वर की बात को नहीं सुन पा रहा है। यदि वह मुझे उसका अर्थ बता भी दे तौ भी मैं उसको ग्रहण नहीं कर पाऊँगा।

जब मैं प्रभु में जवान थी और आत्मिक वरदानों के विषय में सीख रही थी तब मैं भाषाओं में प्रार्थना किया करती थी। कुछ समय बीतने के बाद मैं अपने

प्रार्थना जीवन से उकता गयी। जब मैंने परमेश्वर को इस के बारे में बताया तब उसने मुझे यह बात सिखायी कि यदि मैं उकता गयी हूँ तो वह इसलिए कि मैं जो प्रार्थना करती हूँ उसको मैं समझती नहीं हूँ। तौभी मैं यह मानती हूँ कि मैं जो कह रही हूँ उस को मुझे समझना आवश्यक नहीं परन्तु इस प्रकार की प्रार्थना असंतुलित होती है और फलदायक नहीं यदि मैं उसे समझती नहीं हूँ।

शान्त, सावधान मन

जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए है, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।

यशायाह 26:3

मैं आशा करती हूँ कि इन उदाहरणों से आप स्पष्टरूप से यह जान गए होंगे कि आपका मन और आपकी आत्मा दोनों साथ मिल कर कार्य करते हैं। *अतःयह अति आवश्यक है कि आपका मन सामान्य दशा में रहे।* अन्यथा यह आत्मा की सहायता नहीं कर सकता।

शैतान, इस सत्य को भलीभांति जानता है इसी कारण वह मन पर आक्रमण करता है और आपके मन की युद्धभूभि में लड़ाई छेड़ देता है। वह हर प्रकार के बुरे विचारों से आपके मन को भर देना चाहता है ताकि मन स्वतंत्र न रह सके और पवित्र आत्मा जो आपकी स्वयं की आत्मा के द्वारा कार्य करता है, उसके लिए आप का मन उपलब्ध न हो सके।

मन को शान्त रखना आवश्यक है। जैसा कि यशायाह भविष्यवक्ता हमें बताता है जब मन अच्छी चीज़ों के बारे में सोचता है तब वह विश्राम पाएगा।

मन को सावधान रहने की भी आवश्यकता है। यह असम्भव हो जाता है जब इस में वह सारी बातें भर जाती हैं जिन्हें वह नहीं चाहता।

इस पर विचार करें: आपका मन कितने समय तक सामान्य दशा में रहता है?

अध्याय

९

एक विचलित और भटकनेवाला मन

एक विचलित और भटकनेवाला मन

अध्याय 9

> *इस कारण अपनी अपनी बुद्धि की कमर बाँधकर... ।*
>
> 1 पतरस 1:13

इससे पहले वाले अध्याय में हमने देखा था कि जो मन अत्याधिक व्यस्त रहता है वह असामान्य होता है। असामान्य मन की एक दूसरी दशा होती है—हर जगह परिभ्रमण करना। चित्त को एकाग्र न कर पाने की योग्यता का अर्थ है मन पर शैतान का आक्रमण।

बहुत से मनुष्यों ने वर्षों तक अपने मन को यूँ ही भटकने दिया है क्योंकि उन्होंने अपने 'विचार जीवन' को अनुशासित करने का सिद्धान्त नहीं अपनाया है।

जो लोग एकाग्रचित्त नहीं हो सकते वे सोचते हैं कि उनका मानसिक स्तर थोड़ा कम है। परन्तु यदि आप एकाग्रचित्त नहीं हो पाते तो वह इसलिए कि आपने अपने मन को वर्षों से स्वतंत्र कर रखा है कि जो भी वह चाहता है उसे करता है। विटामिन बी की कमी के कारण भी लोग एकाग्रचित्त नहीं हो पाते। यदि ऐसा है तो आप संतुलित आहार लें।

अत्याधिक थकान भी एकाग्रता पर प्रभाव डालता है। मैंने पाया है कि जब मैं अत्याधिक थक जाती हूँ तब शैतान मेरे मन पर आक्रमण करने की चेष्टा करता है क्योंकि वह जानता है कि ऐसे समय में उसका विरोध करने में हमें अधिक कठिनाई होगी। शैतान चाहता है कि मैं और आप सोचें कि हमारा मानसिक स्तर कम है इस कारण हम कोई भी ऐसा कार्य नहीं करेंगे जिससे उस के लिए समस्या खड़ी हो जाए। वह चाहता है कि वह जो भी झूठ हम से बोलता है उसे हम निष्क्रियतावश ग्रहण कर लें।

हमारी एक बेटी को बाल्यावस्था में एकाग्रचित्त होने में कठिनाई होती थी। पढ़ना उसके लिए कठिन था क्योंकि एकाग्रता और समझने की योग्यता का चोली दामन का साथ है। बहुत से बच्चे और कुछ व्यस्क भी समझ नहीं पाते कि वे क्या पढ़ते हैं। उनकी आँखें तो पृष्ठ का अवलोकन कर लेती हैं परन्तु उनके मन समझ नहीं पाते कि उन्होंने क्या पढ़ा।

एकाग्रता की कमी का परिणाम है न समझ पाना। यह मेरा स्वयं का भी अनुभव है। मैं बाइबल का अथवा किसी और पुस्तक का एक अध्याय पढ़ सकती हूँ फिर एकाएक मुझे पता चलता है कि मुझे तो कुछ भी याद नहीं जो मैंने अभी पढ़ा है। मैं फिर से पढ़ना आरम्भ करती हूँ और यह सब कुछ मुझे नया सा लगता है क्योंकि मेरी आँखें तो पृष्ठ पर शब्दों का अवलोकन कर रही थीं परन्तु मेरा मन कहीं और भटक रहा था। क्योंकि जो मैं पढ़ रही थी उस पर मेरा ध्यान केन्द्रित नहीं था इसी कारण जो मैं पढ़ रही थी उसे समझने में असफल हो गयी।

न समझ पाने की मूल समस्या का कारण है भटकते हुए मन के कारण ध्यान केन्द्रित करने में कभी।

एक भटकनेवाला मन

जब तू परमेश्वर के भवन में जाए, तब सावधानी से चलना

सभोपदेशक 5:1

मैं विश्वास करती हूँ कि “सावधानी से चलना” का अर्थ है “अपना सतुंलन बनाए रखना ताकि मार्ग पर ही रहें।” हम जो कर रहे हैं उसी पर अपने मन को लगाए रखने से हम मार्ग से विचलित नहीं होंगे।

मेरा भी एक भटकता हुआ मन था और अनुशासन द्वारा उसे मैंने प्रशिक्षित किया था। यह सरल नहीं था और कभी कभी वह वापस अपनी उसी दशा में आ जाता है। जब मैं किसी योजना को पूरा करने का प्रयत्न करती हूँ तब अचानक मुझे मालूम होता है कि मेरा मन कहीं और भटक रहा है किसी और विषय को सोच रहा है जिसका इस योजना से कोई सम्बन्ध नहीं। पूर्णतया एकाग्रचित्त तो मैं भी अभी नहीं हो पायी हूँ परन्तु इतना तो मैं समझती हूँ कि अपने मन को इधर उधर भटकने न देना कितना आवश्यक है।

वान्डर (भटकना) शब्द का अर्थ वेब्सटर शब्दकोष में यूँ लिखा है। 1. “बिना किसी उद्वेश्य के घूमना 2. सीधा मार्ग छोड़ कर टेढ़े मार्ग से जाना 3. असामयिक ढंग से कार्य करना 4. अस्पष्टरूप से स्वयं को प्रगट करना अथवा कहना।[1]”

यदि आप मेरे जैसे हैं, हो सकता है आप किसी गिरजे में बैठ कर वक्ता के संदेश को सुन रहे हों; आनन्द ले रहे हों जो कुछ भी कहा जा रहा हो, उससे

लाभ उठा रहे हों तब एकाएक आपका मन भटकना प्रारम्भ कर देता है। कुछ देर बाद आप "जाग" जाते हैं और आप को पता चलता है कि जो कुछ भी हो रहा है आप को कुछ भी याद नहीं। अथवा शरीर तो गिरजे में था परन्तु आपका मन बाज़ार में खरीदारी कर रहा था अथवा घर के रसोईघर में डिनर तैयार कर रहा था।

याद रखिए, आत्मिक लड़ाई में मन युद्ध भूमि होता है। वहीं पर शत्रु का आक्रमण होता है। उसे भली भांति मालूम है कि यदि कोई व्यक्ति अपने मन को उस पर केन्द्रित नहीं करता है जो सिखाया जा रहा है तब उसे गिरजे जाने से कोई लाभ नहीं होगा। शैतान जानता है कि कोई व्यक्ति किसी योजना को पूर्ण करने के लिए स्वयं को अनुशासित नहीं कर सकता यदि वह अपने को अनुशासित नहीं कर सकता और अपने मन को उस पर नहीं लगाता जो वह कर रहा है।

बातचीत के दौरान भी यह मन भटकने वाली घटना होती है। बहुत बार मेरे पति डेव मुझ से बात कर रहे होते हैं और मैं थोड़ी देर तो सुनती हूँ, फिर अचानक मुझे पता चलता है कि जो वह कह रहे हैं वह तो मैं सुन ही नहीं पायी। क्यों? क्योंकि मैंने अपने मन को किसी अन्य विषय पर भटकने की अनुमति दे दी थी। मेरा शरीर तो वहाँ खड़ा था और यह प्रतीत हो रहा था कि मैं सुन रही हूँ परन्तु मेरे मन के द्वारा कुछ भी नहीं सुना गया।

कई वर्षों तक, जब भी ऐसा होता था, मैं बहाना करती थी कि जो भी डेव ने कहा है वह सब मुझे मालूम है। अब मैं रूक जाती हूँ और कहती हूँ, "क्या तुम फिर से सब कुछ कह सकते हो? मैंने अपने मन को भटकने दिया था और इस कारण जो तुमने कहा था वह मैं सुन नहीं पायी।"

इस प्रकार मैं इस समस्या का सामना करती हूँ। विजयी होने के लिए एक ही रास्ता है कि मुद्दों का सामना किया जाए!

मैने फैसला किया है कि, अगर शैतान भटकते मन के साथ मुझ पर हमला करने जा रहा है, तो शायद कुछ कहा जा रहा था, जिसे मुझे सुनने कि ज़रूरत थी।

इस क्षेत्र में शत्रु से निपटने का एक और तरीका है—केसेट टेप का लाभ उठाना जो बहुत से गिरजों में उपलब्ध होते हैं। यदि अभी तक आपने अपने मन को अनुशासित करना नहीं सीखा है कि जो गिरजे में कहा गया है उस

पर वह ध्यान दे तो हर सप्ताह संदेश का टेप खरीद लें और तब तक उसे सुनें जब तक वह संदेश आपकी समझ में न आ जाए।

शैतान छोड़ कर चला जाएगा जब वह यह देखेगा कि आप हियाव छोड़ने वाले नहीं।

याद रखें, शैतान चाहता है कि आप सोचें कि आप में मस्तिष्क की कमी है–कि आप के अन्दर कुछ त्रुटि है। परन्तु सच्चाई यह है कि आप को मन को अनुशासित करने की आवश्यकता है। सारे शहर में इस को भ्रमण न करने दें, जो वह चाहे उसे न करने दें। आज ही से "सावधानी से चलें" ताकि अपना मन आप उस ही पर केन्द्रित कर सकें जो आप कर रहें हैं। आप को अभ्यास की आवश्यकता होगी। पुरानी आदतों को तोड़ कर नयी आदतें अपनाने में सदैव समय लगता है, परन्तु अन्त में यह मूल्यवान सिद्ध होगा।

एक विचलित मन

मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई इस पहाड़ से कहे, 'तू उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़,' और अपने मन में सन्देह न करे, वरन् प्रतीति करे कि जो कहता हूँ वह हो जाएगा, तो उसके लिये वही होगा।

इसलिये मैं तुम से कहता हूँ कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके माँगो, तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिए हो जाएगा।

मरकुस 11:23–24

मैं प्रायः बहुत सी बातों के लिए कहा करती हूँ, "मुझे आश्चर्य है।" उदाहरण के लिए

"मुझे आश्चर्य है कि कल जाने कैसा मौसम होगा।"

"मुझे आश्चर्य है कि मैं पार्टी में क्या पहन कर जाऊँ।"

"मुझे आश्चर्य है कि डैनी (मेरा बेटा) को रिपोर्ट कार्ड में कौन से ग्रेड मिलेंगे"

"मुझे आश्चर्य है कि गोष्ठी में कितने लोग आएँगे।"

वन्डर शब्द का अर्थ शब्दकोष के द्वारा "संदेह का अनुभव" (संज्ञा के रूप में) और क्रिया के रूप में "संदेह से भर जाना।[2]"

मैंने यह सीखा है कि यदि मैं केवल हर समय काल्पनिक बातों पर ही आश्चर्य करती रहूँ तो मुझे उतना भला नहीं प्रतीत होता जितना कि सकारात्मक कार्य करने के बाद भला प्रतीत होता है। डैनी को किस प्रकार के ग्रेड मिलेंगे इस पर आश्चर्य करने के बदले मैं ऐसा विश्वास कर सकती हूँ कि उसे अच्छे ग्रेड मिलेंगे। पार्टी में मुझे क्या पहनना चाहिए इस पर आश्चर्य करने के बदले मैं निर्णय कर सकती हूँ कि मुझे क्या पहनना है। कल का मौसम कैसा होगा अथवा कितने लोग मेरी सभा में आएँगे इस पर आश्चर्य करने के बदले मैं इस बात को परमेश्वर की ओर मोड़ सकती हूँ उस पर विश्वास करके कि वह जो भी करेगा सब चीज़ों में भला ही होगा चाहें कुछ भी होता रहे।

आश्चर्य एक व्यक्ति को अनिर्णायक दशा में छोड़ देता है, निर्णय न अव्यवस्था को जन्म देता है। आश्चर्य, निर्णय न लेना और अव्यवस्था के कारण एक व्यक्ति को उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर परमेश्वर की ओर से मिलने में बाधा आती है।

मरकुस 11:23–24 में यीशु ने यह नहीं कहा "जो भी तुम प्रार्थना में माँगते हो आश्चर्य करो यदि वह तुम्हें मिल जाए।" परन्तु उस ने कहा, "जो तुम प्रार्थना में माँगते हो विश्वास करो कि वह तुम्हें मिल जाएगा–और तुम्हें मिल जाता है।"

मसीही और *विश्वासी* होने के नाते हमें विश्वास करना है–संदेह नहीं।

अध्याय

10

एक अव्यवस्थित मन

एक अव्यवस्थित मन

अध्याय 10

हमने यह पता लगा लिया है कि आश्चर्य और अव्यवस्था दोनों संबधी हैं। आश्चर्य (स्पष्ट विचारों का विपरीत), संदेह और अव्यवस्था को जन्म देता है।

पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से माँगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है और उसको दी जाएगी।

पर विश्वास से माँगे, और कुछ सन्देह न करे, क्योंकि सन्देह करनेवाला समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलती है।

ऐसा मनुष्य यह न समझे कि मुझे प्रभु से कुछ मिलेगा, वह व्यक्ति दुचित्ता है और अपनी सारी बातों में चंचल है।

याकूब 1:5–8

याकूब 1:5–8 के श्रेष्ठ पद हमें यह समझने में सहायता करते हैं कि किस प्रकार अव्यवस्था, आश्चर्य एवं सन्देह पर हम विजय प्राप्त कर सकते हैं और परमेश्वर से उन चीज़ों को ग्रहण कर सकते हैं जिनकी हमें आवश्यकता है। मेरे विचार से "दो मन वाला व्यक्ति" अव्यवस्था की ही छवि है क्योंकि वह कभी निर्णय नहीं लेता है। जब वह सोचता है कि उसने निर्णय ले लिया है तब आश्चर्य, सन्देह और अव्यवस्था उसके मन में आ जाते हैं जिससे वह दो मन वाले की तरह व्यवहार करने लगता है। वह हर बात के प्रति अनिश्चित होता है।

मैंने भी अपना अधिकांश जीवन ऐसे ही बिताया है क्योंकि शैतान ने मेरे विरूद्ध लड़ाई छेड़ दी थी और यह मुझे मालूम ही नहीं था और मेरा मन एक युद्धभूमि बन चुका था। मैं हर बात में पूर्णतया अव्यवस्थित थी और मैं समझ नहीं पायी कि ऐसा क्यों है।

तर्क अव्यवस्था को जन्म देता है

...हे अल्पविश्वासियो, तुम आपस में क्यों विचार करते हो?...

मत्ती 16:8

अभी तक हमने आश्चर्य के विषय में बात की अब आगे के अध्याय में हम संदेह के विषय में चर्चा करेंगे। अभी मैं अव्यवस्था के विषय में बात करना चाहूँगी।

परमेश्वर के लोगों का एक बड़ा प्रतिशत अव्यवस्थित होता है। ऐसा क्यों? जैसा हमने देखा है कि इसका एक कारण है आश्चर्य। दूसरा है तर्क। शब्द "रीज़न" के बारे में शब्दकोष में लिखा है "वह सच्चाई अथवा प्रेरणा जिस के द्वारा किसी घटना का तर्क द्वारा अर्थ निकल आए" (संज्ञा) एवं क्रिया के रूप में "तर्क द्वारा सोचना।[1]"

सरल अर्थों में जब एक व्यक्ति किसी बात का "क्यों" ढूँढना चाहता है तब तर्क जन्म लेता है। तर्क, मन को किसी मुद्दे अथवा घटना अथवा किसी अवस्था के चारों ओर घुमाता रहता है जब तक कि मन उसकी गहराई को समझ न जाए। हम किसी कथन अथवा किसी शिक्षा पर तर्क करके उसकी सच्चाई का पता लगा लेते हैं।

तर्क के कारण शैतान हम से परमेश्वर की इच्छा को चुरा लेता है। परमेश्वर हम से कोई कार्य करने के लिए कह सकता है परन्तु यदि वह निरर्थक हो—यदि उस में तर्क न हो—तो हम उस का तिरस्कार करने के लिए परीक्षा में गिर जाएँगे। परमेश्वर जब भी किसी व्यक्ति को कुछ करने के लिए कहता है तब उसके मन को आवश्यक नहीं कि सदैव उसमें उसे तर्क दिखाई दे। उसका आत्मा तो स्वीकार कर लेता है परन्तु मन अस्वीकार कर देता है विशेष तौर से तब जब वह अप्रिय हो अथवा उसमें व्यक्तिगत बलिदान अथवा व्यथा सम्मिलित हों।

मन में तर्क न करें केवल आत्मा में आज्ञा पालन करें

परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है।

1 कुरिन्थियों 2:14

यहाँ एक व्यवहारिक, व्यक्तिगत उदाहरण है जो मन में तर्क और आत्मा में आज्ञाकारिता के विषय को और अच्छी तरह समझा सकता है ऐसा मैं आशा करती हूँ।

एक सुबह जब मैं अपने शहर के पास एक साप्ताहिक सभा की सेवकाई करने के लिए तैयार हो रही थी, मैं उस महिला के विषय में सोचने लगी जो वहाँ सहायता की सेवकाई को बड़ी ईमानदारी से चला रही थी। मेरे हृदय में एक इच्छा जागृत हुई कि किसी रीति से उसे आशीषित किया जाए।

“इन सारे वर्षों में हे पिता, रूथ ऐन हम सब के लिए एक आशीष का कारण थी,” मैंने प्रार्थना की, “मैं उसे आशीष देने के लिए क्या कर सकती हूँ?”

तुरन्त मेरी दृष्टि अलमारी में लटके हुए एक नए लाल ड्रेस पर पहुँच गयी और मैंने अपने हृदय में जान लिया कि परमेश्वर मुझे यह ड्रेस रूथ ऐन को दे देने के लिये कह रहा है। हांलाकि मैंने इसे तीन माहीने पूर्व ही खरीदा था, परन्तु मैंने इसे कभी पहना नहीं था। अभी तक वह उसी प्लास्टिक के थैले में टँगा हुआ था जिसमें मैं उसे खरीद कर लायी थी। मुझे वास्तव में यह पसन्द था परन्तु जब भी मैंने उसे पहनने के लिए सोचा, मेरी इच्छा ही नहीं हुई उसे पहनने की।

याद करें, मैंने कहा था कि जब मेरी दृष्टि उस नए लाल ड्रेस पर गयी, मैं जान गयी कि मुझे यह रूथ ऐन को दे देना चाहिए। वास्तव में यह मैं देना नही चाहती थी तुरन्त मैं मन में तर्क करने लगी कि परमेश्वर मुझ से यह लाल ड्रेस उसे देने के लिए इस कारण नहीं कह सकता क्योंकि यह बिलकुल नया था, कभी पहना नहीं गया था, महँगा था—और मैंने उससे मिलते जुलते लाल और स्लेटी रंग के बुन्दे भी खरीद लिए थे!

यदि मैं अपने शारीरिक मन को इस स्थान से बाहर ही रखती और अपनी आत्मा में परमेश्वर के प्रति ध्यान लगाए रहती तो हर एक चीज़ अच्छी तरह हो गयी होती, परन्तु हम मनुष्य तर्क के द्वारा उस कार्य को नहीं करते हैं जो परमेश्वर हम से करने के लिए कहता है और हम स्वयं को धोखा देते हैं। कुछ मिनिटों तक मैं यह सब भूल गयी और अपने कार्य के लिए चल पड़ी । निष्कर्ष यह था कि मैं यह ड्रेस देना नहीं चाहती थी क्योंकि यह नया था और मुझे पसन्द था। मेरे मन ने तर्क दिया कि यह इच्छा परमेश्वर की ओर से नहीं परन्तु शैतान मुझ से वह चीज़ लेने का प्रयत्न कर रहा था जो मुझे पसन्द है।

कुछ सप्ताह बाद उसी जगह परन्तु दूसरे घर में मुझे फिर सभा के लिए जाना था। पहले की भांति जैसे ही रूथ ऐन का नाम मेरे हृदय में आया मैं उसके लिए प्रार्थना करने लगी। मैंने कहा “हे पिता, रूथ ऐन हम सब के लिए

आशीष है, मैं उसे आशीष देने के लिए क्या कर सकती हूँ?" तुरन्त मैंने फिर वह लाल ड्रेस देखा और मेरा शरीर शिथिल पड़ने लगा क्योंकि मुझे वही बातें फिर याद आ गयीं थीं (जो मैं पूरी तरह से भूल चुकी थी)।

इस बार मेरा शरीर नहीं ऐंठा; या तो मुझे इस सत्य का सामना करना है कि परमेश्वर जो मुझे बता रहा है कि मुझे क्या करना है और उसी प्रकार मैं करूँ या मुझे यह कहना होगा, "मैं जानती हूँ परमेश्वर जो तू मुझे बता रहा है, परन्तु मैं ऐसा नहीं करने जा रही हूँ।" मैं परमेश्वर से बहुत प्रेम करती हूँ अतः मैने उससे लाल ड्रेस के विषय में बात करना आरम्भ किया।

कुछ ही मिनिटों में मैंने यह जान लिया कि पहले मैं परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध अपने ढंग से तर्क कर रही थी और इस को करने में केवल क्षण भर ही लगा था। मैंने सोचा था कि मैं परमेश्वर की आवाज नही सुन सकी क्योंकि ड्रेस नयी थी। परन्तु अब मैंने जाना कि बाइबल केवल पुरानी वस्तुओं को देने के लिए नहीं कहती! ड्रेस नयी थी इस कारण इसे देना मेरे लिए एक बलिदान की तरह था परन्तु रूथ ऐन के लिए यह आशीष से भी कहीं अधिक था।

जब मैंने अपना हृदय परमेश्वर के लिए खोला, उसने मुझे बताया कि मैंने यह ड्रेस रूथ ऐन के लिए ही खरीदा था, यही कारण था कि यह ड्रेस मैं नहीं पहन सकी। परमेश्वर ने उसे आशीषित करने के लिए मुझे अपने प्रतिनिधि के रूप में प्रयोग किया। परन्तु ड्रेस के बारे में मेरे अपने कुछ विचार थे और जब तक उन विचारों को मैंने छोड़ नहीं दिया तब तक आत्मा की अगुवाई मुझे न मिल सकी।

इस घटना ने मुझे बहुत कुछ सिखाया। कितनी सरलता से हम अपने मन की बातों में फंस सकते हैं और तर्क द्वारा स्वयं को परमेश्वर की इच्छा से अलग कर लेते हैं अतः तर्क से हमें बचाना चाहिए।

याद रखिए, 1 कुरिन्थियों 2:14 के अनुसार, शारीरिक मनुष्य आत्मिक मनुष्य को नहीं समझ पाता। मेरा शारीरिक मन (मेरा शारीरिक मनुष्य) नयी ड्रेस जो मैंने कभी नहीं पहनी थी, को देने का अर्थ नहीं समझ पाया, परन्तु मेरा आत्मा (मेरा आत्मिक मनुष्य) इसे भली भांति समझ गया।

मैं आशा करती हूँ कि इस उदाहरण से आप इस मुद्दे को अच्छी तरह समझ गए होंगे और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चलने में आप को सहायता मिलेगी।

(मैं जानती हूँ कि आप सोच रहे होंगे कि मैंने वह ड्रेस रूथ ऐन को दे दी थी या नहीं। हाँ, वह ड्रेस मैंने दे दी थी और अब वह हमारे कार्यालय में कार्य करती है और अभी भी कभी कभी वह लाल ड्रेस पहन कर काम करने आती है।)

वचन पर चलनेवाले बनें !

परन्तु वचन पर चलनेवाले बनो, और केवल सुननेवाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं!

याकूब 1:22

वचन जो हम से कहता है हम उसे नहीं करते क्योंकि तर्क बीच में आ जाता है और हम उस बात पर विश्वास कर लेते हैं जो सत्य नहीं और हम धोखा खा जाते हैं। हर एक बात जो वचन कहता है उसको समझने के प्रयत्न में हम अधिक समय व्यतीत नहीं कर सकते। यदि हम आत्मा में गवाही दें तब हम आगे बढ़ सकते हैं और ऐसा कर सकते हैं।

मैंने यह जान लिया है कि परमेश्वर यह चाहता है कि मैं उसकी आज्ञा का पालन करूँ चाहें यह मुझे पसन्द हो अथवा न हो।

जब परमेश्वर अपने वचन द्वारा अथवा हमारे भीतरी मनुष्य द्वारा बात करता है, तब हमें तर्क द्वारा स्वयं से यह नहीं पूछना चाहिए कि इस बात में सच्चाई है अथवा नहीं।

जब परमेश्वर हम से बात करता है तब हमें उस पर चलना है तर्क नहीं करना है।

परमेश्वर पर विश्वास करें न कि मानवीय तर्क पर

तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।

नीतिवचन 3:5

दूसरे शब्दों में, तर्क पर निर्भर न रहें। तर्क धोखे का द्वार खोल देता है और अव्यवस्था लाता है।

एक बार मैंने परमेश्वर से पूछा कि इतने अधिक लोग अव्यवस्थित क्यों हैं और उसने मुझ से कहा, "उन से कहो कि प्रत्येक चीज़ का हल वह स्वयं ढूँढना बन्द कर दें तब वे अव्यवस्थित नहीं होंगे।" मैंने जाना कि यह यथार्थ सत्य है। तर्क और अव्यवस्था साथ साथ ही चलते हैं।

आप और मैं किसी चीज़ का विचार अपने हृदय में कर सकते हैं, हम परमेश्वर के सम्मुख उसे ला सकते हैं और देख सकते हैं कि उसकी इच्छा हमें समझ देने की है, परन्तु जिस क्षण हम अव्यवस्थित महसूस करने लगते हैं तब हम बहुत दूर निकल जाते हैं।

कई कारणों से तर्क खतरनाक है परन्तु एक कारण है: हम तर्क कर सकते हैं और किसी चीज़ का हल निकाल सकते हैं जो हमें प्रतीत होता है कि यह ठीक है। परन्तु जो हम तर्क द्वारा सोचते हैं कि ठीक है वह गलत भी हो सकता है।

मनुष्य का मन, तर्क, नियम और विवेक पसन्द करता है। जो वह समझता है उसी पर कार्य करता है। इसी कारण यह हमारी प्रवृत्ति है कि हम अपने मन के एक छोटे से हिस्से में यह सब चीज़ें अच्छी तरह से डाल देते हैं और सोचते हैं "यह ऐसे ही करना होगा क्योंकि यह चीजें इसमें बिलकुल ठीक प्रकार से समा गयी हैं।" हम जान सकते हैं कि हमारे मन इन चीज़ों के प्रति सन्तुष्ट हैं परन्तु यह सरासर गलत है।

रोमियों 9:1 में प्रेरित पौलुस ने कहा है, **मैं मसीह में सच कहता हूँ, मैं झूठ नहीं बोल रहा और मेरा विवेक भी पवित्र आत्मा में गवाही देता है।** पौलुस जानता था कि वह ठीक कर रहा था इसलिए नहीं कि उसके तर्क ने कहा कि वह ठीक था परन्तु इसलिए कि उसके विवेक ने पवित्र आत्मा में गवाही दी थी।

जैसा कि हम ने देखा कि मन कार्य करता है और कभी कभी आत्मा उसकी सहायता करता है। मन और आत्मा साथ साथ कार्य करते हैं। परन्तु आत्मा श्रेष्ठ है इसलिए मन से अधिक सम्मान आत्मा का करना चाहिए।

यदि हम अपनी आत्मा में जान जाते हैं कि यह चीज़ गलत है तब हमें तर्क से उसे करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। इसी प्रकार जब हम जानते हैं कि अमुक चीज़ ठीक है तब हमें तर्क से उसे नहीं करने की अनुमति नहीं देनी है।

परमेश्वर ने हमें समझ प्रदान की है परन्तु परमेश्वर के साथ चलने के लिए और उसकी इच्छा को मानने के लिए यह आवश्यक नहीं कि हर एक बात को हम समझें। बहुत बार परमेश्वर हमारे विश्वास को बढ़ाने के लिए हमारे जीवन

में प्रश्न चिन्ह छोड़ देता है। बिना उत्तर के प्रश्न शारीरिक जीवन को क्रूस पर चढ़ाते हैं। मनुष्यों के लिए यह कठिन है कि वह तर्क को छोड़ दें और केवल परमेश्वर पर भरोसा रखें, परन्तु एक बार जब प्रक्रिया पूरी हो जाती है, मन तब विश्राम पा जाता है।

व्यस्त क्रियाकलापों में से तर्क एक है जिसमें मन व्यस्त हो जाता है जो हमें अच्छा अथवा बुरा चुनने की क्षमता को कम कर देता है। मस्तिष्क का ज्ञान और परमेश्वर का ज्ञान दोनों भिन्न हैं।

मैं आपको नहीं जानती परन्तु मैं चाहती हूँ कि परमेश्वर वह सारी चीज़ें मेरे ऊपर इस प्रकार प्रगट करे कि मैं अपनी आत्मा में जान जाऊँ कि जो कुछ भी मुझ पर प्रगट किया गया है वह सत्य है। मैं समस्या का समाधान तर्क के द्वारा नहीं निकालना चाहती। मैं मन और हृदय की शान्ति का अनुभव करना चाहती हूँ जो कि परमेश्वर पर विश्वास करने के द्वारा हो सकता है मनुष्यों के द्वारा सोचने और ज्ञान से नहीं।

मुझे और आपको ऐसे स्थान में बढ़ना चाहिए जहाँ हम उस को जान जाएँ जो सब कुछ जानता है चाहें हम कुछ भी न जानते हों।

मसीह को छोड़कर औरअ किसी बात को न जानने की ठान लें

हे भाइयो, जब मैं परमेश्वर का भेद सुनाता हुआ तुम्हारे पास आया, तो शब्दों या ज्ञान की उत्तमता के साथ नहीं आया। क्योंकि मैं ने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह, वरन् क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूँ।

1 कुरिन्थियों 2:1–2

ज्ञान और तर्क के विषय में यह पौलुस का दृष्टिकोण था और मैंने इसे समझा और सराहा है। मैंने यह जान लिया कि बहुत सी बातों के विषय में जितना कम मैं जानती हूँ उतना ही अधिक मैं प्रसन्न रहती हूँ। कभी कभी हम इतना अधिक जान जाते हैं जो हमें दुखी बना देता है।

मैं हमेशा से एक बहुत जिज्ञासु व्यक्ति थी। मैं अपनी संतुष्टि के लिए हर एक चीज़ जानने का प्रयत्न करती थी। परमेश्वर ने मुझे बताया कि मेरी अव्यवस्था

का कारण है हर समय मेरी तर्क करने की आदत और इसी कारण वह सब कुछ मैं ग्रहण नहीं कर पायी जो वह मुझे देना चाहता था। उसने कहा, "जॉयस, अपने इस मानवीय तर्क को अपने से दूर करो यदि तुम चाहती हो अच्छे और बुरे में भेद करना।"

मैं इस बात को जानती हूँ कि जब मुझे सब बातों का उत्तर मालूम होता था तब मैं स्वयं को सुरक्षित पाती थी। मैं अपने जीवन में किसी प्रकार की दुर्बलता नहीं चाहती थी। मैं हर चीज़ पर अपना नियंत्रण चाहती थी और जब मैं चीज़ों को नहीं समझ पाती थी तो मुझे प्रतीत होता था कि इन पर से मेरा नियंत्रण समाप्त हो गया है—मैं भयभीत हो जाती थी। परन्तु मेरे अन्दर कुछ कमी थी। मेरे मन में शान्ति नहीं थी और तर्क करने की शक्ति भी शिथिल पड़ती जा रही थी।

इस प्रकार की गलत मानसिक क्रियाशीलता से आपका भौतिक शरीर थक जाएगा। यह आपको पूरी तरह से थका देगा!

परमेश्वर ने मुझ से इसे छोड़ देने के लिए कहा, और मैं भी हर उस व्यक्ति से जो तर्क के नशे में है यही सलाह उसे बलपूर्वक देती हूँ। हाँ, मैंने कहा तर्क का "नशा।" हम गलत मानसिक क्रियाशीलता के नशे में फंस सकते हैं जैसे कुछ लोग नशीली दवाइयों, शराब अथवा निकोटीन के नशे में फंस जाते हैं। मेरे ऊपर तर्क का नशा था और जब मैंने छोड़ दिया तब मुझ में नशे को छोड़ देने के बाद के लक्षण दिखने शुरू हुए। मैं खोई हुई और डरी हुई महसूस करने लगी क्योंकि मुझे मालूम नहीं था कि क्या हो रहा है। मैं हताश महसूस कर रही थी।

मैंने अपना समय तर्क में इतना अधिक व्यतीत किया था कि जब मैंने तर्क छोड़ दिया तब मुझे स्वयं को अपने मन के साथ अभ्यस्त करना पड़ा जो कि अत्याधिक शान्त हो गया था। कुछ समय तो मुझे यह सब कुछ निराशाजनक लगा परन्तु अब मैं इससे प्रेम करने लगी हूँ। अब मैं तर्क के दर्द को सहन नहीं कर सकती।

परमेश्वर नहीं चाहता कि हमारे मन तर्क की दशा में रहें क्योंकि यह सामान्य दशा नहीं हैं।

सावधान रहें जब मन में तर्क भरा हाता है वह तब सामान्य दशा में नही होता। विशेषकर मसीहियों के लिए जो विजयी जीवन जीना चाहते हैं—विश्वासी जो मन की युद्धभूमि पर युद्ध को जीतना चाहता है।

अध्याय

11

एक संदेहपूर्ण और अविश्वासी मन

एक संदेहपूर्ण और अविश्वासी मन

अध्याय 11

> *...हे अल्पविश्वासी, तू ने क्यों सन्देह किया?*
>
> मत्ती 14:31
>
> *और उसे उनके अविश्वास पर आश्चर्य हुआ...*
>
> मरकुस 6:6

हम प्रायः सन्देह और अविश्वास के विषय में साथ साथ बात करते हैं जैसे कि वह दोनों एक ही हों। वास्तव में यह दोनों जुड़े हुए तो हैं परन्तु दोनों के अर्थ भिन्न हैं।

नए और पुराने नियम का वाईन का शब्दकोष "सन्देह" शब्द का अर्थ क्रिया के रूप में यह बताता है "दो तरह के रास्ते, निश्चित नहीं कौन सा रास्ता चुनें; ...उन अल्पविश्वासियों के लिए कहा गया था...चिन्तित रहना, मन की विचलित दशा, आशा एवं भय के बीच डगमगाना...[1]"

दो ग्रीक शब्दों में से जिनमें से एक का अनुवाद अविश्वास है उसके विषय में वही शब्द कोष कहता है "आज्ञा न मानना।[2]"

शत्रु के इन दो शक्तिशाली हथियारों को जब हम देखते हैं, तब हम जान जाते हैं कि सन्देह एक व्यक्ति को दो विचार धाराओं के बीच डगमगा देता है, जबकि अविश्वास आज्ञा का उल्लंधन है।

मैं सोचती हूँ कि यदि हम यह पता लगा लें कि शैतान किस प्रकार हम पर आक्रमण करने जा रहा है, तब इस से हमें सहायता मिल सकती है। क्या हम संदेह अथवा अविश्वास का सामना कर रहे हैं?

संदेह

"...तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे...?"

1 राजा 18:21

मैंने एक कहानी सुनी थी वह इस संदेह पर प्रकाश डालेगी।

एक मनुष्य था जो कि अस्वस्थ था। चंगाई वाले पवित्र शास्त्र के वचनों का अपने शरीर पर अभ्यास कर रहा था और विश्वास कर रहा था कि इससे उसे

चंगाई शीघ्र ही मिल जाएगी। जब वह ऐसा कर रहा था उस समय संदेह का विचार भी उस पर आक्रमण कर रहा था।

जब वह इस कठिन दौर से गुज़र चुका और निराश होने लगा, परमेश्वर ने उसकी आँखें आत्मिक संसार के लिए खोल दीं। उसने देखाः शैतान उससे झूठ बोल रहा है, वह कह रहा है कि तुम्हें चंगाई नहीं मिलेगी और इन पदों को मानने से भी तुम्हारा काम सफल नहीं होगा। परन्तु उसने यह भी देखा कि जब भी वचन के वह पद वह बोलता था, एक तीव्र प्रकाश तलवार की नाई उसके मुख से निकलता था और शैतान पीछे की ओर गिर पड़ता था।

जब परमेश्वर ने उसको यह दर्शन दिखाया, वह व्यक्ति समझ गया कि वचन को बोलते रहना कितना महत्वपूर्ण होता है। उसने देखा कि उसके पास विश्वास था और इसी कारण शैतान संदेह के द्वारा उस पर आक्रमण कर रहा था।

संदेह को परमेश्वर ने हमारे भीतर नहीं रखा है। बाइबल कहती है कि परमेश्वर हर एक व्यक्ति को **परिमाण के अनुसार विश्वास** (रोमियों 12:3) देता है। परमेश्वर ने विश्वास हमारे हृदय में रखा है, परन्तु शैतान संदेह के द्वारा हम पर आक्रमण कर के उस विश्वास को समाप्त करने का प्रयत्न करता है।

संदेह उन विचारों के कारण आता है जो परमेश्वर के वचन के विपरीत हैं। इसी कारण यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम परमेश्वर के वचन को जानें। यदि हम वचन को जानते हैं तब हम सरलता से पहचान जाएँगे कि शैतान हम से कब झूठ बोल रहा है। निश्चित हो जाएँ कि शैतान हम से झूठ बोल कर उस चीज़ को चुराना चाहता है जो यीशु ने अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा हमारे लिए खरीदी है।

संदेह और अविश्वास

उस ने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया, इसलिये कि उस वचन के अनुसार कि “तेरा वंश ऐसा होगा”, वह बहुत सी जातियों का पिता हो।

वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ,

और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर सन्देह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की।

और निश्चय जाना कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में भी सामर्थ्य है।

रोमियों 4:18–21

जब भी मैं एक युद्ध में होती हूँ यह जानते हुए कि परमेश्वर ने क्या क्या प्रतिज्ञाएँ की हैं और फिर भी संदेह और अविश्वास का मुझ पर जब आक्रमण होता है तब मैं यह ही खण्ड पढ़ती हूँ और उस पर मनन करती हूँ।

अब्राहम को परमेश्वर ने एक प्रतिज्ञा दी थी कि वह उसे उसी के शरीर के द्वारा एक संतान देगा। अब्राहम और सारा के पास बहुत वर्षों के बाद भी कोई संतान न थी। अब्राहम का विश्वास अभी भी दृढ़ था, उसे विश्वास था कि जो परमेश्वर ने कहा था वैसा ही होगा। संदेह के विचार और अविश्वास का आत्मा उस पर दबाव डाल रहे थे कि परमेश्वर की आज्ञा न माने।

ऐसी परिस्थिति में आज्ञा न मानने का अर्थ है निराश हो जाना जबकि परमेश्वर हम से हियाव न छोड़ने के लिए लगातार कहता रहता है। आज्ञा न मानना परमेश्वर की वाणी का तिरस्कार करना है अथवा जो भी परमेश्वर हम से व्यक्तिगत रूप से कह रहा है उसका तिरस्कार करना।

अब्राहम दृढ़ रहा। वह परमेश्वर की प्रशंसा करता रहा और उसे महिमा देता रहा। बाइबल हमें बताती है कि जब उसने ऐसा किया वह विश्वास में और भी शक्तिशाली बनता गया।

आप देखते हैं, जब परमेश्वर हम से कुछ कहता है अथवा कुछ करने के लिए कहता है तब इस पर विश्वास करना अथवा इसको पूरा करना परमेश्वर के वचन से होता है। यह परमेश्वर के लिए हास्यास्पद होगा कि वह हम से कुछ कराने की आशा रखे और हमें यह विश्वास न दे कि हम उसे कर सकते हैं। शैतान जानता है कि वह उसके लिए कितना भयानक होगा यदि हमारे हृदय विश्वास से भरे हों, अतः वह हम पर संदेह और अविश्वास के द्वारा आक्रमण करता है।

ऐसा नहीं कि हमारे अन्दर विश्वास नहीं है, शैतान झूठ बोल कर हमारे विश्वास को नष्ट करने का प्रयत्न करता है।

मैं आपको एक उदाहरण देती हूँ। यह उस समय की बात है जब मेरे पास प्रभु की सेवकाई की बुलाहट आयी थी। वह प्रतिदिन की तरह एक सुबह थी

इससे तीन सप्ताह पूर्व मैं पवित्र आत्मा से भरी जा चुकी थी। अभी अभी मैंने अपना पहला उपदेश वाला टेप सुना था। यह पादरी रे मासहोल्डर का संदेश था शीर्षक था "दूसरी ओर पार हो जाओ।" मेरा हृदय हिल गया, मैं विस्मित थी कि कोई भी किसी को एक घन्टे तक पवित्र शास्त्र में से सिखा सकता है और उसके यह उपदेश रोचक होंगे।

जब मैं अपना बिछौना ठीक कर रही थी, मेरे अन्दर एक तीव्र इच्छा जागृत हुई कि मैं भी परमेश्वर के वचन को सिखाऊँ। तब मैंने परमेश्वर की आवाज़ सुनी, उसने मुझ से कहा, "तुम सब जगह जाओगी और मेरे वचन को सिखाओगी, और तुम्हारी एक विशाल उपदेशों की टेप सेवकाई होगी।"

मेरे पास कोई सामान्य तर्क नहीं था जिससे मैं यह विश्वास कर लूँ कि परमेश्वर ने मुझे से बात चीत की है अथवा मैं उस कार्य को करूँगी जिसके विषय में मैं सोचती हूँ कि अभी मैंने सुना है। मेरे अन्दर कई समस्याएँ थी। मैं "प्रभु की सेवकाई की वस्तु" भी नहीं लगती थी परन्तु परमेश्वर ने इस संसार के दुर्बलों और मूर्खों को चुन लिया है ताकि ज्ञानियों को निरूत्तर कर दे। (1 कुरिन्थियों 1:27) वह मनुष्य का हृदय देखता है शरीर नहीं (1 शमूएल 16:7) यदि हृदय ठीक है तो परमेश्वर शरीर को बदल सकता है।

मैं विश्वास से भर गयी कि मैं वह सब कार्य कर सकती हूँ जो परमेश्वर मुझ से करवाना चाहता है। जब परमेश्वर बुलाता है वह कार्य करने की इच्छा, विश्वास और योग्यता भी देता है। परन्तु मैं आप को बताना चाहती हूँ। कि इन अभ्यास और प्रतीक्षा के वर्षों में शैतान नियमित रूप से मुझ पर संदेह और अविश्वास के द्वारा आक्रमण करता रहा।

परमेश्वर अपने लोगों के हृदयों में स्वप्न और दर्शन रख देता हैः वह आरम्भ में छोटे "बीज" की तरह होते हैं। जिस प्रकार एक महिला के गर्भ में जब बीज आ जाता है तो वह "गर्भवती" बन जाती है, इसी प्रकार हम भी परमेश्वर की बातों और प्रतिज्ञाओं से "गर्भवती" जैसे बन जाते हैं। इन "गर्भ" के दिनों में शैतान अपना पूरा प्रयत्न करता है कि हम अपने इन सपनों का गर्भपात कर दें। उसका एक हथियार है संदेह का और दूसरा है अविश्वास का। यह दोनों हथियार मन के विरूद्ध कार्य करते है।

विश्वास आत्मा का ही एक उत्पाद है; यह एक आत्मिक बल है। शत्रु यह कदापि नहीं चाहता कि मैं और आप अपने मन को आत्मा के अनुकूल बना

लें। वह जानता है कि यदि परमेश्वर कुछ करने के लिए हमारे अन्दर विश्वास देता है और हम उस कार्य को आरम्भ कर देते हैं ऐसा विश्वास कर के कि हम इस कार्य को पूरा कर सकते हैं तब हम उसके साम्राज्य की बहुत अधिक हानि कर सकते हैं।

पानी पर चलते रहों!

उस समय नाव झील के बीच लहरों से डगमगा रही थी, क्योंकि हवा सामने की थी।

और यीशु रात के चौथे पहर (प्रातः काल 3:00–6:00 का समय) झील पर चलते हुए उनके पास आया।

चेले उसको झील पर चलते हुए देखकर घबरा गएः और कहने लगे, "यह भूत है!" और डर के मारे चिल्लाने लगे उठे।

तब यीशु ने तुरन्त उनसे बातें कीं और कहा! ढाढ़स बाँधो! मैं हूँ; डरो मत।

पतरस ने उसको उत्तर दिया, हे प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे।

उसने कहा! "आ!" तब पतरस नाव पर से उतरकर यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा।

पर हवा को देखकर डर गया, और जब डूबने लगा तो चिल्लाकर कहा, "हे प्रभु, मुझे बचा।"

यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया, और उसने कहा, "हे अल्पविश्वासी, तू ने क्यों सन्देह किया ?"

जब वे नाव पर चढ़ गए, तो हवा थम गई।

मत्ती 14:24–32

इस खण्ड के अन्तिम पद पर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूँगी क्योंकि वहीं पर हम शत्रु की योजना के बारे में देखते हैं। यीशु के आदेश पर पतरस नाव के बाहर वह काम करने आ गया जो उसने पहले कभी नहीं किया था। वास्तव में यीशु को छोड़ कर किसी ने भी यह काम कभी नहीं किया था।

इसमें विश्वास की आवश्यकता है!

पतरस ने एक गलती की थी; उसने अपना अधिक समय तूफान को देखने में लगा दिया था। वह डर गया था। संदेह और अविश्वास उसके अन्दर समा गये, और वह डूबने लगा। उसने यीशु से चिल्ला कर कहा कि हे प्रभु मुझे बचा ले, और उसने बचा लिया। परन्तु ध्यान दें जैसे ही *पतरस वापस नाव पर चढ़ गया तूफान थम गया!*

रोमियों 4:18–21 याद करें जहाँ अब्राहम अपनी असम्भव दशा को देखते हुए भी डगमगाया नहीं। अब्राहम सारी अवस्थाओं को जानता था, परन्तु मैं नहीं सोचती कि वह हर घड़ी उनके बारे में सोचता रहता था या दूसरों को बताता रहता था। मैं और आप भी अपनी परिस्थितियों से भली भांति अवगत हो सकते हैं परन्तु हमें अपना मन उन चीज़ों पर लगाना है जिनसे हमारा और हमारे विश्वास का उत्थान हो।

इसी कारण अब्राहम परमेश्वर की महिमा और प्रशंसा करने में व्यस्त रहता था। हम भी जब वह कार्य करते हैं जिसे हम जानते हैं कि ठीक है चाहें परिस्थितियाँ विपरीत ही क्यों न हों, हम परमेश्वर की महिमा करते हैं। इफिसियों 6:14 हमें सिखाता है कि आत्मिक युद्ध के दौरान हमें सत्य का पटुका अपनी कमर में कसकर बाँध लेना चाहिए।

जब आपके जीवन में तूफान आता है, तब आप अपने दोनों पाँव कस कर भूमि पर जमा लें, अपने चेहरे को चकमक पत्थर के सामन बना लें और पवित्र आत्मा में दृढ़ हो कर नाव के बाहर रहें! जैसे ही आप वापस सुरक्षा के स्थान में आ जाते हैं तूफान थम जाता है।

शैतान आपको डराने के लिए आपके जीवन में तूफान लाता है। तूफान के दौरान यह याद रखिए कि मन एक युद्ध भूमि है। आप अपने विचारों एवं इच्छाओं द्वारा निर्णय न लें, परन्तु अपनी आत्मा की सहायता लें। जब आप ऐसा करते हैं तब आप उसी आरम्भ वाले दर्शन को पा लेंगे।

संदेह की अनुमति नहीं!

पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से माँगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है और उसको दी जाएगी।

पर विश्वास से माँगे, और कुछ सन्देह न करे; क्योंकि सन्देह करनेवाला समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलती है। ऐसा मनुष्य यह न समझे, कि मुझे प्रभु से कुछ मिलेगा।

याकूब 1:5–7

मेरे पादरी, रिक शेलटन एक कहानी सुनाते हैं कि जब वे बाइबल कालेज से स्नातक हो गए वह यह निर्णय नहीं कर पा रहे थे कि अब वह क्या करें और वह बहुत अव्यवस्थित हो गए थे। परमेश्वर ने उनके हृदय में बल पूर्वक यह डाला कि उन्हें सेन्ट लुईस, मिसूरी वापस आ जाना चाहिए और स्नातक उपाधि प्राप्त करने के बाद वहाँ एक गिरजे की स्थापना करनी चाहिए। उस समय उनके पास केवल पचास डालर, एक पत्नी, एक बच्चा और दूसरा आने वाला था। निःसंदेह परिस्थितियाँ अच्छी नहीं थीं।

जब वे निर्णय लेने का प्रयत्न कर ही रहे थे उन्हें दो बहुत अच्छे प्रस्ताव मिले। एक बहुत बड़ी सेवकाई की संस्था में उन्हें कार्य करने का प्रस्ताव मिला। वहाँ वेतन भी बहुत अच्छा था। उस सेवकाई के अवसर भी आकर्षक थे, और इस संस्था में कार्य करने से उनके अहं को भी संतुष्टि होती। जितना अधिक वह सोचते थे उतना ही अधिक वह विचलित हो जाते थे। (ऐसा प्रतीत होता है कि संदेह महाशय उनसे भेंट करने आ गए थे)

एक समय तो ऐसा था जब उन्हें मालूम था कि उन्हें क्या करना है और अब वह इन प्रस्तावों के बीच डगमगा रहे थे। क्योंकि उनकी परिस्थितियाँ ऐसी नहीं थी कि वह वापस सेन्ट लुईस जाएँ, और इधर दो में से एक प्रस्ताव को स्वीकार करने की परीक्षा में फंसे हुए थे। वह समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें। अन्त में उन्होंने उस पादरी से सलाह ली जिसने उनके सम्मुख इस नौकरी का प्रस्ताव रखा था, पादरी ने कहा, “किसी शान्त वातावरण में जाऐं, अपने मस्तिष्क को विश्राम दें। अपने हृदय में देखें कि वहाँ क्या है और वही करें।”

जब उन्होंने पादरी की सलाह मानी, उन्हें तुरन्त पता चल गया कि उनके हृदय में सेन्ट लुईस का गिरजा था। उन्होंने हृदय का कहना मान लिया और उसके परिणाम आश्चर्यजनक थे।

आज, रिक शेलटन मिसूरी के सेन्ट लुईस में स्थित लाइफ क्रिश्चियन सेन्टर के वरिष्ठ पादरी और संस्थापक हैं। आज लाइफ क्रिश्चियन सेन्टर गिरजे मैं तीन हज़ार सदस्य हैं और इनकी सेवकाई पूरे विश्व में है। इन वर्षों में इनकी

सेवकाई द्वारा हज़ारों लोगों के जीवन परिवर्तित हुए हैं और बहुत लोगों को आशीष मिली है। मैंने भी पाँच वर्षों तक सहायक पादरी के रूप में वहाँ कार्य किया था, और इसी दौरान मेरी सेवकाई लाइफ इन द वर्ड का जन्म हुआ था। जरा सोचिए शैतान संदेह और अविश्वास से कितना अधिक चुरा लेता यदि पादरी शेलटन अपने हृदय की सुनने के बदले अपने मन की सुन लेते।

संदेह एक चुनाव है

भोर को जब वह नगर को लौट रहा था, तो उसे भूख लगी। सडक के किनारे अंजीर का एक पेड़ देखकर वह उसके पास गया, और पत्तों को छोड़ उसमें और कुछ न पाकर उससे कहा, अब से तुझ में फिर कभी फल न लगे; और अंजीर का पेड़ तुरन्त सूख गया।

यह देखकर चेलों को अचम्भा हुआ, और उन्होंने कहा, यह अंजीर का पेड़ कैसे तुरन्त सूख गया ?

यीशु ने उनको उत्तर दिया कि मैं तुम से सच कहता हूँ; यदि तुम विश्वास रखो और संदेह न करो; तो न केवल यह करोगे, जो इस अंजीर के पेड़ से किया गया है; परन्तु यदि इस पहाड़ से भी कहोगे, कि उखड़ जा; और समुद्र में जा पड़, तो यह हो जाएगा।

और जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास से माँगोगे वह सब तुम को मिलेगा।

मत्ती 21:18–22

जब उसके चेलों ने आश्चर्यचकित हो कर यीशु से पूछा कि यह अंजीर का पेड़ कैसे सूख गया, उसने उन्हें उत्तर दिया, “यदि तुम्हारे अन्दर विश्वास है” संदेह नहीं, “तब तुम भी वही कर सकते हो जो मैंने इस अंजीर के पेड़ के साथ किया है–वरन इस से भी बड़े बड़े काम करोगे।” (यूहन्ना 14:12)

हम पहले देख चुके हैं कि विश्वास परमेश्वर का वरदान है, अतः हम जानते हैं कि हमारे अन्दर विश्वास है। (रोमियों 12:3) परन्तु संदेह एक चुनाव है। हमारे मनों के विरूद्ध यह शैतान के लड़ाई की एक कला है।

आप अपने विचारों का चयन कर सकते हैं जब संदेह आता है आप को

इसे पहचानना सीखना चाहिए और कहना चाहिए "नहीं, तुम्हें धन्यवाद"–और विश्वास में बने रहना चाहिए।

चुनाव आपका है!

अविश्वास, आज्ञा न मानना है

जब वे भीड़ के पास पहुँचे, तो एक मनुष्य उसके पास आया, और घुटने टेक कर कहने लगा।

"हे प्रभु, मेरे पुत्र पर दया कर! क्योंकि उसको मिर्गी आती है, और वह बहुत दुःख उठाता है; और बार–बार आग में और बार बार पानी में गिर पड़ता है।"

मैं उसको तेरे चेलों के पास लाया था, पर वे उसे अच्छा नहीं कर सके।

यीशु ने उत्तर दिया, "हे अल्पविश्वासी और हठीले लोगो, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? कब तक तुम्हारी सहूँगा? उसे यहाँ मेरे पास लाओ।"

तब यीशु ने दुष्टात्मा को डाँटा, और वह उसमें से निकाल गई; और लड़का उसी घड़ी अच्छा हो गया।

तब चलों ने एकान्त में यीशु के पास आकर कहा, "हम उसे क्यों नहीं निकाल सके?"

उसने उनसे कहा, "अपने विश्वास की घटी के कारण..."

मत्ती 17:14–20

याद रखें अविश्वास, आज्ञा उल्लंघन को जन्म देता है।

संभवतः यीशु ने अपने चेलों को कुछ चीज़ें करने के लिए सिखाया होगा और अविश्वास के कारण उन्होंने उस की आज्ञा नहीं मानी होगी इसी कारण वे असफल हो गए होंगे।

विशेष बात यह है कि अविश्वास संदेह की तरह हमें वह सब करने से रोकता है जिसे परमेश्वर ने हमें करने के लिए बुलाया है और हमारा अभिषेक किया है। और हम उस शान्ति का आनन्द भी नहीं उठा पाते हैं और हमारी आत्माओं का विश्राम भी यह छीन लेता है। (मत्ती 11:28–29)

सब्त का विश्राम

अतः हम उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयत्न करें, ऐसा न हो कि कोई जन उन के समान आज्ञा न मानकर गिर पड़े

इब्रानियों 4:11

यदि आप इब्रानियों का चौथा अध्याय पूरा पढ़ें आप को पता चलेगा कि यह सब्त के विश्राम के बारे में कह रहा है जो परमेश्वर के लोगों के लिए रखा है। पुरानी वाचा के अनुसार, सब्त का दिन विश्राम के दिन के रूप में मनाया जाता था। नयी वाचा के अनुसार सब्त का विश्राम, विश्राम का आत्मिक स्थान के रूप में कहा गया है। हर एक विश्वासी का यह विशेषाधिकार है कि दुःख और चिन्ताओं को अस्वीकार कर दें। विश्वासी होने के नाते मैं और आप परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश कर सकते हैं।

इब्रानियों 4:11 का गहराई से अवलोकन करने के बाद हम यह जान जाते है कि हम उस विश्राम में कभी भी प्रवेश नहीं कर पाएँगे जब तक हम विश्वास न कर लें, और हम अविश्वास और आज्ञा न मानने के द्वारा इसको खो देंगे। अविश्वास हमें "जंगल के जीवन" में पहुँचा देता है परन्तु यीशु ने विश्राम का एक चिरस्थाई स्थान हमारे लिए रखा है जिसे हम विश्वास के जीवन द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

विश्वास से और विश्वास के लिए जीना

क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिये प्रगट होती है, जैसा लिखा है, "विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।"

रोमियों 1:17

मुझे एक घटना याद है जिससे आप इस बात को सरलता से समझ सकते हैं। एक शाम को मैं अपने घर में घूम कर घर के काम निपटाने का प्रयत्न कर रही थी और मैं बहुत दुखी थी। मेरे अन्दर कोई खुशी नहीं थी—मेरे हृदय में शान्ति नहीं थी। मैं परमेश्वर से पूछती रही, "मेरे साथ क्या गलत हो रहा है?" मैं प्रायः इसी प्रकार सोचती थी और मैं वास्तव में जानना चाहती थी कि मेरी समस्या क्या थी। मैं सभी चीजों का अनुसरण करने का प्रयत्न कर रही

थी जो यीशु के साथ साथ चलने में मैंने सीखीं थी, परन्तु फिर भी किसी न किसी चीज़ की कमी थी।

उसी समय फोन की घंटी बजी, और जब मैं बात कर रही थी मेरे हाथ में पवित्र शास्त्र के कार्ड का एक डिब्बा था जो किसी ने मुझे भेजा था। मैंने अभी तक वह देखा नहीं था परन्तु मेरे हाथ में था जब मैं फ़ोन कर रही थी। जब बात कर चुकी तो उन में से एक कार्ड मैंने निकाला और देखना चाहती थी कि उससे मैं उत्साहित होती हूँ या नहीं।

मैंने रोमियों 15:13 का संदर्भ निकाला था, "**परमेश्वर जो आशा का दाता है तुम्हें विश्वास करने में सब प्रकार के आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण करे, कि पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए।**"

मैंने उसे देखा!

मेरी सारी समस्या अविश्वास और संदेह की थी। मैं शैतान के झूठ पर विश्वास कर के स्वयं को दुःखी बना रही थी। मैं नकारात्मक हो गई थी। मेरे अन्दर आनन्द और शान्ति नहीं थी क्योंकि मैं विश्वास नहीं कर रही थी। यदि हम अविश्वास में जी रहे हैं तो यह असम्भव है कि हमारे पास आनन्द और शान्ति हो।

परमेश्वर पर विश्वास करने का निर्णय लें, न कि शैतान पर!

विश्वास से, विश्वास के लिए जीना सीखें। रोमियों 1:17 के अनुसार परमेश्वर की धार्मिकता प्रगट होने का केवल यही एक मार्ग है। परमेश्वर ने मुझ पर यह प्रगट किया कि विश्वास से, विश्वास के लिए जीना है। जबकि मैं प्रायः विश्वास से संदेह के लिए, संदेह से अविश्वास के लिए जिया करती थी। फिर थोड़ी देर के लिए विश्वास पर आ जाती थी और फिर संदेह और अविश्वास की ओर वापस आ जाती थी। इसी कारण मेरे जीवन में इतनी समस्याएँ और पीड़ाएँ थी।

याद करें, याकूब 1:7,8 के अनुसार, दुचित्ता मनुष्य अपने सारे कार्यों में अस्थायी होता है और जो वह चाहता है उसे परमेश्वर से कभी प्राप्त नहीं करता है। आप निश्चय कर लें कि आप दुचित्ता व्यक्ति नहीं बनेंगे। संदेह में न रहें।

परमेश्वर के पास आपके लिए एक बड़ी योजना है। शैतान को अपने झूठ द्वारा इसे चुराने न दें! **इसलिये हम कल्पनाओं का, और हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं। (2 कुरिन्थियो 10:5)**

अध्याय

12

एक चिन्तित और उत्कण्ठित मन

अध्याय 12

एक चिन्तित और उत्कण्ठित मन

> *...मत कुढ़, उससे बुराई ही निकलेगी*
>
> भजन संहिता 37:8

चिन्ताएँ और उत्कण्ठा दोनों मन पर आक्रमण करते हैं ताकि हम अपने परमेश्वर की सेवा करने से विचलित हो जाएँ। शत्रु भी इन दोनों हथियारों का प्रयोग हमारे विश्वास को कम करने के लिए करता है जिससे हम विजयी जीवन नहीं जी पाते।

कुछ लोगों को तो चिन्ता करने का जैसे नशा सा होता है। यदि उनके पास ऐसी कोई चीज़ नहीं जिन पर वह चिन्ता करें तो वे दूसरों की दशाओं पर चिन्ता करने लगते हैं। मैं भी इस समस्या से ग्रसित थी अतः मै इस दशा का अच्छी तरह वर्णन कर सकती हूँ।

क्योंकि मैं किसी भी बात पर चिन्तित हो जाती थी इसलिए मैं उस शान्ति का आनन्द कभी नहीं ले पाई, जो यीशु ने मेरे लिए अपनी मृत्यु के द्वारा रखी है।

यह असम्भव है कि हम चिन्ता भी करें और शान्ति के साथ जीवन निर्वाह भी करें।

शान्ति ऐसी वस्तु नहीं जिसे किसी व्यक्ति के ऊपर रखा जा सकता हो; यह आत्मा का फल है (गलतियों 5:22) और फल दाखलता में बने रहने का परिणाम है (यूहन्ना 15:4)। बने रहने का अर्थ है "परमेश्वर का विश्राम" जो कि इब्रानियों के चौथे अध्याय में और परमेश्वर के वचन में और भी कई स्थानों में बताया गया है।

बाइबल में कई शब्द हैं जिनका अनुवाद चिन्ता किया गया है। किंग जेम्स संस्करण ने चिन्ता (वरी) शब्द का प्रयोग नहीं किया है। "मत कुढ़" (भजन संहिता 37:8), चिन्ता न करना (मत्ती 6:25), चिन्ता मत करो (फिलिप्पियों 4:6) सारी चिन्ता उसी पर डाल दो (1 पतरस 5:7) यह कुछ संदर्भ चिन्ता शब्द के हैं। मै एम्पलिफाईड बाइबल का ही प्रयोग करूँगी और इन सब शब्दों के स्थान पर चिन्ता का ही प्रयोग करूँगी।

चिन्ता का अर्थ

वेब्सटर ने चिन्ता (वरी) की व्याख्या इस तरह की है 1. "(क्रिया) चिन्तित अथवा तनाव से ग्रसित होना–थका हुआ अनुभव करना 2. (संज्ञा) बुरा लगने का स्त्रोत"[1]

जब मैने देखा कि एक और अर्थ है–विचलित कर देने वाले विचारों के द्वारा स्वयं पर कष्ट लाना, तब मैंने वहीं यह निर्णय ले लिया कि मैं तो इनसे काफी अच्छी हूँ। और यही विश्वास मुझे हर एक मसीही के लिए है। मैं सोचती हूँ कि विश्वासियों के पास काफी ज्ञान होता है वे बैठ कर स्वयं को कष्ट में नहीं डाल सकते।

चिन्ता किसी भी चीज़ को अच्छा नहीं बना सकती अतः इसे त्याग क्यों न दिया जाए?

परिभाषा के दूसरे हिस्से ने भी मुझे कुछ ज्ञान दिया, "दांतों से गले को पकड़ कर हिलाना और काटना, जैसा एक पशु दूसरे पशु के साथ करता है अथवा लगातार दांतों से काट कर कष्ट देना"[2]

इस परिभाषा पर विचार करने के बाद मैंने पाया कि शैतान चिन्ता का प्रयोग कर के हमारे साथ बिलकुल वैसा ही करता है जैसा ऊपर वर्णन किया गया है। जब हम भी चिन्ता से घिरे होते हैं हम भी बिलकुल ऐसा ही अनुभव करते हैं जैसे किसी ने हमें गले से पकड़ कर झिंझोड़ दिया हो और हम बुरी तरह घायल हो गए हों। बार बार उन्हीं विचारों का आना उसी तरह है जैसे परिभाषा के अनुसार दांतों से बार बार का काटा जाना।

शैतान निश्चित रूप से चिन्ताओं के द्वारा मन पर आक्रमण करता है। कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें मन से करने के लिए एक विश्वासी को निर्देश दिए गए हैं, और शत्रु निश्चित रूप से चाहता है कि ऐसा न हो। अतः शैतान मन के उस क्षेत्र को बुरे विचारों के द्वारा व्यस्त कर देता है कि ताकि मन उस कार्य को न कर सके जिसे परमेश्वर ने करने के लिए कहा है।

सही चीज़ें जो मन के द्वारा हमें करनी हैं हम उन्हें अगले अध्याय में देखेंगे, अभी हम इस चिन्ता विषय पर ही ध्यान देंगे जब तक हम इस बात को न समझ जाएँ कि यह वास्तव में कितना निरर्थक है।

मत्ती 6:25–34 पढ़ें जब आप महसूस करें कि आप पर चिन्ता का आक्रमण

हो रहा है। हम प्रत्येक पद को विस्तार से देखेंगे कि परमेश्वर हम से इस आवश्यक विषय के बारे में क्या कह रहा है।

क्या जीवन इन चीज़ों से बढ़कर नहीं?

इसलिये मैं तुम से कहता हूँ कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएँगे और क्या पीएँगे और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहिनेंगे क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं?

मत्ती 6:25

जीवन उच्च कोटि का होना चाहिए ताकि इसका भरपूर आनन्द लिया जा सके। यूहन्ना 10:10 में यीशु ने कहा, "**चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है; मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ।**" शैतान कई प्रकार से वह जीवन हम से चुराने का प्रयत्न करता है–उन में से एक है चिन्ता।

मत्ती 6:25 हमें सिखाया गया है कि इस जीवन में ऐसा कुछ नहीं जिससे हम डरें। परमेश्वर ने हमें जो जीवन प्रदान किया है उसमें दूसरी अच्छी चीज़ें सम्मिलित हैं परन्तु यदि हम इन चीज़ों के विषय में चिन्ता करते हैं तो हम इन सारी चीज़ों को और इस जीवन को खो देते हैं।

क्या आप पक्षी से अधिक मूल्य नहीं रखते?

आकाश के पक्षियों को देखो! वे न बोते है, न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते हैं; फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको खिलाता है क्या तुम उनसे अधिक मूल्य नहीं रखते?

मत्ती 6:26

कुछ समय पक्षियों को देखने में बिताइए। यही परमेश्वर ने हम से करने के लिए कहा है।

यदि प्रत्येक दिन नहीं तो कभी कभी उन को देख कर उन का निरीक्षण कीजिए हम जान जाएँगे कि परमेश्वर कितनी अच्छी तरह हमारे इन पंख वाले

मित्रों की चिन्ता और सहायता करता है। वे यह बिलकुल नहीं जानते कि उनका अगला भोजन कहाँ से आएगा; फिर भी मैने ऐसा कोई पक्षी पेड़ पर बैठे नहीं देखा जिसका चिन्ता के कारण शरीर शिथिल पड़ गया हो।

परमेश्वर का यहाँ अभिप्राय बहुत सरल है *"क्या आप पक्षी से अधिक मूल्य नहीं रखते?"*

चाहें आप कितनी भी हीन भावना से ग्रसित क्यों न हों, निश्चित रूप से आप विश्वास कर सकते हैं कि आपका मूल्य एक पक्षी से कहीं अधिक है और देखिए आपका स्वर्गीय पिता उनकी चिन्ता कितनी अच्छी तरह से करता है।

चिन्ता करने से आप को क्या लाभ?

तुम में कौन है, जो चिन्ता करके अपनी आयु में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है?

मत्ती 6:27

इसका अभिप्राय यह है कि चिन्ता निरर्थक है। इस से कोई अच्छी चीज़ प्राप्त नहीं होती। यदि ऐसा है तो चिन्ता क्यों करें?

चिन्तित क्यों हो?

"और वस्त्र के लिये क्यों चिन्ता करते हो? जंगली सोसनों पर ध्यान करो कि वे कैसे बढ़ते हैं; वे न तो परिश्रम करते, न कातते हैं।

तौभी मैं तुम से कहता हूँ कि सुलैमान भी, अपने सारे वैभव में उनमें से किसी के समान वस्त्र पहिने हुए न था।

इसलिये जब परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज है और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा वस्त्र पहिनाता है, तो हे अल्पविश्वासियो, तुम को वह इनसे बड़कर क्यों न पहिनाएगा?"

मत्ती 6:28–30

परमेश्वर अपनी सृष्टि की चीज़ों में से एक का उदाहरण दे कर हमें यह बताना चाहता है कि एक फूल जो कुछ नहीं करता, उसकी भी परमेश्वर अच्छी तरह चिन्ता करता है और वह इतना चमकता है कि सुलैमान भी अपने सारे

वैभव में ऐसे वस्त्र पहने हुए न था, तब हमें भी निश्चित हो जाना चाहिए कि परमेश्वर हमारी भी वैसी ही चिन्ता करेगा।

अतः चिन्ता न करें!

इसलिये तुम चिन्ता करके यह न कहना कि हम क्या खाएँगे, या क्या पीएँगे, या क्या पहिनेंगे?

मत्ती 6:31

मैं इस पद में एक प्रश्न और जोड़ देना चाहती हूँ, "अब हमें क्या करना चाहिए?"

मैं सोचती हूँ कि शैतान अपने दूतों को विश्वासियों के पास इसलिए भेजता है कि वे विश्वासी के कान में बार बार यह वाक्य दोहराते रहें। वे कठिन प्रश्नों की बौछार करते हैं और विश्वासी अपना बहुमूल्य समय उन के उत्तर ढूँढने में नष्ट कर देता है। शैतान लगातार मन की युद्ध भूमि में लड़ाई छेड़ता रहता है ताकि एक मसीही उसी में व्यस्त हो जाए।

ध्यान दें पद 31 में परमेश्वर हम से चिन्ता न करने के निर्देश देता है। याद रखें हम मुँह से वही बात बोलते हैं जो हमारे हृदय के भण्डार में होता है (मत्ती 12:34) शत्रु यह जानता है कि यदि वह हमारे मन में गलत विचार डाल दे तो वही हमारे मुँह से भी बाहर आएगा। हमारे शब्द अति महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि वह ही हमारे विश्वास की पुष्टि करते हैं–अथवा हमारे विश्वास की कमी को बताते हैं।

परमेश्वर को खोजें, वरदान नहीं!

क्योंकि अन्यजातीय इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं, पर तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं की आवश्यकता है।

इसलिये पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसकी धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी।

मत्ती 6:32–33

यह स्पष्ट है कि परमेश्वर के बच्चों को इस संसार से सदृश नहीं होना है।

संसार वस्तुओं की खोज में रहता है, परन्तु हमें परमेश्वर को खोजना है। उसने यह प्रतिज्ञा की है यदि हम ऐसा करेंगे तो वह ये सब वस्तुएँ हमें दे देगा जिसे वह जानता है कि हमें उनकी आवश्यकता है।

हमें परमेश्वर के चेहरे को खोजना चाहिए न कि उसका हाथ!

हमारा स्वर्गीय पिता अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देने से प्रसन्न होता है, परन्तु केवल तब ही जब हम उनकी खोज न कर रहे हों।

परमेश्वर हमारे माँगने से पहले ही जानता है कि हमें किन वस्तुओं की आवश्यकता है। यदि हम अपने निवेदन विनती के साथ उसके सम्मुख लाएँगे तो वह अपने समय में उन्हें पूरा करेगा। (फिलिप्पियों 4:6) चिन्ता हमारी कोई सहायता नहीं करने वाली। सच तो यह है कि यह हमारी प्रगति को रोक देती है।

एक बार में एक ही दिन लें

अतः कल की चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा; आज के लिये आज ही का दुःख बहुत है।

मत्ती 6:34

मैं चिन्ता का वर्णन इस प्रकार करती हूँ जैसे आज का सारा दिन कल के विषय में सोच कर बिता देना। परमेश्वर ने जो हमें समय दिया है उसका सदुपयोग करना हमें सीखना चाहिए।

जीवन यहाँ और अभी जीना है!

दुःख की बात है, कि बहुत कम लोग यह जानते हैं कि प्रत्येक दिन पूर्णता के साथ कैसे जिया जा सकता है। हो सकता है आप भी उन में से एक हों। यीशु ने कहा कि शैतान जो हमारा शत्रु है आता है और आपका जीवन चुरा लेता है। (यूहन्ना 10:10) उस को अब ऐसा करने की अनुमति मत दीजिए। कल के विषय में चिन्ता करके आज का दिन न गंवाएँ। आज आप के पास करने के लिए काफी काम है; इस में अपना ध्यान लगाएँ। आज आप को जिस चीज़ की आवश्यकता है उसके लिए परमेश्वर का अनुग्रह आप के पास है उसको कार्य करने दें, परन्तु कल का अनुग्रह कल के साथ ही आएगा—अतः आज का दिन नष्ट न करें!

कुढ़ें नहीं और न चिन्ता करें

किसी भी बात की चिन्ता मत करोः परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ।

फिलिप्पियों 4:6

जब चिन्ता का आक्रमण होता है उसके लिए पवित्र शास्त्र का एक और सुन्दर पद है जिससे हम कुछ सीख सकते हैं।

मुँह से परमेश्वर का वचन बोलने के लिए मैं आप से अनुग्रह करती हूँ। यह दो धारी तलवार है जिसका प्रयोग शत्रु के विरूद्ध किया जाना चाहिए। (इब्रानियों 4:12, इफिसयो 6:17) तलवार जब तक म्यान में है उस का कोई लाभ नहीं।

परमेश्वर ने अपना वचन हमें दिया है, इसको प्रयोग में लाएँ! इस प्रकार के पदों को याद कर लें और जब शैतान आक्रमण करता है उसके आक्रमण को इसी हथियार द्वारा विफल कर दें जैसा यीशु ने भी वचन का प्रयोग कर के शैतान के आक्रमण को विफल कर दिया था।

कल्पनाओं का खण्डन करें

इसलिये हम कल्पनाओं का, और हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।

2 कुरिन्थियों 10:5

जब हमारे अन्दर ऐसे विचार उठने लगते हैं जो परमेश्वर के वचन के अनुरूप नहीं तब शैतान को चुप कराने का सबसे अच्छा तरीका है वचन को बोलना।

एक विश्वासी के मुँह से जो वचन विश्वास के साथ निकलता है उसी अकेले हथियार के द्वारा चिन्ताओं के विरूद्ध युद्ध को जीता जा सकता है।

अपनी सारी चिन्ताएँ, परमेश्वर पर डाल दें

इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।

अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है।

1 पतरस 5:6–7

जब शत्रु हमें कोई समस्या देता है तब हमारे पास यह विशेषाधिकार है कि हम उस समस्या को प्रभु पर डाल दें। शब्द “डाल” दें का वास्तविक अर्थ है गिराना अथवा फेंक देना। आप और मैं अपनी समस्याओं को परमेश्वर की ओर फेंक सकते हैं, वह उन्हें लपक लेगा। वह जानता है कि उसे उनके साथ क्या करना है।

यह खण्ड हमें बताता है कि यदि हम नम्र बनना चाहते हैं तो हमें चिन्ता करना छोड़ना होगा। चिन्ता मन की एक स्थिति है जिसमें मन समस्याओं का समाधान करने हेतु इधर उधर दौड़ता रहता है। घमण्डी मनुष्य अपने अंह से भरा होता है, जबकि नम्र मनुष्य परमेश्वर से भरा होता है। घमण्डी मनुष्य चिन्ता करता है जबकि नम्र मनुष्य प्रतीक्षा करता है।

केवल परमेश्वर ही हमें छुड़ा सकता है और वह चाहता है कि हम इस बात को जानें कि चाहें कैसी भी परिस्थिति क्यों न हो हमें उसी की ओर झुकना है ताकि हम उसके विश्राम में प्रवेश कर सकें।

परमेश्वर का विश्राम

हे हमारे परमेश्वर, क्या तू उनका न्याय न करेगा? यह जो बड़ी भीड़ हम पर चढ़ाई कर रही है, उसके सामने हमारा तो बस नहीं चलता और हमें कुछ सूझता नहीं कि क्या करना चाहिये? परन्तु हमारी आँखें तेरी ओर लगी हैं।

2 इतिहास 20:12

इस पद से मैं प्रेम करती हूँ! यहाँ लोग निश्चित रूप से तीन बातों को समझ रहें है:

1. शत्रुओं के आगे उनका कोई बस नहीं।
2. वे नहीं जानते कि उन्हें क्या करना है।
3. उन्हें अपनी आँखें परमेश्वर की ओर लगाने की आवश्यकता है।

उसी खण्ड में पद 15 और 17 में हम देखते हैं कि परमेश्वर ने उन से कहा:

...तुम इस बड़ी भीड़ से मत डरो और तुम्हारा मन कच्चा न हो; क्योंकि युद्ध तुम्हारा नहीं परमेश्वर का है।...

इस लड़ाई में तुम्हें लड़ना न होगा, हे यहुदा, और हे यरूशलेम ठहरे रहता और खड़े रहकर यहोवा की ओर से अपना बचाव देखना...

हमारी स्थिति क्या है? स्थिति है यीशु में बने रहना और परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करना। परमेश्वर की प्रतीक्षा करना और अपनी आँखें उसी पर केन्द्रित करना, जो वह हमें करने के लिए कहे उसे पूरा करना यदि नहीं तो शरीर में हम सदैव भयभीत रहेंगे।

परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करने से सम्बन्धित मैं यह कहना चाहती हूँ कि बिना विरोध के "परमेश्वर का विश्राम" नामक कोई चीज़ नहीं।

इस बात को समझाने के लिए मैं यह कहानी आपको सुनाना चाहती हूँ—दो कलाकारों से शान्ति की तस्वीर बनाने को कहा गया। एक कलाकार ने पर्वतों से काफी दूर एक शान्त ठहरी हुई झील की तस्वीर बनाई। दूसरे ने एक तेजी के साथ बहता हुआ झरना बनाया, उस झरने के ऊपर झुकता हुआ एक जंगली पेड़ बनाया और उसकी एक डाल पर घोंसले में विश्राम करती हुई एक चिड़िया बनायी।

इन दोनों तस्वीरों में से कौन सी तस्वीर सच्चे अर्थों में शान्ति को प्रदर्शित करती है? दूसरी तस्वीर क्योंकि बिना विरोध के शान्ति नामक कोई चीज़ नहीं। पहली तस्वीर निश्चलता को प्रदर्शित करती है। हो सकता है कोई मनुष्य स्वास्थ्य लाभ के लिए वहाँ जाना चाहे क्योंकि यह तस्वीर एक शान्त वातावरण को प्रदर्शित करती है परन्तु यह "परमेश्वर के विश्राम" की सही तस्वीर नहीं।

यीशु ने कहा, **मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ; जैसे संसार तुम्हें देता है, मैं तुम्हें नहीं देता...** (यूहन्ना 14:27) उसकी शान्ति आत्मिक शान्ति है और उसका विश्राम तूफान के बीच में कार्य करता है तूफान की अनुपस्थिति में नहीं। यीशु इसलिए नहीं आया कि हमारे जीवन से सारी विरोधी बातें दूर कर दे परन्तु जीवन के तूफानों से निपटने का एक भिन्न तरीका हमें सिखाया। हमें अपने ऊपर उसका जूआ ले लेना है और उससे सीखना है (मत्ती 11:29)। इसका अर्थ यह है कि हमें वैसा ही जीवन जीना सीखना है जैसा उसका जीवन था।

यीशु ने चिन्ता नहीं की अतः हमें भी चिन्ता नहीं करनी है।

यदि आप इस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि आप के पास चिन्ता करने का कोई विषय न हो इससे पहले कि आप चिन्ता करना बन्द कर दें तो मुझे आप को यह बताना होगा कि ऐसा समय कभी नहीं आएगा। मैं नकारात्मक नहीं हूँ। मैं निष्कपट हूँ।

मत्ती 6:34 हमें परामर्श देता है कि हमें कल की चिन्ता नहीं करनी चाहिए क्योंकि हर दिन के लिए अपनी ही काफी समस्याएँ है। यीशु ने स्वयं यह कहा था, और वह निश्चय ही नकारात्मक नहीं था। तूफान के बीच रहते हुए भी शान्त रहना, परमेश्वर के विश्राम का आनन्द उठाना, इन सब बातों में परमेश्वर की महिमा होती है क्योंकि इस से सिद्ध होता है कि उसके कार्य करने के तरीके कारगर हैं।

चिन्ता, चिन्ता, चिन्ता!

मैंने अपने जीवन के अधिकांश वर्ष ऐसी बातों की चिन्ता करने में गंवा दिए जिन पर मेरा कोई बस नहीं था। मैं यह चाहूँगी कि काश वे वर्ष वापस लौट आएँ और फिर भिन्न तरीके से वे वर्ष बिताऊँ। परमेश्वर ने जो समय हमें दिया है एक बार उसे नष्ट कर देने के बाद यह असम्भव है कि वह समय फिर से वापस आ जाए और हम दूसरी प्रकार से उन्हें बिताएँ।

मेरे पति ने कभी चिन्ता नहीं की। कभी कभी मैं उनसे क्रोधित हो जाती थी क्योंकि वह मेरे साथ उन विषयों पर चिन्ता नहीं किया करते थे जब मैं उन आशाहीन संभावनाओं की बात करती थी जिनमें परमेश्वर यदि हमारी सहायता करने न आए तो क्या हो। मैं रसोई में बैठ जाया करती थी और उन सारे बिल और चेक बुक को देख कर परेशान हो जाती थी क्योंकि बिल हमारे पैसों से अधिक मूल्य के होते थे। डेव दूसरे कमरे में बच्चों के साथ खेल रहे होते थे, टेलीविजन देख रहे होते थे और बच्चे उन के ऊपर चढ़ कर उनके बालों में रोलर लगा रहे होते थे।

मुझे याद है कि मैं अप्रिय वाणी में उनसे कहती थी, “आप खेलने के बदले यहाँ क्यों नहीं आते और कुछ करते जैसे मैं इस अव्यवस्था को ठीक करने का प्रयत्न कर रही हूँ!” वह कहते, “तुम क्या चाहती हो कि मैं करूँ?” मैं कुछ नहीं जानती थी; मैं तो केवल इसलिए क्रोधित थी कि जब मैं इस

आर्थिक समस्या को सुलझाने का प्रयत्न कर रही हूँ ऐसे समय में वह आनन्दपूर्वक खेल रहे हैं।

डेव मुझे समझाने का प्रयत्न करते थे यह याद दिला कर कि परमेश्वर ने हमारी आवश्यकताओं को सदैव पूरा किया है बस हमें अपना कार्य करते रहना है (दहेकी देना, प्रार्थना करना और भरोसा रखना) और परमेश्वर अपना कार्य करता रहेगा। (मैं यहाँ स्पष्ट कर दूँ कि डेव विश्वास कर रहा था जबकि मैं चिन्ता कर रही थी) मैं डेव और बच्चों के साथ कमरे में आयी और थोड़ी देर के बाद फिर यह विचार मेरे मन में लौट आया "अब हम क्या करेंगे? इन बिलों का भुगतान कैसे करेंगे? क्या होगा यदि..."

और फिर मैं इन सारी विपत्तियों को अपनी कल्पना के पर्दे पर एक सिनेमा की तरह देखने लगी—बंधक बना लिया जाना, मोटरकार का छिन जाना, अपने मित्रों और संबधियों को अपना आर्थिक संकट बताना यदि उनसे आर्थिक सहायता माँगनी पड़े। क्या आपने भी कभी इस प्रकार की "सिनेमा" देखी है। अथवा इस प्रकार के विचार आपके मन में लगातार घूमे हैं? निःसंदेह यह हुआ होगा, नहीं तो आप यह पुस्तक नहीं पढ़ रहे होते।

मैं फिर से रसोईघर में गयी, सारी रसीदें निकालीं, केलकुलेटर और चेक बुक उठा कर फिर से वही कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। जितना अधिक मैं यह करती उतना ही अधिक मैं परेशान हो जाती। मैं डेव और बच्चों पर चिल्लाती कि वे आनन्द मना रहे हैं जबकि मैं सारी "जिम्मेदारियाँ" उठा रही हूँ।

वास्तव में जो मैं अनुभव कर रही थी वह जिम्मेदारियाँ नहीं थीं परन्तु वह चिन्ता थी जिसके लिए परमेश्वर ने कहा है कि सारी चिन्ताएँ मुझ पर डाल दो।

अब मैं इस बात को समझती हूँ कि अपनी प्रारम्भिक वैवाहिक जीवन की शामें जो परमेश्वर ने मुझे दी थीं किस प्रकार मैंने उन्हें व्यर्थ गंवा दी थीं। परमेश्वर की ओर से दिया गया समय बहुमूल्य वरदान है। परन्तु मैंने यह शैतान को दे दिया था। आपका समय आपका अपना है। बुद्धिमानी से इसका उपयोग करें, फिर आप को ऐसा समय नहीं मिलेगा।

परमेश्वर हमारी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, और वह ऐसा कई तरीकों से करता है। वह कभी हमें निराश नहीं करता—एक बार भी नहीं। परमेश्वर विश्वासयोग्य है।

चिन्ता न करें—परमेश्वर पर भरोसा रखें

तुम्हारा स्वभाव लोभरहित हो, और जो तुम्हारे पास है उसी पर सन्तोष करो; क्योंकि उसने आप ही कहा है, मैं तुझे कभी न छोडूँगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा।

इब्रानियों 13:5

जब हम इस सोच में पड़ जाते हैं कि पता नहीं परमेश्वर हमारी आवश्यकताओं को पूरी करेगा या नहीं तब पवित्र शास्त्र का यह गौरवशाली वचन हमें उत्साहित करता है।

इस खण्ड में, परमेश्वर यह चाहता है कि हम इस बात को जान जाएँ कि हमें अपना मन धन पर नहीं लगाना है इस बात पर आश्चर्य नहीं करना है कि हम किस प्रकार अपनी देखभाल करेंगे क्योंकि वह हमारी देखभाल करेगा। उसकी यह प्रतिज्ञा है कि न वह हमें छोड़ेगा न त्यागेगा।

अपने हिस्से का कार्य करते रहें, परन्तु परमेश्वर के हिस्से का कार्य करने का प्रयत्न न करें। यह बोझ बहुत भारी है—यदि आप सावधानी नहीं बरतेंगे आप इस के बोझ से टूट जाएँगे।

चिन्ता न करें। **यहोवा पर भरोसा रख, और भला कर; देश में बसा रह, और सच्चाई में मन लगाए रह। (भजन संहिता 37:3)**

यह प्रतिज्ञा है!

अध्याय

13

एक दोष लगाने वाला, समालोचक और संदेहपूर्ण मन

एक दोष लगाने वाला, समालोचक और संदेहपूर्ण मन

अध्याय 13

> *"दोष मत लगाओ कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए।"*
>
> मत्ती 7:1

समालोचक, संदेहपूर्ण और दोष लगाने वाले व्यवहार के कारण मनुष्यों के जीवन में कई यातनाएँ आ जाती हैं । इन शत्रुओं के कारण हमारे एक दूसरे के साथ के सम्बन्ध नष्ट हो जाते हैं। एक बार फिर मन युद्धभूमि है।

विचार—"मैं सोचता हूँ"—एक व्यक्ति को एकान्तवासी बना देने के लिए शैतान इस हथियार का प्रयोग कर सकता है। ऐसे व्यक्ति किसी के साथ रहना पसन्द नहीं करते जो हर बात में अपनी सलाह देना चाहते हैं।

उदाहरणार्थ, मैं एक ऐसी महिला को जानती थी जिसका पति एक बहुत धनी व्यापारी था। वह सामान्यतः शान्त प्रकृति का था, और वह चाहती थी कि वह अधिक बात किया करे। वह बहुत सी चीज़ों के बारे में बहुत कुछ जानता था। वह उस पर तब क्रोधित हो जाती थी जब वे किसी समूह में होते थे और वार्तालाप किसी ऐसे विषय पर आरम्भ हो जाता था जिस विषय पर उसके पति को अच्छा ज्ञान था और बहुत अच्छी तरह दूसरों को इस विषय के बारे में बता सकता था परन्तु वह नहीं बताता था।

एक शाम वह और उसकी पत्नी किसी पार्टी के बाद जब घर लौट कर आए तो पत्नी ने ताड़ना देते हुए कहा, "तुम ने वहाँ उन लोगों को वह सब क्यों नहीं बताया जिसे तुम अच्छी तरह जानते हो और वह लोग उसी विषय पर बात चीत कर रहे थे? तुम केवल वहाँ बैठे रहे और इस प्रकार व्यवहार कर रहे थे जैसे तुम कुछ भी नहीं जानते हो!"

"मैं जो जानता हूँ वह तो मैं जानता ही हूँ" उसने कहा "मैं शान्त हो कर सुन रहा था जिससे मैं पता लगा सकूँ कि दूसरे क्या जानते हैं।"

मैं कल्पना कर सकती हूँ कि इसी कारण वह एक धनी व्यक्ति था। वह बुद्धिमान भी था! बहुत कम मनुष्य बिना बुद्धि के धन प्राप्त करते हैं। जो लोग

सम्बन्ध बनाने में बुद्धि का प्रयोग नहीं करते हैं ऐसे लोगों के मित्र भी बहुत कम होते हैं।

दोष लगाना, अपनी सलाह थोपना और समालोचना करना, यह तीन बातें हैं जिनसे सम्बन्ध समाप्त हो जाता है। निःसंदेह शैतान मुझ से और आप से यही चाहता है कि हम अकेले पड़ जाए, हमें अस्वीकार कर दिया जाए ताकि वह हमारे मन के इन क्षेत्रों पर आक्रमण कर दे। मैं आशा करती हूँ कि इस अध्याय में हम उन गलत विचारों को पहचानना सीखेंगे और संदेह से कैसे निपटा जाए यह भी सीखेंगे।

दोष लगाने की व्याख्या

ग्रीक शब्द जिसका अनुवाद "दोष लगाना" किया गया है, पुराने और नये नियम के शब्दों का *वाईन का शब्दकोष* उसकी व्याख्या इस प्रकार करता है दूसरों के दोष पर निर्णय देना और इसका संदर्भ एक दूसरे शब्द "धिक्कार" से भी दिया गया है[1] इसी प्रकार "दोष" शब्द की व्याख्या है "एक धारणा बना लेना" और इसका संदर्भ शब्द "दण्ड" से भी दिया गया है।[2]

केवल परमेश्वर के पास ही यह अधिकार है कि वह किसी को धिक्कार सके अथवा दण्ड की आज्ञा सुना सके इस कारण जब हम किसी पर दोष लगाते हैं तो हम स्वयं को परमेश्वर के तुल्य ठहराते हैं।

मैं आपके विषय में तो नहीं जानती परन्तु इससे मेरे भीतर थोड़ा सा "परमेश्वर का भय" जागृत हो जाता है। मैं परमेश्वर जैसा बनने का प्रयत्न करने में इच्छुक नहीं। किसी समय मेरे व्यक्तित्व में यह क्षेत्र एक बड़ी समस्या के रूप में था और मुझे विश्वास है कि कुछ बातें जो परमेश्वर ने मुझे सिखाई हैं उन्हें आप के साथ यदि मैं बाँटू तो आप को उस से कुछ सहायता मिलेगी।

समालोचना करना, अपनी सलाह थोपना और दोष लगाना इन सब का एक दूसरे से सम्बन्ध है अतः हम इन सब का अध्ययन एक विशाल समस्या के रूप में करेंगे।

मैं आलोचक थी क्योकि मैं सही चीज़ को देखने के बदले सदैव गलत चीज़ ही देखा करती थी। कुछ लोगों में यह दोष दूसरों की अपेक्षा अधिक होता है। कुछ प्रसन्न चित्त व्यक्तित्व वाले लोग जीवन में केवल "आनन्द और हँसी" को छोड़ और कुछ देखना नहीं चाहते ताकि उन का आनन्द बना रहे। निराशावादी

एवं शासक व्यक्तित्व वाले लोग प्रायः गलती ही देखा करते हैं, इस श्रेणी के लोग अपनी नकारात्मक सलाह देने में बहुत उदारता दिखाते हैं।

हमें यह समझ लेना चाहिए कि हम सब अपने अपने ढंग से चीज़ों को देखते हैं। हम लोगों को बताना चाहते हैं कि हम क्या सोचते हैं, जो हम सोचते हैं वह हो सकता है कि हमारे लिए ठीक हो परन्तु यह आवश्यक नहीं कि वह आपके लिए भी सही हो। निःसंदेह हम सब जानते हैं "तू चोरी न करना" सभी के लिए सही है, परन्तु मैं यहाँ उन हज़ारों चीज़ों के विषय में बात कर रही हूँ जिनका प्रति दिन हम से सामना होता है वे न तो गलत है न सही, परन्तु केवल व्यक्तिगत चुनाव पर निर्भर है। यह वह चुनाव है जो लोगों को स्वयं करना है बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप द्वारा चुनाव करना है।

मेरे पति और मैं बहुत सी बातों में अत्याधिक भिन्न हैं। उन में से एक बात है, घर को कैसे सजाया जाए। ऐसा नहीं कि हमें वह चीज़ पसन्द नहीं आती जो दूसरा चुन लेता है परन्तु जब हम घर की वस्तुओं की खरीदारी के लिए बाज़ार जाते हैं तब सदैव ऐसा होता है कि डेव को कोई और चीज़ पसन्द आती है और मुझे कुछ और, क्यों? ऐसा इसलिए क्योंकि हम दोनों भिन्न व्यक्ति हैं। उन की सलाह उतनी ही अच्छी है जितनी मेरी और मेरी उतनी ही अच्छी जितनी उनकी; परन्तु वे दोनों सलाह भिन्न हैं।

यह समझने में मुझे वर्षों लग गए कि डेव एक गलत व्यक्ति नहीं था यदि वह मेरे विचारों से सहमत नहीं था। मैं उसे बताती रहती थी कि वह गलत है क्योंकि वह मेरे विचारों से सहमत नहीं है। और मेरे इस व्यवहार के कारण हमारे सम्बन्धों में एक तनाव सा पैदा हो गया था।

घमण्डः "अहं" समस्या

क्योंकि मैं उसे अनुग्रह के कारण जो मुझ को मिला है, तुम में से हर एक से कहता हूँ, कि जैसा समझना चाहिए उससे बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे; पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को विश्वास परिमाण के अनुसार बाँट दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे।

रोमियों 12:3

दोष लगाना और आलोचना करना यह दोनों एक और गहरी समस्या घमण्ड के फल हैं। जब हमारा अहं जितना बड़ा होना चाहिए उससे और भी बड़ा हो

जाता है तब यह हमारे सम्मुख कई समस्याओं को ले आता है। बाइबल लगातार हमें इसके विषय में चेतावनी देती है।

जब भी हम किसी क्षेत्र में दूसरों से बहुत अच्छे होते हैं तो वह इसलिए क्योंकि परमेश्वर ने हमें उसके लिए अनुग्रह का वरदान दिया है। यदि हम स्वयं के विषय में बहुत उच्च विचार रखते हैं तब हम दूसरों को "अपने से कम" देखना आरम्भ कर देते हैं। इस प्रकार का व्यवहार अथवा विचार परमेश्वर की दृष्टि में घृणित है और यह शत्रु के लिए हमारे जीवन में कई द्वार खोल देता है।

पवित्र भय

हे भाइयो, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए, तो तुम जो आत्मिक हो, नम्रता के साथ ऐसे को संभालो, और अपनी भी चौकसी रखो कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो।

तुम एक दूसरे का भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरी करो।

क्योंकि यदि कोई कुछ न होने पर भी अपने आप को कुछ समझता है, तो अपने आप को धोखा देता है।

गलतियों 6:1–3

ध्यान पूर्वक पवित्र शास्त्र के इन पदों का परीक्षण करने पर हमें यह पता चलता है कि हम किस प्रकार दूसरों की निर्बलता को दूर कर सकते हैं। हमारे अन्दर एक प्रकार का मानसिक व्यवहार जागृत कर देता है जिसे हमें बनाए रखना है। यह हमारे भीतर घमण्ड का एक "पवित्र भय" होना चाहिए और दूसरों पर दोष लगाने और उनकी आलोचना करने में सावधान रहना चाहिए।

हम कौन हैं जो दूसरों पर दोष लगाते हैं?

तू कौन है जो दूसरे के सेवक पर दोष लगाता है? उसका स्थिर रहना या गिर जाना उसके स्वामी ही से सम्बन्ध रखता है; वरन् वह स्थिर ही कर दिया जाएगा, क्योंकि प्रभु उसे स्थिर रख सकता है।

रोमियों 14:4

इसको इस प्रकार सोचें: मान लीजिए आपकी पड़ोसिन आप के द्वार पर आयी है और आप को निर्देश देना आरम्भ कर देती है कि आप के बच्चों को कौन सा ड्रेस पहन कर स्कूल जाना चाहिए अथवा उन्हें किन विषयों का चयन स्कूल में करना चाहिए। आप का क्या प्रत्युत्तर होगा? अथवा आपकी पड़ोसिन आप से आकर कहती है कि आप की नौकरानी जिस प्रकार से आप के घर की सफाई करती है उसे पसन्द नहीं (जबकि आप नौकरानी के कार्य से पूर्णतया सन्तुष्ट हैं)। आप पड़ोसिन से क्या कहेंगी?

यही बात इन पदों में कही गई है। हम सब परमेश्वर के है चाहें हमारे भीतर दुर्बलताएँ क्यों न हों, वह हमें स्थिर करता है और धर्मी ठहराता है। हम परमेश्वर के उत्तरदायी हैं एक दूसरे के नहीं; इसी कारण हमें आलोचना करने के द्वारा एक दूसरे पर दोष नहीं लगाना है।

लोगों के मनों में दोष लगाने वाले और आलोचनात्मक विचारों को भरने में शैतान अत्याधिक व्यस्त रहता है। मैं वह बात याद कर सकती हूँ जब मैं किसी पार्क में बैठ कर अथवा शापिंग मॉल में लोगों को देखकर उनके बारे में अपने मन में एक विचार धारणा बना लेती थी उनके बालों को देखकर, उनकी वेशभूषा को देखकर और उनके साथियों को देखकर मैं प्रसन्न हुआ करती थी। अभी भी हम दूसरों के प्रति विचार धारणाएँ बना लेते हैं परन्तु उनको व्यक्त नहीं करते। मैं विश्वास करती हूँ कि हम उस स्थान तक पहुँच सकते हैं जहाँ हमारे पास बहुत अधिक विचार धारणाएँ न हों और यदि हों भी तो आलोचनात्मक प्रकृति की न हों।

मैं बहुधा स्वयं से कहती हूँ "जॉयस, तुम्हें इस से कोई लेना देना नहीं।" जब आप अपनी विचार धारणाओं पर इस प्रकार मनन करते हैं कि वे गुण दोष बताने वाली धारणाएँ बन जाती हैं तब यह एक समस्या का रूप ले लेती है। जितना अधिक आप इस के बारेमें सोचते हैं उतनी ही बड़ी यह समस्या बनती जाती है जब तक कि आप इसे दूसरों पर व्यक्त नहीं करते अथवा उस व्यक्ति पर जिस के विषय में आपने यह धारणाएँ बनायी हों। तब यह विस्फोटक बन जाती है और हमारे सम्बन्धों विशेषकर आत्मिक सम्बन्धों को बहुत क्षति पहुँचाती है। आप स्वयं को इस समस्या से बचा सकते हैं यदि आप यह कहना सीख जाएँ, "इन से मेरा कोई लेना देना नहीं।"

दोष लगाना एवं आलोचना करना मेरे परिवार में अनियंत्रित थे इसी कारण मैं "उनके साथ साथ" बड़ी हुई! हो सकता है आपके साथ भी ऐसा हुआ हो,

यह वैसा ही है जैसे टूटे हुए पैर से बाल खेलने का प्रयत्न करना। मैं परमेश्वर के साथ "बाल खेलने का" प्रयत्न कर रही थी; मैं उसके जैसा कार्य करना चाहती थी उसकी तरह सोचना चाहती थी परन्तु मैं ऐसा न कर सकी। इससे पहले कि मैं अपने मन के गढ़ों को जान जाती और उन से निपटती ताकि मेरा व्यवहार बदल सके, मैने कई वर्ष दुख में बिताए।

याद रखें, आप के कार्य तब तक नहीं बदल सकते जब तक आपका मन न बदल जाए।

मत्ती 7:1–6 हमें दोष लगाना और आलोचना विषय पर बहुत कुछ सिखाता है। जब आप के मन में इसी प्रकार की समस्या हो तब आप यह ही खण्ड पढ़ें। चिल्ला कर पढ़ें और शैतान जो आपके मन में गढ़ बनाने का प्रयत्न कर रहा है उसके विरूद्ध इनको हथियार बना कर प्रयोग करें। हो सकता है वह उसी गढ़ से अपना कार्य कर रहा हो जो उसने वर्षों पूर्व वहाँ बना रखा है।

हम इस खण्ड का अवलोकन करेंगे और हर हिस्से की मैं व्याख्या करुँगी।

बोने और काटने का न्याय

दोष मत लगाओ कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए।

क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा; और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी नाप से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा।

मत्ती 7:1–2

यह पद स्पष्ट रूप से हमें बताते हैं कि हम जो बोएँगे वही काटेंगे। (गलतियों 6:7) बोना और काटना केवल कृषि और आर्थिक क्षेत्र में ही नहीं प्रयोग होते उनका प्रयोग मानसिक क्षेत्र में भी होता है। जिस प्रकार फसल और धन विनियोग में बोना और काटना होता है उसी प्रकार व्यवहार को भी हम बो और काट सकते हैं।

एक पादरी जिन्हें मैं जानती हूँ बहुधा कहते हैं कि जब वह यह सुनते हैं कि कोई उनके बारे में अभद्र और दोष लगाने वाली बातें कह रहा है तब वे स्वयं से यह पूछते हैं "क्या वे बो रहे हैं अथवा मैं काट रहा हूँ?" बहुत बार हम अपने जीवन में वही काटते हैं जो हमने बहुत पहले किसी और के जीवन में बोया था।

चिकित्सक, अपना उपचार कर!

"तू क्यों अपने भाई की आँख के तिनके को देखता है, और अपनी आँख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता? जब तेरी ही आँख में लट्ठा है, तो तू अपने भाई से कैसे कह सकता है," ला मैं तेरी आँख से तिनका निकाल दूँ।

हे कपटी, पहले अपनी आँख में से लट्ठा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आँख का तिनका भली भाँति देखकर निकाल सकेगा।

मत्ती 7:3–5

शैतान को यह अच्छा लगता है कि हम दूसरों के दोष निकालने में स्वयं को व्यस्त रखें। इस प्रकार हम स्वयं को कभी नहीं देख पाएँगे कि हम में क्या गलत है जिससे हम निपट सकें।

हम दूसरों को नहीं बदल सकते; केवल परमेश्वर दूसरों को बदल सकता है। हम स्वयं को भी नहीं बदल सकते परन्तु हम पवित्र आत्मा के साथ सहयोग कर सकते हैं और उसको कार्य करने की अनुमति दे सकते हैं। स्वतंत्रता का पहला कदम होता है कि हम उस सत्य का सामना करें जो परमेश्वर हमें दिखाने का प्रयत्न करता है।

जब हम प्रत्येक व्यक्ति के अवगुणों पर ही अपने विचार और बातचीत को केन्द्रित करते हैं तब हम अपने व्यवहार से ही धोखा करते हैं। इसी कारण यीशु ने आज्ञा दी, कि हमें इस बात को नहीं देखना है कि दूसरे लोगों में क्या क्या बुराई है जबकि हमारे ही भीतर बहुत अधिक बुराई है। परमेश्वर को आप पहले स्वयं के ऊपर कार्य करने दीजिए और तब आप अपने भाई को मसीही मार्ग पर चलाने में उसकी सहायता करना सीख जाएँगे। यही पवित्र शास्त्र की शिक्षा है।

एक दूसरे से प्रेम रखें

"पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो, और अपने मोती सूअरों के आगे मत डालो; ऐसा न हो कि वे उन्हें पाँवों तले रौंदें और पलटकर तुम को फाड़ डालें।"

मत्ती 7:6

मैं विश्वास करती हूँ कि पवित्र शास्त्र का यह वचन हमें एक दूसरे से प्रेम करने की योग्यता की ओर संकेत करता है जो हमें परमेश्वर ने दी है।

यदि आप और मैं एक दूसरे से प्रेम करने के बदले हम उनकी आलोचना करें या उन पर दोष लगाएँ, तब हमने वह पवित्र वस्तु (प्रेम) कुत्तों और सूअरों (शैतानी आत्माएँ) के सामने डाल दी। हम ने उनके लिए एक द्वार खोल दिया कि वे पवित्र वस्तुओं को अपने पावों से रौंद डालें और हमें फाड़ डालें।

हमें इस बात को समझने की आवश्यकता है कि हम "प्रेम के साथ चलना" के द्वारा ही स्वयं को शैतान के आक्रमण से बचा सकते हैं। मैं यह विश्वास नहीं करती कि जो व्यक्ति वास्तव में प्रेम में चल रहा है उसकी शैतान कुछ भी हानि कर सकेगा।

जब चौथा बच्चा मेरे गर्भ में था, मैं मसीही थी, पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पायी हुई थी, सेवकाई के लिए बुलायी जा चुकी थी और एक परिश्रमी बाइबल की छात्रा थी। मैंने अपने विश्वास के द्वारा चँगाई देना भी सीख लिया था। फिर भी गर्भ के प्रथम तीन महीने तक मैं बहुत अधिक अस्वस्थ थी। मेरा वज़न और शक्ति भी कम हो गयी थी। अपना अधिकतर समय मैं सोफे पर ही लेटे लेटे बिता देती थी। मेरे सिर में चक्कर आते रहते थे और मैं अत्याधिक थकी रहती थी जिससे कि मैं चल भी नहीं पाती थी!

इस दशा को मैं समझने में असमर्थ थी क्योंकि इससे पहले के तीन गर्भ के अनुभव मेरे लिए आश्चर्यजनक थे। उस समय मैं परमेश्वर के वचन को बहुत अच्छी तरह नहीं जानती थी हांलाकि मैं गिरजे जाया करती थी परन्तु मैंने अपने विश्वास का प्रयोग किसी कार्य के लिए अब तक नहीं किया था। अब मैं परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को भली भांति जानती थी फिर भी मैं अस्वस्थ थी—परमेश्वर से प्रार्थना करने के बाद भी और शैतान को झिड़कने के बाद भी मेरी समस्या दूर नहीं हो रही थी।

एक दिन जब मैं अपने बिछौने पर लेटी हुई अपने पति और बच्चों के खेलने की आवाज़ें जो पिछवाड़े से आ रही थीं, सुन रही थी, मैंने आक्रमणकारी ढंग से परमेश्वर से पूछा, "मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है? मैं इतनी अस्वस्थ क्यों हूँ? मैं स्वस्थ क्यों नहीं हो पा रही हूँ?"

पवित्र आत्मा ने मुझ से मत्ती 7 पढ़ने के लिए कहा। मैंने परमेश्वर से पूछा कि इस अध्याय का मुझ से और मेरे स्वास्थ्य से क्या सम्बन्ध। मैने यह अनुभव किया कि मुझे यह अध्याय पढ़ना चाहिए। अन्त में परमेश्वर ने मुझे एक घटना याद दिलाई जो कई वर्षों पूर्व घटी थी।

मैं घर में बाइबल का अध्ययन कराया करती थी उसमें एक जवान महिला जिसका नाम जेन था आया करती थी। जेन नियमित रूप से इस पाठ्यक्रम में आया करती थी परन्तु जब वह गर्भवती हो गयी तब उसे नियमित रूप से आने में कठिनाई होने लगी क्योंकि वह अब सदैव थकी हुई रहती थी।

मैंने अपने बिछौने पर लेटे लेटे उस "मसीही बहन" को याद किया, तब मैंने उस पर दोष लगाए थे उससे बात चीत की थी उसकी आलोचना की थी क्योंकि जेन अपनी परिस्थितियों का सामना नहीं कर रही थी और बाइबल अध्ययन में आने के लिए परिश्रम नहीं कर रही थी। हम ने तब उसकी सहायता नहीं की थी परन्तु हम ने यह विचार धारणा बना ली थी कि वह दुर्बल थी और अपने आलसी स्वभाव का कारण अपनी गर्भावस्था को ठहराती थी।

अब मैं भी बिलकुल उन ही परिस्थितियों में थी जिन में दो वर्ष पूर्व जेन थी। परमेश्वर ने मुझे बताया कि हांलाकि मैं अपनी पहली तीन गर्भावस्थाओं में स्वस्थ थी परन्तु मैंने आलोचना और दोष लगाने के कारण शैतान के लिए एक बड़ा द्वार खोल दिया था। मैंने अपने मोती, पवित्र वस्तु (जेन से प्रेम करने की योग्यता) कुत्तों और सूअरों के आगे डाल दी थी और अब वे मुझे फाड़ कर टुकड़े टुकड़े कर रहे थे। मैं आप को बता सकती हूँ कि मैंने तुरन्त पश्चाताप किया। जैसे ही मैंने ऐसा किया मैं स्वस्थ हो गयी और फिर पूरे गर्भावस्था में मैं ठीक रही।

इस घटना से मैंने दूसरों पर दोष लगाना एवं आलोचना करने के विषय में एक महत्वपूर्ण बात सीखी। इस अनुभव के बाद अब फिर कभी मैं यह दोहराती नहीं परन्तु मुझे यह कहते दुःख होता है कि तब से अब तक मैंने बहुत सी गलतियाँ की हैं। हर बार परमेश्वर मेरी सहायता करता है जिसके लिए मैं उसकी आभारी हूँ।

हम *सब* गलतियाँ करते हैं। हम *सब* के अन्दर दुर्बलताएँ हैं। बाइबल कहती है कि हमें दूसरों के प्रति कठोर हृदय अथवा आलोचक आत्मा नहीं रखनी है परन्तु एक दूसरे को क्षमा करना है और एक दूसरे के लिए दया रखनी है जिस प्रकार परमेश्वर ने मसीह के द्वारा हमारे साथ किया है। (इफिसियों 4:32)

दोष लगाने से दण्ड आता है

अंतः हे दोष लगानेवाले, तू कोई क्यों न हो, तू निरूत्तर है; क्योंकि जिस बात में तू दूसरे पर दोष लगाता है उसी बात में अपने आप को

भी दोषी ठहराता है, इसलिये कि तू जो दोष लगाता है स्वयं ही वह काम करता है।

रोमियों 2:1

दूसरे शब्दों में जिस बात पर हम दूसरों पर दोष लगाते हैं वही बात हम स्वयं करते हैं।

परमेश्वर ने मुझे यह सिद्धान्त समझाने के लिए एक बहुत अच्छा उदाहरण दिया है। मैं इस बात पर विचार कर रही थी कि हम कोई कार्य करते हैं और सोचते हैं कि यह बिलकुल ठीक है परन्तु यदि कोई अन्य व्यक्ति उसी काम को करे तो हम उसे दोषी ठहराते हैं ऐसा क्यों? उसने कहा, "जॉयस, तुम स्वयं को तो रंगीन चश्मे से देखती हो परन्तु दूसरों को बड़ा करने वाले लेन्स से देखती हो।"

हम अपने स्वयं के व्यवहार के लिए बहाने ढूँढ लेते हैं परन्तु जब अन्य कोई उसी कार्य को करता है तब हम निर्दयी हो जाते हैं। जैसा हम चाहते हैं कि लोग हमारे साथ करें हमें भी दूसरों के साथ वैसा ही करना चाहिए। (मत्ती 7:12) यदि यही सिद्धान्त हम अपना लें तो दोष लगाना और आलोचना करने से हम बच सकते हैं।

एक दोष लगाने वाला मन, नकारात्मक मन की ही एक डाली है–किसी व्यक्ति में क्या अच्छाई है इसके बदले केवल यह सोचना कि क्या बुराई है।

सकारात्मक रहें नकारात्मक नहीं।

दूसरों को तो लाभ होगा, परन्तु आप को दूसरों से भी अधिक लाभ होगा।

मन की रक्षा करें

सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्त्रोत वही है।

नीतिवचन 4:23

यदि आप चाहते हैं कि जीवन आपकी ओर और आप में से बहे तो अपने मन की रक्षा करें।

कुछ विशेष प्रकार के विचार जैसे दोष लगाना और आलोचना करना एक

विश्वासी के जीवन में कदापि नहीं होने चाहिए। सारी बातें जो परमेश्वर हमें सिखाने का प्रयत्न करता है, हमारे भले के लिए और हमें प्रसन्न रखने के लिए हैं। उसके मार्गों पर चलना फलदायक है; शैतान के मार्गों पर चलने से सड़न ही सड़न है।

संदेह के प्रति संदेहपूर्ण रहें

वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।

1 कुरिन्थियों 13:7

मैं विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि इस पद पर चलना मेरे लिए सदैव एक चुनौती रहा है। मैं संदेह करने के लिए ही बड़ी हुई। मुझे वास्तव में यह सिखाया गया था किसी पर भी भरोसा मत करना, विशेषकर उन लोगों पर जो अच्छे बने रहते हैं, क्योंकि वे कुछ न कुछ चाहते हैं।

मुझे यह सिखाया गया था कि दूसरों के प्रति संदेहपूर्ण दृष्टि रखो, ऐसा करते हुए मुझे लोगों के साथ बहुत निराशाजनक अनुभव हुए, मेरे मसीही बनने से पहले भी और बाद में भी। प्रेम के गुणों पर मनन करने पर मुझे पता चला कि प्रेम सदैव श्रेष्ठ चीज़ों पर विश्वास करता है और एक नया मन उत्पन्न करने में सहायता करता है।

जब आपके मन में विष भर दिया गया हो अथवा जब शैतान ने आपके मन में गढ़ बना दिए हों, परमेश्वर के वचन द्वारा मन को नया कर लें। परमेश्वर के वचन को याद करके आप ऐसा कर सकते हैं।

हमारे पास अद्‌भुत पवित्र आत्मा है जो हमें इस बात को बता देता है कि कब हमारे विचार गलत दिशा में जा रहे हैं। जब मेरे अन्दर प्रेम के विचारों के बदले संन्देह पूर्ण विचार आ जाते हैं तब परमेश्वर मुझे बता देता है। शारीरिक मनुष्य सोचता है, “यदि मैं मनुष्यों पर भरोसा रखूँगा तो लोग मेरा लाभ उठाने लगेंगे।” संभवतः इसके लाभ नकारात्मक अनुभव से बहुत अधिक हैं।

भरोसा और विश्वास जीवन में आनन्द लाता है और सम्बन्धों को शक्ति प्रदान करता है।

संदेह सारे सम्बन्धों को पंगु बना देता है और नष्ट कर देता है।

मुख्य बात यह है कि परमेश्वर के मार्ग कार्य करते हैं मनुष्य के नहीं। परमेश्वर दोष लगाना और संदेह को धिक्कारता है हम भी ऐसा ही करें। परमेश्वर जिससे प्रेमकरता है उससे प्रेम करें और जिससे वह घृणा करता है उससे घृणा करें।

संतुलित व्यवहार रखना ही सबसे उत्तम सिद्धान्त है। इसका अर्थ यह नहीं कि हम अपनी बुद्धि का प्रयोग न करें। हमें हर एक के सामने अपना जीवन यूँ ही खोल कर नहीं फेंक देना है और न ही किसी को यह अवसर देना है कि वह हमें दबा कर तोड़ डाले। परन्तु हमें नकारात्मक ढंग एवं संदेह से दूसरों को नहीं देखना है और यह आशा नहीं करनी है कि दूसरे हमारा लाभ उठाने का प्रयत्न करेंगे।

परमेश्वर पर पूर्णतया और मनुष्य पर सावधानीपूर्वक भरोसा रखें

जब वह यरूशलेम में फसह के समय पर्व में था, तो बहुतों ने उन चिह्नों को जो वह दिखाता था देखकर उसके नाम पर विश्वास किया।

परन्तु यीशु ने अपने आप को उनके भरोसे पर नहीं छोड़ा, क्योंकि वह सब को जानता था।

और उसे आवश्यकता न थी, कि मनुष्य के विषय में कोई गवाही दे, क्योंकि वह आप ही जानता था कि मनुष्य के मन में क्या है?

यूहन्ना 2:23–25

एक बार मैं गिरजे में एक बड़ी निराशाजनक अवस्था में फंस गयी थी, परमेश्वर ने मेरा ध्यान यूहन्ना 2:23–25 लगाया।

यह खण्ड यीशु और उसके चेलों के सम्बन्ध के विषय में बताता है। यह स्पष्ट रूप से कहता है कि यीशु ने उनके लिए स्वयं पर भी भरोसा नहीं किया। यह ऐसा नहीं कहता कि वह उनके प्रति संदेहपूर्ण था अथवा उसे उन पर भरोसा नहीं था; यह केवल इतना बताता है कि वह मनुष्य के स्वभाव को समझता था, उसने उनके लिए स्वयं पर भरोसा नहीं किया।

इससे मुझे एक अच्छी शिक्षा मिली। गिरजे की एक घटना से मैं बुरी तरह पीड़ित थी क्योंकि मैं कुछ महिलाओं के साथ बहुत अधिक संयुक्त हो गयी थी

और मैं अपना संतुलन खो चुकी थी। जब भी हम अपना संतुलन खो देते हैं हम शैतान के लिए एक द्वार खोल देते हैं।

1 पतरस 5:8 कहता है, **सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए।**

मैंने सीखा कि मैं उन महिलाओं के अन्दर वह भरोसा रखने का प्रयत्न कर रही थी जिसको केवल परमेश्वर ही कर सकता है। हम एक सीमा तक ही मनुष्यों के साथ सम्बन्ध रख सकते हैं। यदि हम बुद्धि के परे जाते हैं तब समस्याएँ आने लगेंगी और हमें चोट लगेगी।

अपना अन्तिम भरोसा सदैव परमेश्वर पर रखें। ऐसा करने पर पवित्र आत्मा के लिए एक द्वार खुल जाएगा और वह हमें बता देगा कि कहाँ पर हम संतुलन की रेखा पार कर रहे हैं।

कुछ लोग सोचते हैं कि उन्हें अच्छे बुरे का ज्ञान है जब कि वास्तव में वे संदेहपूर्ण हैं। आत्मा का एक सच्चा वरदान है–"आत्माओं की पहचान।" (1 कुरिन्थियों 12:10) यह अच्छे बुरे को बताता है केवल बुराई ही को नहीं। जो मन नया नहीं हुआ है वह संदेह को जन्म देता है, अच्छे बुरे को पहचानने का ज्ञान नया आत्मा से मिलता है।

सच्चे वरदानों के लिए प्रार्थना करें, शरीर के लिए नहीं जो आत्मा के वरदानों का छद्मवेष है। सच्चा आत्मिक ज्ञान प्रार्थना को उत्साहित करता है गपशप को नहीं। यदि किसी समस्या का समाधान करना है तो पवित्र शास्त्र के तरीके से करें शरीर के तरीके से नहीं जो समस्याओं को और भी बढ़ा देता है।

मन भावने वचन मीठे होते हैं और चंगाई देते हैं।

बुद्धिमान का मन उसके मुँह पर भी बुद्धिमानी प्रगट करता है, और उसके वचन में विद्या रहती है।

मनभावने वचन मधुभरे छत्ते के समान नाई प्राणों को मीठे लगते, और हड्डियों को हरी भरी करते हैं।

नीतिवचन 16:23–24

वचन और विचार हड्डी और मींग की तरह हैं—इतने समीप कि उनको पृथक करना कठिन है। (इब्रानियों 4:12)

हमारे विचार शान्त वचन हैं जिन्हें केवल हम और परमेश्वर ही सुनते हैं, परन्तु वे वचन हमारे भीतर के मनुष्य पर, हमारे स्वास्थ्य पर, हमारे आनन्द पर और हमारे व्यवहार पर प्रभाव डालते हैं। जो हम सोचते हैं वह प्रायः हमारे मुँह से बाहर आ जाता है। और इस बात का दुःख है कि कभी कभी उनके कारण हम मूर्ख लगने लगते हैं। दोष लगाने से, आलोचना करने से अथवा संदेह करने से हम कभी आनन्द प्राप्त नहीं कर सकते।

यीशु ने कहा कि वह इसलिए आया कि हम जीवन पाएँ और जीवन का आनन्द लें। (यूहन्ना 10:10) मसीह का मन रखें और आप एक बदले हुए नए जीवन में प्रवेश कर जाएँगे।

अध्याय
14

एक निष्क्रिय मन

एक निष्क्रिय मन

अध्याय 14

> *मेरे ज्ञान के न होने से मेरी प्रजा नष्ट हो गई...*
>
> होशे 4:6

यह कथन निष्क्रियता के क्षेत्र में बिलकुल सत्य है। अधिकांश मसीही इस शब्द से परिचित नहीं होते, और न वे इसके चिन्हों को पहचानते हैं।

निष्क्रियता क्रियाशीलता का विरोधी है। यह एक भयंकर समस्या है क्योंकि परमेश्वर का वचन हमें स्पष्ट रूप से सिखाता है कि हमें सचेत, सक्रिय और जागते रहना है (1 पतरस 5:8) हमारे भीतर जो वरदान है उसे चमका देना है। (2 तीमुथियुस 1:6)

मैंने "निष्क्रियता" शब्द की कई परिभाषाएँ पढ़ी हैं और मैं इसका वर्णन इस प्रकार करती हूँ—इच्छा की कमी, चेतना की कमी, सामान्य उदासीनता, निरूत्साह एवं आलस्य। निष्क्रियता के पीछे दुष्ट आत्माएँ होती हैं। शैतान जानता है कि निष्क्रियता इच्छा को कार्यान्वित होने में असफल कर देती है और इससे अन्त में एक विश्वासी की पराजय हो जाती है। जब तक एक व्यक्ति अपनी इच्छा से शैतान के विरूद्ध कार्य करता रहता है, तब तक शत्रु युद्ध को नहीं जीत सकता। परन्तु यदि वह निष्क्रिय हो जाता है तो वह एक गम्भीर समस्या में फंस जाता है।

अधिकांश विश्वासी सोचते हैं कि परमेश्वर ने जो कार्य उन्हें करने के लिए सिखाया है उसे वे नहीं कर पाते क्योंकि इसका कारण है उनके अन्दर चेतना की कमी। वे प्रशंसा करते हैं जब वे ऐसा करने का अनुभव करते हैं, देते हैं जब वे सोचते हैं ऐसा करना है, अपने वचन पर स्थिर रहते हैं जब वे सोचते हैं ऐसा करना है, और जब वे सोचते हैं कि ऐसा नहीं करना है तब वे ऐसा नहीं करते।

खाली स्थान एक अवसर है!

और न शैतान को अवसर दो।

इफिसियों 4:27

शैतान को जो हम स्थान देते हैं वह बहुधा खाली स्थान होता है। एक खाली, निष्क्रिय मन हर प्रकार के बुरे विचारों से सरलता से भर सकता है।

एक विश्वासी जिसका मन निष्क्रिय है वह इन बुरे विचारों का प्रतिरोध नहीं करता और इन विचारों को अपने विचार समझने लगता है। वह इस बात को नहीं समझ पाता कि दुष्ट आत्मा ने इन विचारों को उसके मन में इसलिए भर दिया है क्योंकि वहाँ पर भरने के लिए एक खाली स्थान था।

बुरे विचारों को अपने मन से अलग रखने का एक ही तरीका है कि अपना मन सही विचारों से पूर्णतया भरा रखें। शैतान को तो बाहर फेंका जा सकता है, परन्तु वह जाता है और सूखे स्थानों में घूमता रहता है। जब वह वापस अपने पुराने घर में लौट आता है उसे खाली पाता है, लूका 11:24–26 में बाइबल बताती है कि जब वह वापस आता है, अपने साथ दूसरों को भी ले आता है, और उस व्यक्ति की अन्तिम दशा पहली से भी बुरी हो जाती है। इसी कारण हमें किसी व्यक्ति के अन्दर से दुष्ट आत्मा को तब तक नहीं निकालना है जब तक वह व्यक्ति इस बात को अच्छी तरह से न सीख ले कि किस प्रकार उसे उस खाली स्थान को भरना है।

मैं यह नहीं कह रही हूँ कि हर एक वह व्यक्ति जिस के अन्दर बुरे विचार हैं उसमें दुष्ट आत्मा है। परन्तु बुरे विचारों के पीछे बहुधा दुष्ट आत्मा का हाथ होता है। एक व्यक्ति अपनी कल्पनाओं को लगातार बाहर कर सकता है परन्तु वे सदैव वापस आ जाती हैं जब तक वह उस खाली स्थान को अच्छे विचारों से भरना नहीं सीख जाता। जब शत्रु वापस आता है, फिर वह उस व्यक्ति में खाली स्थान को नहीं पाता है।

कुछ आक्रमणकारी पाप अथवा अधिकारिक पाप होते हैं और कुछ निष्क्रिय पाप, जो त्याग वाले पाप होते हैं। दूसरे शब्दों में कुछ बुरे कार्य हैं जो हम करते हैं, और कुछ सही कार्य हैं जिन्हें हम नहीं करते हैं। उदाहरणार्थ बिना सोचे हुए शब्दों के बोलने से एक सम्बन्ध नष्ट हो सकता है, परन्तु यह तब भी नष्ट हो सकता है जब हम सराहनीय शब्दों का प्रयोग नहीं करते जो हमें बोलना चाहिए परन्तु नहीं बोलते।

एक निष्क्रिय व्यक्ति सोचता है कि वह कुछ गलत नहीं कर रहा है क्योंकि वह कुछ कर ही नहीं रहा। अपनी त्रुटि का सामना करके वह कहेगा, “मैंने कुछ नहीं किया!” उसका विश्लेषण सही है परन्तु उसका व्यवहार सही नहीं। समस्या केवल इस कारण आयी क्योंकि उस ने कुछ नहीं किया।

एक निष्क्रियता पर विजय प्राप्त करें

कुछ वर्षों पहले मेरे पति डेव को निष्क्रियता की समस्या थी कुछ चीज़ें ऐसी भी थीं जिनमें वह सक्रिय थे। वह प्रत्येक दिन काम पर जाते थे, शनिवार को गोल्फ खेलते थे और रविवार को फुटबाल मैच देखते थे। इनको छोड़कर कुछ और कार्य उनसे कराना बहुत कठिन था। यदि मुझे कोई तस्वीर उनसे दीवार पर टंगवानी होती थी, तो इसको करने के लिए वह तीन अथवा चार सप्ताह लगा देते थे। इस कारण हमारे बीच एक तनाव उत्पन्न हो गया था। मुझे ऐसा लगता था, कि वह वही करते थे जो वह करना चाहते थे, उसको छोड़कर वह कुछ भी नहीं करते थे।

डेव परमेश्वर से प्रेम करते थे और जब उन्होंने इस समस्या को प्रभु के समक्ष रखा तो परमेश्वर ने उन्हें निष्क्रियता और उस के खतरों के बारे में सूचित किया। उन्होंने पाया कि उन के काम न करने के पीछे दुष्ट आत्माएँ हैं। कुछ क्षेत्रों में उन्हें कोई समस्या नहीं थी क्योंकि इन क्षेत्रों में उन्होंने अपनी इच्छा बना रखी थी, परन्तु दूसरे क्षेत्रों में उन्होंने अपनी इच्छा अपनी निष्क्रियता द्वारा शत्रु को दे दी थी। इन क्षेत्रों में वह इतने दुखी थे कि उनके अन्दर कोई इच्छा ही नहीं रह गयी थी कि वह काम को पूरा कर सकें।

परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना और प्रार्थना करना, यह दूसरे दो क्षेत्र थे, जिनमें वह निष्क्रिय थे। क्योंकि मैं जानती थी कि वह निर्देशों के लिए परमेश्वर को नहीं पुकारते थे अतः उनकी बात घ्यान देना मेरे लिए अत्याधिक कठिन थी। मेरे अन्दर विरोध करने की समस्या थी और आप देख सकते हैं कि किस प्रकार शैतान ने हमारी दुर्बलताओं को एक दूसरे के विरूद्ध प्रयोग किया। इस समस्या के कारण बहुत से लोगों का तलाक हो जाता है। क्या गलत है वे यह समझ ही नहीं पाते।

मैं वास्तव में अत्याधिक आक्रमणकारी हो गयी थी। मैं शरीर में सदैव परमेश्वर से आगे दौड़ जाती थी, अपने ढंग से कार्य करती थी और आशा करती थी कि परमेश्वर उस पर आशीष दे। डेव केवल परमेश्वर की प्रतीक्षा करने के अलावा कुछ भी नहीं करते थे। इस कारण मैं बहुत क्रोधित हो जाती थी। अब हम दोनों यह सोच कर हँसते हैं, कि पहले हम कैसे थे, परन्तु तब हमें हँसी नहीं आती थी, और यदि परमेश्वर अपना ध्यान हमारी ओर नहीं लगाता तो हमारा भी तलाक हो गया होता।

डेव मुझे बताया करते थे कि मैं सदैव परमेश्वर से आगे निकल जाया करती हूँ, मैं उत्तर देती थी कि तुम परमेश्वर से दस मील पीछे रहते हो। मैं आक्रमणकारी थी और डेव निष्क्रिय थे।

जब एक विश्वासी किसी ऐसे क्षेत्र में निष्क्रिय होता है, जिसमें उसके पास योग्यता और कौशल होते हैं, तब वह क्षेत्र भी अचल और व्यर्थ हो जाता है। जितना अधिक समय तक वह कुछ नहीं करता है, उतना ही अधिक वह कुछ नहीं करना चाहता है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण है शारीरिक व्यायाम।

मैं आज कल व्यायाम पर अधिक ध्यान दे रही हूँ और जितना अधिक मैं व्यायाम करती हूँ उतना ही मुझे यह सरल प्रतीत होता है। जब मैंने यह आरम्भ किया था, यह बहुत कठिन लगता था। जब भी व्यायाम के कार्यक्रम को आरम्भ करती थी मुझे बहुत पीड़ा होती थी क्योंकि व्यायाम के प्रति मैं बहुत समय से निष्क्रिय और आलसी थी। व्यायाम न करने के कारण मेरी शारीरिक दशा भी बिगड़ती जा रही थी। माँस पेशियों का प्रयोग न करने के कारण मैं दिन प्रति दिन दुर्भल होती जा रही थी।

डेव ने अपनी समस्या को समझना आरम्भ कर दिया था। वह दुष्ट आत्माओं का सामना कर रहा था, उसके लम्बे समय तक आलसी होने के कारण वे अपना नियंत्रण उस पर करती जा रही थीं। जब पवित्र आत्मा ने यह सत्य उस पर प्रदर्शित किया तब डेव ने यह निश्चय कर लिया कि अब वह आलस्य और विलम्ब छोड़ कर सक्रिय और आक्रमणकारी बनेगा।

निर्णय लेना तो बहुत सरल था, उसको अभ्यास में लाना एक कठिन कार्य था। यह कठिन था क्योंकि हर एक वह क्षेत्र जिसमें वह निष्क्रिय था, व्यायाम के द्वारा अब उसे उस क्षेत्र को फिर से शक्तिशाली बनाना था।

वह प्रातः पाँच बजे उठ जाता था, वचन को पढ़ता था, और काम पर जाने से पहले प्रार्थना करता था। *युद्ध आरम्भ हो गया था।* शैतान यह नहीं चाहता कि कोई उस पर विजय प्राप्त कर ले, और वह बिना लड़े पराजय स्वीकार नहीं करता। डेव परमेश्वर के साथ समय बिताने के लिए उठ जाता था परन्तु फिर सोफे पर वह सो जाता था। कई सुबह ऐसी हुआ करती थीं, जिसमें डेव फिर से सो जाता था फिर भी डेव प्रगति कर रहा था क्योंकि वह अपना बिछौना छोड़ कर प्रार्थना का जीवन बनाने का प्रयत्न कर रहा था।

कभी कभी वह निरूत्साहित भी हो जाता था। कभी कभी वह सोचता था कि वह प्रगति नहीं कर रहा है, वह जो पढ रहा है उसे समझ नहीं पा रहा है और उसकी प्रार्थनाएँ सुनी नहीं जा रही हैं। परन्तु वह लगा रहा क्योंकि पवित्र आत्मा ने उसे उसकी "निष्क्रिय" दशा के विषय में बता रखा था।

मैं यह देख रही थी कि अब यदि मैं डेव से तस्वीर टाँगने के लिए कहती हूँ अथवा घर के अन्य कार्यों के लिए कहती हूँ तो वह तुरन्त करने लगता है। अब उसने अपने प्रकार से सोचना और निर्णय लेना आरम्भ कर दिया था। कई बार वह करना नहीं चाहता था, परन्तु फिर वह अपनी इस इच्छा और शारीरिक इच्छा के विरूद्ध चला जाता था। जिस चीज़ को वह सही समझता था और जितना अधिक उस पर वह कार्य करता था उतना ही अधिक वह स्वतंत्रता का आनन्द उठाता था।

मैं आप को सच बता रही हूँ कि यह उसके लिए सरल नहीं था। वह कुछ दिनों अथवा कुछ सप्ताह स्वतंत्र नहीं था। निष्क्रियता पर काबू पाना एक बहुत कठिन अवस्था होती है, क्योंकि हमें समर्थन देने के लिए हमारे अन्दर इच्छाएँ नहीं होतीं।

परमेश्वर की सहायता से डेव ने यह कर दिखाया और अब वह बिलकुल निष्क्रिय नहीं है। रेडियो और टेलीविज़न के द्वारा "लाइफ इन द वर्ड" की जो सेवकाई है उसका वह प्रबन्धक है और इस सेवकाई के वित्तीय सम्बन्धी कार्यों का उत्तरदायित्व भी उसी पर है। वह मेरे साथ यात्रा भी करता है और हमारे यात्रा के कार्यक्रमों का निर्णय भी वही लेता है। वह एक श्रेष्ठ परिवार वाला मनुष्य है। वह प्रार्थना करता है और परमेश्वर के वचन के लिए समय भी देता है। संक्षेप में, वह एक ऐसा मनुष्य है जिसका सम्मान और प्रशंसा करनी चाहिए।

वह अभी भी गोल्फ खेलता है और खेल कूद के कार्यक्रम भी देखता है परन्तु जो कार्य उसे करने हैं उन्हें भी करता है। उसको देखकर किसी को भी ऐसा नहीं लगता कि, वह वही निष्क्रिय व्यक्ति है जो पहले था।

निष्क्रियता की दशा पर काबू पाया जा सकता है। परन्तु कार्यों की निष्क्रियता पर काबू पाने का प्रथम कदम है, मन की निष्क्रियता पर काबू पाना। डेव तब तक प्रगति नहीं कर पाया था, जब तक उसने अपने सोचने के ढंग को बदलने का निर्णय नहीं ले लिया।

सही सोचने से सही कार्य होता है।

इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।

रोमियों 12:2

एक शक्तिशाली सिद्धान्त परमेश्वर के सारे वचन में दिखाया गया है, कि कोई भी व्यक्ति कभी भी विजय के मार्ग पर नहीं चल सकेगा, जब तक वह इस बात को न समझ ले और अपने जीवन में न उतार ले कि *सही सोचना ही सही कार्य कराता है।*

दूसरे शब्दों में, *आप अपना व्यवहार नहीं बदल पाएँगे जब तक आप अपने विचार न बदल लें।*

परमेश्वर की क्रिया विधि के अनुसार, प्रथम सही सोचना और उसके बाद सही कार्य का स्थान है। मैं विश्वास करती हूँ कि सही कार्य एवं अच्छा व्यवहार, सही सोचने का ही "फल" है। अधिकांश विश्वासी सही कार्य करने का प्रयत्न करते रहते हैं, परन्तु फल इस प्रयत्न का उत्पाद नहीं। फल तो दाखलता में बने रहने का परिणाम है (यूहन्ना 15:4) और हम आज्ञाकारिता द्वारा दाखलता में बने रह सकते हैं (यूहन्ना 15:10)

इस सिद्धान्त को सिखाने के लिए मैं सदैव इफिसियों 4:22–24 का प्रयोग करती हूँ 22 पद कहता है, **कि पिछले तुम अपने चालचलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमानेवाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो।**

पद 24 भी यही विचार व्यक्त करता है, **और नये मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुरूप सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है।**

अतः हम देखते हैं कि पद 22 मूलतः हमें यह बताती है कि अनुचित कार्य न करें और पद 24 कहती है कि उचित कार्य करना प्रारम्भ करें। परन्तु पद 23 को मैं कहती हूँ "मिलाने वाला शास्त्र।" यह हमें बताता है कि किस प्रकार पद 22 से पद 24 **पर पहुँचना है: और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ।**

बिना विचारों को बदले यह असम्भव है कि गलत व्यवहार को सही व्यवहार में बदल लें। एक निष्क्रिय व्यक्ति सही चीज़ करना चाहेगा परन्तु वह ऐसा कर

नहीं सकेगा, जब तक कि वह अपने मन को परमेश्वर के वचन और उसकी इच्छानुसार सक्रिय न कर ले।

एक व्यक्ति का उदाहरण मेरे मन में आ रहा है जो मेरे सेमीनार की प्रार्थना सूची में था। उसकी समस्या व्यभिचार से सम्बन्धित थी। वह वास्तव में अपनी पत्नी से प्रेम करता था, और अपने विवाह को नष्ट नहीं होने देना चाहता था, परन्तु उस की समस्या का समाधान आवश्यक था, अन्यथा उसका विवाह अवश्य ही नष्ट हो जाता।

“जॉयस, मेरी समस्या व्यभिचार से सम्बन्धित है,” उसने कहा, मैं अन्य महिलाओं से अलग नहीं रह सकता। क्या आप मेरे छुटकारे के लिए प्रार्थना करेंगी? “मेरे लिए कई बार प्रार्थनाएँ हुई हैं, परन्तु मुझे ऐसा कभी प्रतीत नहीं हुआ कि मैंने कोई प्रगति की हो।”

उसे बताने के लिए पवित्र आत्मा ने मुझे यह निर्देश दिया, “हाँ, मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करूँगी, परन्तु तुम अपने मानस पटल पर जो तस्वीरें देखने की अनुमति दे देते हो उसका उत्तरदायित्व तुम्हें ले लेना होगा। यदि तुम स्वतंत्रता का आनन्द लेना चाहते हो, तो तुम्हें यह अश्लील तस्वीरें अपने विचारों में नहीं लानी हैं, और इन अन्य महिलाओं के साथ कल्पनाएँ भी नहीं करनी हैं।”

इस मनुष्य की भाँति दूसरे भी अब यह समझ रहे हैं कि, क्यों वे स्वतंत्रता का अनुभव नहीं कर रहे हैं: *वे अपना व्यवहार तो बदलना चाहते हैं, परन्तु अपनी सोच नहीं।*

मन ही एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ मनुष्य “पाप के साथ खेला करते है” मत्ती 5:27, 28 में **यीशु ने कहा है तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'व्यभिचार न करना।' परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका। (पापी विचार पापी कार्य को जन्म देते हैं।)**

एक महिला जो मेरे घर के बाइबल अध्ययन में आती थी, अपना जीवन प्रभु को समर्पित कर चुकी थी, और वह यह चाहती थी कि उसका घर और उसके विवाह की दशा ठीक हो जाए। उसके जीवन की हर एक चीज़ अव्यवस्थित थी–घर, बच्चे, विवाह, आय, शारीरिक दशा इत्यादि। वह सार्वजनिक रूप से कहती थी कि वह अपने पति से प्रेम नहीं करती, परन्तु सत्य तो यह है कि वह वास्तव में उससे घृणा करती थी। वह यह जानती थी कि उसका यह व्यवहार

धार्मिक नहीं था अतः वह उससे प्रेम करना चाहती थी, परन्तु वह उसे कदापि सहन नहीं कर पाती थी।

हमने प्रार्थना की, उसने प्रार्थना की, और हर एक ने प्रार्थना की! हमने पवित्र शास्त्र उसके साथ बाँटा और उसे सुनने के लिए कुछ टेप दिए। हमने उसके साथ हर एक वह चीज़ दी जो हम जानते थे, और वह हमारी सलाह मान भी रही थी, परन्तु फिर भी उसके जीवन में कोई प्रगति दिखाई नहीं दी। कहाँ गलती थी? एक सलाह के सत्र के दौरान यह मालूम हुआ कि वह दिन में स्वप्न देखा करती थी। वह कल्पना किया करती थी कि वह एक परियों की रानी है और एक सुन्दर राजकुमार काम से लौटकर फूल और केण्डी ले कर उसके पास आता है, और उसे गोद में प्रेम से उठा लेता है।

वह अपने दिन ऐसा ही सोचते हुए बिताती थी, और जब उसका थका हुआ, मोटा, पसीने से तर, गन्दा पति (एक दांत टूटा हुआ) काम पर से लौट कर घर आता था, तब वह उसे घृणित लगता था।

क्षण भर के लिए इस अवस्था पर घ्यान दें। महिला नया जन्म पा चुकी थी, फिर भी उसका जीवन अस्तव्यस्त था। वह परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना चाहती थी, और उसी के लिए जीना चाहती थी और अपने पति से प्रेम भी करना चाहती थी, क्योंकि वह जानती थी कि यह परमेश्वर की इच्छा थी। वह चाहती थी कि, उसका जीवन और विवाह दोनों विजयी हों, परन्तु अपने मन से वह पराजित हो जाती थी। ऐसा कोई तरीका नज़र नहीं आ रहा था जिससे वह अपने पति के प्रति घृणा पर काबू पा सके, जब तक वह “स्वस्थ मन” से विचार करना न प्रारम्भ कर दे।

वह मानसिक रूप से एक काल्पनिक संसार में जीवन निर्वाह कर रही थी। अतः वह सच्चाई का सामना करने के लिए तैयार नहीं थी। उसका निष्क्रिय मन था और क्योंकि वह परमेश्वर के वचन के अनुसार नहीं सोच रही थी, इसी कारण दुष्ट आत्माओं ने उसके मन में विचार डाल दिए थे।

जब तक वह यह सोचती रही कि यह विचार उसके स्वयं के हैं और उनका आनन्द लेती रही तब तक वह विजय का अनुभव कभी नहीं कर सकी। उसने अपनी सोच बदली, और उसका जीवन बदलने लगा। उसने अपने पति के प्रति अपना मानसिक स्वभाव बदला और उसके पति का व्यवहार उसके प्रति बदलने लगा और उसकी मुखाकृति भी बदलने लगी।

स्वर्गीय वस्तुओं पर घ्यान लगाऐं

अतः जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहाँ मसीह विद्यमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है।

पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ।

कुलुस्सियों 3:1–2

फिर से हम वही सिद्धान्त देखते हैंः यदि आप पुनरूत्थान वाला जीवन, जो यीशु ने हमें दिया है, जीना चाहते हैं तब आप अपने मन को स्वर्गीय वस्तुओं की ओर लगाएँ जिससे आप एक नया और सामर्थी जीवन प्राप्त कर सकें।

प्रेरित पौलुस बड़े सरल शब्दों में कह रहा है कि यदि आप और मैं एक अच्छा जीवन चाहते हैं, तो हमें अपना मन अच्छी वस्तुओं पर लगाना चाहिए।

बहुत से विश्वासी अच्छा जीवन चाहते हैं, परन्तु वे निष्क्रिय बैठे रहते हैं और इच्छा करते हैं कि उनके साथ कुछ अच्छा ही घटेगा। वे प्रायः उन लोगों से ईर्ष्या रखते हैं जो विजयी जीवन जी रहे है क्योंकि उनके स्वयं का जीवन कठिनाईयों से भरा हुआ होता है।

यदि आप अपनी समस्याओं पर विजय प्राप्त करना चाहते हैं यदि आप वास्तव में पुनरूत्थान वाला जीवन जीना चाहते हैं, तब आप के पास मेरूदण्ड होना चाहिए केवल इच्छा वाली हड्डी नहीं! आपको सक्रिय होना चाहिए निष्क्रिय नहीं। सही कार्य, सही विचार से ही आरम्भ होते हैं। अपने मन में निष्क्रिय न रहें। आज से ही सही विचारों का चयन आरम्भ कर दें।

अध्याय

15

मसीह का मन

मसीह का मन

अध्याय
15

> *"क्योंकि प्रभु का मन (सम्मति एवं उद्देश्य) किसने जाना है, कि उसे सिखाए?" परन्तु हम में मसीह का मन है।*
>
> 1 कुरिन्थियों 2:16

मैं विश्वास करती हूँ, कि आपने अब तक सही विचारों का चयन करने के विषय में निर्णय ले लिया होगा, तो अब हम उन विचारों को देखें जो परमेश्वर के अनुसार सही हैं। बहुत से विचार निश्चित रूप से ऐसे होते हैं जो यीशु ने गलत ठहराए थे जब वह इस पृथ्वी पर था। यदि हम उसके पद चिन्हों पर चलना चाहते हैं तो हमें भी उसी प्रकार सोचना होगा जैसा वह सोचता था।

हो सकता है इस क्षण आप ऐसा सोच रहे हों, "जॉयस यह असम्भव है, यीशु श्रेष्ठ था। मैं अपनी सोच को अच्छा तो कर सकता हूँ परन्तु मैं उसकी तरह कभी नहीं सोच पाऊँगा।"

बाइबल हमें बताती है कि हम में मसीह का मन है—एक नया हृदय और आत्मा।

एक नया हृदय और नयी आत्मा

मैं तुम को नया मन दूँगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा; और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुम को मांस का हृदय दूँगा।

मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूँगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे।

यहेजकेल 36:26—27

मसीह होने के कारण, आपके और मेरे पास एक नया स्वभाव है, जो वास्तव में परमेश्वर का स्वभाव है जिसे उसने हमारे नये जन्म के समय हमारे अन्दर डाल दिया था।

इन पदों में हम देख सकते हैं कि परमेश्वर जानता था कि यदि हम उसके नियमों का पालन करेंगे और उसके बताए हुए मार्ग पर चलेंगे तब उसे अपना आत्मा और नया हृदय (और मन) हमें देना होगा। रोमियों 8:6 शरीर का मन और आत्मा का मन के विषय में कहता है, "शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है और आत्मा पर मन लगाना जीवन है।"

जीवन और मृत्यु के इस भेद को यदि हम सीख जाएँ तो हम बहुत अधिक उन्नति कर सकते हैं।

यदि आप कोई ऐसा कार्य कर रहे हैं जिसका अन्त मृत्यु है, तो इसी क्षण वह कार्य छोड़ दें। जब ऐसे विचार आपके मन में भर जाएँ जिसका अन्त मृत्यु है तब आप तुरन्त जान जाते हैं कि यह आत्मा का मन नहीं है।

इसको समझने के लिए मान लीजिए कि मैं किसी अन्याय के विषय में सोच रहा हूँ जो किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा मुझ पर हुआ है और मैं क्रोधित हो रहा हूँ। मैं यह सोचना आरम्भ कर दूँगा कि मैं उस व्यक्ति को कितना नापसन्द करता हूँ। यदि मैं तीव्र बुद्धि वाला हूँ तो मैं यह जान जाऊँगा कि मैं मृत्यु से भरगया हूँ। मैं अव्यवस्थित, व्यग्र एवं तनावपूर्ण स्थिति में आ जाऊँगा, मैं शारीरिक व्यथा का भी अनुभव कर सकता हूँ। सिर में दर्द, पेट में दर्द अथवा थकान मेरे गलत तरीके से सोचने के यह फल हो सकते हैं। दूसरी ओर, यदि मैं ऐसा सोच रहा हूँ कि कितना आशीषित हूँ मैं, और परमेश्वर मेरे लिए कितना भला है, तब मैं यह पता लगा लूँगा कि मैं जीवन से भरा हुआ हूँ।

एक विश्वासी के लिए अपने अन्दर जीवन और मृत्यु के विषय में सीखना उसके लिए बहुत सहायक होता है। यीशु ने अपना मन हमें देकर हमें जीवन से भर दिया है। हम मसीह के मन में बहने को चुन सकते हैं।

मसीह के मन में बहने के लिए कुछ चीज़ें जो हमें करनी हैं, उसकी सूची इस अध्याय के निम्न पृष्ठों में दी गयी है।

1. सकारात्मक विचार सोचें

यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत न हों; तो क्या वे एक संग चल सकेंगे?

आमोस 3:3

यदि कोई मनुष्य मसीह के मन के अनुसार सोच रहा है तो उसके विचार किस की तरह होंगे? वे सकारात्मक होंगे, यह तो निश्चित है। इससे पहले वाले

अध्याय में हम देख चुके हैं कि सकारात्मक ढंग से सोचना कितना आवश्यक है। आप अध्याय 5 में वापस जाकर सकारात्मक होने के महत्व को फिर से याद कर सकते हैं। मैंने भी इस को फिर से पढ़ा और मुझे इससे आशीष मिली हांलाकि इसे मैंने ही लिखा था।

सकारात्मकता की सामर्थ के विषय में अधिक कभी नहीं कहा जा सकता। परमेश्वर सकारात्मक है, और यदि मैं और आप उसके साथ बहना चाहते हैं, तो हमें उसी तरंग की लय दैर्ध्य पर आना होगा, और सकारात्मक ढंग से सोचना प्रारम्भ करना होगा। मैं मन को नियंत्रित करने के लिए नहीं कह रही, परन्तु एक सम्पूर्ण सकारात्मक व्यक्ति बनने के लिए कह रही हूँ।

अपना दृष्टिकोण और व्यवहार सकारात्मक बनाएँ सकारात्मक विचार और इच्छाएँ बनाएँ रखें। सकारात्मक वार्तालाप में व्यस्त रहें।

यीशु ने निःसंदेह एक सकारात्मक दृष्टिकोण और व्यवहार प्रदर्शित किया था। उसने बहुत सी कठिनाइयों का सामना किया जैसे—व्यक्तिगत आक्रमण, उसको झूठा समझा जाना, शिष्यों का ऐसे समय में भाग जाना, जब उसे उनकी बहुत आवश्यकता थी, उसका मज़ाक उड़ाया जाना, अकेला छोड़ दिया जाना, गलत समझा जाना इत्यादि। फिर भी इस नकारात्मकता के बीच वह सकारात्मक रहा। उसने सदैव दूसरों को उत्साहित करने वाले शब्दों का प्रयोग किया; जो भी उसके पास आया उसने सदैव उस को आशा दी।

मसीह का मन हमारे अन्दर सकारात्मक है; अतः यदि कभी हम किसी समय नकारात्मक हो जाते हैं, तो हम मसीह के मन द्वारा कार्य नहीं कर रहे हैं। लाखों लोग उत्साह हीनता से ग्रस्त हैं, और मैं ऐसा नहीं सोचती कि बिना नकारात्मकता के कोई व्यक्ति उत्साह हीन हो जाए, जब तब उसके अन्दर कोई शारीरिक रोग न हो। ऐसी दशा में नकारात्मकता समस्याओं और उनके लक्षणों को बढ़ा देता है।

भजन संहिता 3:3 के अनुसार, परमेश्वर हमारी महिमा है और हमारे मनों को ऊँचा करने वाला है। वह हर एक चीज़ ऊँची करता है: हमारी आशा, हमारा व्यवहार, हमारी मनोवृत्ति, हमारा सिर, हाथ और हृदय—हमारा सम्पूर्ण जीवन। वह हमारा दैवीय उठाने वाला है।

परमेश्वर हमें ऊँचा उठाना चाहता है, और शैतान हमें नीचे दबाता है। शैतान हमारे जीवन की नकारात्मक अवस्थाओं एवं घटनाओं का प्रयोग कर के हमें नीचे

दबाता है। “दबाना” शब्द का अर्थ है “आत्माओं में नीचे उतर जानाः दु:खी”[1] वेब्सटर के अनुसार “आस पास के स्थान से नीचे उतर जानाः खाली स्थान”[2] हमारे पास नकारात्मक विचारों को सोचने का अवसर आ जाता है, परन्तु वे हमें और भी नीचे ढकेल देते हैं। नकारात्मकता हमारी समस्याओं को सुलझा नहीं सकती परंतु इन्हें और बढ़ा देती है।

उदासीनता पर विजय

भजन संहिता 143:3—10 उदासीनता का वर्णन करता है और कैसे उस पर विजयी हो सकते हैं यह बताता है। शत्रु के इस आक्रमण पर हम कैसे विजय प्राप्त कर सकते हैं, इस खण्ड में हम विस्तारपूर्वक यही देखेंगे।

1. समस्या की प्रकृति और कारण का पता लगाएँ।

शत्रु तो मेरे प्राण का गाहक हुआ है; उसने मुझे चूर करके मिट्टी में मिलाया है, और मुझे बहुत दिन के मरे हुओं के समान अन्धेरे स्थान में डाल दिया है।

भजन संहिता 143:3

“मरे हुओं के समान अन्धेरे स्थान में डाल दिया है,” यह वर्णन मुझे निश्चितरूप से उस व्यक्ति का लगता है जो उत्साह हीन अथवा उदासीन हो।

ध्यान दें कि यहाँ उत्साह हीनता के स्त्रोत का कारण है—शैतान के प्राण पर आक्रमण करना।

2. इस बात को पहचानें कि उत्साह हीनता जीवन और प्रकाश को चुरा लेती है।

मेरी आत्मा भीतर से व्याकुल हो रही है; मेरा मन विकल है।

भजन संहिता 143:4

एक व्यक्ति की आत्मिक स्वतंत्रता और सामर्थ पर उत्साहीनता निर्दयता के साथ राज्य करती है।

हमारी आत्मा (जो परमेश्वर की आत्मा से सामर्थ पाती है और उत्साहित होती है) शक्तिशाली और स्वतंत्र है। इसी कारण शैतान हमारे मनों में अन्धकार

और खिन्नता भर कर आत्मा की शक्ति और स्वतंत्रता को नष्ट करना चाहता है। जैसे ही आप यह समझते हैं कि उत्साह हीनता का हमारे अन्दर आगमन हो रहा है, तुरन्त उसका विरोध करें। जितना अधिक आप देर लगाएँगे उतना ही कठिन इसका विरोध करना हो जाएगा।

3. अच्छे दिनों को याद रखें।

मुझे प्राचीनकाल के दिन स्मरण आते हैं, मैं तेरे सब अद्‌भुत कामों पर ध्यान करता हूँ, और तेरे काम को सोचता हूँ।

भजन संहिता 143:5

इस पद में अपनी दशा को देखते हुए दाऊद के उत्तर को हम देखते हैं। स्मरण करना, मनन करना और विचार करना यह सब मन के कार्य हैं। वह यह भली भांति जानता है कि उसके विचार उसकी इच्छाओं पर प्रभाव डालेंगे अतः वह ऐसी चीज़ों पर विचार करने में व्यस्त हो जाता है जिससे वह अपने मन पर हुए आक्रमण पर विजय प्राप्त कर सके।

4. समस्याओं में परमेश्वर की प्रशंसा करें।

मैं तेरी ओर अपने हाथ फैलाए हुए हूँ; सूखी भूमि के समान मैं तेरा प्यासा हूँ।

भजन संहिता 143:6

दाऊद प्रशंसा के महत्व को जानता है; वह आराधना में अपने हाथों को उठाता है। वह अपनी आवश्यकता की घोषणा करता है—उसकी आवश्यकता है परमेश्वर। केवल परमेश्वर ही उसे संतुष्ट कर सकता है।

जब लोगों को किसी चीज़ की आवश्यकता होती है और उसे वह गलत स्थान में ढूँढते हैं तब वे उत्साहहीन हो जाते हैं इससे उनकी समस्याएँ और बढ़ जाती हैं।

यिर्मयाह 2:13 में परमेश्वर ने कहा, **क्योंकि मेरी प्रजा ने दो बुराइयाँ की हैं, उन्होंने मुझे बहते जल के सोते को त्याग दिया है, और उन्होने हौद बना लिए, वरन् ऐसे हौद जो टूट गए हैं, और जिन में जल नहीं रह सकता।**

केवल परमेश्वर ही एक प्यासी आत्मा को पानी पिला सकती है। धोखा न खाइए यह सोचकर कि कोई भी चीज़ सम्पूर्ण रूप से सन्तुष्ट कर सकती है।

गलत चीज़ों के पीछे भागने से आप सदैव निराश होंगे और निराशा उत्साह हीनता के लिए द्वार खोल देती है।

5. परमेश्वर से सहायता माँगे।

हे यहोवा, फुर्ती करके मेरी सुन ले, क्योंकि मेरे प्राण निकलने ही पर हैं। मुझ से अपना मुँह न छिपा, ऐसा न हो कि मैं कबर में पड़े हुओं के समान हो जाऊँ।

भजन संहिता 143:7

दाऊद सहायता माँगता है। मूलतः वह कह रहा है, “परमेश्वर फुर्ती कर, क्योंकि तेरे बिना मैं अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह पाऊँगा।”

6. परमेश्वर की सुनें।

अपनी करूणा की बात मुझे शीघ्र सुना, क्योंकि मैंने तुझी पर भरोसा रखा है। जिस मार्ग से मुझे चलना है, वह मुझ को बता दे, क्योंकि मैं अपना मन तेरी ही ओर लगाता हूँ।

भजन संहिता 143:8

दाऊद यह जानता है कि उसे परमेश्वर के कहने पर ध्यान लगाना है। उसे परमेश्वर के प्रेम और करूणा का निश्चय है। उसे परमेश्वर के निर्देशों और ध्यान की आवश्यकता है।

7. छुटकारे के लिए प्रार्थना करें।

हे यहोवा, मुझे शत्रुओं से बचा ले, मैं तेरी ही आड़ में आ छिपा हूँ।

भजन संहिता 143:9

एक बार फिर दाऊद यह घोषणा करता है कि केवल परमेश्वर ही उसकी सहायता कर सकता है।

इस बात पर विशेष ध्यान दें कि इस पूरे सम्भाषण में दाऊद अपना मन समस्या पर न रख कर परमेश्वर पर रख रहा है।

8. परमेश्वर के ज्ञान, बुद्धि और अगुवाई की खोज करें।

मुझ को यह सिखा कि मैं तेरी इच्छा कैसे पूरी करूँ, क्योंकि मेरा परमेश्वर तू ही है। तेरा भला आत्मा मुझ को धर्म के मार्ग में ले चले।

भजन संहिता 143:10

संभवतः दाऊद यह सूचित कर रहा है कि वह परमेश्वर की इच्छा के बाहर चला गया है और उसकी आत्मा पर आक्रमण का एक द्वार खोल दिया है। वह परमेश्वर की इच्छा में ही रहना चाहता है क्योंकि वह यह जान गया है कि सबसे सुरक्षित स्थान यह ही है।

तब वह निवेदन करता है कि परमेश्वर दृढ़ करने में उसकी सहायता करता है। मैं विश्वास करती हूँ कि यह वाक्यांश, "मुझ को धर्म के मार्ग में ले चल" उसकी अव्यवस्थित भावनाओं को दर्शाते हैं। वह समथर भूमि पर रहना चाहता है–ऊबड़ खाबड़ भूमि पर नहीं।

अपने हथियारों का प्रयोग करें

क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक (शरीर एवं लहू के हथियार) नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं।

इसलिये हम कल्पनाओं का, और हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।

2 कुरिन्थियों 10:4–5

शैतान उत्साह हीनता का प्रयोग कर के लाखों मनुष्यों को अन्धकार और निराशा के गड़हे में डाल देता है। उत्साहहीनता का परिणाम है आत्महत्या। आत्महत्या करने वाला व्यक्ति वह होता है, जो इतना अधिक नकारात्मक बन गया हो कि उसे भविष्य के लिए कोई भी आशा न दिखाई देती हो।

याद करें: *नकारात्मक भावनाएँ नकारात्मक विचारों से ही आती हैं।*

मन ही वह युद्ध भूमि है जहाँ लड़ाई जीती या हारी जाती है। आज ही सकारात्मक बनने का चयन करें–नकारात्मक कल्पनाओं को छोड़ दें–अपने विचारों को मसीह का आज्ञाकारी बना दें (2 कुरिन्थियों 10:5)।

2. परमेश्वर का मन रखें।

जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए है, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।

यशायाह 26:3

यीशु की संगति अपने स्वर्गीय पिता से लगातार रहती थी। किसी के साथ पूर्ण संगति रखना असम्भव है जब तक आप अपना मन उस व्यक्ति पर न रखें। यदि मैं और मेरे पति एक साथ मोटरकार में हैं, और वह मुझ से बात कर रहे हों और मेरा मन किसी और चीज़ पर लगा हो तब हम निश्चित रूप से संगति में नहीं हैं, क्योंकि मैं अपना पूरा ध्यान उन्हें नहीं दे रही हूँ। अतः मैं यह विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि, यदि किसी व्यक्ति के विचार मसीह के मन के अनुरूप हैं तो, उसका मन परमेश्वर पर और उसके सामर्थी कार्यों पर होगा।

परमेश्वर और उसके कार्यों पर ध्यान दें

मेरा जीव मानो चर्बी और चिकने भोजन से तृप्त होगा, और मैं जयजयकार करके तेरी स्तुति करूँगा।

जब मैं बिछौने पर पड़ा तेरा स्मरण करूँगा, तब रात के एक एक पहर में तुझ पर ध्यान करूँगा।

भजन संहिता 63:5,6

मैं तेरे सब कामों पर ध्यान करूँगा, और तेरे बड़े कामों को सोचूँगा।

भजन संहिता 77:12

मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूँगा, और तेरे मार्गों की ओर दृष्टि रखूँगा।

भजन संहिता 119:15

मुझे प्राचीनकाल के दिन स्मरण आते हैं, मैं तेरे सब अद्भुत कामों पर ध्यान करता हूँ, और तेरे काम को सोचता हूँ।

भजन संहिता 143:5

दाऊद ने बहुधा परमेश्वर पर, उसकी अच्छाई पर, उसके कार्यों और मार्गों पर ध्यान लगाने के लिए कहा है। परमेश्वर की अच्छाई और उसके हाथों के अद्भुत कार्यों पर सोचने से हमारा अद्भुत रीति से उत्थान होता है।

मैं टेलीविजन पर प्रकृति, जानवर और समुद्री जीव जन्तुओं के कार्यक्रम को देखना पसन्द करती हूँ क्योंकि यह परमेश्वर की विशालता, उसकी असीमित क्रियात्मकता को बताते हैं, और वह सब चीज़ों को अपनी सामर्थ द्वारा सम्भालता है (इब्रानियों 1:3)।

परमेश्वर और उसके मार्गों और उसके कार्यों पर ध्यान देना आपके जीवन का एक मुख्य अंश बन जाना चाहिए तब ही आप विजयी जीवन का अनुभव कर पाएँगे।

भजन संहिता 17:15 मेरा प्रिय पद है इसमें दाऊद परमेश्वर से कहता है, **...मैं तो धर्मी होकर तेरे मुख का दर्शन करूँगा जब मैं जागुँगा तब तेरे स्वरूप से सन्तुष्ट हूँगा।**

मैंने अधिकांश दिन दुख में बिताए क्योंकि जैसे ही प्रातः काल मैं जागती थी तो गलत चीज़ों के विषय में सोचना आरम्भ कर देती थी। मैं निश्चित रूप से कह सकती हूँ कि अब मैं पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हूँ जब से मैंने मसीह के मन (आत्मा का मन) जो मेरे अन्दर है, से कार्य करना आरम्भ किया और मेरी सहायता पवित्र आत्मा करता है। प्रत्येक प्रातः काल परमेश्वर के साथ संगति करने से जीवन में आनन्द भर जाता है।

परमेश्वर के साथ संगति

...यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा; परन्तु यदि मैं जाऊँगा, तो उसे तुम्हारे पास भेजूँगा।

यूहन्ना 16:7

यह शब्द यीशु ने स्वर्गारोहण से कुछ देर पहले कहे थे जहाँ अब वह अपनी सारी महिमा के साथ पिता के दाहिने हाथ बैठा है। इस पद से यह स्पष्ट है कि यह परमेश्वर की इच्छा है कि हम उसकी संगति में रहें।

हमारे अपने विचार हमारे सबसे करीब होते हैं। इसलिए यदि हम अपने मन को परमेश्वर से भर लेंगे तो वह हमारे विवेक में आ जाएगा और हम उसकी संगति का आनन्द उठाने लगेंगे, जिससे हमारे जीवन में विजय, आनन्द और शान्ति आ जाएगी।

वह सदैव हमारे संग है जैसे कि उसने प्रतिज्ञा की थी कि वह सदैव हमारे संग रहेगा। (मत्ती 28:20; इब्रानियों 13:5) परन्तु हम उसकी उपस्थिति के बारे में तब तक नहीं जान पाते जब तक हम उसके विषय में सोचते नहीं। मैं किसी के साथ एक कमरे में रह सकता हूँ और यदि मेरा मन दूसरी बहुत सी बातों में लगा हुआ है, मैं उठ के जा सकता हूँ और मुझे मालूम ही नहीं होगा कि वह

व्यक्ति वहाँ पर उपस्थित था। यही परमेश्वर की संगति के साथ भी है। वह सदैव हमारे साथ है परन्तु हमें उसके विषय में सोचना है और उसकी उपस्थिति के बारे में सचेत रहना चाहिए।

3. "परमेश्वर मुझ से प्रेम करता है" यह मन में बैठा लें

जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, उसको हम जान गए, और हमें उसका विश्वास है! परमेश्वर प्रेम है; और जो प्रेम में बना रहता है वह परमेश्वर में बना रहता है, और परमेश्वर उसमें बना रहता है।

1 यूहन्ना 4:16

मैंने यह सीखा है कि जो बात परमेश्वर के प्रेम के लिए सत्य है वही उसकी उपस्थिति के लिए भी सत्य है। यदि हम उस प्रेम पर, जो वह हमसे करता है कभी ध्यान न दें तब हम यह अनुभव भी नहीं करेंगे।

इफिसियों 3 में पौलुस प्रार्थना करता है कि लोग परमेश्वर के प्रेम का अनुभव करें जो वह उनसे करता है। बाइबल कहती है कि, वह हम से प्रेम करता है, परन्तु परमेश्वर की सन्तानों में से कितनों ने परमेश्वर के प्रेम का अनुभव किया है?

मुझे याद है जब मैंने 'लाइफ इन द वर्ड मिनिस्ट्रीज़' आरम्भ की थी। प्रथम सप्ताह मुझे सभा का संचालन करना था, मैंने परमेश्वर से पूछा कि वह मुझसे कौन सा संदेश दिलाना चाहता है और उसने उत्तर दिया, "मेरे लोगों से कहना कि मैं उन से प्रेम करता हूँ।"

"वे यह जानते हैं," मैंने कहा। "मैं उन्हें कोई ऐसी चीज़ सिखाना चाहती हूँ जो वास्तव में सामर्थी हो, यूहन्ना 3:16 वाला सण्डे स्कूल का पाठ नहीं।"

परमेश्वर ने मुझसे कहा, "बहुत थोड़े ही मनुष्य ऐसे हैं जो वास्तव में यह जानते हैं कि, मैं उनसे कितना अधिक प्रेम करता हूँ। यदि वे यह जान जाएँ तब उनका व्यवहार ही बदल जाएगा।"

जब मैं परमेश्वर के प्रेम को ग्रहण करने वाले विषय का अध्ययन करने लगी तब मैंने यह पहचाना कि मुझे भी इस की अति आवश्यकता थी। परमेश्वर मेरे अध्ययन में मुझे 1 यूहन्ना 4:16 में ले गया जहाँ यह कहा गया है कि हमें परमेश्वर के प्रेम के प्रति सचेत रहना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि हमें सक्रिय रूप से सचेत रहना चाहिए।

मेरे पास एक अस्पष्ट एवं अचेतन प्रकार की समझ थी कि परमेश्वर ने मुझसे प्रेम किया, परन्तु परमेश्वर का यह प्रेम हमारे जीवन में एक शक्तिशाली बल का अर्थ रखता है, जो हमें कठिन समस्याओं से निकाल कर विजयी बना देता है।

रोमियों 8:35 में **पौलुस हमें प्रेरित करता है, कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार? फिर पद 37 में वह कहता है, परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं।**

मैंने इस क्षेत्र में बहुत समय तक अध्ययन किया है, और मैं परमेश्वर के प्रेम के प्रति जो उसने मुझ से किया है सचेत हो गई हूँ, क्योंकि मैं उसके प्रेम के बारे में सोचती हूँ और चिल्ला कर उसे अंगीकार करती हूँ। पवित्र शास्त्र से मैंने परमेश्वर के प्रेम के बारे में सीखा है, और मैं उस पर ध्यान लगाती हूँ और मुँह से अंगीकार करती हूँ। ऐसा मैंने बहुत महीनों तक किया और हर बार उसका मेरे प्रति प्रेम अधिक से अधिक वास्तविक रूप लेता जा रहा था।

उसका प्रेम मेरे लिए इतना वास्तविक है कि कठिनाई के समय में मेरा विवेक जब मुझे यह बताता है कि वह मुझ से प्रेम करता है तो मुझे बहुत सांत्वना मिलती है, और मेरा भय समाप्त हो जाता है।

डरें नहीं

प्रेम में भय नहीं होता, वरन् सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है...

1 यूहन्ना 4:18

परमेश्वर हम से सम्पूर्ण रूप से प्रेम करता है चाहें जैसे भी हम क्यों न हों। रोमियों 5:8 हमें बताता है... **परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।**

विश्वासी जो मसीह के मन का प्रयोग नहीं करते हैं वे इस बात को जान ही नहीं पाएँगे कि उनकी दशा कितनी भयंकर है। उनके विचार धार्मिकता पर आधारित होते हैं। आपके विचार धार्मिकता और विवेक दोनों पर आधारित होने चाहिए और आपको नियमित रूप से इस बात को याद रखना चाहिए कि आप "मसीह में" कौन है।

धार्मिकता जागृत रहें, न कि पाप जागृत

जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।

2 कुरिन्थियों 5:21

अधिकांश विश्वासी अपनी नकारात्मक सोच के कारण बहुत कष्ट का सामना करते हैं। वे सोचते हैं कि परमेश्वर उनसे बहुत अप्रसन्न रहता है क्योंकि उनकी दुर्भलताएँ और उनकी पराजय बहुत अधिक हैं।

अपराधिक भावना और धिक्कार का अनुभव करते हुए कितना अधिक समय हम यूँ ही नष्ट कर देते हैं। ध्यान दें मैंने कहा कितना अधिक समय आप नष्ट कर देते हैं, क्योंकि ऐसे विचारों को सोचना, समय नष्ट करना ही है।

मत सोचिए कि यीशु के पास आने से पहले आप कितने भयंकर थे। इसके बदले यह सोचिए कि किस प्रकार आप उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बनगए हैं। याद रखेंः सोच कार्य में बदल जाता है। यदि आप अच्छा बनना चाहते हैं, तो पहले आपको अपनी सोच बदलनी होगी। यदि आप यह सोचते रहेंगे कि आप कितने भयंकर थे तब आप वैसे ही कार्य भी करते रहेंगे। हर बार जब नकारात्मक, धिक्कार वाला विचार आपके मन में आता है तो याद करिए कि परमेश्वर आपसे प्रेम करता है, और मसीह में होकर आप परमेश्वर की धार्मिकता बन गए हैं।

हर एक बार आप अधिक उत्तम बनते जाएँगे। हर दिन आप आत्मिकता में बढ़ते जाएँगे। आपके लिए परमेश्वर के पास एक सुन्दर योजना है। यह वह सत्य है जिसे आपको सोचते रहना है।

यही आपको अपने मन से करते रहना है!

परमेश्वर के वचन के अनुसार सावधानी से विचार करें, ऐसा कुछ भी विचार न करें, जो आपके मस्तिष्क में स्वयं से आता रहता है, जिसे आप अपना विचार समझने लगते हैं।

शैतान को डाँट दें और सही विचार सोचना आरम्भ कर दें।

4. प्रेरित करने वाला मन रखें।

जो उपदेशक हो, वह उपदेश देने में लगा रहे...

रोमियों 12:8

वह व्यक्ति जिसके पास मसीह का मन है वह दूसरे लोगों के प्रति सकारात्मक विचार रखता है दूसरों का और अपना उत्थान और निर्माण करता है।

आजकल इस संसार में प्रेरिताई की सेवकाई की बहुत आवश्यकता है। आप अपने शब्दों से किसी को भी प्रेरित नहीं कर पाएंगे जब तक आप के पास उस व्यक्ति के प्रति दयालु विचार न हों। याद रखें कि जो आप के हृदय में है वही आपके मुँह से बाहर आता है। उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रेम से भरी हुई सोच का भी प्रयोग करें।

प्रेम के विचार दूसरे लोगों को भेजें। उनके प्रति उत्साहित वचनों का प्रयोग करें।

पुराने और नये नियम के शब्दों का वाईन का शब्दकोष ग्रीक शब्द "पाराकालिओ" का अनुवाद "प्रेरित" की व्याख्या इस प्रकार करता है, "किसी व्यक्ति को बुलाना" (पारा–पास में, कालियो–बुलाना) ...सावधान करना, प्रेरित करना, किसी विशेष व्यवहार का पालन करने के लिए आग्रह करना...[3] इस परिभाषा को मैं इस ढंग से स्पष्ट करती हूँ कि किसी व्यक्ति को किसी कार्य के लिए, उसके पास जाकर प्रेरित करना। रोमियों 12:8 में वर्णित इस प्रेरिताई के वरदान को मनुष्यों में देखा जा सकता है। वे सदैव एक दूसरे को उत्साहित और एक दूसरे का उत्थान कर रहे हैं, जिससे वे लोग अधिक उत्तम बनते जा रहे हैं।

हो सकता है हम सब के पास प्रेरिताई के वरदान की सेवकाई न हो, परन्तु हर एक व्यक्ति एक दूसरे को उत्साहित करना तो सीख सकता है। यह एक सरल नियम हैः यदि यह अच्छा नहीं है तो, न तो इसे सोचें और न बोलें।

हर एक के पास पहले ही से काफी समस्याएँ हैं, हम उनको निरूत्साहित करके उनकी समस्याओं को और नहीं बढ़ाना चाहते। हमें एक दूसरे को प्रेम में उठाना है। (इफिसियों 4:29) यह न भूलेंः प्रेम सदैव हर एक के लिए उत्तम से उत्तम वस्तुओं की कामना करता है (1 कुरिन्थियों 13:7)।

जब आप दूसरे लोगों के प्रति सुन्दर विचारों को सोचना आरम्भ कर देते हैं, तो आप पाएँगे कि वे सुन्दर तरीके से व्यवहार करने लगते हैं। विचार और शब्द डिब्बे या हथियार की भाँति हैं, जिनमें सृजनात्मक शक्ति अथवा विनाशकारी शक्ति

पायी जाती है। इनका प्रयोग या तो शैतान और उसके कार्यों के विरूद्ध कर सकते हैं, या विनाश की उसकी योजना में उसकी सहायता में कर सकते हैं।

मान लीजिए आप के पास एक बच्चा है, जिसके व्यवहार से सम्बन्धित कुछ समस्याएँ हैं और आप उसे बदलना चाहते हैं। आप उसके लिए प्रार्थना करते हैं और परमेश्वर से याचना करते हैं कि वह उसके जीवन में एक बदलाव लाए। अब आप इस दौरान अपने विचारों और शब्दों के साथ क्या करते हैं? अधिकांश लोगों को उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर कभी नहीं मिलता है क्योंकि जो वे माँगते हैं उनको अपने विचारों और शब्दों से नष्ट कर देते हैं, इससे पहले कि परमेश्वर उनके जीवन में कार्य करे।

क्या आप अपने इस बच्चे के बदलाव के लिए प्रार्थना करते हैं और फिर हर प्रकार के नकारात्मक विचार उस बच्चे के प्रति अपने मन में पनपने देते हैं? अथवा आप बदलाव के लिए प्रार्थना करते हैं और फिर सोचते हैं और दूसरों से कहते हैं, "यह बच्चा कभी नहीं सुधरेगा।" विजयी जीवन जीने के लिए आपको अपने विचारों को परमेश्वर के वचन के अनुकूल बनाना होगा।

हम वचन में नहीं चल रहे हैं यदि हमारे विचार वचन के विरूद्ध हों। हम वचन में नहीं चल रहे हैं, यदि हम वचन के अनुसार सोच नहीं रहे हैं।

जब आप किसी के लिए प्रार्थना करते हैं तो अपने विचारों और शब्दों को वैसा ही रखें जैसी आपने प्रार्थना की है, तो आप एक परिवर्तन देखना आरम्भ करेंगे।

मैं यह नहीं कर रही हूँ कि आप असंतुलित हो जाते हैं। यदि आप के बच्चे को विद्यालय में कोई व्यवहार सम्बन्धित समस्या है और कोई मित्र पूछता है कि वह कैसा कर रहा है, तो आप क्या करेंगे, यदि वास्तव में उसमें कोई परिवर्तन न आया हो? आप कह सकते हैं, "हमने अभी तक तो उसमें कोई परिवर्तन नहीं देखा है, फिर भी मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर अपना कार्य कर रहा है और यह बच्चा परमेश्वर के लिए एक शक्तिभवन है। हम उसे अंश अंश करके दिन प्रति दिन महिमा में बदलते हुए देखेंगे।"

5. धन्यवाद का मन विकसित करें।

उसके फाटकों से धन्यवाद, और उसके आँगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो, उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को धन्य कहो।

भजन संहिता 100:4

एक व्यक्ति जो मसीह के मन में बह रहा है, उसके विचार प्रशंसा और धन्यवाद से भरे होंगे।

असन्तोष प्रगट करने के द्वारा शैतान के लिए कई द्वार खुल जाते हैं। कुछ लोगों के अन्दर यह असन्तोष प्रगट करने का रोग होता है जिससे वे शारीरिक तौर से अस्वस्थ हो जाते हैं उनका जीवन दुर्बल और शक्तिहीन हो जाता है और फिर उनके विचार और उनकी बातचीत पर आक्रमण होता है।

धन्यवाद के बिना सामर्थी जीवन नहीं जिया जा सकता। बाइबल हमें धन्यवाद के सिद्धान्त के विषय में लगातार निर्देश देती है। विचार और शब्दों से असन्तोष प्रगट करना, मृत्यु का सिद्धान्त है परन्तु धन्यवाद देना जीवन का सिद्धान्त है।

यदि किसी व्यक्ति के पास धन्यवाद देने वाला हृदय (मन) नहीं, तो उसके मुँह से धन्यवाद नहीं निकलेगा। जब हम धन्यवादित होते हैं, तो हम ऐसा कहते भी हैं।

हर समय धन्यवाद दें

इसलिये हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान, अर्थात् उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर को सर्वदा चढ़ाया करें।

इब्रानियों 13:15

हम कब धन्यवाद देते हैं? हर समय—हर एक परिस्थिति में, हर चीज़ में, और ऐसा करने से हम जयवन्त जीवन में प्रवेश कर जाते हैं जहाँ शैतान का हम पर कोई नियंत्रण नहीं रह सकता।

वह कैसे हम पर नियंत्रण कर सकता है यदि हम प्रसन्नचित्त और धन्यवादित हैं चाहें कैसी भी परिस्थितियाँ क्यों न हों? इस प्रकार की जीवन शैली के लिए प्रशंसा और धन्यवाद के बलिदान की आवश्यकता होती है। परन्तु मैं परमेश्वर के लिए अपने धन्यवाद का बलिदान तो कर सकती हूँ परन्तु शैतान के लिए अपने आनन्द का बलिदान नहीं। मैंने बड़ी कठिनाई के द्वारा यह सीखा है कि जब मैं दुराग्रही होती हूँ और धन्यवाद नहीं देना चाहती तब मेरा आनन्द समाप्त हो जाता है। दूसरे शब्दों में, असन्तोष प्रगट करने वाली आत्मा के द्वारा मैं इसे खो देती हूँ।

भजन संहिता 34:1 में दाऊद कहता है, **मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा करूँगा; उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख से होती रहेगी।** हम किस प्रकार परमेश्वर को धन्यवाद दे सकते हैं? उसकी प्रशंसा निरन्तर हमारे विचारों और मुख से यदि होती रहे तो हम इस प्रकार उसे धन्यवाद दे सकते हैं।

कृतज्ञ व्यक्ति बनिए—जो न केवल परमेश्वर के प्रति और दूसरे लोगों के प्रति भी कृतज्ञता से भरा हुआ हो। जब कोई व्यक्ति आप के साथ कुछ भला करे, तब आप उसे बताइए कि आप को यह अच्छा लगा।

अपने परिवार के सदस्यों के साथ सन्मान व्यक्त कीजिए। प्रायः हम उन चीज़ों पर ध्यान नहीं देते जिन्हें परमेश्वर ने हमें आशीष के रूप में दी हैं। उन पर कोई ध्यान न देने के कारण हम उन्हें खो देते हैं।

मैं अपने पति की प्रशंसा करती हूँ; हमारे विवाह को कई वर्ष हो चुके परन्तु अभी भी मैं उनसे कहती हूँ कि मैं उनकी प्रशंसा करती हूँ। वह कई प्रकार से एक धैर्यवादी व्यक्ति हैं उनके अन्दर और भी बहुत से गुण हैं। मैं जानती हूँ कि जब लोग यह जान जाते हैं कि हम उनकी प्रशंसा करते हैं तो इससे हमारे बीच एक अच्छा सम्बन्ध स्थापित हो जाता है और एक दूसरे की उन्नति होती है।

बहुत से लोगों से मेरा सामना होता है और मुझे आश्चर्य होता है कि कुछ लोग हर छोटी छोटी बात में भी धन्यवादित होते हैं जो उनके लिए किया जाता है परन्तु कुछ लोग कभी भी सन्तुष्ट नहीं होते चाहें उनके लिए कितना भी आप करें। वे यह सोचते हैं कि वे तो इस के योग्य हैं। वे कभी प्रशंसा व्यक्त नहीं करते।

सन्मान व्यक्त करना न केवल दूसरों के लिए अच्छा है अपितु हमारे लिए भी अच्छा है क्योंकि इस से हमें आनन्द की प्राप्ति होती है।

प्रति दिन उन सभी चीज़ों पर ध्यान दें जिनके लिए आप धन्यवादित हैं। परमेश्वर के समक्ष उस को प्रार्थना में दोहराएँ और तब आप पाएँगे कि आप का हृदय जीवन और प्रकाश से भर गया है।

हर एक चीज़ के लिए सदैव धन्यवाद दें

दाखरस से मतवाले न बनो, कयोंकि इससे लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।

और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो।

और सदा सब बातों के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो।

इफिसियों 5:18–20

कितना सामर्थी वचन!

मैं और आप किस प्रकार पवित्र आत्मा से सदैव भरे रह सकते हैं? स्वयं से बातें कर के (विचारों के द्वारा) अथवा दूसरों से (अपने शब्दों द्वारा) भजन और कीर्तन और आत्मिक गाने गा कर। दूसरे शब्दों में, अपने विचारों और शब्दों को पूर्णतया परमेश्वर के वचन पर रख कर, *हर समय हर चीज़ के लिए प्रशंसा कर* के और धन्यवाद देकर हम पवित्र आत्मा से भरे रह सकते हैं।

6. शाब्दिक मन रखें

और उसके वचन को मन में स्थिर नहीं रखते, क्योंकि जिसे उसने भेजा तुम उसका विश्वास नहीं करते।

यूहन्ना 5:38

परमेश्वर का वचन उसके विचार हैं, जो हमारे अध्ययन और विचार करने के लिए कागज़ पर लिख दिए गए हैं। हर एक अवस्था और विषय के बारे में जो वह सोचता है वही उसका वचन है।

यूहन्ना 5:38 में यीशु कुछ अविश्वासियों को ताड़ना दे रहा था। इस अनुवाद में हम देखते हैं कि परमेश्वर का वचन उसके विचारों का लिखित वक्तव्य है और वह लोग जो विश्वास करना चाहते हैं और इस विश्वास के अच्छे परिणामों का अनुभव करना चाहते हैं उन्हें उसके वचन को अपने हृदयों में एक जीवित संदेश के रूप में ग्रहण कर लेना चाहिए। परमेश्वर के वचन का मनन कर के ऐसा किया जा सकता है। तब उसके विचार हमारे विचार बन सकते हैं—मसीह के मन को अपने अन्दर विकसित करने का यही एक मार्ग है।

यूहन्ना 1:14 में बाइबल कहती है कि यीशु वचन था जो देहधारी हुआ। ऐसा असम्भव था यदि उसका मन परमेश्वर के वचन से निरन्तर भरा न रहता।

जीवन का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त, जो हम सीख सकते हैं वह है परमेश्वर के वचन का अध्ययन और मनन करना। *पुराने और नये नियम के शब्दों की वाइन का शब्दकोष* ग्रीक शब्द जिसका अनुवाद अध्ययन है उसकी यूँ व्याख्या करता है, "चिन्ता करना", "अभ्यास करना", "परिश्रमी होना", "विचार करना", "कल्पना करना", "चिन्तन करना"[4] एक दूसरा स्रोत कहता है "फुसफुसाना" अस्पष्ट बोलना[5]।

मैं बहुत अधिक दबाव डालकर यह नहीं कह सकती कि यह सिद्धान्त कितना महत्वपूर्ण है। मैं इसे जीवन का सिद्धान्त कहती हूँ क्योंकि परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने से आप को और आप के आस–पास के लोगों को जीवन मिलता है।

बहुत से मसीही "अध्ययन" शब्द से भयभीत हो गए हैं क्योंकि वे अन्य देवी देवताओं और दूसरे अलौकिक धर्मों की अध्ययन पद्धति से इसकी तुलना करने लगते हैं परन्तु मैं आपको बताना चाहती हूँ कि शैतान के पास कभी भी मूल विचार नहीं था। वह ज्योति के राज्य से कुछ लेकर उसे तोड़ मरोड़ कर अन्धकार के राज्य का बना देता है। हमें यह समझ लेना चाहिए कि यदि अध्ययन से बुराई को शक्ति प्रदान हो सकती है तो भलाई के लिए भी शक्ति का निर्माण हो सकता है। अध्ययन का सिद्धान्त सीधा परमेश्वर के वचन से आता है: आइए हम देखें कि बाइबल इसके विषय में क्या कहती है।

ध्यान दें और समृद्ध हों

व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिये कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।

यहोशू 1:8

इस पद में, परमेश्वर स्पष्ट रूप से हमें बताता है कि हम वचन को शारीरिक अभ्यास में कभी नहीं ला पाएँगे जब तक उसे मानसिक अभ्यास में न ले आएं।

भजन संहिता 1:2–3 एक धार्मिक मनुष्य के विषय में कहता है: **परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है। वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे**

लगाया गया है, और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिये जो कुछ वह पुरूष करे वह सफल होता है।

ध्यान करें और चँगाई पाएँ

हे मेरे पुत्र, मेरे वचन ध्यान धरके सुन, और अपना कान मेरी बातों पर लगा।

इनको अपनी आँखों की ओट न होने दे; वरन अपने मन में धारण कर। क्योंकि जिनको वे प्राप्त होती हैं, वे उनके जीवित रहने का, और उनके सारे शरीर के चंगे रहने का कारण होती है।

नीतिवचन 4:20–22

याद करें "ध्यान" शब्द की व्याख्या थी सुनना, अब इस पद पर विचार करें जो कहता है कि परमेश्वर के वचन शरीर के लिए स्वास्थ्य और चंगाई के स्रोत हैं। अपने मन में परमेश्वर के वचन पर मनन करने से वास्तव में शरीर पर प्रभाव पड़ता है।

इन अट्ठारह वर्षों में मेरी शारीरिक आकृति बदल गयी है। लोग मुझे बताते हैं कि अब मैं कम से कम पन्द्रह वर्ष छोटी दिखने लगी हूँ, पहले से जब मैंने पहली बार सावधानी पूर्वक वचन का अध्ययन करना प्रारम्भ किया था और अपने जीवन का केन्द्र उसे बनाया था।

सुनें और फसल काटें

फिर उसने उनसे कहा, चौकस रहो कि क्या सुनते हो! जिस नाप (विचार और अध्ययन का) से तुम नापते (सच्चाई जो तुम सुनते हो) हो उसी से तुम्हारे लिये भी नापा (सद्‌गुण और ज्ञान) जाएगा, और तुम को अधिक दिया जाएगा।

मरकुस 4:24

यह बोने और काटने के सिद्धान्त जैसा है। जितना अधिक हम बोएंगे उतना ही अधिक समय आने पर हम काटेंगे। मरकुस 4:24 में परमेश्वर कहता है कि जितना अधिक समय मैं और आप परमेश्वर के वचन के अध्ययन और विचार करने में लगाएँगे, उतना ही अधिक हमें उससे लाभ मिलेगा।

पढ़ें और काटें

क्योंकि कोई वस्तु छिपी नहीं, परन्तु इसलिये कि प्रगट हो जाए। और न कुछ गुप्त है, पर इसलिये है कि प्रगट हो जाए।

मरकुस 4:22

यह दोनों पद स्पष्ट रूप से हमें बताते हैं कि वचन में अपार धन छिपा हुआ है, शक्तिशाली जीवनदायक रहस्य छिपा हुआ है जिसे परमेश्वर हम पर प्रगट करना चाहता है। यह उन्हीं पर प्रगट होते हैं जो परमेश्वर के वचन पर ध्यान देते हैं, उसका अध्ययन एवं विचार करते हैं और मानसिक रूप से उसे अभ्यास में लाते हैं।

परमेश्वर के वचन की शिक्षिका होने के कारण मैं इस सिद्धान्त के सत्य को व्यक्तिगत रूप से जानती हूँ। ऐसा प्रतीत होता है कि इस एक पद से परमेश्वर जो मुझे दिखा सकता है उसका कोई अन्त नहीं। जब मैं एक बार इसे पढ़ती हूँ तो एक चीज़ सामने आती है जब दूसरी बार उसका अध्ययन करती हूँ तो कुछ नयी चीज़ देखती हूँ जिसको पहले मैंने जाना ही नहीं था।

परमेश्वर अपने रहस्य उन पर प्रगट करता रहता है जो परमेश्वर के वचन को मान कर उन पर चलते हैं। आप ऐसे व्यक्ति न बनिए जो केवल दूसरों के द्वारा बताए गए मार्ग पर चलते हैं। वचन का आप स्वयं अध्ययन कीजिए और पवित्र आत्मा द्वारा अपने जीवन में सत्य को भर जाने दीजिए।

परमेश्वर के वचन पर ध्यान देने के विषय में मैं बहुत कुछ लिख सकती हूँ। जैसा मैंने कहा है, यह एक सबसे आवश्यक चीज़ है जिसे मैं और आप सीख सकते हैं। जब आप दिन भर के कार्य को करने के लिए निकलते हैं, तो पवित्र आत्मा से कहिए कि वह आपको पवित्र शास्त्र के कुछ वचन स्मरण कराए ताकि आप उन पर ध्यान लगा सकें। आप आश्चर्यचकित हो जाएँगे यह देखकर कि इस अभ्यास के द्वारा आपके जीवन में कितनी सामर्थ आ गयी। जितना अधिक आप परमेश्वर के वचन पर ध्यान देते हैं उतना ही अधिक आप इसकी सामर्थ को समस्याओं के समय में पा जाते हैं। याद रखें: *वचन पर ध्यान लगाने के अभ्यास से ही, वचन को पूरा करने की शक्ति हमें मिलती है।*

वचन का स्वागत करें और उसे ग्रहण करें

इसलिये सारी मलिनता और बैरभाव की बढ़ती को दूर करके, उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है।

याकूब 1:21

इस पद में हम देखते हैं कि, पाप के जीवन से हमें उद्धार देने की शक्ति वचन में है, परन्तु तभी जब हम इसे ग्रहण करते हैं; इसका स्वागत करते हैं और इसे अपने हृदय (मन) में बो लेते हैं। जब हम अपने मन में सबसे अधिक परमेश्वर के वचन पर ध्यान लगाते हैं, तब ही यह वचन हमारे मन में जड़ पकड़ता जाता है।

यदि मैं और आप हर समय अपनी समस्याओं पर ही ध्यान लगाते हैं, तब हम उन ही में गहराई तक जड़ पकड़ते जाएँगे। हमारे अन्दर या दूसरों के अन्दर जो गलत चीज़ें है यदि उन्हीं पर हम ध्यान देते हैं, तो हम उन गलतियों से सन्तुष्ट होते चले जाएँगे और उनका समाधान कभी नहीं कर पाएँगे। यह उसी तरह है जैसे सम्पूर्ण जीवन से भरा हुआ एक समुद्र हमारे सामने रखा है और जो बर्तन हमें पानी निकालने के लिए दिया गया है वह है, परमेश्वर के वचन का सावधानीपूर्वक अध्ययन करना और उस पर ध्यान लगाना।

हमारी सेवकाई का नाम है "वचन में जीवन" और मैं अनुभव द्वारा यह कह सकती हूँ, कि परमेश्वर के वचन में ही वास्तविक जीवन है।

जीवन को चुनिए !

शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।

रोमियों 8:6

पुस्तक के इस खण्ड को अन्त करने के लिए एक बार फिर मैं आपका ध्यान फिलिप्पियों 4:8 की ओर ले जाना चाहती हूँ... **जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं,**

और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, अर्थात्, भी जो सद्‌गुण और प्रशंसा की बातें हैं, उन पर ध्यान लगाया करो।

आपके मन की दशा कैसी होनी चाहिए इस पद में इसी का वर्णन किया गया है। आपके पास मसीह का मन है उसका प्रयोग करें। जिस चीज़ को वह नहीं सोचता आपको भी वह नहीं सोचना चाहिए।

अपने विचारों पर निरन्तर दृष्टि रखें, और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना लें। (2 कुरिन्थियों 10:5)

यदि आप का मन आपको गलत दिशा की ओर ले जा रहा है, तब पवित्र आत्मा तुरन्त आपको स्मरण कराता है और तब चुनाव आप को करना है। क्या आप शरीर के मन में बहेंगे अथवा आत्मा के मन में? एक मृत्यु की ओर ले जाता है और दूसरा जीवन की ओर। चुनाव आपका है।

जीवन को चुनें!

भाग III

जंगल की मानसिकताएँ

प्रस्तावना

> *होरेब से कादेशबर्ने तक सेईर पहाड़ का मार्ग ग्यारह दिन का है।*
>
> व्यवस्थाविवरण 1:2

इस्राएल देश के लोग जंगल में चालीस वर्षों तक भटकते रहे जबकि यह यात्रा केवल ग्यारह दिनों की थी। ऐसा क्यों? ऐसी कौन सी बाधा थी जो उन्हें उनके गन्तव्य स्थान तक पहुँचने नहीं दे रही थी, उनके शत्रु, उनकी परिस्थितियाँ, उनके कष्ट अथवा और ही कोई चीज़?

जब मैं इस घटना पर विचार कर रही थी, परमेश्वर ने मुझे एक शक्तिशाली रहस्य बताया, जिससे व्यक्तिगत रूप से मुझे और दूसरे हज़ारों लोगों को सहायता प्राप्त हुई है। परमेश्वर ने मुझ से कहा, इस्राएल की सन्तान ने ग्यारह दिनों की यात्रा पूर्ण करने में चालीस वर्ष लगा दिए क्योंकि उनके पास "जंगल की मानसिकता" थी।

आपको यहाँ रहते हुए बहुत दिन हो गए

हमारे परमेश्वर यहोवा ने होरेब के पास हम से कहा था, कि तुम लोगों को इस पहाड़ के पास रहते हुए बहुत दिन हो गए हैं।

व्यवस्थाविवरण 1:6

हमें आश्चर्यचकित हो कर इस्त्राएलियों की ओर नहीं देखना चाहिए क्योंकि हम में से अधिकांश लोग भी वही करेंगे जैसा उन्होंने किया था। हम भी बिना प्रगति किए उन्हीं पहाड़ों के इर्दगिर्द घूमते रहते हैं। परिणाम यह होता है कि किसी समस्या पर जयवन्त होने में हमें वर्षों लग जाते हैं जबकि उसे शीघ्रता से ही जीता जा सकता है।

मैं सोचती हूँ कि परमेश्वर आज मुझ से और आप से वही बात कह रहा है जो उसने इस्त्राएल की सन्तान से उन दिनों में कही थी:

"तुम लोगों को इस पहाड़ के पास रहते हुए बहुत दिन हो गए हैं।"

मन लगाएँ और लगाए रखें

पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ।

कुलुस्सियों 3:2

परमेश्वर ने मुझे दस "जंगल की मानसिकताएँ" दिखाईं जो इस्राएलियों की थीं जिसके कारण वे चालीस वर्षों तक जंगल में भटकते रहे। जंगल की मानसिकता एक गलत प्रकार की मानसिकता है।

हमारी मानसिकता गलत अथवा सही हो सकती है। सही से हमें लाभ होता है और गलत हमें चोट पहुँचाती है और हमारी प्रगति में बाधक होती है। कुलुस्सियों 3:2 हमें सिखाता है कि, हमें अपना ध्यान लगाना है और लगाए रखना है। हमें अपना मन सही दिशा में लगाना है। गलत मानसिकताएँ न केवल हमारी परिस्थितियों को प्रभावित करती हैं अपितु हमारे अन्दर के जीवन को भी प्रभावित करती हैं।

कुछ लोग जंगल में ही रहते हैं और कुछ लोगों की मानसिकताएँ जंगली होती हैं।

एक समय था जब मेरी परिस्थितियाँ इतनी बुरी नहीं थीं, परन्तु मेरे जीवन में आनन्द नहीं था क्योंकि मैं भीतर से जंगली थी। डेव और मेरा एक सुन्दर सा घर था, तीन सुन्दर बच्चे थे, अच्छी नौकरियाँ थीं, अच्छा जीवन जीने के लिए पर्याप्त धन था। मैं उन आशीषों का आनन्द नहीं उठा सकी क्योंकि मेरे पास कई जंगल की मानसिकताएँ थीं। मेरा जीवन मुझे एक जंगली जीवन प्रतीत होता था, क्योंकि मैं उसी प्रकार हर एक चीज़ को देखा करती थी।

कुछ लोग चीज़ों को नकारात्मक ढंग से ही देखते हैं क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में दुःखी परिस्थितियों का ही अनुभव किया है, और वे किसी भी अच्छी चीज़ की कल्पना नहीं कर सकते। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो हर एक चीज़ में बुराई और नकारात्मकता देखते हैं, क्योंकि वे भीतर से ऐसे ही होते हैं। इसका कारण कुछ भी क्यों न हो, एक नकारात्मक दृष्टिकोण एक मनुष्य को दुःखी बना देता है, और उसे प्रतिज्ञा के देश में जाने से रोक देता है।

परमेश्वर ने इस्राएल की सन्तान को मिस्र के बंधुत्व से छुड़ाकर प्रतिज्ञा के देश में ले जाने के लिए बुलाया था, एक ऐसा देश जो सदैव उनका रहेगा,

जहाँ दूध और मधु की धाराएँ बहती थीं, और हर एक अच्छी चीज़ जिसकी वे कल्पना कर सकते थे वहाँ थी, ऐसा देश जहाँ किसी चीज़ की कमी नहीं थी, जीवन के हर एक क्षेत्र की वस्तुओं की भरमार थी।

उस पीढ़ी के अधिकांश लोग, जिन्हें परमेश्वर मिस्त्र से निकाल कर लाया था, उस प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश नहीं कर पाएः और वे जंगल में ही मर गए। मेरे लिए यह बहुत ही दुःख की बात है कि परमेश्वर की सन्तान जिसके लिए बहुतायत से सब कुछ रखा हो और फिर भी वह उसका आनन्द न उठा सके।

मैं भी अपने मसीही जीवन में बहुत वर्षों तक उन्हीं लोगों की भाँति थी। मैं प्रतिज्ञा के देश (स्वर्ग) के मार्ग पर थी, परन्तु मैं यात्रा का आनन्द नहीं ले रही थी। मैं जंगल में मर रही थी। परन्तु परमेश्वर की करूणा के लिए धन्यवाद, मेरे अन्धकारपूर्ण जीवन में एक प्रकाश की किरण जागृत हुई, और उसने मेरा मार्गदर्शन कर के मुझे बाहर निकाल लिया।

मैं प्रार्थना करती हूँ कि इस पुस्तक का यह अध्याय आपके लिए प्रकाश का कार्य करेगा और आपको जंगल से निकाल कर परमेश्वर के अद्‌भुत राज्य के महिमायुक्त प्रकाश में ले आएगा।

अध्याय

16

“मेरा भविष्य मेरे भूत और मेरे वर्तमान से निर्धारित होता है।”

जंगल की मानसिकता # 1

"मेरा भविष्य मेरे भूत और मेरे वर्तमान से निर्धारित होता है।"

जंगल की मानसिकता # 1

अध्याय
16

> *जहाँ दर्शन की बात नहीं होती, वहाँ लोग निरंकुश हो जाते हैं।*
>
> नीतिवचन 29:18

इस्त्राएलियों के पास अपने जीवन के लिए कोई सकारात्मक दर्शन अथवा स्वप्न नहीं था। वे यह तो जानते थे कि वे कहाँ से आए हैं परन्तु वे यह नहीं जानते थे कि वे जा कहाँ रहे हैं। वे जो देख रहे थे अथवा देख सकते थे हर एक बात इसी पर आधारित थी। "विश्वास की आँख" से कैसे देखा जाता है वे यह बात नहीं जानते थे।

छुटकारा दिलाने के लिए अभिषेक

प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिये भेजा है कि बन्दियों को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और कुचले हुओं को छुड़ाऊँ।

और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूँ।

लूका 4:18–19

मैं गाली–गलौज की पृष्ठभूमि से आई हूँ; मेरा लालन पोषण एक अव्यवस्थित परिवार में हुआ था। मेरा बचपन भय और कष्टों से भरा हुआ था। प्रवीण और अनुभवी कहते हैं कि बच्चे का व्यक्तित्व उसके जीवन के प्रथम पाँच वर्षों में ही बन जाता है। मेरा व्यक्तित्व अव्यवस्थित था। मैंने अपने चारों ओर एक सुरक्षा की दीवार बना ली थी ताकि लोग मुझे कष्ट न पहुँचा सकें। मैं दूसरों को बाहर बन्द कर रही थी, परन्तु ऐसा करके मैं स्वयं को भी बन्द कर रही थी। मैं बहुत अधिक भय से भरी हुई थी और जीवन का सामना करने के लिए मैं सोचती थी कि सब पर मेरा नियंत्रण है अतः कोई मुझे कष्ट नहीं दे सकता।

वयस्क होने पर मसीही जीवन शैली अपनाने लगी और मसीह के लिए जीने का प्रयत्न करने लगी, मैं यह जानती थी कि मैं कहाँ से आई हूँ, परन्तु यह नहीं जानती थी कि मैं कहाँ जा रही हूँ। मैं सोचा करती थी कि मेरा भविष्य मेरे भूत के कारण अन्धकारमय है। मैं सोचती थी, “कि कैसे किसी का भविष्य ठीक हो सकता है जबकि उसका भूत यदि ऐसा हो? यह असम्भव है!” फिर भी यीशु ने कहा मैं रोगियों को स्वस्थ करने, टूटे हृदयों को जोड़ने, घायलों को चंगा करने के लिए ही आया हूँ।

यीशु बन्दियों को स्वतंत्र करने आया। जब तक मुझे यह विश्वास नहीं हो गया कि मैं स्वतंत्र हो सकती हूँ तब तक मैंने कोई प्रगति नहीं की थी। मुझे अपने जीवन के लिए सकारात्मक दर्शन देखना था। मुझे यह विश्वास करना था कि मेरा भविष्य मेरे भूत और मेरे वर्तमान पर आधारित नहीं है।

आपका भूत कितना ही कष्टदायी क्यों न रहा हो, परिस्थितियाँ कितनी भी नकारात्मक और दुःखी क्यों न हों, आप निराश हो गए हों, परन्तु मैं आप से साहसपूर्वक कहती हूँ कि *आपका भविष्य आपके भूत और आपके वर्तमान से स्थिर नहीं होता है।*

एक नया मन रखें। विश्वास करें कि परमेश्वर में सभी चीज़ें सम्भव हैं (लूका 18:27), मनुष्य के लिए कुछ चीज़ें असम्भव हो सकती हैं, परन्तु हम ऐसे परमेश्वर की सेवा करते हैं, जिसने देखी हुई वस्तुओं को शून्य से बना दिया (इब्रानियों 11:3) आप अपना शून्य उसे दे दें और उसको अपना कार्य करने दें। वह केवल आपका विश्वास चाहता है। वह केवल चाहता है कि आप उस पर विश्वास करें, और शेष कार्य वह स्वयं कर देगा।

आँखें देखने के लिए, कान सुनने के लिए

तब यिशै के ठूँठ में से एक डाली फूट निकलेगी और उसकी जड़ में से एक शाखा निकलकर फलवन्त होगी:

यहोवा का आत्मा, बुद्धि और समझ का आत्मा, युक्ति और पराक्रम का आत्मा, और ज्ञान और यहोवा के भय का आत्मा उस पर ठहरा रहेगा।

और उसको यहोवा का भय सुगन्ध–सा भाएगा। वह मुँह देखा

न्याय न करेगा और न अपने कानों के सुनने के अनुसार निर्णय करेगा।

यशायाह 11:1–3

हम केवल अपनी शारीरिक आँखों से देखकर किसी चीज़ का ठीक–ठीक निर्णय नहीं कर सकते। हमारे पास देखने के लिए “आत्मिक आँखें” और सुनने के लिए आत्मिक कान होने चाहिए। संसार क्या कहता है वह नहीं परन्तु आत्मा क्या कहती है वही हमें सुनना है। आपके भविष्य के लिए परमेश्वर को स्वयं से बात करने दें हर एक को नहीं।

इस्त्राएली निरन्तर चीज़ों को जैसी हैं, वैसी ही देखते थे और बातें किया करते थे। मूसा के द्वारा परमेश्वर उन्हें मिस्र से बाहर निकाल लाया था, प्रतिज्ञा के देश के विषय में उसके द्वारा बात किया करता था। वह चाहता था कि वे अपनी आँखें वहीं लगाए रखें जहाँ वे जा रहे थे, और जहाँ वे पहले थे वहाँ से अपनी आँखें हटा लें। आइए पवित्र शास्त्र में से कुछ पद देखें जो उनके गलत आचरण को स्पष्टरूप से बताते हैं।

समस्या क्या है ?

सब इस्त्राएली मूसा और हारून पर बुड़बुड़ाने लगे, और सारी मण्डली उनसे कहने लगी, भला होता कि हम मिस्त्र ही में मर जाते! या जंगल ही में मर जाते!

यहोवा हम को उस देश में ले जाकर क्यों तलवार से मरवाना चाहता है? हमारी स्त्रियाँ और बालबच्चे तो लूट में चले जाएँगे; क्या हमारे लिये अच्छा नहीं कि हम मिस्त्र देश को लौट जाएँ?

गिनती 14:2–3

इस खण्ड को ध्यानपूर्वक देखने के लिए मैं आपको उत्साहित करती हूँ। यह लोग कितने नकारात्मक थे—दोष निकालने वाले, शीघ्र हियाव छोड़ देने वाले, प्रतिज्ञा के देश में जाने के बदले वापस बन्धुवाई में जाना पसन्द करने वाले लोग थे।

वास्तव में उनके पास समस्या नहीं थी, वे स्वयं समस्या थे।

बुरे विचार बुरे स्वभाव को जन्म देते हैं

वहाँ मण्डली के लोगों के लिये पानी न मिला; इसलिये वे मूसा और हारून के विरूद्ध इकट्ठे हुए।

और लोग यह कहकर मूसा से झगड़ने लगे, भला होता कि हम उस समय ही मर गए होते जब हमारे भाई यहोवा के सामने मर गए! (प्लेग के कारण)।

और तुम यहोवा की मण्डली को इस जंगल में क्यों ले आए हो कि हम अपने पशुओं समेत यहाँ मर जाएँ?

गिनती 20:2–4

उनके शब्दों से हम देखते हैं कि इस्त्राएली परमेश्वर पर तनिक भी भरोसा नहीं कर रहे थे। उनका नकारात्मक एवं असफल स्वभाव था। वे कार्य को आरम्भ करने से पहले ही निर्णय ले लेते थे कि वे असफल हो जाएँगे क्योंकि हर एक परिस्थिति सिद्ध नहीं थी। गलत मानसिकता के कारण उनका व्यवहार ऐसा हो गया था।

बुरा स्वभाव बुरे विचारों का ही फल है।

कृतज्ञता के स्वभाव की कमी

फिर उन्होंने होर पहाड़ से कूच करके लाल समुद्र का मार्ग लिया कि एदोम देश से बाहर बाहर घूमकर जाएँ; और लोगों का मन मार्ग के कारण बहुत व्याकुल हो गया।

इसलिये वे परमेश्वर के विरूद्ध बात करने लगे, और मूसा से कहा, तुम लोग हम को मिस्त्र से जंगल में मरने के लिए क्यों ले आए हो? यहाँ न तो रोटी है, और न पानी, और हमारे प्राण इस निकम्मी रोटी से दु:खित है।

गिनती 21:4–5

इस खण्ड में हम इस्त्राएलियों के स्वभाव में कृतज्ञता की कमी को देखते हैं। इस्त्राएल की संतान इस बात को भुला नहीं पा रहे थे कि वे कहाँ से आए हैं।

यदि वे अपने पूर्वज पिता अब्राहाम का ध्यान करते तो इससे उन्हें सहायता मिल सकती थी। उसे भी अपने जीवन में कुछ निराशापूर्ण अनुभव हुए थे परन्तु उस ने अपना भविष्य नकारात्मक नहीं होने दिया।

कलह के साथ जीवन नहीं

अब्राम लूत की भेड़–बकरी और गाय–बैल के चरवाहों में झगड़ा हुआ; उस समय कनानी और परिज्जी लोग उस देश में रहते थे।

तब अब्राम लूत से कहने लगा, मेरे और तेरे बीच, और मेरे और तेरे चरवाहों के बीच में झगड़ा न होने पाए; क्योंकि हम लोग भाई–बन्धु हैं। क्या सारा देश तेरे सामने नहीं? इसलिये मुझ से अलग हो जा; यदि तू बाईं ओर जाए तो मैं दाहिनी ओर जाऊँगा; और यदि तू दाहिनी ओर जाए, तो मैं बाईं ओर जाऊँगा।

तब लूत ने आँख उठाकर, यरदन नदी के पास वाली सारी तराई को देखा कि वह सब सिंची हुई है। जब तक यहोवा ने सदोम और अमोरा को नष्ट न किया था, तब तक सोअर के मार्ग तक वह तराई यहोवा की वाटिका, और मिस्त्र देश के समान उपजाऊ थी।

इसलिये लूत अपने लिए यरदन की सारी तराई को चुन के पूर्व की ओर चला, और वे एक दूसरे से अलग हो गए।

उत्पत्ति 13:7–11

झगड़ों में जीवन जीने के खतरों को अब्राहाम जानता था; इसीलिए उसने लूत से कहा कि अब उन्हें अलग हो जाना चाहिए। भविष्य में उनके बीच कोई झगड़ा न हो और यूँ ही प्रेम बना रहे इस कारण अब्राहाम ने अपने भतीजे को घाटी के क्षेत्र जो वह चाहता था चुनने की अनुमति दे दी। लूत ने यरदन नदी वाला सबसे अच्छा क्षेत्र चुन लिया और वे अलग हो गए।

हमें यह याद रखना चाहिए कि लूत के पास तब तक कुछ नहीं था जब तक अब्राहाम ने उसे आशीष नहीं देदी। अब्राहाम के स्वभाव के विषय में सोचिए जो उसका हो सकता था परन्तु ऐसा उसने नहीं चुना। वह जानता था कि यदि वह उचित कार्य करेगा तो परमेश्वर उसकी स्वयं चिन्ता करेगा।

अपनी आँखें उठा कर देखें

जब लूत अब्राम से अलग हो गया तब उसके पश्चात् यहोवा ने अब्राम से कहा, आँख उठाकर जिस स्थान पर तू है वहाँ से उत्तर–दक्षिण, पूर्व–पश्चिम, चारों ओर दृष्टि कर।

क्योंकि जितनी भूमि तुझे दिखाई देती है, उस सब को मैं तुझे और तेरे वंश को युग युग के लिये दूँगा।

उत्पत्ति 13:14–15

यह खण्ड स्पष्ट रूप से हमें बताता है कि जब इब्राहीम और लूत अलग–अलग हो गए तो अब्राहाम के पास उतनी अच्छी परिस्थितियाँ नहीं थीं, परन्तु परमेश्वर चाहता था कि वह अपनी आँखें उठा कर उस स्थान को देखे जहाँ परमेश्वर उसे ले जाना चाहता था।

अब्राहाम का स्वभाव अपनी परिस्थितियों के साथ अच्छा था अतः शैतान परमेश्वर की आशीषों को रोक न सका जो परमेश्वर अब्राहाम को देना चाहता था। परमेश्वर ने अब उसे और भी अधिक चीज़ों का स्वामी बना दिया था और बहुतायत से उसे हर क्षेत्र में आशीष दीं।

अपने भविष्य की सम्भावनाओं की ओर सकारात्मक दृष्टि से देखने के लिए, मैं आपको उत्साहित करती हूँ और "जो बातें हैं ही नहीं उन्हें इस प्रकार लें जैसे वह हैं" (रोमियों 4:17)। अपने भविष्य के बारे में सकारात्मक ढंग से सोचें और बोलें, जो परमेश्वर ने आपके हृदय में रखा है, और जो आपने अपने भूतकाल में या वर्तमान में देखा है उसे भूल जाएँ।

अध्याय

17

“मेरे बदले कोई और करे मैं उत्तरदायित्व नहीं लेना चाहता।”

जंगल की मानसिकता # 2

“मेरे बदले कोई और करे मैं उत्तरदायित्व नहीं लेना चाहता।”

जंगल की मानसिकता # 2

अध्याय 17

> *तेरह अपने पुत्र अब्राम, और अपने पोते लूत, जो हारान का पुत्र था, और अपनी बहू सारै, जो उसके पुत्र अब्राम की पत्नी थी, इन सभों को लेकर कसदियों के ऊर नगर से निकल कनान देश जाने को चला; पर हारान नामक देश में पहुँचकर वहीं रहने लगा।*
>
> उत्पत्ति 11:31

उत्तरदायित्व को प्रायः कहा जाता है “परमेश्वर की योग्यता के प्रति हमारा प्रत्युत्तर।” परमेश्वर ने हमारे समक्ष जो अवसर रखें हैं उनका पालन करना ही उत्तरदायित्व है।

परमेश्वर ने अब्राम के पिता को एक उत्तरदायित्व सौंपा था, उसकी योग्यता के प्रति प्रत्युत्तर देने का एक अवसर। उसने कनान देश जाने का एक अवसर उसके सामने रखा था। परन्तु पूरी यात्रा परमेश्वर के साथ करने के बदले उसने हारान देश में रहना चुन लिया और वहीं रहने लगा।

जब परमेश्वर पहल करके हम से बात करता है, और हमें कुछ करने का अवसर देता है तो उत्तेजित हो जाना बहुत सरल है। परन्तु तेरह की भाँति हम कई बार जो कार्य प्रारम्भ करते हैं उसे अन्त नहीं कर पाते क्योंकि जब हम इसे आरम्भ करते हैं तो हमें मालूम होता है कि इस में बहुत अधिक संयुक्त होना होगा केवल उत्तेजित होने से काम नहीं चलेगा।

अधिकांश नये साहसिक कार्य उत्तेजना पूर्ण होते हैं क्योंकि वे नये होते है। उत्तेजना से कोई व्यक्ति थोड़ी दूर तक तो जा सकता है परन्तु वह कार्य की अन्तिम रेखा तक नहीं पहुँच पाएगा।

अधिकांश विश्वासी वही करते हैं जो बाइबल बताती है, कि तेरह ने जो किया। वे एक स्थान से आरम्भ करते हैं और मार्ग में दूसरी जगह पर ठहर जाते हैं। वे थक जाते हैं हताश हो जाते हैं वे अपने अभियान को पूरा तो करना चाहते हैं परन्तु उसके साथ जो उत्तरदायित्व जुड़ा हुआ है उसको नहीं उठाना चाहते। यदि उनके बदले कोई अन्य व्यक्ति उस कार्य को कर दे, तब वे उस महिमा का श्रेय स्वयं लेना चाहते हैं, परन्तु ऐसा करने से उन्हें कोई लाभ नहीं होता।

वैयक्तिक उत्तरदायित्व को दूसरे को नहीं दिया जा सकता

दूसरे दिन मूसा ने लोगों से कहा, तुम ने बड़ा ही पाप किया है। अब मैं यहोवा के पास चढ़ जाऊँगा; सम्भव है कि मैं तुम्हारे पाप का प्रायश्चित कर सकूँ।

तब मूसा यहोवा के पास जाकर कहने लगा, हाय, हाय, उन लोगों ने सोने का देवता बनवाकर बड़ा ही पाप किया है।

तौभी अब तू उनका पाप क्षमा कर—नहीं तो अपनी लिखी हुई पुस्तक में से मेरे नाम को काट दे।

निर्गमन 32:30—32

मैंने जो पढ़ा है और अध्ययन किया है, उससे मैंने यह जाना है कि इस्त्राएली किसी भी चीज़ का उत्तरदायित्व नहीं लेते थे। मूसा को उनके बदले प्रार्थना करनी पड़ती थी, उनके लिए परमेश्वर को खोजता था, और यहाँ तक कि जब वे लोग किसी समस्या में फँस जाते थे तो उनके लिए पश्चाताप भी किया करता था (निर्गमन 32:1—4)।

एक शिशु किसी भी चीज़ का उत्तरदायी नहीं होता परन्तु जब वह शिशु बड़ा हो जाता है तब उससे यह आशा की जाती है कि वह अधिक से अधिक उत्तरदायित्वों को सम्भालें। माँ—बाप का यह परम कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों को उत्तरदायित्व लेना सिखाएँ। परमेश्वर की भी अपने बच्चों के प्रति यही इच्छा है।

परमेश्वर ने मुझे यह अवसर दिया कि मैं परमेश्वर की सेवकाई में हूँ, उसके वचन को मैं सारे अमरीका और अन्य राष्ट्रों में रेडियो और टेलीविज़न द्वारा सिखा रही हूँ। परन्तु मैं आपको निश्चय दिलाती हूँ कि इस बुलाहट में एक पहलू उत्तरदायित्व का भी है, जिसे अधिकांश लोग नहीं जानते। अधिकांश लोग कहते हैं कि वे सेवकाई में जाना चाहते हैं क्योंकि वे सोचते है कि यह एक निरन्तर चलने वाली आत्मिक घटना है।

बहुत बार लोग हमारे संगठन में नौकरी के लिए आवेदन देते हैं यह सोचकर कि सबसे बड़ी बात जो उनके साथ घट सकती है वह है मसीही सेवकाई का एक हिस्सा बना जाना। बाद में उन्हें यह पता चलता है कि यहाँ भी उन्हें वही

काम करना होगा जो अन्य स्थान में करना होता है। उन्हें प्रातः उठना होगा, समय पर कार्यालय पहुँचना होगा, किसी के अधिकार में रहना होगा, नियमित दैनिक कार्यक्रम का अनुसरण करना होगा इत्यादि। जब लोग कहते हैं कि वे हमारे लिए कार्य करना चाहते हैं, तब मैं उनसे कहती हूँ कि हम सारे दिन बादलों के साथ बहते हुए, "हल्लिलुय्याह गान" नहीं गाते हैं—हम काम करते हैं और कठिन काम करते हैं। हम सच्चाई में चलते हैं और जो भी करते हैं वह श्रेष्ठ होता है।

निःसन्देह सेवकाई में कार्य करना एक विशेष अधिकार है, परन्तु मैं नये आवेदकों को यह बिन्दु स्पष्टरूप से बता देती हूँ कि, जब उत्तेजना समाप्त हो जाती है तब वे जान जाएँगे कि हम उनसे उच्च स्तर के उत्तरदायित्व की अपेक्षा करते हैं।

चींटियों के पास जाएँ

हे आलसी, चींटियों के पास जा; उनके काम पर ध्यान दे, और बुद्धिमान हो।

उनके न तो कोई न्यायी होता है, न प्रधान, और न प्रभुता करनेवाला,

तौभी वे अपना आहार धूपकाल में संचय करती हैं, और कटनी के समय अपनी भोजनवस्तु बटोरती हैं।

हे आलसी, तू कब तक सोता रहेगा? तेरी नींद कब टूटेगी?

कुछ और सो लेना, थोड़ी सी नींद, एक और झपकी, थोड़ा और छाती पर हाथ रखे लेटे रहना,

तब तेरा कंगालपन राह के लुटेरे के समान और तेरी घटी हथियार बन्द के समान आ पड़ेगी।

नीतिवचन 6:6–11

इस्त्राएलियों की यही आलसी मानसिकता थी जिसके कारण ग्यारह दिन की यात्रा करने में उन्हें चालीस वर्षों तक जंगल में भटकना पड़ा था।

मुझे नीतिवचन का यह खण्ड अच्छा लगता है जिसमें हमारा ध्यान चींटियों की ओर आकर्षित किया गया है, उनके ऊपर कोई अधिकारी नहीं जो उनके और उनके परिवार के लिए भोजनवस्तु जुटाए।

ऐसे लोग, जिन्हें हर समय कुछ करने के लिए दूसरों को धक्का लगाना होता है, वे कभी भी कोई बड़ा कार्य नहीं कर पाएँगे। कुछ लोग तब ही सही कार्य करते हैं जब कोई उन्हें देख रहा हो, ऐसे लोग भी अधिक सफल नहीं होते। हमारे अन्दर कार्य करने की प्रेरणा होनी चाहिए। हमें परमेश्वर के समक्ष अपना जीवन इस प्रकार जीना चाहिए, यह जानते हुए कि वह हमें देख रहा है और हमारा उपहार उसकी ओर से आएगा जब हम केवल वह ही करेंगे जिसे करने के लिए उसने कहा हो।

बुलाए गए बहुत हैं, चुने हुए थोड़े हैं

क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं परन्तु चुने हुए थोड़े हैं।

मत्ती 22:14

बाइबल के एक शिक्षक को मैंने एक बार यह कहते सुना कि इस पद का अर्थ है कि बुलाए गए बहुत हैं या बहुतों को एक अवसर दिया है कि परमेश्वर के लिए कुछ कार्य करें, परन्तु बहुत थोड़े उस उत्तरदायित्व को उठाने के इच्छुक होते हैं।

जैसा कि इससे पहले वाले अध्याय में मैंने यह सूचित किया था कि बहुत से लोगों के पास इच्छा हड्डी (विशबोन) तो होती है परन्तु मेरूदण्ड नहीं। जंगल की मानसिकता वाले लोग चाहते तो सब कुछ हैं परन्तु करते कुछ नहीं।

उठ और जा!

यहोवा के दास मूसा की मृत्यु के बाद यहोवा ने उसके सेवक यहोशू से जो नून का पुत्र था, कहा,

मेरा दास मूसा मर गया है; इसलिये अब तू उठ, कमर बाँध, और इस सारी प्रजा समेत यरदन पार होकर उस देश को जा जिसे मैं उनको अर्थात् इस्राएलियों को देता हूँ।

उस वचन के अनुसार जो मैं ने मूसा से कहा, अर्थात् जिस जिस

स्थान पर तुम पाँव धरोगे वह सब मैं तुम्हें दे देता हूँ।

यहोशू 1:1–3

जब परमेश्वर ने यहोशू से कहा कि मूसा मर गया है और अब उसे उसका स्थान लेना है और लोगों को यरदन पार प्रतिज्ञा के देश में ले जाने की अगुवाई करना है, इसक अर्थ था कि परमेश्वर यहोशू को एक नया उत्तरदायित्व सौंप रहा है।

यही बात हमारे लिए भी सत्य है जब हम अपने आत्मिक उत्तरदायित्व को माँगते हैं। आप और मैं कभी भी परमेश्वर की अभिषेक की हुई सेवकाई को नहीं कर पाएँगे यदि हम गम्भीरता से अपने उत्तरदायित्वों को उठाने के इच्छुक न हों।

देखो, यही अनुकूल समय है!

जो वायु को ताकता रहेगा वह बीज बोने न पाएगा, और जो बादलों को देखता रहेगा, वह लवने न पाएगा।

सभोपदेशक 11:4

1993 में जब परमेश्वर ने मुझे और डेव को दिखाया कि वह चाहता है कि हम टीवी पर जाएँ, उसने कहा, "मैं तुम्हें टेलीविजन पर जाने का एक अवसर दे रहा हूँ, परन्तु यदि इस अवसर को तुम अभी नहीं लोगे तो फिर यह तुम्हारे पास दोबारा कभी नहीं आएगा।" यदि परमेश्वर हमें यह न बताता कि यह अवसर केवल उसी विशेष क्षण के लिए था तो संभवतः हम देर कर देते। आखिरकार हम अन्त में ऐसी स्थिति में थे जहाँ हम सुख का अनुभव कर सकते थे।

नौ वर्षों तक हमने वचन की सेवकाई में जीवन (लाईफ इन द वर्ड मिनिस्ट्रीज़) को एक बच्चे की तरह पाला था। अब परमेश्वर हमें एकाएक अधिक लोगों तक पहुँचने का एक अवसर प्रदान कर रहा था, जिसे हम अपने हृदय से करना चाहते थे। इसको करने के लिए हालांकि हमें अपनी आराम वाली स्थिति को छोड़ना होगा और एक नए उत्तरदायित्व को संभालना होगा।

जब परमेश्वर अपने लोगों से कुछ करने के लिए कहता है, तब "एक उपयुक्त समय" की प्रतीक्षा करने की परीक्षा हमारे सामने आ जाती है (प्रेरितों के काम 24:25)। कार्य को रोके रखने की एक प्रवृत्ति होती है जब तक कि उसका कुछ मूल्य न चुकाना पड़ जाए।

मैं आपको उत्साहित करती हूँ ऐसा व्यक्ति बनने के लिए जो उत्तरदायित्वों को लेने में डरता न हो। जब आप प्रतिरोध का सामना करते हैं तो आपके अन्दर शक्ति का विकास होता है। यदि आप केवल सरल कार्य ही करते हैं तो आप सदैव दुर्भल ही रहेंगे।

परमेश्वर मुझसे और आप से यही चाहता है कि हम हर चीज़ में जो वह हमें देता है, उत्तरदायी रहें—उन कार्यों को करें जिससे कि जीवन में फल लगे। उसने जो हमें वरदान और कौशल दिया है यदि हम उनका प्रयोग नहीं करते तब हम उनके प्रति अपने दायित्वों को नहीं निभा रहे हैं।

तैयार रहें

इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को।

मत्ती 25:13

बाइबल का मत्ती 25 अध्याय हमें यह सिखाता है जब हम यीशु के दोबारा आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं तब हमें क्या करते रहना चाहिए।

प्रथम बारह पदों में दस कुँवारियों का वर्णन है जिनमें पाँच मूर्ख और पाँच बुद्धिमान थीं। मूर्खों ने उससे मिलने की तैयारी में कुछ अधिक कार्य नहीं किया था। उन्होंने जितना कम कार्य हो सकता था केवल उतना ही किया यहाँ तक कि अपनी कुप्पियों के लिए भी पर्याप्त मात्रा में तेल नहीं लिया था। बुद्धिमान कुँवारियों ने आवश्यकता से अधिक कार्य किया। उन्होंने आवश्यकता से अधिक तेल ले लिया ताकि यदि दूल्हा देर से भी आए तो उनकी कुप्पियाँ जलती रहें।

जब दूल्हा आया, तो मूर्ख कुँवारियों की कुप्पियाँ बुझने पर थीं, वे चाहती थीं कि बुद्धिमान कुँवारियाँ उन्हें थोड़ा सा तेल दे दें। प्रायः यह ही होता है। जो लोग आलसी होते हैं और सदैव कार्य को टालते रहते हैं वे चाहते हैं कि वे लोग जो परिश्रमी हैं, उनके दायित्वों को उनके बदले पूरा करते रहें।

आपको जो दिया गया है उसका प्रयोग करें

...हे दुष्ट और आलसी दास!...

मत्ती 25:26

मत्ती 25 में हम एक दृष्टान्त पाते हैं जिसमें यीशु तीन दासों का वर्णन करते हैं जिन्हें उनके स्वामी ने कुछ तोड़े दिए थे। फिर उनका स्वामी एक दूर देश को चला गया और वह चाहता था कि उसकी अनुपस्थिति में उसके दास उसके सामान की अच्छी तरह देखभाल करें।

जिस दास को पाँच तोड़े दिए गए थे उसने उनका उपयोग कर के पाँच तोड़े और कमा लिए। जिसे दो तोड़े दिए गए थे उसने भी ऐसा ही किया। परन्तु जिसे एक तोड़ा मिला था उसने उसे भूमि में गाड़ दिया था क्योंकि वह भय से भरा हुआ था। वह बाहर जाकर कुछ भी करने से घबराता था। वह दायित्वों से भयभीत था।

जब स्वामी लौट कर आया तो उसने अपने उन दो दासों को सराहा, जिन्होंने अपने तोड़ों का उपयोग किया था। परन्तु उसने अपने उस दास से कहा जिसने अपना तोड़ा भूमि में गाड़ दिया था, "हे दुष्ट और आलसी दास।" उसने आदेश दिया कि वह एक तोड़ा उससे ले लिया जाए और उस दास को दे दिया जाए जिसके पास अब दस तोड़े हैं और इस दुष्ट और आलसी दास को दण्डित किया जाए।

परमेश्वर ने आपको जो योग्यता दी है, उसका उपयोग करने के लिए मैं आपको उत्साहित करती हूँ, ताकि जब स्वामी लौट कर आता है, तो न केवल आप उसे वही दें जो उसने आपको दिया है परन्तु उससे और अधिक उसे दे सकें।

बाइबल स्पष्ट रूप से हमें बताती है कि परमेश्वर की हमारे लिए यही इच्छा है कि हम अच्छा फल लाएँ (यूहन्ना 15:16)।

चिन्ताएँ न कि दायित्व, उस पर डाल दें

इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।

अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है।

1 पतरस 5:6–7

दायित्वों से डरें नहीं। दायित्व को नहीं परन्तु चिन्ता को उस पर डालना सीखें। कुछ लोग किसी भी चीज़ की चिन्ता नहीं करते, वे अपनी चिन्ता डाल

देने में इतने विशेषज्ञ हो जाते हैं कि चिन्ताओं के साथ साथ वे अपने दायित्वों को भी डाल देते हैं और सन्तुष्ट हो जाते हैं।

आपके समक्ष जो है उसी पर अपना मन लगाएँ, उससे इस कारण दूर न भागें क्योंकि वह आपको चुनौतीपूर्ण प्रतीत हो रहा है।

सदैव स्मरण रखें कि जो कुछ आप परमेश्वर से माँगते हैं यदि वह सब कुछ आपको परमेश्वर देता है तो इस आशीष के साथ साथ एक दायित्व भी जुड़ा हुआ है। यदि आप के पास अपना घर अथवा मोटर कार है तो परमेश्वर आप से चाहता है कि आप उसकी भली प्रकार देखभाल करें। आलसी शैतान आपके मन और आपकी भावनाओं पर आक्रमण कर सकता है, परन्तु आप के पास मसीह का मन है। आप निश्चित रूप से शैतान के इस धोखे को पहचान सकते हैं और जो सही है वही कर सकते हैं। किसी चीज़ को माँगना तो बहुत सरल है परन्तु उसके प्रति उत्तरदायित्व को निभाने से ही चरित्र का निर्माण होता है।

मुझे एक घटना याद है जब मैं अपने पति से झील के किनारे वाले घर को खरीदने के लिए आग्रह किया करती थी, जहाँ हम प्रार्थना करने, विश्राम और अध्ययन करने जा सकें। एक ऐसा स्थान जो इस वातावरण से थोड़ा हट कर हो। मैं उन्हें बताया करती थी कि यह कितना अद्‌भुत होगा, हमारे बच्चे और नाती पोते वहाँ आनन्द कर सकेंगे और हम अपनी अगुवाई की सेवा को भी वहीं ले जा सकेंगे, अपनी सभाएँ और प्रार्थनाएँ वहाँ आयोजित कर सकेंगे, वह समय कितना महिमामय होगा।

सुनने में यह सब बहुत अच्छा लग रहा था, परन्तु डेव मुझे निरन्तर बता रहे थे कि इन सब चीज़ों की देखभाल के लिए हमें क्या क्या करते रहना होगा। उन्होंने मुझे याद दिलाया कि हम पहले ही से कितने व्यस्त हैं और एक दूसरे घर के दायित्वों को उठाने के लिए हमारे पास समय नहीं होगा। बागीचे की देख–रेख, घर की देख–रेख, खर्चें इत्यादि के विषय में उन्होंने मुझे अवगत कराया। उन्होंने कहा कि यदि हम कहीं बाहर जाना चाहते हैं तो अच्छा होगा कि हम एक किराए का मकान ले लें ताकि हम उन दायित्वों से बचे रहें जो घर खरीदने के बाद हम पर आ जाएगे।

मै अब तक केवल भावनात्मक दृष्टिकोण से ही देख रही थी, परन्तु वह व्यवहारिक दृष्टिकोण से देख रहे थे। जब भी हम कोई निर्णय लेते हैं, हमें

दोनों पहलू देखने चाहिए, केवल आनन्द ही नहीं परन्तु दायित्वों पर भी विचार करना चाहिए जो इसके साथ जुड़े हुए हैं। झील के किनारे का घर अति सुन्दर तो होगा परन्तु केवल उन लोगों के लिए जिनके पास इसकी देखभाल करने के लिए पर्याप्त समय हो, परन्तु वास्तव में हमारे पास समय नहीं है। हृदय की गहराइयों से तो मैं इसे समझ रही थी परन्तु फिर भी एक वर्ष तक डेव से वह घर खरीदने के लिए कहती ही रही।

मैं प्रसन्न हूँ कि वह दृढ़ रहे। यदि वह दृढ़ न होते, तो मैं निश्चित हूँ कि हमने वह घर खरीद लिया होता, थोड़े समय अपने पास रखा होता और अत्याधिक कार्य बढ़ जाने के कारण अन्त में हमने बेंच दिया होता। फिर ऐसा हुआ कि हमारे एक मित्र ने झील के किनारे का एक घर खरीद लिया और उनकी अनुमति से हम कभी कभी वहाँ जाकर उसका उपयोग करते हैं।

यदि आप बुद्धि का उपयोग करते हैं तो परमेश्वर आपकी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। हर एक व्यक्ति जो मसीह के मन से कार्य करता है, वह बुद्धि के द्वारा चलता है भावनाओं के द्वारा नहीं।

उत्तरदायी बनें !

अध्याय

18

"कृपया कर हर चीज़ सरल बना दें; कठिन चीज़ें मुझसे नहीं हो सकती।"

जंगल की मानसिकता # 3

"कृपया कर हर चीज़ सरल बना दें; कठिन चीज़ें मुझसे नहीं हो सकती।"

अध्याय 18

जंगल की मानसिकता # 3

> *देखो यह जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूँ, वह न तो तेरे लिये अनोखी, और न दूर है।*
>
> व्यवस्थाविवरण 30:11

यह गलत मन की स्थिति परमेश्वर के लोगों के लिए एक समस्या बन गयी है और मैं यह विश्वास करती हूँ कि इस पुस्तक में इसे एक अध्याय के रूप में स्थान देना उचित होगा।

यह सबसे अधिक प्रचलित बहाना है जिसे मैं क्रमिक प्रार्थना में प्रायः लोगों से सुनती हूँ। सलाह और प्रार्थना के लिए जब कोई मेरे पास आता है तो मैं उस से कहती हूँ कि परमेश्वर का वचन क्या कहता है अथवा पवित्र आत्मा क्या कहता है, तब उसका उत्तर होता है, "मैं जानता हूँ कि यह सही है। परमेश्वर भी मुझ से यही कह रहा है। परन्तु जॉयस, *यह बहुत कठिन है।"*

परमेश्वर ने मुझे बताया है कि शत्रु यही वाक्य लोगों के मन में डाल देता है ताकि वे हियाव छोड़ दें। कुछ वर्षों पूर्व जब परमेश्वर ने मुझ पर इस सत्य को प्रगट किया था, उसने मुझे यह निर्देश दिए थें कि यह कभी न कहो कि हर एक चीज़ बहुत कठिन है, यदि तुम कार्य प्रारम्भ कर देती हो तो चीज़ें स्वयं सरल होती जाएँगी।

फिर जब हम उस कार्य को करने का निश्चय कर लेते है, तब भी अपना अधिकांश समय यह सोचने और बात करने में बिता देते हैं कि "यह कितना कठिन है" और तब यह कार्य और भी अधिक कठिन हो जाता है क्योंकि सकारात्मक होने के बदले हम नकारात्मक हो जाते हैं।

जब मैं परमेश्वर के वचन में से ढूँढने लगी कि मुझे किस प्रकार का जीवन जीना है और किस प्रकार का व्यवहार रखना है और जब उस की तुलना मैंने अपने वास्तविक व्यवहार और जीवन से की, तब मैंने परमेश्वर से कहा, "परमेश्वर मैं आपके तरीके से चीज़ों को करना चाहती हूँ, परन्तु यह बहुत कठिन है।" परमेश्वर मुझे व्यवस्थाविवरण 30:11 में ले गया जहाँ वह कहता है कि उसकी आज्ञाएँ न कठिन हैं न दूर।

परमेश्वर की आज्ञाएँ बहुत कठिन नहीं हैं इसका कारण यह है कि वह हमें पवित्र आत्मा देता है जो शक्तिशाली तरीके से हमारे जीवन में कार्य करता है और इन आज्ञाओं का पालन करने के लिए हमारी सहायता करता है।

एक सहायक

मैं पिता से विनती करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।

यूहन्ना 14:16

जब हम परमेश्वर के अनुग्रह पर भरोसा नहीं करते उसकी सहायता नहीं लेते और स्वतंत्रता के साथ किसी कार्य को करने का प्रयत्न करते हैं तब वह कार्य और अधिक कठिन हो जाता है। यदि इस जीवन में हर एक चीज़ सरल होती तो हमें पवित्र आत्मा की सामर्थ की आवश्यकता ही नहीं होती। बाइबल उसे एक "सहायक" के रूप में बताती है। वह हमारी सहायता के लिए सर्वदा हमारे संग है और हमारे अन्दर है ताकि हम वह सब कुछ करने में समर्थ हो जाएँ जो हम नहीं कर सकते और यहाँ मैं कहना चाहती हूँ कि वह सब कार्य सरलता से हम करते हैं जो उसके बिना बहुत कठिन होते हैं।

आसान रास्ता और कठिन रास्ता

जब फिरौन ने लोगों को जाने की आज्ञा दे दी, तब यद्यपि पलिश्तियों के देश में होकर जो मार्ग जाता है वह छोटा था; तौभी परमेश्वर यह सोच कर उनको उस मार्ग से नहीं ले गया, कि कहीं ऐसा न हो कि जब ये लोग लड़ाई देखें तब पछताकर मिस्त्र को लौट आएँ।

निर्गमन 13:17

आप सुनिश्चित हो सकते हैं कि जहाँ कहीं भी परमेश्वर आप को ले जाता है, वह आपको सुरक्षित रखता है। वह हमें किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़ने देता जो सहने से बाहर हैं। (1 कुरिन्थियों 10:13) वह जो भी आदेश देता है उसका भुगतान भी करता है। यदि हम उस पर सम्पूर्णरूप से निर्भर हो जाएँ तो वह हमें ऐसी शक्ति प्रदान करता हैं जिसके द्वारा हम जीवन के संघर्षों से निपट सकते हैं।

यदि आप यह जानते हैं कि परमेश्वर ने आपको कुछ करने के लिए कहा है तो केवल इस कारण पीछे न हट जाएँ कि यह बहुत कठिन है। यदि चीज़ें कठिन होती जाती हैं तो उसके साथ और अधिक समय दें, उस पर भरोसा रखें और उससे और अधिक अनुग्रह प्राप्त करें। (इब्रानियों 4:16)

बिना किसी मूल्य के परमेश्वर की शक्ति जो हमारे पास आती है वह परमेश्वर का अनुग्रह है, जिसके द्वारा हम वह सब कार्य कर सकते हैं जो हम स्वतंत्र हो कर स्वयं से नहीं कर सकते। इस विचार से सावधान रहें जो यह कहता है कि "मैं यह नहीं कर सकता, यह अत्याधिक कठिन है।"

कभी कभी परमेश्वर हमें सरल मार्ग के बदले कठिन मार्ग से ले जाता है, क्योंकि वह हम में एक कार्य करता है। यदि हमारे जीवन में सब इतना सरल हो जाए कि हम स्वयं ही उन्हें सम्भाल लें तो हम उस पर निर्भर होना कैसे सीख पाएँगे?

परमेश्वर इस्त्राएल की सन्तान को लम्बे और कठिन मार्ग से ले गया था क्योंकि वे कायर थे, और परमेश्वर उन्हें उन लड़ाईयों से लड़ने के लिए तैयार कर रहा था जो उन्हें प्रतिज्ञा के देश में लड़नी होंगी।

अधिकांश लोग यह सोचते हैं कि प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश कर जाने का अर्थ है कि अब सारे युद्ध समाप्त हो गए, परन्तु ऐसा सोचना गलत है। यदि आप वह पढ़ें जब इस्त्राएली यरदन नदी पार कर चुके थे और प्रतिज्ञा के देश पर अधिकार प्राप्त करने वाले थे तो आप देखेंगे कि उन्होंने एक के बाद एक युद्ध लड़ा था। परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य और निर्देशों के द्वारा वे सारे युद्धों को जीतते चले गए।

परमेश्वर उन्हें एक लम्बे और कठिन मार्ग से ले गया था जबकि एक छोटा और सरल मार्ग भी था क्योंकि वह जानता था कि वह उन युद्धों को लड़ने के लिए तैयार नहीं हैं जो उन्हें प्रतिज्ञा के देश पर अधिकार प्राप्त करने के लिए लड़ने होंगे। उसे इस बात की चिन्ता थी कि अपने शत्रुओं को देखने के बाद वे वापस मिस्त्र न भाग जाएँ, अतः वह उन्हें कठिन मार्ग से ले गया यह सिखाने के लिए कि वह कौन है और वे स्वयं पर निर्भर रह कर कुछ नहीं कर सकते।

जब एक व्यक्ति कठिन समय से गुज़रता है तो उसका मन हौसला छोड़ देता है। शैतान जानता है कि यदि वह हमें हमारे मन में पराजित कर सकता है तो वह हमें हमारे अनुभव में भी पराजित कर सकता है। इस कारण यह अत्याधिक आवश्यक है कि हम निरूत्साहित न हों, और न थकें और न मूर्छित हों।

दृढ़ और पुष्ट बनें!

हम भले काम करने में साहस न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।

गलतियों 6:9

साहस छोड़ देना और ढीले पड़ जाने का अर्थ है मन में निरूत्साहित हो जाना। पवित्र आत्मा हमें बताता है कि हमें अपने मन में हताश नहीं हो जाना चाहिए क्योंकि यदि हम लगे रहेंगे तो कटनी अवश्य काटेंगे।

यीशु के विषय में सोचिए। बपतिस्मा लेने के बाद तुरन्त ही वह पवित्र आत्मा से भर गया था और आत्मा उसे जंगल ले गया ताकि शैतान से उसकी परीक्षा हो सके। उसने असन्तोष प्रगट नहीं किया, वह हताश और निरूत्साहित नहीं हुआ। उसने नकारात्मक ढंग से सोचना और बोलना आरम्भ नहीं कर दिया। उसने यह नहीं सोचा कि ऐसा क्यों हो रहा है। वह हर एक परीक्षा में विजयी हुआ।

अपनी इस परीक्षा की घड़ी में हमारा परमेश्वर चालीस दिन और रात यह कहते हुए जंगल में नहीं घूमता रहा कि उफ़! यह कितना कठिन है। वह अपने स्वर्गीय पिता से सामर्थ्य लेता रहा और अन्त में विजयी हुआ। (लूका 4:1—13)

क्या आप यह कल्पना कर सकते हैं कि यीशु अपने शिष्यों के साथ देश का भ्रमण करते समय यह कहते थे कि हर एक चीज़ कितनी कठिन है? क्रूस को उठाना कितना कठिन है और आने वाली चीज़ें कितनी भयानक हैं, प्रतिदिन की परिस्थितियों को देखते हुए यह जीवन कितना नैराश्यपूर्ण है, कोई ऐसा स्थान नहीं जिसे अपना कह सकें, सिर के ऊपर कोई छत नहीं, रात में सोने के लिए कोई पलंग नहीं।

जब मैं सुसमाचार प्रचार के लिए विभिन्न स्थानों में यात्रा कर के जाती हूँ तो मुझे यह सीखना पड़ा कि मैं कभी उन कठिनाइयों के विषय में बात न करूँ जो मेरी इस सेवकाई के कार्य में मेरे सामने आती हैं। हर बार एक अपरिचित होटल में रूकना कितना कठिन है इस विषय पर कभी अपना असन्तोष प्रगट न करूँ, घर से दूर बाहर का खाना, नए नए लोगों से मिलना इत्यादि।

मेरे पास और आपके पास मसीह का मन है, और हम इन बातों का सामना उसी प्रकार कर सकते हैं जैसा उसने किया था: “हियाव छोड़ देने वाली सोच” नहीं परन्तु “विजयी सोच” के द्वारा अपने मन को तैयार करना है।

दुःख के बाद सफलता

इसिलिये जब कि मसीह ने शरीर में होकर दुःख उठाया तो तुम भी उसी मनसा को हथियार के समान धारण करो, क्योंकि जिसने शरीर में दुःख उठाया वह पाप से छूट गया।

ताकि भविष्य में अपना शेष शारीरिक जीवन मनुष्यों की अभिलाषाओं के अनुसार नहीं वरन् परमेश्वर की इच्छा के अनुसार व्यतीत करे।

1 पतरस 4:1—2

कठिन चीज़ों और समय पर जयवन्त होने के विषय में यह खण्ड हमें एक रहस्य बताता है। इन दो पदों की मेरी यह व्याख्या हैः

"उन सभी बातों और घटनाओं पर विचार करें जिनका सामना यीशु ने किया था किस प्रकार शरीर में हो कर उसने दुःख उठाया था, इससे आपको अपनी कठिनाइयों का सामना करने में सहायता मिलेगी। युद्ध के लिए आप हथियार बाँध लें; विजयी होने की तैयारी करें जैसे यीशु ने किया था,... "परमेश्वर को प्रसन्न करने में असफल हो जाने के बदले मैं धैर्य के साथ दुख सह लूँगा" ...क्योंकि यदि मैं दुख उठाता हूँ और मेरे पास मसीह का मन है, तो मैं केवल स्वयं को प्रसन्न करने के लिए ही नहीं जीवित रहूँगा, केवल सरल कार्य ही नहीं करूँगा और जो कठिन है उससे दूर नहीं भागूँगा। परन्तु मैं परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने के लिए जीवित रहूँगा, अपनी भावनाओं, इच्छाओं और शारीरिक विचारों से दूर रहूँगा।"

परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए शरीर में हो कर दुःख उठाना आवश्यक है।

मेरी सेवकाई में मुझे बहुत यात्राएँ करनी पड़ती हैं जो मेरे शरीर को पसन्द नहीं, परन्तु मैं जानती हूँ कि परमेश्वर की मेरे लिए यही इच्छा है जिसका अनुसरण मुझे करना है। अतः मुझे इस विषय में सही सोचना है यही मेरा हथियार है नहीं तो मैं आरम्भ करने से पहले ही पराजित हो जाऊँगी।

आप के जीवन में हो सकता है कोई ऐसी व्यक्ति हो जिसके साथ आप एक क्षण भी बिताना कठिन समझते हों और फिर भी आप जानते है कि परमेश्वर आप से चाहता है कि आप उस व्यक्ति के साथ सम्बन्ध बनाए रखें और उससे दूर न भागें। इस स्थिति में उस व्यक्ति के साथ सम्बन्ध बनाए रखना सरल

कार्य नहीं है और आपका शरीर दु:ख उठाएगा परन्तु इस स्थिति के विषय में सही प्रकार की सोच रख कर स्वयं को आप तैयार कर सकते हैं।

मसीह की सन्तुष्टि में ही स्वयं की सन्तुष्टि

मैं दीन होना भी जानता हूँ और बढ़ना भी जानता हूँ: हर एक बात और सब दशाओं में मैं ने तृप्त होना, भूखा रहना, और बढ़ना–घटना सीखा है।

जो मुझे सामर्थ्य देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ।

फिलिप्पियों 4:12–13

सही सोच हमारे लिए युद्ध का "हथियार" है। गलत सोच के साथ युद्ध में जाना उसी प्रकार है जैसे बिना किसी हथियार के युद्ध में जाना। यदि हम ऐसा करते हैं तो हम विजयी नहीं हो सकते।

इस्त्राएली "असंतुष्ट" थे और यही एक कारण था कि वह चालीस वर्षों तक जगल में भटकते रहे जो कि मात्र ग्यारह दिनों की यात्रा थी। हर एक कठिनाई के आते ही वे चिल्लाना आरम्भ कर देते थे, प्रत्येक नयी चुनौती के प्रति वे असंतोष प्रगट करते थे, सदैव कहते थे कि यहाँ हर चीज़ अत्याधिक कठिन है। उनकी मानसिकता थी, "कृपया कर हर चीज़ को सरल बना दें, मैं कठिनाइयों का सामना नहीं कर सकता।"

मैंने कुछ ही दिनों पहले यह जाना कि अधिकांश विश्वासी रविवार को अच्छे योद्धा होते हैं और सोमवार को चिल्लाने वाले असंतुष्ट व्यक्ति बन जाते हैं। रविवार को गिरजे में अपने मित्रों से बहुत अच्छी अच्छी बातें करते हैं, परन्तु सोमवार को जब उन बातों का अभ्यास करना होता है, और अपना प्रभाव डालने के लिए जब आस पास कोई नहीं होता है, वे छोटी से छोटी परीक्षा में भी मूर्छित हो जाते हैं।

यदि आप चिल्लाने वाले और असंतुष्टता प्रगट करने वाले व्यक्ति हैं तो अपना मन नया करें, जो यह कहता है, **मैं मसीह के द्वारा सब कुछ कर सकता हूँ जो मुझे सामर्थ्य देता है।** (फिलिप्पियों 4:13)

अध्याय

19

"मेरा बस में नहीं; मैं कुड़कुड़ाने का, दोष लगाने का और अंसतोष प्रगट करने का आदि हो गया हूँ।"

जंगल की मानसिकता # 4

“मेरा बस में नहीं; मैं कुड़कुड़ाने का, दोष लगाने का और अंसतोष प्रगट करने का आदि हो गया हूँ।”

जंगल की मानसिकता # 4

अध्याय 19

> *क्योंकि यदि कोई परमेश्वर का विचार करके अन्याय से दुःख उठाता हुआ क्लेश सहता है तो यह सुहावना है।*
>
> *क्योंकि यदि तुम ने अपराध करके घूँसे खाए और धीरज धरा, तो इस में क्या बड़ाई की बात है? पर यदि भला काम करके दुःख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है।*
>
> 1 पतरस 2:19–20

कठिन समय के दौरान अपने व्यवहार से जब तक हम परमेश्वर की महिमा करना नहीं सीख जाते तब तक हमारा समस्याओं से छुटकारा नहीं। हमारे दुःख और क्लेश उठाने से परमेश्वर की महिमा नहीं होती परन्तु इन दुखों में हमारे ईश्वरीय स्वभाव के द्वारा ही परमेश्वर की महिमा होती है और उसे हम प्रसन्न कर सकते हैं।

इन वचनों को सावधानी के साथ समझते हुए पढ़ें कि परमेश्वर हमें क्या देना चाहता है। मैं यह स्वीकार करती हूँ कि मैंने इन पदों का वर्षों तक अध्ययन किया यह समझने के लिए कि मेरे दुःख उठाने से परमेश्वर इतना प्रसन्न क्यों होता है जबकि बाइबल स्पष्टता के साथ बताती है कि यीशु ने मेरे दण्ड की पीड़ा और कष्टों को अपने ऊपर ले लिया। (यशायाह 53:3—6)

बहुत वर्षों के बाद मैंने यह जाना कि 1 पतरस के इन पदों का मुख्य बिन्दु कष्ट नहीं परन्तु उस कष्ट में हमें किस प्रकार का व्यवहार रखना है यही मुख्य बात है।

इस खण्ड में “धीरज” शब्द पर ध्यान दें जो कहता है कि यदि कोई हमारे साथ गलत व्यवहार करता है और हम धीरज के साथ उसे सह लेते हैं तो यह परमेश्वर को भाता है। जो चीज़ उसको भाती है। वह कष्ट नहीं परन्तु हमारा धैर्य व्यवहार है। हमारे कष्टों में हमें उत्साहित करने के लिए हमें यीशु के व्यवहार को देखने के लिए कहा गया है जिसने अन्याय के आक्रमण को भी धीरज के साथ सह लिया।

यीशु हमारे लिए एक आदर्श

और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुःख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया है कि तुम भी उसके लिये पद–चिन्हों पर चलो।

न तो उसने पाप किया और न उसके मुँह से छल की कोई बात निकली।

वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुःख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था।

1 पतरस 2:21–23

यीशु ने प्रतिष्ठा सहित दुःख उठाए। चुपचाप, बिना दोष लगाए, हर बात में परमेश्वर पर भरोसा रखते हुए चाहें परिस्थितियाँ कैसी भी क्यों न हों, हर एक दशा में वह समान ही रहा। ऐसा नहीं कि जब चीज़ें सरल थीं तो उसने धीरज धरा और जब चीज़ें कठिन हो गयीं तो उसने अपना धैर्य खो दिया।

यह पद हमें बताते हैं कि यीशु हमारा आदर्श है और वह हमें यह सिखाने आया कि किस प्रकार जीवन जीना है। दूसरे लोगों के प्रति हम अपना आचरण किस प्रकार रखते हैं यह उन्हें सिखाता है कि उन्हें भी किस प्रकार का जीवन जीना चाहिए। हम अपने बच्चों को शब्दों से अधिक अपने आदर्श से उन्हें सिखा सकते हैं। हम वह जीवित पत्री हैं जिन्हें सारे लोग पढ़ते हैं (2 कुरिन्थियों 3:2,3)–इस अन्धकार में डूबे हुए संसार के लिए हम तीव्र ज्योति हैं। (फिलिप्पियों 2:15)

दीनता, नम्रता और धीरज के लिए बुलाहट

इसलिये मैं जो प्रभु में बन्दी हूँ तुम से विनती करता हूँ कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो।

अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो।

इफिसियों 4:1–2

कुछ समय पहले हमारे पारिवारिक जीवन में एक ऐसी स्थिति आ गयी थी जो एक श्रेष्ठ उदाहरण का कार्य करेगी, जब हम इस बिन्दु पर विचार करेंगे कि हमें दीनता नम्रता और धीरज के साथ कष्ट उठाने हैं।

हमारा बेटा, डैनियल, डोमिनिकन रिपब्लिक से लौट कर आया था। उसकी बाँहों पर फफोले पड़े हुए थे और बहुत से घाव भी थे। डोमिनिकन रिपब्लिक में इसे आइवी विष के नाम से जाना जाता था। यह इतना खराब दिखाई दे रहा था कि हम निश्चित होना चाहते थे कि वास्तव में यह क्या था। हमारा पारिवारिक चिकित्सक उस दिन छुट्टी पर था अतः हमने दूसरे चिकित्सक से समय ले लिया।

हमारी बेटी, सॉन्ड्रा ने फोन कर के डाक्टर से समय ले लिया था और उसने डेनियल की आयु भी बता दी थी और यह भी बता दिया था कि मैं उसकी बहन हूँ और मैं उस को ले कर आ रही हूँ। उस दिन हम सभी अत्याधिक व्यस्त थे। पैंतालीस मिनिट में वह डाक्टर की क्लीनिक पहुँच गयी। नर्स ने उस से कहा, "मुझे क्षमा करें, परन्तु यह हमारी नीति है कि हम बच्चों की चिकित्सा तब तक नहीं करते जब तक उसके माँ बाप साथ न हों।"

सॉन्ड्रा ने समझाने का प्रयत्न किया कि उसने फोन पर विशेष रूप से यह बता दिया था कि वह अपने भाई को ले कर आ रही है और वह ऐसा प्रायः किया करती है क्योंकि उसके माँ बाप बहुधा यात्रा पर ही रहते हैं। नर्स इस बात पर दृढ़ रही कि उसके माँ बाप उसके साथ होने चाहिए।

सॉन्ड्रा के पास क्रोधित होने का पूरा अवसर था। उसने अत्याधिक व्यस्त होने के बावजूद भी समय निकाला था मगर उसकी सारी योजना और प्रयत्न विफल हो गए थे। इन सब में उसका बहुत अधिक समय नष्ट हो गया था। उसके पास पैंतालीस मिनट अधिक थें, घर जाकर उसका सामना करें और पूरी बात जैसे की, समय कि बर्बादी की तरह लग रही थी।

उसके शान्त और प्रेमी बने रहने में परमेश्वर ने उसकी सहायता की। उसने अपने पिता को फोन किया जो अपनी माँ के पास गए हुए थे, उन्होंने कहा कि वह आ रहे हैं और सारी स्थिति को सम्भाल लेंगे। डेव को उस सुबह ऐसा प्रतीत हुआ कि उन्हें हमारे कार्यालय जा कर मेरी कुछ पुस्तकों और टेप को पहले ले लेना चाहिए जब कि डेव को इस बात का वास्तव में पता नहीं था कि वह इन सब के साथ क्या करेगा। उसे ऐसा लगा कि उसे जाना है और इन चीज़ों को उठा लेना है।

जब वह डॉक्टर की क्लीनिक पर पहुँचा तो एक महिला जो बीमारों का नाम लिख रही थी उसने डेव से कहा कि क्या वह एक पादरी है और क्या वह जॉयस मेयर का पति है। उसने कहा, हाँ, महिला ने कहा कि वह मुझे टेलिविज़न पर देखा करती है और हमारे नाम को भी काफी सुन रखा है और अब वह आश्चर्यचकित है कि क्या यह वही व्यक्ति है। डेव ने थोड़ी देर उससे बातचीत की और मेरी एक पुस्तक जो 'भावनात्मक चँगाई' पर है, उसे दी।

आपको यह घटना बताने का मेरा मकसद यह हैः यदि सैन्ड्रा क्रोधित हो जाती और अपना धैर्य खो देती तो क्या होता? उसकी गवाही यदि नष्ट नहीं तो बिगड़ अवश्य जाती। इससे उस महिला को कितनी आत्मिक हानि होती जो मुझे टेलिविज़न पर देखा करती है और फिर मेरे परिवार का बुरा व्यवहार देखती।

बहुत से लोग आज इस संसार में परमेश्वर को ढूँढने का प्रयत्न कर रहे हैं, और हम जो उन्हें क्या बताते हैं इससे अधिक महत्वपूर्ण है कि हम उन्हें क्या दिखा रहे हैं। निःसन्देह सुसमाचार सुनाना भी आवश्यक है परन्तु यदि हमारा व्यवहार उस सुसमाचार के शब्दों के अनुकूल नहीं तो यह सुसमाचार न सुनाने से भी बुरा होगा।

सॉन्ड्रा ने इस स्थिति के कष्टों को धीरज के साथ सह लिया और परमेश्वर का वचन कहता है कि ऐसा ही व्यवहार और स्वभाव रखने के लिए हमारी बुलाहट है।

यूसुफ का धीरज के साथ कष्ट उठाना

उसने यूसुफ नामक एक पुरूष को उनसे पहले भेजा था, जो दास होने के लिये बेचा गया था।

लोगों ने उसके पैरों में बेड़ियाँ डालकर उसे दुःख दिया; वह लोहे की साँकलों से जकड़ा गया।

जब तक कि उसकी बात पूरी न हुई तब तक यहोवा का वचन उसे कसौटी पर कसता रहा।

भजन संहिता 105:17—19

पुराने नियम में से एक उदाहरण यूसुफ का है जिसके भाइयों ने उसके साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार किया था। उसे उन्होंने दास के रूप में बेंच दिया था और अपने पिता से कह दिया था कि उसे किसी जंगली जानवर ने मार डाला है। एक धनी मनुष्य जिसका नाम पोतीपर था उसने उसे खरीद लिया था और अपने घर दास के रूप में उसे रख लिया था। जहाँ कहीं भी यूसुफ गया परमेश्वर की दया उस पर रही; और शीघ्र ही अपने नए स्वामी का भी वह दया का पात्र बन गया।

यूसुफ की पदोन्नति होती रही, परन्तु एक अन्याय भी उसके साथ हुआ। पोतीपर की पत्नी ने उस पर अपनी कुदृष्टि डाली और उसे अपने प्रति आकर्षित करने का प्रयत्न किया, परन्तु क्योंकि वह एक सदाचारी और पवित्र व्यक्ति था अतः उसने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। अपने पति से झूठ बोलते हुए उसने कहा कि यूसुफ ने उस पर आक्रमण किया है और इस कारण यूसुफ को कारागार में डाल दिया गया।

यूसुफ कारागार में भी दूसरों की सहायता करता रहा। उसने कभी असंतोष प्रगट नहीं किया और क्योंकि उसके कष्ट में भी उचित व्यवहार था इसी कारण परमेश्वर ने उसे वहाँ से छुड़ाया और उस की पदोन्नति की। फिरौन ने उसे मिस्त्र देश का प्रधान अधिकारी बना दिया।

परमेश्वर ने भी उसे उसके भाइयों के सामने निर्दोष सिद्ध कर दिया, जब सारे मिस्त्र देश में आकाल पड़ा हुआ था तो यूसुफ के भाई उसके पास भोजन खरीदने आए। अपने भाईयों के साथ यूसुफ ने बुरा बर्ताव नहीं किया जिसके वह योग्य थे परन्तु एक बार फिर यूसुफ ने अपना ईश्वरीय स्वभाव दिखाया। उसने उन्हें बताया कि उन्होंने जो उसके साथ बुरा किया था उसे परमेश्वर ने भलाई में बदल दिया—अब वे परमेश्वर के हाथों में हैं उसके हाथों में नहीं और अब उस के पास उनके विरूद्ध कुछ भी करने का अधिकार नहीं परन्तु अब वह उन्हें आशीष ही देता है। (देखें उत्पत्ति 39—50)

कुड़कुड़ाने के खतरे

और न हम प्रभु को परखे, जैसा उनमें से कितनों ने किया, और साँपो के द्वारा नष्ट किए गए।

और न तुम कुड़कुड़ाओं, जिस रीति से उनमें से कितने कुड़कुड़ाए और नष्ट करनेवाले के द्वारा नष्ट किए गए।

परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ीं, दृष्टान्त की रीति पर थीं; और वे हमारी चेतावनी के लिये जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गईं हैं।

1 कुरिन्थियों 10:9–11

इन पदों से यूसुफ और इस्त्राएलियों के अन्तर को हम तुरन्त देख सकते हैं। वह तनिक भी नहीं कुड़कुडाया था और यह लोग छोटी छोटी बातों को लेकर कुड़कुडाया करते थे। बाइबल हमें स्पष्ट रूप से कुड़कुडाया, दोष लगाना और असंतोष प्रगट करने के खतरों से अवगत कराती है।

संदेश बिलकुल सरल है। इस्त्राएलियों के कुड़कुडाने से शैतान के लिए एक द्वार खुल गया था जिसने आ कर उनको नष्ट कर दिया। उन्हें तो परमेश्वर की भलाई की प्रशंसा करनी चाहिए थी—परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया—और इसका मूल्य उन्हें चुकाना पड़ा।

उनके सारे कष्टों और मृत्यु का वर्णन केवल इसलिए किया गया है ताकि हम यह जान लें कि यदि हम भी ऐसा ही करते हैं तो हमारे साथ क्या होगा।

मैं और आप पहले अपने विचारों में कुड़कुडाते हैं जो बाद में हमारे मुँह से बाहर आ जाता है। कुड़कुडाना निश्चितरूप से जंगल की मानसिकता है। जो हमें प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने से रोकती है।

यीशु हमारा आदर्श है और हमें वही करना चाहिए जो उसने किया था।

इस्त्राएली कुड़कुडाए और जंगल में ही रह गए।

यीशु ने प्रशंसा की और मुर्दों में से जिलाया गया।

इसमें हम प्रशंसा और धन्यवाद की शक्ति और कुड़कुडाने की शक्ति का अन्तर देखते हैं। हाँ, कुड़कुडाना, दोष लगाना, असंतोष प्रगट करना इन सब में एक शक्ति है—परन्तु वह नकारात्मक शक्ति है। जब भी हम इनमें से किसी एक को अपने मन अथवा मुँह में लाते हैं तब हम एक शक्ति शैतान को दे देते हैं जिसका प्रयोग वह हमारे ऊपर करता है। परमेश्वर ने उसे यह अधिकार नहीं दिया है परन्तु हम ही ने उसे यह शक्ति प्रदान की है।

न दोष लगाएँ, न कुड़कुड़ाएँ और न असंतोष प्रगट करें

सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद के किया करो।

ताकि तुम निर्दोष और भोले होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक सन्तान बने रहो, जिनके बीच में तुम जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपकों के समान दिखाई देते हो।)

फिलिप्पियों 2:14–15

कभी कभी ऐसा प्रतीत होता है कि सारा संसार कुड़कुड़ा रहा है। इस संसार में इतना अधिक कुड़कुड़ाना और दोष लगाना है कि लगता है कि यहाँ कृतज्ञता और प्रशंसा के लिए कोई स्थान नहीं। लोग अपनी नौकरी और अपने अधिकारी पर कुड़कुड़ाते रहते हैं जबकि उन्हें धन्यवादित होना चाहिए कि वे बेघर लोगों की भांति तो नहीं और प्रशंसा करनी चाहिए कि वे निःशुल्क भोजन प्राप्त करने वाली पंक्ति में तो कम से कम नहीं खड़े हैं।

इन दरिद्र लागों में से अधिकांश लोग ऐसी नौकरी पा कर प्रसन्नता से खिल उठेंगे, चाहें उस में कोई दोष क्यों न हो। चाहें मालिक कैसा भी क्यों न हो, एक नियमित वेतन पा कर, स्वयं के मकान में रह कर और अपना भोजन स्वयं बना कर उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहेगा।

हो सकता है आपको एक और अच्छी नौकरी की आवश्यकता हो या आपके अधिकारी का व्यवहार आपके प्रति अच्छा न हो। यह दुर्भाग्य है, परन्तु कुड़कुड़ाना इसका हल नहीं।

चिन्ता न करें–प्रार्थना करें और धन्यवाद दें

किसी भी बात की चिन्ता मत करो, परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ।

फिलिप्पियों 4:6

इस पद के द्वारा प्रेरित पौलुस हमें सिखा रहा है कि हम अपनी समस्याओं का सामधान किस प्रकार कर सकते हैं। वह हमें निर्देश देता है कि हर एक परिस्थिति में हमें धन्यवाद के साथ प्रार्थना करनी है।

परमेश्वर ने मुझे यही सिद्धांत इस तरीके से बताया "जॉयस, मैं तुम्हें दूसरी वस्तुएँ क्यों दूँ यदि तुम, जो भी तुम्हारे पास है उसके लिए धन्यवादित नहीं हो? तुम्हें कुड़कुड़ाने के लिए मैं दूसरी वस्तुएँ तुम्हें क्यों दूँ?"

यदि हमारी प्रार्थना में जीवन की नींव से ले कर अब तक प्राप्त की हुई चीज़ों के लिए धन्यवाद नहीं तो हमारी प्रार्थना का उत्तर अनुग्रह से नहीं मिलेगा। वचन यह नहीं कहता है कि कुड़कुड़ाने के साथ प्रार्थना करो, परन्तु वह यह कहता है कि धन्यवाद के साथ प्रार्थना करो।

जब हमारी इच्छानुसार कार्य नहीं होता तब ही हम कुड़कुड़ाते और दोष लगाने लगते हैं, या किसी चीज़ के लिए बहुत अधिक प्रतीक्षा करनी पड़ जाती है तब भी हम कुड़कुड़ाना आरम्भ कर देते हैं। परमेश्वर का वचन हमें सिखाता है कि ऐसे समय में हमें धीरज से काम लेना चाहिए।

मैंने यह जाना है कि धैर्य, प्रतीक्षा करने की क्षमता को नहीं कहते परन्तु प्रतीक्षा के दौरान एक अच्छा व्यवहार रखने की क्षमता को ही धैर्य कहते हैं।

यह अति आवश्यक है कि इस प्रकार की नकारात्मक बातचीत और सोच को हम गम्भीरता से लें। मैं विश्वास करती हूँ कि परमेश्वर ने मुझे यह दिखाया है कि अपना मुँह और मन इनको देना कितना भयंकर है।

व्यवस्थाविवरण 1:6 में परमेश्वर ने इस्त्राएलियों से कहा था...तुम लोगों को इस पहाड़ के पास रहते हुए बहुत दिन हो गए हैं। आप भी उस पहाड़ के पास संभवतः कई बार गए हों और अब वहाँ से निकलने का प्रयत्न कर रहे हों। यदि ऐसा है तो यह आपके लिए भला होगा यदि आप यह याद रखें कि आप सकारात्मक तरीके से आगे नहीं बढ़ पाएँगे यदि आपके विचार और बातचीत में कुड़कुड़ाना भरा हुआ है।

मैंने यह नहीं कहा कि यह बहुत सरल है कि न कुड़कुड़ाएँ, परन्तु आपके पास मसीह का मन है। तो क्यों न अधिक से अधिक उसका उपयोग करें।

अध्याय
20

“मुझे किसी भी चीज़ के लिए प्रतीक्षा न कराएँ, मैं हर एक चीज़ तुरन्त पाने के योग्य हूँ।”

जंगल की मानसिकता # 5

"मुझे किसी भी चीज़ के लिए प्रतीक्षा न कराएँ, मैं हर एक चीज़ तुरन्त पाने के योग्य हूँ।"

जंगल की मानसिकता # 5

***अध्याय* 20**

> *इसलिये हे भाईयो, प्रभु के आगमन तक धीरज धरो, देखो किसान पृथ्वी कि बहुमूल्य फसल की आशा रखता हुआ प्रथम और अन्तिम वर्षा होने तक धीरज धरता है।*
>
> याकूब 5:7

व्याकुलता घमण्ड का फल है। एक घमण्डी व्यक्ति उचित स्वभाव के साथ किसी भी चीज़ की प्रतीक्षा नहीं कर सकता। जैसा हमने पहले के अध्यायों में देखा, धैर्य प्रतीक्षा करने की योग्यता नहीं, परन्तु प्रतीक्षा के दौरान अच्छा स्वभाव बनाए रखने की योग्यता है।

यह पद यह नहीं कहता "यदि आप प्रतीक्षा करते हैं तो धीरज रखें," यह कहता है "प्रतीक्षा के दौरान धीरज रखें।" प्रतीक्षा करना जीवन का एक हिस्सा है। बहुत से मनुष्य "अच्छी तरह प्रतीक्षा" नहीं करते और फिर भी वास्तव में हम अपने जीवन में जितना समय कुछ प्राप्त करने में लगाते हैं उससे कहीं अधिक प्रतीक्षा करने में व्यय कर देते हैं।

मेरा अर्थ है: हम परमेश्वर से विश्वास के साथ प्रार्थना के द्वारा कुछ माँगते हैं और फिर हम उसके मिलने तक प्रतीक्षा करने लगते हैं। जब वह हमें मिल जाता है हम प्रसन्न हो जाते हैं क्योंकि हम जिसकी प्रतीक्षा कर रहे थे वह अन्त में हमें प्राप्त हो जाता है।

क्योंकि हम लोग लक्ष्य आधारित मनुष्य हैं अतः सदैव हम लक्ष्य की ओर ही देखते रहते हैं—हम फिर वही प्रक्रिया दोहराते हैं परमेश्वर से किसी और चीज़ की याचना करते हैं और उस पर विश्वास करते हैं और प्रतीक्षा करना आरम्भ कर देते हैं जब तक वह चीज़ हमें मिल न जाए।

इस दशा के बारे में जब मैं सोचती हूँ तब मुझे यह प्रतीत होता है कि जितना समय मुझे कुछ प्राप्त करने में लगता है उससे कहीं अधिक मेरे जीवन का समय प्रतीक्षा करने में ही खर्च हो जाता है। अतः मैंने यह निर्णय ले लिया

कि अब मैं केवल ग्रहण करने के समय में ही नहीं परन्तु प्रतीक्षा के समय में भी प्रसन्न रहूँगी।

जहाँ कहीं भी हम जा रहे हों पूरे मार्ग में हमें प्रसन्नचित्त रहना है।

घमण्ड धैर्यपूर्ण प्रतीक्षा को रोकता है

क्योंकि मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुझ को मिला है, तुम में से हर एक से कहता हूँ कि जैसा समझना चाहिए, उससे बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे; पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को विश्वास परिमाण के अनुसार बाँट दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे।

रोमियों 12:3

प्रतीक्षा के दौरान आनन्दित रहना असम्भव है यदि आप धीरज के साथ प्रतीक्षा करना नहीं जानते। घमण्ड धीरज के साथ प्रतीक्षा करने में बाधा डालता है क्योंकि घमण्डी व्यक्ति स्वयं को अति श्रेष्ठ समझता है और इसी कारण वह ऐसा विश्वास करता है कि उसे किसी भी तरह कोई भी असुविधा नहीं होनी चाहिए।

हांलाकि हमें अपने बारे में बुरा नहीं सोचना चाहिए फिर भी हमें अपने आप को अति श्रेष्ठ भी नहीं समझना चाहिए। हमें स्वयं को इतना ऊँचा भी नहीं उठा लेना है जिससे हम दूसरों को भी नीची दृष्टि से देखना आरम्भ कर दें, इसका परिणाम बहुत भयंकर होगा। यदि वे उस ढंग से कार्य नहीं करते हैं जिस ढंग से हम चाहते हैं या उतनी शीघ्रता से नहीं कर रहे हैं जैसा कि हम चाहते हैं तब हमारा व्यवहार व्यग्रतापूर्ण हो जाता है।

एक विनीत व्यक्ति व्यग्रतापूर्ण व्यवहार का प्रदर्शन नहीं करेगा।

यथार्थवादी बनें!

...संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बाँधो, मैंने संसार को जीत लिया है।

यूहन्ना 16:33

हमारे व्यवहार को व्यग्र बनाने के लिए शैतान के पास एक दूसरा तरीका यह है कि वह हमारी सोच को यथार्थवादी की जगह आदर्शवादी बना देता है।

यदि हमारे मस्तिष्क में यह विचार आता है कि हर एक वह चीज़ जिसका सम्बन्ध हम से या हमारी परिस्थितियों से है या हमारे सम्बन्धों से है वह उत्तम होनी चाहिए—कोई असुविधा न हो कोई बाधाएँ न हों, किसी दुष्ट व्यक्ति से सामना न हो—तब हम अवश्य ही अपने आप को गड़हे में गिरा रहे हैं। अथवा मुझे वास्तव में यह कहना चाहिए कि शैतान आप को गलत सोच के द्वारा गिरा रहा है।

मेरा यह सुझाव नहीं है कि हम नकारात्मक बन जाएँ, सकारात्मक आचरण और विचारों में मेरा दृढ़ विश्वास है। परन्तु मैं यह कह रही हूँ कि हमें यथार्थवादी बन कर आगे के समय को पहचानना चाहिए कि वास्तविक जीवन में ऐसी बहुत कम चीज़ें हैं जो सम्पूर्ण और श्रेष्ठ हैं।

मैं और मेरे पति प्रायः प्रत्येक सप्ताह के अन्त में सेमिनार आयोजित करने दूसरे शहर जाया करते हैं। बहुत बार हम किसी होटल या कनवेंशन सेन्टर में ठहरा करते हैं। आरम्भ में तो मैं व्यग्र और हताश हो जाया करती थी जब भी मैं किसी खराब चीज़ को देखती थी जैसे—एयर कंडीशनर का ठीक प्रकार कार्य न करना (या बिलकुल ही कार्य न करना), कान्फ्रेंस रूम में अपर्याप्त प्रकाश का होना, गन्दी और धब्बेदार कुर्सिंया, पिछली रात्रि की शादी की पार्टी के केक् के टुकड़े फर्श पर पड़े रहना।

मैं ऐसा सोचती थी कि क्योंकि हमने एक अच्छी धनराशि उन कमरों के प्रयोग के लिए दी थी तो हमें वह कमरे उचित दशा में मिलने चाहिएँ, परन्तु जब ऐसा नहीं होता था तो मैं झुंझला जाती थी। जिस स्थान को हम किराए पर लेते थे उसको साफ सुथरा और आरामदेह बनाने के लिए हम से जितना भी प्रयत्न हो सकता था हम करते थे मगर फिर भी उनमें से 75 प्रतिशत हमारी कसौटी पर खरे नहीं उतरते थे।

कभी कभी ऐसा भी होता था कि हम से कह दिया जाता था कि आपके कमरे सुरक्षित कर दिए गए हैं और जब हमारी टीम वहाँ पहुँचती थी तब कहा जाता था कि अभी कमरे खाली नहीं और हमें कई घण्टे प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। होटल के कर्मचारी हमारी सभाओं के समय की गलत सूचनाएँ दे देते थे जबकि हम पहले से ही छपी हुई कार्यक्रम की तालिका भेज देते थे जिसमें समय और दिनांक स्पष्टरूप से लिखा होता था। होटल के अधिकांश कर्मचारी आलसी और रूखे स्वभाव के होते थे। जो भोजन हम सेमिनार के लिए मँगाते थे उसमें भी कुछ न कुछ कमी रहती थी।

एक बार की घटना मुझे याद है जब हमारी मसीही महिलाओं (लगभग आठ सौ) को भोजन के बाद मीठा हलवा जो दिया गया उस में रम पड़ी हुई थी। उसी समय होटल में एक शादी का भी भोजन चल रहा था और यह हलवा उस शादी के लिए ही था जो किचिन की गलती के कारण हमें मिल गया था। यह बताने की आवश्यकता नहीं कि हम कितनी ग्लानि से भर गए थे जब महिलाएँ हमें बताने लगीं कि हलवे में तो रम मिली हुई है।

ऐसी बहुत सी घटनाएँ हमारे साथ घटी हैं परन्तु मुख्य बिन्दु यह है कि ऐसा कदाचित ही हुआ है जब हमें श्रेष्ठ स्थान, श्रेष्ठ लोग और श्रेष्ठ सेमिनार मिला हो।

अन्त में मैंने इस बात को जाना कि इन दशाओं में मैं जो व्यग्र हो जाती थी और बुरा स्वभाव दर्शाती थी उस का कारण यह था कि मैं आदर्शवादी थी यथार्थवादी नहीं।

मैं विफल होने की योजना नहीं बनाती परन्तु मुझे यह याद है कि यीशु ने कहा था कि इस संसार में हमें परीक्षाओं, कष्टों और विफलताओं का सामना करना पड़ेगा। यह चीज़ें विश्वासी और अविश्वासी दोनों के सांसारिक जीवन का एक हिस्सा हैं। परन्तु संसार की यह सारी दुर्घटनाएँ हमें हानि नहीं पहुँचा सकतीं यदि हम परमेश्वर के प्रेम में बने रहें और आत्मा के फल को प्रदर्शित करते रहें।

धैर्यः सहन करने की शक्ति

इसलिये परमेश्वर के चुने हुओं के समान जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करूणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो।

कुलुस्सियों 3:12

इन परिस्थितियों में मैं किस प्रकार के व्यवहार का प्रदर्शन कर रही हूँ यह पद मुझे यही याद दिलाता है। मैं स्वयं को याद दिलाती हूँ कि प्रतीक्षा करने की मेरी योग्यता का नाम धैर्य नहीं परन्तु जब मैं प्रतीक्षा करती हूँ उसी दौरान मेरा अच्छा स्वभाव बनाए रखने की योग्यता को ही धैर्य कहते हैं।

परीक्षा से ही धैर्य प्राप्त होता है

हे मेरे भाईयो, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, यह जानकर तुम्हारे विश्वास के परखे जाने

से धीरज उत्पन्न होता है। पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ, और तुम में किसी बात की घटी न रहे।

याकूब 1:2–4

धीरज, आत्मा का एक फल है (गलतियों 5:22) और नया जन्म पाए हुए हर एक व्यक्ति की आत्मा में बसा होता है। परमेश्वर के लिए यह अति आवश्यक है कि उसके लोग इसका प्रदर्शन करें। वह चाहता है कि लोग उसके बच्चों के द्वारा उसका चरित्र देखें।

याकूब की पुस्तक का पहला अध्याय हमें सिखाता है कि जब हम सिद्ध हो जाते हैं, तब हमारे पास किसी चीज़ की घटी नहीं होगी। एक धैर्यवादी मनुष्य को शैतान अपने नियंत्रण में नहीं ले सकता।

याकूब 1 यह भी सिखाता है कि हमें आनन्द करना चाहिए जब हम अपने आप को कठिन परिस्थितियों में पाते हैं क्योंकि हमारे परखे जाने से परमेश्वर हम में धीरज उत्पन्न करता है।

"भिन्न भिन्न परीक्षाओं" में पड़ने से मेरे अन्दर वास्तव में धीरज उत्पन्न हो गया है, यह बात मैंने अपने जीवन में पायी है। परन्तु धीरज उत्पन्न होने से पहले और भी दूसरी चीज़ें अन्दर आ जाती हैं जिनके लक्षण ईश्वरीय नहीं जैसे घमण्ड, क्रोध, विरोध, असंतुष्टि, स्वार्थ इत्यादि। ऐसा प्रतीत होता है कि धीरज आने से पहले हमें इन दूसरी चीज़ों का सामना करके इन पर काबू पाना होगा।

परीक्षा या असुविधा ?

फिर उन्होंने होर पहाड़ से कूच करके लाल समुद्र का मार्ग लिया कि एदोम देश से बाहर बाहर घूमकर जाएँ; और लोगों का मन मार्ग के कारण बहुत व्याकुल हो गया।

गिनती 21:4

यदि आप को याद हो, यह व्याकुल स्वभाव जंगल की मानसिकताओं में से एक थी जिसके कारण इस्त्राएली जंगल में चालीस वर्ष तक भटकते रहे।

ये लोग उस प्रतिज्ञा के देश में कैसे जा सकते थे और वहाँ के लोगों को खदेड़ कर कैसे निकाल सकते थे क्योंकि वे एक छोटी सी असुविधा में भी धीरज नहीं रखते थे और दृढ़ नहीं रहते थे?

पवित्र आत्मा जब आप के जीवन में धीरज का फल उत्पन्न करता है तब आपको मैं पवित्र आत्मा के साथ कार्य करने के लिए उत्साहित करती हूँ। जितना अधिक आप उसका विरोध करेंगे, उतना ही अधिक समय इस प्रक्रिया में लगेगा। हर प्रकार की परीक्षा में धैर्य रखना सीखें, तब आप एक उच्च और आनन्दपूर्ण जीवन जी सकेंगे।

धीरज और सहनशीलता का महत्व

क्योंकि तुम्हें धीरज धरना आवश्यक है, ताकि परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का फल पाओ।

इब्रानियों 10:36

यह पद हमें बताता है कि हम बिना धीरज और सहनशीलता से परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को प्राप्त नहीं कर सकेंगे। और इब्रानियों 6:12 हमें बताता है कि प्रतिज्ञाएँ हम केवल विश्वास और धीरज के द्वारा ही प्राप्त कर सकते हैं।

घमण्डी व्यक्ति अपने शरीर के बल से ही दौड़ता है और स्वयं द्वारा निर्धारित समय में ही कार्य को पूरा करने का प्रयत्न करता है। घमण्ड कहता है, "अब मैं तैयार हूँ"

विनम्रता कहती है, "परमेश्वर अच्छी तरह जानता है और वह कभी भी विलम्ब नहीं करेगा।"

एक विनम्र व्यक्ति धैर्य के साथ प्रतीक्षा करता है; वास्तव में उसके पास एक "ईश्वरीय भय" है जिसके द्वारा वह अपने शरीर के बल के द्वारा कार्य करता है। परन्तु एक घमण्डी व्यक्ति एक के बाद एक कार्य करने का प्रयत्न करता है परन्तु परिणाम यह होता है कि वह कुछ भी नहीं कर पाता।

लक्ष्य प्राप्त करने के लिए एक सीधी रेखा सर्वदा सबसे छोटी दूरी नहीं हुआ करती

ऐसा भी मार्ग है, जो मनुष्य को सीधा जान पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।

नीतिवचन 16:25

हमें यह सीखना चाहिए कि आत्मिक राज्य में कभी कभी एक सीधी रेखा सबसे छोटी दूरी, (जहाँ हम हैं और जहाँ हम जाना चाहते हैं) नहीं होती। हो सकता है यह छोटी दूरी विनाश की ओर ले जाती हो!

हमें परमेश्वर पर भरोसा रखना और धीरज रखना सीखना चाहिए चाहें हमें ऐसा क्यों न लगे कि वह हमें घुमा कर बड़े मार्ग से हमारे गन्तव्य स्थान तक ले जा रहा है।

इस संसार में दुःखी और असंतुष्ट मसीही बहुत हैं क्योंकि वह कुछ घटते हुए देखना चाहते हैं, वे परमेश्वर पर भरोसा नहीं करते कि वह अपने समय में ही कार्य को पूरा करता है, वे धीरज नहीं रखते।

जब आप परमेश्वर पर भरोसा रखने का प्रयत्न करते हैं, तब शैतान आपके मन पर निरन्तर आक्रमण कर कहता है, "तुम कुछ करो।" वह आप को शारीरिक उत्साह में चलाना चाहता है क्योंकि वह जानता है कि शरीर से कोई लाभ नहीं। (यूहन्ना 6:63; रोमियों 13:14)

जैसा हमने देखा कि व्यग्रता घमण्ड का एक चिन्ह है, और घमण्ड का प्रत्युत्तर केवल विनम्रता है।

दीन बनें और परमेश्वर पर भरोसा रखें

इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।

1 पतरस 5:6

इस संक्षिप्त वचन "स्वयं का निर्णय करते समय स्वयं को नीचा रखें" का अर्थ यह नहीं कि हमें अपने बारे में बुरा सोचना है। इसका सरल अर्थ यह है कि "यह न सोचें कि आप स्वयं अपनी सारी समस्याओं को सुलझा सकते हैं।"

घमण्ड के कारण सब चीज़ों को अपने हाथों में ले लेने के बदले हमें दीनता के साथ अपने आप को परमेश्वर के बलवन्त हाथों में सौंप देना चाहिए। उचित समय पर वह हमें उठाएगा और हमारी पदोन्नति करेगा।

जब हम परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं और शरीर के अनुसार नहीं चलते तब हम अपने अहं को मार देते हैं। हम अपने ढंग से जीने को और अपने

समय को मार देते हैं और परमेश्वर की इच्छा और उसके तरीके से जीने के लिए जीवित रहते हैं।

परमेश्वर हमसे जो भी करने के लिए कहता है उसका हमें सदैव पालन करना चाहिए, परन्तु हमारे भीतर शरीर के घमण्ड का दैवीय भय भी होना चाहिए। याद रखें: व्यग्रता की जड़ घमण्ड है। घमण्डी व्यक्ति कहता है, "कृपया कर मुझ से प्रतीक्षा न कराएँ; मैं हर एक चीज़ तुरन्त चाहता हूँ।"

जब आप व्याकुल और नैराश्य होने की परीक्षा में पड़ जाएँ, तब मैं आप से अनुग्रह करती हूँ कि आप यह कहें, "परमेश्वर मैं आपकी इच्छा आपके समय में चाहता हूँ। मैं आप से आगे नहीं जाना चाहता और न आप के पीछे रह जाना चाहता हूँ। हे पिता धीरज के साथ प्रतीक्षा करने में मेरी सहायता करें।"

अध्याय

21

"मेरा व्यवहार हो सकता है कि गलत हो, परन्तु इस में मेरा दोष नहीं।"

जंगल की मानसिकता # 6

“मेरा व्यवहार हो सकता है कि गलत हो, परन्तु इस में मेरा दोष नहीं।”

***अध्याय* 21**

जंगल की मानसिकता # 6

> *आदम ने कहा, “जिस स्त्री को तू ने मेरे संग रहने को दिया है उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैंने खाया।”*
>
> *...स्त्री ने कहा, “सर्प ने मुझे बहका दिया, तब मैंने खाया।”*
>
> उत्पत्ति 3:12–13

अपने कार्यों का उत्तरदायित्व न लेना, हर चीज़ जो गलत हो गयी हो उसका दोष दूसरों पर लगाना, जंगल की मानसिकता का यह ही एक मुख्य कारण है।

आदि से हम इस समस्या को देखते चले आ रहे हैं। अदन की वाटिका में जब उनका पाप से सामना हुआ, तब आदम और हव्वा एक दूसरे पर दोष लगाने लगे, परमेश्वर और शैतान पर, ताकि अपने कार्य का उत्तरदायित्व उन्हें न लेना पड़े।

सारा दोष आप का है।

अब्राम की पत्नी सारै के कोई सन्तान न थी! उसके हाजिरा नाम की एक मिस्त्री दासी थी।

सारै ने अब्राम से कहा, “देख, यहोवा ने तो मेरी कोख बन्द कर रखी है, इसलिये मैं तुझ से विनती करती हूँ कि तू मेरी दासी के पास जा; सम्भव है कि मेरा घर उसके द्वारा बस जाए।”

सारै की यह बात अब्राम ने मान ली। इसलिये जब अब्राम को कनान देश में रहते दस वर्ष बीत चुके तब उसकी स्त्री सारै ने अपनी मिस्त्री दासी हाजिरा को लेकर अपने पति अब्राम को दिया, कि वह उसकी पत्नी हो।

वह हाजिरा के पास गया, और वह गर्भवती हुई! जब उसने जाना कि वह गर्भवती है, तब वह अपनी स्वामिनी को तुच्छ दृष्टि से देखने लगी।

तब सारै ने अब्राम से कहा, "जो मुझ पर उपद्रव हुआ वह तेरे ही सिर पर हो! मैं ने तो अपनी दासी को तेरी पत्नी कर दिया; पर जब उसने जाना कि वह गर्भवती है, तब वह मुझे तुच्छ समझने लगी, इसलिये यहोवा मेरे और तेरे बीच में न्याय करे।"

अब्राम ने सारै से कहा, देख, तेरी दासी तेरे वश में है; जैसा तुझे भला लगे वैसा ही उसके साथ कर। तब सारै उसको दुःख देने लगी, और वह उसके सामने से भाग गई।

उत्पत्ति 16:1–6

आदम और हव्वा के बीच जो दृश्य था वही झगड़ा अब्राम और सारै के बीच था। उनकी सन्तान होने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा की प्रतीक्षा करते करते वे थक गए थे अतः वे शरीर के कार्यों की ओर फिर गए और "अपने तरीके से" उन्होंने कार्य किया। जब इसका परिणाम बुरा हुआ और समस्याओं ने उन्हें आ घेरा तब वे एक दूसरे पर दोष लगाने लगे।

भूतकाल में अपने ही घर में डेव और मेरे बीच ऐसे दृश्य बहुत बार मैंने देखे हैं। ऐसा प्रतीत होता था कि जीवन के वास्तविक मुद्दों से हम भाग रहे थे, उनका सामना करने से कतरा रहे थे।

मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं डेव के बदल जाने के लिए प्रार्थना करती थी। मैं अपनी बाइबल पढ़ा करती थी, और मुझे डेव में अधिक से अधिक अवगुण दिखाई देते जा रहे थे, और सोचती थी उसे बदलने की कितनी आवश्यकता है! जब मैं प्रार्थना कर रही थी, परमेश्वर ने मुझसे कहा, "जॉयस, डेव समस्या नहीं है, परन्तु तुम हो।"

मैं नष्ट और भ्रष्ट हो गयी थी। मैं तीन दिनों तक रोती रही क्योंकि परमेश्वर मुझे यह दिखा रहा था, कि एक ही घर में किसी का मेरे साथ जीवन बिताने का अर्थ क्या है, किस प्रकार हर चीज़ को मैंने अपने नियंत्रण में करने का प्रयत्न किया, किस प्रकार मैं असंतोष प्रगट करती थी और अपशब्द कहती थी, मुझे प्रसन्न करना कितना कठिन था, कितनी नकारात्मक थी मैं–इत्यादि। मेरे घमण्ड को एक बड़ा धक्का लगा था, परन्तु परमेश्वर में एक नए जन्म की प्राप्ति का यह एक आरम्भ था।

अधिकांश लोगों की भाँति, मैं भी हर एक चीज़ अथवा परिस्थिति का दोष जिस पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं था, दूसरों पर लगा देती थी। मैं सोचती थी

कि मेरा यह बुरा बर्ताव इसलिए था क्योंकि मेरे साथ दुरूपयोग किया गया था, परन्तु परमेश्वर ने मुझे बताया, "हो सकता है तुम्हारे इस बुरे व्यवहार का कारण दुरूपयोग ही हो, परन्तु इसे अपने बुरे व्यवहार का बहाना न बनने दो।"

शैतान हमारे मनों पर कठिन कार्य करता है—गढ़ बना देता है जिसके कारण हम सच्चाई का सामना करने में असमर्थ हो जाते हैं। सत्य हमें स्वतंत्र करेगा, और यह वह जानता है!

हमारे व्यवहार और हमारे विषय में सत्य का सामना करना भावनात्मक तरीके से कितना कष्टदायक होता है, मैं सोचती हूँ, इस से अधिक कष्टदायक और कोई चीज़ नहीं। क्योंकि यह कष्टदायक है इसलिए बहुत से लोग इससे दूर भागते हैं। दूसरे के बारे में सत्य का सामाना करना बहुत सरल है—परन्तु जब हमें अपने बारे में ही सत्य का सामाना करना होता है तब हमें यह अत्याधिक कठिन प्रतीत होता है।

यदि...

इसलिये वे परमेश्वर के विरूद्ध बात करने लगे, और मूसा से कहा, तुम लोग हम को मिस्त्र से जंगल में मरने के लिये क्यों ले आए हो? यहाँ न तो रोटी है, और न पानी, और हमारे प्राण इस निकम्मी रोटी से दुःखित हैं।

गिनती 21:5

आप को याद होगा कि इस्त्राएली अपनी सारी समस्याओं का दोष परमेश्वर और मूसा पर लगा देते थे। जंगल में इतना अधिक समय उन्हें क्यों लग गया, इस का वैयक्तिक दायित्व लेने से वे कतराते थे। परमेश्वर ने मुझे यह दिखाया कि यह एक मुख्य जंगल की मानसिकता थी, जिसके कारण वह जंगल में चालीस वर्षों तक भटकते रहे।

यही मेरा भी मुख्य कारण था कि मैं भी अपने जीवन में एक ही पहाड़ के चारों ओर वर्षों तक घूमती रही। मेरे बुरे व्यवहार के बहानों की सूची न समाप्त होने वाली है।

"बचपन में यदि मेरे साथ दुर्व्यवहार न हुआ होता तो मेरा स्वभाव बुरा नहीं होता।"

“यदि मेरे बच्चों ने मेरी सहायता और अधिक की होती तो मैं भी अच्छा व्यवहार करती।”

“यदि डेव शनिवार को गोल्फ खेलने नहीं जाया करते, तो मैं इतनी अकेली न होती।”

“यदि डेव मुझे और भी अधिक उपहार खरीद कर देते, तो मैं इतना नकारात्मक न होती।”

“यदि मुझे काम न करना पड़ता, मैं इतनी चिड़चिड़ी और थकती नहीं।” (अतः मैंने काम छोड़ दिया और फिर...)

“यदि मुझे घर से बाहर और अधिक जाने को मिलता, तो मैं इतनी निराश न होती।”

“यदि हमारे पास और अधिक धन होता...”

“यदि हमारे पास अपना घर होता...” (अतः हमने एक घर खरीद लिया, और फिर...)

“यदि हमारे पास भुगतान के लिए इतने अधिक बिल न आते...”

“यदि हमारे पड़ोसी अच्छे होते और हमारे मित्र दूसरे होते...”

यदि! यदि! यदि! यदि! यदि! यदि! यदि!

परन्तु...

फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “कनान देश जिसे मैं इस्त्राएलियों को देता हूँ उसका भेद लेने के लिये पुरूषों को भेज; वे उनके पितरों के प्रति गोत्र के एक एक प्रधान पुरूष हों।”

यहोवा से यह आज्ञा पाकर मूसा ने ऐसे पुरूषों को पारान जंगल से भेज दिया, जो सब के सब इस्त्राएलियों के प्रधान थे।

चालीस दिन के बाद वे उस देश का भेद लेकर लौट आए। और पारान जंगल के कादेश नामक स्थान में मूसा और हारून और इस्त्राएलियों की सारी मण्डली के पास पहुँचे; और उनको और सारी मण्डली को संदेशा दिया, और उस देश के फल उनको दिखाए।

उन्होंने मूसा से यह कहकर वर्णन किया, जिस देश में तू ने हम को भेजा था उसमें हम गए; उसमें सचमुच दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, और उसकी उपज में से यही है।

परन्तु उस देश के निवासी बलवान् हैं, और उसके नगर गढ़वाले हैं और बहुत बड़े हैं; और फिर हम ने वहाँ अनाकवंशियों को भी देखा।

गिनती 13:1–3, 25–28

यदि और *परन्तु* यह दोनों सबसे अधिक धोखे वाले शब्द हैं जिन्हें शैतान हमारे मनों में डाल देता है। वह बारह भेदिए जो प्रतिज्ञा वाले देश का भेद लेने भेजे गए थे जब लौट कर आए तो अपने साथ अंगूरों का गुच्छा ले कर आए जो इतना विशाल था कि दो लोगों को बांस पर लटका कर लाना पड़ा था, परन्तु मूसा और अन्य लोगों को उन्होंने जो वहाँ का विवरण दिया वह बिलकुल नकारात्मक था।

यह “परन्तु” ही था जिसने उनको पराजित कर दिया था! उन्हें अपनी दृष्टि मुख्य समस्या के बदले परमेश्वर पर ही रखनी चाहिए थी।

हमारी समस्याएँ जब हमें पराजित कर देती हैं, तो उसका एक कारण यह है कि हम उन्हें परमेश्वर से बड़ा समझने लगते हैं। सत्य का सामना करने में भी हमें जिस कठिनाई का सामना करना पड़ता है उसका भी यही कारण है। हमें निश्चय नहीं कि परमेश्वर हमें बदल सकता है, अतः हम जैसे भी हैं उसका सामना करने के बदले हम स्वयं से अपने को छिपा लेते हैं।

जब परमेश्वर मेरे साथ है तो स्वयं के विषय में सच्चाई का सामना करना मेरे लिए अब कठिन नहीं, क्योंकि मैं यह जानती हूँ कि वह मुझे बदल सकता है। मैंने उसे देखा है कि वह क्या कर सकता है, और मैं उस पर भरोसा करती हूँ। हांलाकि आरम्भ में उसके साथ साथ चलना मेरे लिए कठिन था। मैंने अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा किसी न किसी चीज़ से दूर भागते हुए बिताया था। मैंने अन्धकार में इतना अधिक समय बिताया था कि ज्योति में आना मेरे लिए सरल नहीं था।

भीतरी मनुष्यत्व में सच्चाई

हे परमेश्वर, अपनी करूणा के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर; अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे।

मुझे भलीभाँति धोकर मेरा अधर्म दूर कर, और मेरा पाप छुड़ाकर मुझे शुद्ध कर!

मैं तो अपने अपराधों को जानता हूँ, और मेरा पाप निरन्तर मेरी दृष्टि में रहता है।

मैं ने केवल तेरे ही विरूद्ध पाप किया, और जो तेरी दृष्टि में बुरा है, वही किया है, ताकि तू बोलने में धर्मी और न्याय करने में निष्कलंक ठहरे।

देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ, और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा।

देख, तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है; और मेरे मन ही में ज्ञान सिखाएगा।

भजन संहिता 51:1–6

भजन संहिता 51 में दाऊद राजा, परमेश्वर से करूणा और क्षमा की याचना कर रहा था, क्योंकि परमेश्वर उसके पाप का निर्णय कर रहा था जो उसने बतशेबा के साथ और उसके पति की हत्या कर के किया था।

विश्वास करें या न करें, दाऊद ने यह पाप इस भजन को लिखने से एक वर्ष पूर्व किया था, परन्तु उसने इसका सामना नहीं किया था, और न ही उसने स्वीकार किया था। वह सच्चाई का सामना नहीं कर रहा था, और जब तक वह इस सच्चाई को अस्वीकार करता रहा, वह वास्तव में पश्चाताप नहीं कर सका। और जब तक वह पश्चाताप न कर सका, परमेश्वर उसे क्षमा नहीं कर सका।

इस खण्ड का पद 6 एक शक्तिशाली वचन है। यह कहता है कि परमेश्वर हमारे "भीतरी मनुष्यत्व" में सच्चाई चाहता है। इसका अर्थ यह है कि यदि हम परमेश्वर की आशीषें पाना चाहते हैं, तब हमें अपने विषय में, अपने पापों के विषय में परमेश्वर के प्रति ईमानदार बनना होगा।

क्षमा से पहले पापों का अंगीकार करना है

यदि हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं, (अस्वीकार करना कि हम पापी हैं), तो अपने आप को धोखा देते है; और हम में सत्य (जो सुसमाचार बताता है) नहीं। (हमारे हृदयों में वास नहीं करता)

यदि हम (स्वतंत्र रूप से) अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है! (अपने स्वभाव और प्रतिज्ञाओं के प्रति सच्चा है)

यदि हम कहें कि हम ने पाप नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं है।

1 यूहन्ना 1:8–10

यदि हम सच्चे हृदय से पश्चाताप करें तो परमेश्वर हमें तुरन्त क्षमा करता है, परन्तु हम सच्चे हृदय से पश्चाताप नहीं कर सकते यदि जो कुछ भी हम ने किया है उसकी सच्चाई का सामना और उसे स्वीकार नहीं कर लेते।

यह स्वीकार करना कि हम ने कुछ गलत किया है, परन्तु फिर बहाने बनाना, यह सच्चाई का सामना करने का परमेश्वर का तरीका नहीं। प्राकृतिक रूप से हम अपने को और अपने कार्यों को सही ठहराना चाहते हैं, परन्तु बाइबल कहती है कि हमारा धर्मी ठहराया जाना केवल यीशु मसीह में है (रोमियो 3:20–24) आप और मैं पाप करने के बाद परमेश्वर द्वारा केवल यीशु के लहु से शुद्ध होते हैं–बहाने बनाने से नहीं।

मुझे याद है एक बार मेरी पडोसन ने मुझे फोन् किया और मुझ से कहने लगी कि बैंक बन्द होने से पहले मैं उसे बैंक तक ले जाऊँ क्योंकि उस की मोटरकार स्टार्ट नहीं हो रही थी। मैं अपने किसी कार्य में व्यस्त थी और उस कार्य को छोड़ना नहीं चाहती थी अतः मैंने उसे अपना रूक्ष और व्यग्र स्वभाव दिखाया। जैसे ही मैंने अपना फोन रखा, मैंने यह सोचा कि कितनी भयानक तरीके से मैंने उस से बात चीत की थी और अब मुझे फिर से उसे फ़ोन करना चाहिए और क्षमा माँगनी चाहिए और उसे बैंक तक ले जाना चाहिए। मेरे मन में बहुत से बहाने भरे हुए थे जो मुझे उसे देने थे कि क्यों मैंने उसके साथ इतना बुरा व्यवहार किया था: "मैं अस्वस्थ थी..." "मैं व्यस्त थी..." "मेरा दिन बहुत खराब बीत रहा था..."

परन्तु मैंने अपनी आत्मा की गहराईयों में यह अनुभव किया कि पवित्र आत्मा मुझसे कोई भी बहाना बनाने के लिए मना कर रहा है।

"केवल उस को फोन करो और बताओ कि तुम गलत थी"! उससे कहो "कृपा करके मुझे क्षमा कर दो और मैं तुम्हें बैंक तक ले जाने के लिए तैयार हूँ।"

मैं आप को बता सकती हूँ कि यह करना मेरे लिए बहुत कठिन था। मेरे शरीर को जैसे कोई रोग लगा गया था जो मेरी आत्मा में घूम रहा था और छुपने का स्थान ढूँढ रहा था। परन्तु सच्चाई से कोई छुप नहीं सकता, क्योंकि सच्चाई ज्योति है।

सच्चाई ज्योति है

आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन (मसीह) परमेश्वर था।

यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई।

उसमें जीवन था; और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था। ज्योति अन्धकार में चमकती है, और अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया।

यूहन्ना 1:1–5

अन्धकार के राज्य के विरूद्ध सबसे शक्तिशाली हथियार सच्चाई है। सच्चाई ज्योति है, और बाइबल कहती है कि अन्धकार ने कभी भी ज्योति पर विजय प्राप्त नहीं की है, और न कभी कर सकेगी।

शैतान चीज़ों को अन्धकार में छुपा कर रखना चाहता है, परन्तु पवित्र आत्मा उन्हें ज्योति में लाना चाहता है और उनका निर्णय करता है ताकि मैं और आप प्रामाणिकरूप से स्वतंत्र हो सकें।

यीशु ने कहा कि यह सच्चाई है जो हमें स्वतंत्र करती है। (यूहन्ना 8:32) इस सच्चाई को सच्चाई का आत्मा प्रकट करता है।

सत्य का आत्मा

मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते।

परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा परन्तु जो कुछ

सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।

यूहन्ना 16:12–13

यीशु अपने चेलों को सारी सच्चाई दिखा सकता था, परन्तु वह जानता था कि वे अभी इसके लिए तैयार नहीं थे। उसने उन्हें बताया कि उन्हें प्रतीक्षा करनी होगी जब तक पवित्र आत्मा स्वर्ग से उतर कर उनके साथ और उनमें रहने न आ जाए।

जब यीशु स्वर्ग चला गया था, उसने पवित्र आत्मा भेज दिया जो हमारे साथ कार्य करता है, हमें तैयार करता है, जिससे हमारे द्वारा परमेश्वर की महिमा प्रदर्शित होती हैं।

पवित्र आत्मा हमारे जीवन में किस प्रकार कार्य कर सकता है यदि हम सच्चाई का सामना नहीं करेंगे? वह "सत्य का आत्मा" कहलाता है। मेरे और आपके लिए उस की सेवकाई का मुख्य कार्य है कि वह हमें सच्चाई का सामना करने में हमारी सहायता करता है, सत्य के स्थान में हमें ले जाता है क्योंकि केवल सत्य ही हमें स्वतंत्र करेगा।

हो सकता है कि हमारे भूतकाल में कोई ऐसा व्यक्ति अथवा घटना अथवा कोई परिस्थिति ऐसी हो जो हमें चोट पहुँचाती हो जिसके कारण हमारा स्वभाव अथवा व्यवहार अनुचित हो, परन्तु इसको एक बहाना बना कर अपने साथ रहने न दें।

निश्चितरूप से मेरी व्यवहारिक समस्याएँ इसी कारण थीं क्योंकि अनेक वर्षों तक शाब्दिक रूप से, लैंगिकरूप से एवं भावनात्मकरूप से मेरा दुरूपयोग किया गया। मैं तब तक इस गलत व्यवहार में फँसी रही जब तक मैं इन दुरूपयोगों को गलत व्यवहार का एक बहाना बनाती रही। यह उसी प्रकार है जैसे हम अपने शत्रु को यह कह कर बचा लें, "मैं इस चीज़ से घृणा करता हूँ, परन्तु इसी कारण इसे मैंने अपना रखा है।"

आप हर एक बन्धुआई से अलौकिक स्वतंत्रता का अनुभव निश्चितरूप से कर सकते हैं। आप को जंगल में चालीस वर्षों तक भटकना नहीं होगा अथवा यदि आपने चालीस वर्ष या अधिक इसी प्रकार बिता दिए हों क्योंकि आप यह नहीं जानते थे कि "जंगल की मानसिकता" आपको वहाँ पर रखे हुए है, आज ही आपका निर्णय का दिन है।

परमेश्वर से कहिए कि वह आप को आपके बारे में सच्चाई दिखाना आरम्भ कर दे। जब वह ऐसा करता है, तो प्रतीक्षा करें! यह सरल नहीं होगा परन्तु याद रखें, उसने प्रतिज्ञा की है, "मैं तुम्हें न कभी छोड़ूँगा न त्यागूँगा" (इब्रानियों 13:5)

आप जंगल से बाहर आने वाले मार्ग पर हैं; प्रतिज्ञा के देश का आनन्द लें।

अध्याय
22

"मेरा जीवन बहुत दुःखी है; मुझे स्वयं पर दया आती है क्योंकि मेरा जीवन नष्ट भ्रष्ट है!"

जंगल की मानसिकता # 7

“मेरा जीवन बहुत दुःखी है; मुझे स्वयं पर दया आती है क्योंकि मेरा जीवन नष्ट भ्रष्ट है!”

जंगल की मानसिकता # 7

अध्याय 22

तब सारी मण्डली चिल्ला उठी; और रात भर वे लोग रोते ही रहे।

और सब इस्त्राएली मूसा और हारून पर बुड़बुड़ाने लगे; और सारी मण्डली उनसे कहने लगी, “भला होता कि हम मिस्त्र ही में मर जाते...”

गिनती 14:1–2

इस्त्राएलियों को अपने आप पर अत्याधिक दया आ रही थी। हर एक असुविधा अपने आप पर खेद जताने का एक बहाना बन जाती थी।

मुझे याद है जब परमेश्वर ने मुझ से कहा था क्योंकि मैं भी उस समय ऐसे ही “खेद समूह” में थी। उसने कहा था, “जॉयस, तुम खेदित या शक्तिशाली हो सकती हो, परन्तु दोनों एक साथ नहीं।”

यह एक ऐसा अध्याय है जिसे मैं शीघ्रता से समाप्त नहीं करना चाहती। इस बात को समझ लेना अति महत्वपूर्ण है *कि यह दोनों काम हम एक साथ नहीं कर सकते–खेद भर देने वाले शैतान को प्रसन्न करना और परमेश्वर की सामर्थ में चलना!*

एक दूसरे को शान्ति दो और एक दूसरे की उन्नति का कारण बनो

इस कारण एक दूसरे को शान्ति दो और एक दूसरे की उन्नति का कारण बनो, जैसा कि तुम करते भी हो।

1 थिस्सलुनीकियों 5:11

खेद छोड़ देना मेरे लिए कठिन था; मैने इसका उपयोग कई वर्षों तक किया था जब मुझे कोई पीड़ा होती थी। इससे मुझे संतोष मिलता था।

जिस क्षण कोई हमें चोट पहुँचाता है उसी क्षण हमें निराशा का अनुभव होता है, शैतान अपने एक दूत को नियुक्त कर देता है और वह आकर हमारे कानों में फुसफुसा कर यह झूठ कहता है कि कितनी निर्दयता और अन्याय के साथ आप से व्यवहार किया गया है।

ऐसे समय में आपके मन में जो विचार दौड़ने लगते हैं, आपको उन्हें सुनना है, और आप तुरन्त ही यह जान जाएँगे कि शैतान किस प्रकार हमारी लाचारी का प्रयोग कर हमें बन्धुआ बना लेता है।

हांलाकि बाइबल हमें इस बात की स्वतंत्रता नहीं देती कि हम अपने आप से खेदित हो जाएँ। अपितु हमें परमेश्वर में एक दूसरे को उत्साहित करना है और एक दूसरे की उन्नति का कारण बनना है।

दया का एक सच्चा उपहार है, इस ईश्वरीय दया का हम उन लोगों के प्रति उपयोग करते हैं जो हमें चोट पहुँचाते है, अपना सम्पूर्ण जीवन हम उनके कष्टों को दूर करने में बिता देते हैं। परन्तु स्वयं पर दया दिखाना विकृति है क्योंकि परमेश्वर ने हमें यह दया इसलिए दी है कि इसका प्रयोग हम दूसरों पर करें, न कि स्वयं पर।

प्रेम के साथ भी ऐसा ही है। रोमियों 5:5 कहता है कि परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में पवित्र आत्मा द्वारा भर दिया गया है। उसने ऐसा इसलिए किया है ताकि हम यह जान जाएँ कि परमेश्वर हम से कितना अधिक प्रेम करता है और उसी प्रकार हम भी दूसरों से प्रेम कर सकें।

जो प्रेम परमेश्वर ने हमें दूसरों के साथ बाँटने के लिए दिया है, यदि उस प्रेम को हम अपने तक ही रखें तो यह स्वार्थ और आत्म केन्द्रित बन जाता है, जो वास्तव में हमें नष्ट कर देता है। स्वयं पर दया दिखाना मूर्ति पूजा है–स्वयं की ओर मुड़ जाना, अपने आप पर और अपनी भावनाओं पर एकाग्रचित्त हो जाना। इससे हम केवल स्वयं के प्रति, अपनी आवश्यकताओं और चिन्ताओं के प्रति जागरूक हो जाते हैं–और यह निश्चय ही संकुचित विचार रखते हुए जीवन का एक ढंग है।

दूसरों की चिन्ता करें

हर एक अपने ही हित की नहीं, वरन् दूसरों के हित की भी चिन्ता करे।

फिलिप्पियों 2:4

अभी कुछ ही दिनों पहले हमारे व्याख्यान का कार्यक्रम बिना किसी पूर्व सूचना के रद्द कर दिया गया था। मैं इस कार्यक्रम की बड़ी उत्सुकतावश प्रतीक्षा कर रही थी, और आरम्भ में तो मैं थोड़ी निराश हो गयी थी। एक समय वह था जब इस प्रकार की घटनाओं से मैं खेदित और दोष लगाने वाली और आलोचक बन जाती थी और हर प्रकार के नकारात्मक विचार और कार्य मुझसे हो जाते थे। तब से मैंने यह सीख लिया कि यदि ऐसी स्थिति आती है तो शान्त रहूँ; गलत बात कहने से अच्छा है कि कुछ न कहूँ।

जब मैं शान्त बैठ गयी तो परमेश्वर ने मुझे बताया कि इस स्थिति को दूसरे लोगों की दृष्टि से देखूँ जो इससे जुड़े हुए हैं। जिस भवन में इस सभा का आयोजन करना था उस भवन को पाने में वे असफल हो गए थे और परमेश्वर ने मुझे यह दिखाया कि वे सब इससे कितने निराश हो गए थे। वे भी बेताबी से इस कार्यक्रम की प्रतीक्षा कर रहे थे और अब वे इस का आयोजन नहीं कर पाए।

स्वयं पर दया दिखा कर ऐसी स्थिति से बाहर हो जाना कितना सरल है यदि हम केवल अपनी दृष्टि से नहीं परन्तु दूसरे की दृष्टि से जब देखते हैं। यदि हम केवल अपने विषय में ही सोचते हैं, तो इससे स्वयं पर दया दिखाने का समर्थन मिलता है।

दूसरों की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए हम अथक प्रयत्न करते हैं। हाँ स्वयं पर दया एक मुख्य फन्दा है, और हमें जंगल में रखने का शैतान का सबसे प्रिय हथियार है। यदि हम सावधान नहीं तो हम निःसन्देह इसके नशे में फंस सकते हैं।

एक लत जैसे स्वतः प्रतिक्रिया प्रोत्साहन के रूप जैसा कुछ किया है एक सीखा व्यवहार तरीका जो अभ्यस्त हो गया है।

स्वयं पर दया दिखाने में आप अपना कितना समय नष्ट कर देते हैं? निराशा का सामना आप कैसे करते हैं?

जब हम निराशा का अनुभव करते हैं तो एक मसीही होने के कारण हमारे पास यह विशेषाधिकार है कि हमें फिर आशा मिल सकती है। परमेश्वर के साथ सैदव एक नयी शुरूआत है। हांलाकि स्वयं पर दया दिखा कर हम भूतकाल ही में फंसे रहते हैं।

पुरानी बातें जानें दें और परमेश्वर को आने दें!

अब बीती हुई घटनाओं का स्मरण मत करो! न प्राचीनकाल की बातों पर मन लगाओ।

देखो, मैं एक नई बात करता हूँ; वह अभी प्रगट होगी, क्या तुम उससे अनजान रहोगे? मैं जंगल में एक मार्ग बनाऊँगा और निर्जल देश में नदियाँ बहाऊँगा।

यशायाह 43:18–19

अपने आप पर खेदित हो कर मैंने अपने जीवन के बहुत से वर्ष नष्ट कर दिए। मैं भी उसी नशे से ग्रस्त थी। हर प्रकार की निराशा के प्रति स्वयं पर दया दिखाना, ही मेरा प्रत्युत्तर होता था। शैतान तुरन्त मेरे मन में गलत विचार भर देता था, और मैं यह नहीं जान पाती थी कि "मैं क्या सोच रही थी" मैं वह हर एक बात सोचने लगती थी जो भी मेरे मस्तिष्क में आ जाती थी। जितना अधिक मैं सोचती थी, उतना ही अधिक दयनीय मैं हो जाती थी।

हमारे विवाह के प्रारम्भिक वर्षों के बारे में मै प्रायः कहानियाँ सुनाया करती हूँ। फुटबाल के मौसम में प्रत्येक रविवार की दोपहर में डेव टेलीविज़न पर खेल देखना चाहता था। यदि फुटबाल मौसम नहीं होता था तो कोई दूसरा "बाल मौसम" देखा करता था। डेव को इसमें बहुत आनन्द आता था, और मुझे बिलकुल भी आनन्द नहीं आता था। उसे हर वह खेल जिसमें उछलती हुई बाल दिखे, अच्छा लगता था, और इतनी तन्म्यता से देखता था, कि उसे पता ही नहीं चलता था कि वहाँ मैं भी हूँ।

एक बार मैं ठीक उसके सामने खड़ी हो गयी और स्पष्ट रूप से मैंने कहा, "डेव, आज मेरी तबियत खराब है, मुझे प्रतीत हो रहा है कि मैं मर जाऊँगी।"

टेलीविज़न स्क्रीन पर से बिना अपनी आँखें हटाए उसने कहा, "ओह, यह तो बहुत अच्छा है, प्रिय।"

बहुत से रविवार मैंने क्रोध और दयनीय अवस्था में बिताए। जब भी मैं डेव पर क्रोधित होती थी मैं घर की सफाई करना आरम्भ कर देती थी। अब मैंने जाना कि मैं यह बताने का प्रयत्न किया करती थी, कि मैं तो कितनी दुःखी हूँ और वह आनन्दित है। मैं चाहती थी कि वह यह महसूस करे कि वह

अपराधी है। मैं तूफान की तरह घर में इधर उधर घन्टों दौड़ती रहती थी, द्वार और ड्रोअर को तेज़ी के साथ खोलती और बन्द करती थी, वैक्यूम स्वीपर हाथ में लेकर उसी कमरे में पहुँच जाती थी, जहाँ वह बैठा रहता था और शोर कर के इस बात का प्रदर्शन करती थी कि मैं कितना अधिक कार्य कर रही हूँ।

निःसन्देह मैं उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहती थी, परन्तु वह मेरी ओर देखता तक न था। मैं निराश हो जाती थी, घर के पीछे जा कर बाथरूम के फ़र्श पर बैठ कर रोने लगती थी। जितना अधिक मैं रोती थी उतनी ही अधिक मेरी दशा दयनीय हो जाती थी। कुछ वर्षों के बाद परमेश्वर ने मुझ पर यह प्रदर्शित किया कि कोई महिला बाथरूम में जा कर क्यों रोती है। उसने कहा, क्योंकि वहाँ एक बड़ा सा दर्पण जो होता है, बहुत देर तक रोने के बाद वह खड़ी हो कर स्वयं को देख कर यह जान जाती है, कि वह कितनी दयनीय दिख रही है।

कभी कभी मैं इतनी भयानक दिखने लगती थी कि जब मैं दर्पण में स्वयं को देखती थी तो फिर रोना आरम्भ कर देती थी। अन्त में दुःखी हो कर मैं धीरे धीरे फिर उसी कमरे में जाती थी जहाँ डेव बैठा होता था। देर तक मुझे निहारने के बाद वह मुझ से कहता था, कि यदि मैं रसोईघर में जा रही हूँ तो कृपया कर उसके लिए बर्फ वाली चाय बना कर ला दूँ।

मुख्य बात यह है कि इससे समस्या का समाधान नहीं हुआ। भावनात्मक और शारीरिक रूप से मैं बिलकुल थक चुकी थी। सारे दिन गलत भावनाओं का अनुभव करने के कारण मुझे लगने लगता था कि मैं बीमार हो गयी हूँ।

परमेश्वर आपको आपके हाथ द्वारा नहीं परन्तु अपने हाथ द्वारा छुड़ाएगा। केवल परमेश्वर ही लोगों को बदल सकता है! परमेश्वर को छोड़ कर कोई भी अन्य व्यक्ति डेव को मैच देखने से निरूत्साहित न कर सका। जब मैंने परमेश्वर पर भरोसा रखना सीख लिया और अपनी तरह से कार्य न होने पर जब मेरी दशा दयनीय हो जाती थी उस पर जब मैंने काबू पा लिया तब डेव भी हर एक खेल के कार्यक्रमों को देखने में और अधिक संतुलित हो गया।

अभी भी उसे उन खेलों में आनन्द आता है, परन्तु अब मुझे बुरा नहीं लगता। अब मैं भी उस समय अनंदपुर्वक कार्य करती हूँ। यदि मैं किसी कार्य में डेव की सहायता चाहती हूँ, तो मैं मीठे शब्दों का प्रयोग करती हूँ, और बहुत बार वह

अपनी योजनाओं को बदल देता है। कई बार ऐसा भी समय आता है जब कार्य मेरी इच्छानुसार नहीं होते। जैसे ही मेरी भावनाएँ उठना आरम्भ करती हैं, मैं प्रार्थना करती हूँ, "ओह परमेश्वर इस परीक्षा में सफल हो जाने में मेरी सहायता कर। मैं इस पहाड़ के चारों ओर अब एक बार भी चक्कर लगाना नहीं चाहती।"

अध्याय
23

"मैं परमेश्वर की आशीषों के पात्र नहीं, क्योंकि मैं लायक नहीं हूँ।"

जंगल की मानसिकता # 8

“मैं परमेश्वर की आशीषों के पात्र नहीं, क्योंकि मैं लायक नहीं हूँ।”

अध्याय 23

जंगल की मानसिकता # 8

> *तब यहोवा ने यहोशू से कहा, “तुम्हारी नामधराई जो मिस्त्रियों में हुई है उसे मैंने आज दूर की है।” इस कारण उस स्थान का नाम आज के दिन तक गिलगाल (लुढ़कना) पड़ा है।*
>
> यहोशू 5:9

यहोशू की अगुवाई में जब इस्त्राएली यरदन नदी पार कर के प्रतिज्ञा के देश में पहुँचने वाले थे तब इससे पहले कि वह वहाँ के पहले शहर यरीहो पर विजय प्राप्त करें परमेश्वर कुछ करना चाहता था।

परमेश्वर ने आज्ञा दी कि सारे इस्त्राएली पुरूषों का खतना किया जाए, क्योंकि इन चालीस वर्षों में यह नहीं किया गया था। जब यह हो गया तो परमेश्वर ने यहोशू से कहा कि उसने मिस्र के तिरस्कार को अपने लोगों के मध्य से “लुढ़का” दिया है।

अध्याय 6 में सारा वृतान्त दिया गया है कि किस प्रकार परमेश्वर की अगुवाई में इस्त्राएल की सन्तान ने यरीहो पर कब्ज़ा किया था। परन्तु सबसे पहले उस तिरस्कार को उनके ऊपर से क्यों हटाना पड़ा? यह तिरस्कार क्या है?

तिरस्कार का अर्थ

तिरस्कार शब्द का अर्थ है “दोष लगाना.... निन्दा करना; लज्जा।”[1] जब परमेश्वर ने कहा कि वह इस्त्राएलियों के उस तिरस्कार को जो मिस्त्र में उनके साथ हुआ था, लुढ़का देगा, वह एक बात बताना चाहता था। मिस्त्र पूरे संसार को दर्शाता है। कुछ वर्ष इस संसार में रहने के बाद और सांसारिक बन जाने के बाद, हम सब को इस तिरस्कार को लुढ़का देने की आवश्यकता है।

जो जो कार्य मैंने किए थे, अथवा मेरे प्रति किए गए थे उसी कारण मेरा स्वभाव लज्जा पर आधारित था। मेरे साथ जो भी हुआ था उसकी दोषी मैं

स्वयं हूँ (जबकि इन में से बहुत कुछ मेरी बाल्यावस्था में हुआ था, और इनको रोकने के लिए मैं कुछ नहीं कर सकती थी)

हमने पहले देखा था कि अनुग्रह परमेश्वर की सामर्थ है, जो हमें उपहार के रूप में मुफ़्त उससे प्राप्त होती है, और उसकी सहायता से हम वह सब काम सरलता से करते हैं, जो हम स्वयं नहीं कर सकते। परमेश्वर हमें अनुग्रह देना चाहता है और शैतान हमें अपमान देना चाहता है, जो तिरस्कार का दूसरा शब्द है।

अपमान ने मुझ से कहा कि मैं अच्छी नहीं थी—परमेश्वर के प्रेम और उसकी सहायता के योग्य नहीं थी। लज्जा ने मेरे भीतरी मनुष्यत्व को दूषित कर दिया था। जो कुछ मेरे साथ हुआ था न केवल मैं उस से लज्जित थी परन्तु मैं स्वयं से भी लज्जित थी। हृदय की गहराइयों से मैं स्वयं को पसन्द नहीं करती थी।

परमेश्वर द्वारा हमारे उस तिरस्कार को लुढ़का देने का अर्थ है कि हम में से हर एक को अपने भूतकाल के पापों से क्षमा प्राप्त करने की आवश्यकता है जो परमेश्वर हमें देने के लिए इच्छुक है।

आप को इस सत्य को समझ लेना चाहिए कि आप परमेश्वर की आशीषों के योग्य कभी नहीं हो सकते। आप केवल दीन बन कर उनको ग्रहण कर सकते हैं, उनकी प्रशंसा कर सकते हैं, और आश्चर्य कर सकते हैं कि वह कितना भला है और वह आपको कितना प्रेम करता है।

अपने से घृणा करना, अपने को अस्वीकारना, परमेश्वर की क्षमा को ग्रहण न करना, यीशु के लहू द्वारा धार्मिकता को न समझना, और ऐसी ही अन्य समस्याएँ आपको निश्चय ही जंगल में भटकाती हैं। यीशु के द्वारा परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध बना कर रखने से ही आप का मन नया हो सकता है, न कि आप के कामों से।

इस सेवकाई में आने के कई वर्षों बाद मैं पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हूँ कि 85 प्रतिशत हमारी समस्याएँ इस कारण आती हैं कि हम अपने बारे में किस तरीके से सोचते और अनुभव करते हैं। कोई भी व्यक्ति जिसे आप जानते हों यदि वह जयवन्त जीवन जी रहा है तो वह धार्मिकता में भी चल रहा होगा।

मैं जानती हूँ कि मैं परमेश्वर की आशीषों के योग्य नहीं, परन्तु फिर भी मैं उन्हें प्राप्त करती हूँ क्योंकि मैं मसीह की संगी वारिस हूँ। (रोमियों 8:17) उसने उन्हें कमाया है, और उस पर विश्वास कर के मैंने उन्हें प्राप्त किया है।

वारिस अथवा मज़दूर?

इसलिये तू अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है, और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ।

गलतियों 4:7

क्या आप पुत्र हैं या दास—वारिस हैं या बंधुआ मज़दूर? वारिस वह होता है जो बिना किसी योग्यता के कुछ प्राप्त करता है, जैसे मृत्यु लेख द्वारा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को सम्पत्ति प्राप्त होना। बाइबल के अनुसार एक बंधुआदास अथवा मज़दूर वह होता है जो व्यवस्था का अनुसरण करने के प्रयत्न में थक जाता है। यह शब्द कठिन परिश्रम और कष्टों को बताता है।

परमेश्वर जो मुफ़्त में मुझे अनुग्रह देता है उसके योग्य बनने के लिए मैं मज़दूर की तरह कई वर्षों तक जंगल में भटकती रही। मैं अपने को भला बनाने का प्रयत्न करती रही ताकि मैं उस अनुग्रह को प्राप्त करने के योग्य बन सकूँ मेरी मनोवृत्ति गलत थी।

प्रथम, मैं सोचती थी कि हर एक चीज़ कमाई जा सकती है और उसके योग्य बना जा सकता है: "कोई भी आप के लिए मुफ़्त में कुछ नहीं करता है।" कई वर्षों तक मुझे यह नियम सिखाया गया था। जब मैं बड़ी हो रही थी तो यह वाक्य मैंने कई बार सुना था। मुझे बताया गया था कि यदिकोई ऐसा व्यवहार करे जैसे कि वह मेरे लिए कुछ करना चाहता है तो वह झूठ बोल रहा है और अन्त में मेरा लाभ उठाना चाहता है।

सांसारिक अनुभव हमें यह सिखाता है, कि हर चीज़ प्राप्त करने के लिए हमें उसके योग्य बनना होगा। यदि हमें मित्र चाहिएँ तो उन्हें हमें हर समय प्रसन्न रखना होगा अन्यथा वे हमें अस्वीकार कर देंगे। यदि हम पदोन्नति चाहते हैं, हमें सही लोगों को जानना होगा, उनके साथ विशेष प्रकार का व्यवहार करना होगा और एक दिन हमें आगे बढ़ने का अवसर मिल जाएगा। इस संसार को छोड़ने का जब समय हमारा आ जाता है, तब तक हमारे ऊपर इस तिरस्कार का बहुत अधिक बोझ हो जाता है जिसे लुढ़काना अति आवश्यक है।

आप स्वयं को किस प्रकार देखते हैं?

फिर हम ने वहाँ नपीलों (या दैत्य) को, अर्थात् नपीली जातिवाले अनाकवंशियों को देखा; और हम अपनी दृष्टि में उनके सामने टिड्डे के समान दिखाई पड़ते थे, और ऐसे ही उनकी दृष्टि में मालूम पड़ते थे।

गिनती 13:33

इस्त्राएलियों के ऊपर यह तिरस्कार था। इस पद में हम उस सत्य को देखते हैं, जो अपने आप के विषय में उनके नकारात्मक विचार थे। बारह में से दस भेदिये जिन्हें प्रतिज्ञा के देश में भेद लाने के लिए भेजा गया था, इससे पहले कि सारे इस्त्राएली यरदन नदी पार कर के उस देश में पहुँचे, वापस आ कर कहते हैं, कि उस देश में दैत्याकार लोगों का निवास है और उन की दृष्टि में हम टिड्डे के समान हैं और अपनी दृष्टि में भी।

इससे स्पष्टरूप से हमें पता चलता है कि उनके विचार अपने बारे में क्या थे।

कृपया कर यह जान लें कि शैतान इसी प्रकार के नकारात्मक विचार जो आप अपने बारे में सोचते हैं आपके मन में (यदि आप उसको अनुमति देते हैं) भर देता है। आपके मन में गढ़ बनाना उसने बहुत पहले से आरम्भ कर दिया था, आपके बारे में नकारात्मक चीज़ें और दूसरे लोग जो आपके बारे में सोचते हैं, यह सारे विचार वह आपके मन में भर देता है। वह सदैव ऐसी स्थिति उत्पन्न कर देता है, जिसमें आप ग्लानि का अनुभव करने लगते हैं, ताकि वह इस पीड़ा को आपके सम्मुख उस समय ला सके जब आप प्रगति करने का प्रयत्न कर रहे हों।

असफल और अस्वीकार हो जाने का भय बहुत से लोगों को जंगल में भटकाता रहता है। इस्त्राएली बहुत वर्षों तक मिस्त्र में जो दास बन कर रहे थे और कठोर निर्दयी व्यवहार जो उन के साथ हुआ था यही वह तिरस्कार था जो उन के ऊपर था। रोचक बात यह है कि मूसा के साथ जो पीढ़ी मिस्त्र से बाहर आयी थी, उनमें से कोई भी प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश न कर सका। जिन्होंने प्रवेश किया वे उनकी सन्तान थे। फिर भी परमेश्वर ने उनसे कहा कि उसे उनके ऊपर से वह तिरस्कार लुढ़काना है।

उनमें से अधिकांश का जन्म जंगल ही में हुआ था जब उनके माता पिता

ने मिस्त्र छोड़ दिया था। जब वे मिस्त्र में रहे ही नहीं तो मिस्त्र का तिरस्कार उनके ऊपर किस प्रकार आ गया?

जो चीज़ें आपके माता पिता की हैं वह आपको मिल सकती हैं। आचरण, विचार और व्यवहार आपको पैतृक परम्परा से प्राप्त हो सकता है। आपके माता पिता की गलत मनोवृत्ति आपकी मनोवृत्ति बन सकती है। किसी विशेष विषय पर सोचने का ढंग आपको पैतृक परम्परा से मिल सकता है, जो आपको मालूम ही नहीं होगा कि आप इस प्रकार क्यों सोचते हैं।

माता पिता जिनकी धारणा स्वयं के प्रति अच्छी नहीं, जो अपने आप को हर बात में अयोग्य समझते हों और "मैं परमेश्वर की आशीषों के योग्य नहीं" इस प्रकार की मनोवृत्ति रखते हों तो निश्चय ही यह मनोवृत्ति बच्चों तक पहुँच जाएगी।

आपके मन में आपके विषय में क्या चल रहा है इसके प्रति सावधान होने की आपको अति आवश्यकता है। आपकी असफलताओं के लिए परमेश्वर अपनी दया देने का इच्छुक है, यदि आप इसे ग्रहण करने के इच्छुक हों। वह उसको प्रतिफल नहीं देता जो श्रेष्ठ हो या उसमें कोई कमी न हो अथवा कभी कोई गलती न करता हो, परन्तु जो उस पर विश्वास करते हैं और उस पर भरोसा रखते हैं उन्हें वह ईनाम देता है।

परमेश्वर पर विश्वास रखने से वह प्रसन्न होता है

और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है, और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।

इब्रानियों 11:6

कृपया ध्यान दें कि बिना विश्वास के आप परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते; चाहें आपने कितने भी भले कार्य उसका अनुग्रह पाने के लिए किए हों, इससे वह प्रसन्न नहीं हो सकता।

हम जो कुछ भी परमेश्वर के लिए करते हैं वह इसलिए नहीं कि हम उससे कुछ पाने का प्रयत्न कर रहे हैं, परन्तु इसलिए कि हम उससे प्रेम करते हैं।

यह सामर्थी वचन कहता है, कि परमेश्वर उनको प्रतिफल देता है जो परिश्रम के साथ उसको खोजते हैं। मैं अति प्रसन्न हुई जब मैंने पूर्णतया इसे देख

लिया। मैं जानती हूँ कि भूतकाल में मैंने अनेक त्रुटियाँ की हैं; परन्तु मैं यह भी जानती हूँ कि मैंने अपने सम्पूर्ण हृदय से परमेश्वर को परिश्रम के साथ खोजा है। इसका अर्थ है कि मैं उस प्रतिफल के योग्य हूँ। बहुत वर्षों पहले मैंने यह निर्णय ले लिया था कि जो भी आशीष परमेश्वर मुझे देना चाहता है उसे मैं ग्रहण कर लिया करूँगी।

परमेश्वर इस्त्राएलियों को प्रतिज्ञा के देश में ले जाना चाहता था, और उनको आशीष देना चाहता था, जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी, परन्तु सर्वप्रथम उसे उन लोगों के ऊपर से वह तिरस्कार लुढ़काना था। वे उसको उचित रूप से ग्रहण नहीं कर सकते थे जब तक वे लज्जा, दोषी भावना और अपमान के बोझ से दबे हुए थे।

निर्दोष

जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों।

इफिसियों 1:4

यह एक अद्‌भुत पद है! इसमें परमेश्वर हमें बताता है, कि हम उसके हैं और वह हमारे लिए क्या चाहता है—कि हम यह जानें कि हम विशेष, मूल्यवान और प्रेमी हैं, और हमें पवित्र, निर्दोष होना चाहिए।

पवित्र जीवन बिताने के लिए हमें वह सब करना चाहिए जो हम कर सकते हैं। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि जब हम त्रुटियाँ करते हैं तो हमें क्षमा मिल सकती है, और फिर से हम परमेश्वर में पवित्र और निर्दोष बन सकते हैं।

बिना दोष लगाए या बिना उलाहना दिए

पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से माँगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है, और उसको दी जाएगी।

याकूब 1:5

यह एक दूसरा महत्वपूर्ण पद है जो हमें सिखाता है कि बिना किसी उलाहना के हम परमेश्वर से बुद्धि प्राप्त कर सकते हैं।

याकूब उन लोगों से बात कर रहा था जो कष्टों और परीक्षाओं में घिरे हुए थे और अब वह उन्हें बता रहा था कि ऐसी दशा में यदि वे बुद्धि चाहते हैं तो उन्हें परमेश्वर से माँगनी होगी। वह उन्हें निश्चय दिलाता है कि वह बिना दोष लगाए उनकी सहायता अवश्य करेगा।

आप परमेश्वर की सहायता के बिना इस जंगल से कभी नहीं निकल सकते। परन्तु यदि आप का अपने बारे में नकारात्मक स्वभाव है, तब परमेश्वर यदि आप की सहायता करता भी है, फिर आप उस सहायता को ग्रहण नहीं कर पाएँगे।

यदि आप एक विजयी, सामर्थी और सकारात्मक जीवन की इच्छा रखते हैं तब आप अपने बारे में नकारात्मक नहीं हो सकते। केवल यह न देखें कि आप को कितनी दूर जाना है, परन्तु यह देखें कि आप कितनी दूर आ गए हैं। अपनी प्रगति पर विचार करें और फिलिप्पियों 1:6 याद रखें... मुझे इस बात का भरोसा है, कि जिस ने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा।

अपने बारे में सकारात्मक ढंग से सोचें और बोलें।

अध्याय

24

“जब हर एक व्यक्ति मुझसे बेहतर दशा में है तो मै क्यों न जलन और ईर्ष्या रखूँ?”

जंगल की मानसिकता # 9

"जब हर एक व्यक्ति मुझसे बेहतर दशा में है तो मै क्यों न जलन और ईर्ष्या रखूँ?"

जंगल की मानसिकता # 9

अध्याय
24

उसे (यूहन्ना) देखकर पतरस ने यीशु से कहा; "हे प्रभु, इस का क्या हाल होगा?"

यीशु ने उससे कहा, "यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक ठहरा (जीवित) रहे, तो तुझे इससे क्या? तू मेरे पीछे हो ले।"

यूहन्ना 21:21-22

यूहन्ना 21 में यीशु पतरस से बातचीत कर रहा है और कह रहा है कि यदि पतरस यीशु की सेवा और उसकी महिमा करना चाहता है, तो उसे कठिनाइयों का सामना करना होगा। जब यीशु यह कह चुका तो तुरन्त पतरस ने मुड़ कर यूहन्ना को देखा और यीशु से कहा, कि उसके प्रति यीशु की क्या इच्छा है। पतरस यह बात निश्चित रूप से जानना चाहता था कि, यदि उसे कठिन समय का सामना करना होगा तो यूहन्ना को भी करना होगा।

इसके उत्तर में यीशु ने नम्रता के साथ पतरस से कहा कि वह केवल अपने काम से मतलब रखे।

अपना मन केवल दूसरों के बारे में लगाने से हम जंगल में ही भटकते रहेंगे। जलन, ईर्ष्या और मानसिक रूप से अपने आपको और अपनी परिस्थितियों को दूसरों से तुलना करना, एक जंगल की मानसिकता है।

ईर्ष्या और जलन से सावधान रहें

शान्त मन, तन का जीवन है, परन्तु मन के जलने से हड्डियाँ भी जल जाती हैं।

नीतिवचन 14:30

ईर्ष्या से एक व्यक्ति का स्वभाव दुष्ट और निर्दयी हो जाता है, और कभी कभी तो जानवर जैसा हो जाता है। ईर्ष्या से ही यूसुफ के भाइयों ने उसे दास

के रूप में बेंच दिया था। वे उस से घृणा करते थे क्योंकि उनका पिता उससे अत्याधिक प्रेम करता था।

यदि आपके परिवार में कोई ऐसा व्यक्ति हो जिस पर आप से अधिक कृपा की जाती हो तो आप उससे घृणा न करें। परमेश्वर पर भरोसा रखें। वहीं करें जो वह आप से करने के लिए कहता हो, कृपा पाने के लिए उस पर विश्वास करें—और अन्त में आप यूसुफ की भाँति परम आशीष पाएँगे।

पुराने और नये नियम की वाईन की डिक्शनेरी, ग्रीक का शब्द जिसका अनुवाद एन्वी किया गया है, उसकी व्याख्या इस प्रकार करती है, "दूसरों की उन्नति देख कर अप्रसन्नता की भावना उत्पन्न होना"[1] "जैलेसी" शब्द को वेब्सटर का शब्दकोष कहता है "जलन, भय और कटुता की भावना"[2] इस व्याख्या को मैं इस प्रकार कहती हूँ कि जो आप के पास है उस के खो जाने का भय कि, कहीं वह दूसरों के पास न चला जाए; दूसरों की सफलता देखकर क्रोधित होना।

तुलना और स्पर्धा न करें

उनमें यह वाद–विवाद भी हुआ कि उनमें से कौन बड़ा समझा जाता है?

उसने उनसे कहा, अन्यजातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं; और जो उन पर अधिकार रखते हैं, वे उपकारक कहलाते हैं।

परन्तु तुम ऐसे न होना; वरन् जो तुम में बड़ा है, वह छोटे के समान और जो प्रधान है, वह सेवक के समान बने।

लूका 22:24—26

मेरे आरम्भिक जीवन में मेरे अन्दर भी ईर्ष्या, जलन और तुलना करने की आदत थी। यह असुरक्षा का एक सामान्य लक्षण है। यदि हम अपने अद्वितीय वैयक्तिक महत्व के बारे में असुरक्षित महसूस करते हैं, तब हम अपने आप को दूसरों के साथ तुलना करने लगते हैं जिन्हें हम सफल समझते हैं।

यह सीखना है कि मुझे परमेश्वर ने वैयक्तिक रूप से बनाया था (परमेश्वर के पास मेरे जीवन के लिए एक विशेष व्यक्तिगत योजना है) और यही वह मूल्यवान स्वतंत्रता है जो परमेश्वर ने मुझे प्रदान की है। मुझे अपने आप की (या मेरी सेवकाई) किसी अन्य से तुलना करने की आवश्यकता नहीं।

जब मैं यीशु के चेलों को देखती हूँ, तो मैं जान जाती हूँ, कि उन्होंने भी अपने जीवन में उन चीज़ों के लिए बहुत संघर्ष किया था जिन चीज़ों के लिए मैं संघर्ष करती हूँ, और तब मैं सदैव उत्साहित हो जाती हूँ कि मेरे लिए भी एक आशा है। लूका 22 में हम यह पाते हैं कि चेले आपस में यह वाद विवाद कर रहे थे कि उन में से सबसे बड़ा कौन है। यीशु ने उन से कहा कि वास्तव में सबसे बड़ा वह है, जो स्वयं को सबसे छोटा समझता हो या अपने को दास समझता हो। हमारे प्रभु ने अपना बहुत अधिक समय अपने चेलों को यह समझाने में व्यतीत किया कि परमेश्वर के राज्य का जीवन इस सांसारिक जीवन का प्रतिकूल है।

यीशु ने उन्हें सिखाया "पर बहुत से जो पहले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, वे पहले होंगे" (मरकुस 10:31), "जो धन्य है उनके साथ आनन्द करो," (लूका 15:6,9), "अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करो।" (मत्ती 5:44) संसार कहेगा कि यह मूर्खता है—परन्तु यीशु कहता है यह ही सच्ची सामर्थ्य है।

सांसारिक स्पर्धा को अलग रखें

हम घमण्डी होकर न एक दूसरे को छेड़ें, और न एक दूसरे से डाह करें।
गलतियों 5:26

सांसारिक रीति के अनुसार हर एक से आगे रहने का स्थान ही सबसे अच्छा स्थान माना जाता है। लोकप्रिय सोच यही कहेगी कि हमें शिखर पर पहुँचने का प्रयत्न करना चाहिए चाहें इस मार्ग में हम दूसरों को चोट ही क्यों न पहुँचा रहे हों। परन्तु बाइबल हमें सिखाती है कि सच्ची शान्ति नाम की कोई चीज़ नही, जब तक कि हम दूसरों से स्पर्धा रखना न छोड़ दें।

"कौतुक खेलों" में भी प्रायः यह देखा गया है कि लोग स्पर्धा की भावना से ग्रस्त हो जाते हैं और अनियंत्रित हो कर एक दूसरे से झगड़ा और घृणा करने लगते हैं, जबकि यह खेल केवल विश्राम और विनोद के लिए ही होते हैं। वास्तव में लोग हारने के लिए नहीं खेलते, हर एक व्यक्ति अपनी पूरी शक्ति लगा कर खेलता है। परन्तु यदि कोई व्यक्ति किसी खेल का आनन्द तब तक नहीं लेता हो जब तक वह जीत न रहा हो तब निश्चित रूप से उसके पास एक समस्या है—एक गम्भीर समस्या, जो उसके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में और भी अन्य समस्याओं को जन्म दे रही है।

हमें किसी भी कार्य को अच्छी तरह करना चाहिए; और अपने व्यवसाय में अच्छा कार्य कर के आगे बढ़ने में कोई बुराई नहीं। परन्तु मैं आप को याद दिला कर आप को उत्साहित करना चाहती हूँ कि एक विश्वासी की पदोन्नति परमेश्वर की ओर से आती है मनुष्य की ओर से नहीं। मुझे और आप को आगे बढ़ने के लिए सांसारिक खेल खेलने की आवश्यकता नहीं। परमेश्वर हमें अपना और मनुष्य दोनों का अनुग्रह देगा। (नीतिवचन 3:3–4)

ईर्ष्या और डाह नरक के कष्ट हैं। जो भी व्यक्ति मुझ से अधिक अच्छी दशा में होता था, या उसके पास ऐसे कौशल होते थे जो मेरे पास नहीं थे उसे देखकर मैं भी ईर्ष्या और डाह से भर जाती थी, और मैंने अपने जीवन के अनेक वर्ष इसी में गंवा दिए। मैं अपनी सेवकाई में भी दूसरों के साथ स्पर्धा रखती थी परन्तु इसे मैं गोपनीय रखती थी। यह मेरे लिए महत्वपूर्ण था कि “मेरी” सेवकाई आकार में विशाल, अच्छी, अधिक लोगों द्वारा भरी हुई, समृद्धशाली हो। यदि दूसरे व्यक्ति की सेवकाई मेरी सेवकाई से आगे निकल जाती तो मैं उस व्यक्ति के लिए प्रसन्न तो होती थी क्योंकि मैं जानती थी कि यह परमेश्वर का कार्य और इच्छा है, परन्तु मेरी आत्मा इसको स्वीकार नहीं कर पाती थी।

मसीह में मैं कौन हूँ, जब मैं इस ज्ञान में बढ़ती गयी तब मैंने जाना कि सच्ची स्वतंत्रता इसी में है, जब मैं स्वयं की तुलना या अपने कार्य की तुलना दूसरों से न करूँ। जितना अधिक मैं परमेश्वर पर विश्वास करना सीखती गयी उतना ही अधिक मैं उन क्षेत्रों में स्वयं को स्वतंत्र महसूस करती गयी और इनका आनन्द उठाती गयी। मैंने सीखा कि मेरा स्वर्गीय पिता मुझ से प्रेम करता है और सदैव मेरा भला चाहता है।

मेरे और आपके लिए परमेश्वर जो करता है, वह हो सकता है किसी अन्य के लिए न करता हो, परन्तु हमें यह याद रखना चाहिए जो यीशु ने पतरस से कहा था, “दूसरे के साथ मैं कुछ भी करूँ तुझे उस से क्या, तू तो मेरे पीछे हो ले!”

एक बार मेरी एक मित्र को परमेश्वर की ओर से एक उपहार मिल गया, जिसे बहुत समय से मैं पाना चाहती थी। मैं उस मित्र को उतनी आत्मिक नहीं समझती थी जितनी मैं हूँ और इस कारण मैं ईर्ष्या और डाह से भर गयी थी, वह उत्साहित हो कर मेरे द्वार पर आयी और मुझे बताया कि परमेश्वर ने उसके लिए क्या किया है। उसके सामने तो मैंने खुश होने का बहाना किया, परन्तु मैं अपने हृदय में प्रसन्न नहीं थी।

जब वह चली गयी तब मेरा व्यवहार बदलने लगा और ऐसा हो गया जो मैंने कभी सोचा भी न था! परमेश्वर का उसे आशीष देना मेरे क्रोध का कारण था क्योंकि मैं सोचती थी कि वह इस के योग्य नहीं है। मैं घर में ही रही, उपवास रखा, प्रार्थना की जबकि वह अपनी सारी मित्रों के साथ खुशी मना रही थी। मैं "फरीसी" थी एक धार्मिक शिष्ट जन और यह मैं जानती भी न थी।

कभी कभी परमेश्वर ऐसी घटनाओं का प्रबंध कर देता है जिन का चुनाव हम नहीं करेंगे, क्योंकि वह जानता है कि हमें किस चीज़ की आवश्यकता है। मैं अपने बुरे व्यवहार को छोड़ना चाहती थी। परमेश्वर हमारी परिस्थितियों का इस प्रकार से प्रबंध करता है कि अन्त में हमें अपना सामना स्वयं करना पड़े नहीं तो हम स्वतंत्रता का अनुभव कभी नहीं कर सकते।

जब तक शत्रु हमारी आत्मा में छुप सकता है, वह अपना नियंत्रण हमारे ऊपर सदैव रखेगा। परन्तु यदि परमेश्वर उसका वास्तविक रूप दर्शा देता है, तब हम यदि स्वतंत्रता के मार्ग पर आना चाहते हैं तो हमें अपने आप को परमेश्वर के हाथों में रखना होगा और उसको अनुमति दे देनी होगी कि जो वह करना चाहता है तुरन्त करे।

परमेश्वर की मेरे जीवन के लिए यही योजना थी कि मैं इस सेवकाई में रहूँ और लाखों लोगों की सेवा टेलीविजन, रेडियो, टेप, सेमिनार और पुस्तकों द्वारा करूँ। परन्तु वह मुझे सम्पूर्णता प्रदान नहीं करेगा सिवाए इसके कि मैं अंश अंश करके उसमें बढ़ती जाऊँ।

नयी मानसिकता रखें!

हे प्रिय, मेरी यह प्रार्थना है; कि जैसे तू आत्मिक आत्मिक उन्नति कर रहा है, वैसे ही तू सब बातों में उन्नति करे, और भला चँगा रहे।

3 यूहन्ना 2

सावधानीपूर्वक इस पद पर ध्यान दें। *हम परमेश्वर से जितनी आशीष चाहते हैं उससे कहीं अधिक आशीष वह हमें देना चाहता है।* परन्तु वह हमसे प्रेम भी इतना अधिक करता है, कि वह हमें उससे अधिक आशीष नहीं देता है जितनी आशीषों को ग्रहण करने की हमारी क्षमता है।

ईर्ष्या, जलन, डाह और दूसरों के साथ अपनी तुलना करना हास्यास्पद है। यह सम्पूर्णतया शरीर का है, और आत्मिक चीज़ों से इसका कोई सम्बन्ध

नहीं। परन्तु जंगल में जीवन व्यतीत करने का यह बहुत से कारणों में से एक प्रमुख कारण है।

इस क्षेत्र में अपने विचारों पर ध्यान दें। जब गलत विचार आप के मन में आने लगते हैं तो आप स्वयं से थोड़ी बातचीत करें। स्वयं से कहें, दूसरों से ईर्ष्या रखने से मेरा क्या भला होगा? इससे मुझे आशीष तो मिलेगी नहीं। परमेश्वर की हम में से हर एक के लिए व्यक्तिगत योजना है और मुझे उस पर विश्वास है कि वह मेरे लिए उत्तम कार्य ही करता है। वह अन्य लोगों के साथ क्या करता है इस से मुझे कोई मतलब नहीं। "फिर सावधानी के साथ उन लोगों के लिए उद्देश्यपूर्ण प्रार्थना करें कि उन्हें और अधिक आशीष मिले।"

अपनी भावनाओं के प्रति परमेश्वर के साथ ईमानदार रहें, डरें नहीं। वह जानता है कि आपकी भावनाएँ क्या हैं, अतः आप इनके बारे में उससे बात करें।

मैंने परमेश्वर से इस प्रकार कहा था, "प्रभु, मैं____________________के लिए प्रार्थना करती हूँ कि उसे और अधिक आशीष मिले। उसे समृद्धि दे, हर क्षेत्र में आशीष दे। प्रभु, मैं विश्वास के साथ यह प्रार्थना करती हूँ। अपनी आत्मा में मैं उससे ईर्ष्या करती हूँ और उससे अपने को कम पाती हूँ, परन्तु मैं तेरी इच्छा चाहती हूँ चाहें मुझे भला लगे या बुरा।"

अभी हाल ही मैं मैंने किसी को यह कहते सुना था चाहें आप कितना ही अच्छा कार्य करें कोई न कोई अवश्य होगा जो आप से भी अच्छा कार्य करता हो। इस कथन से मुझे एक आघात लगा, क्योंकि मैं जानती थी कि यह सत्य है। और यदि यह सत्य है तो दूसरों से आगे निकलने का संघर्ष जो हम अपने सम्पूर्ण जीवन में करते हैं उससे क्या लाभ? जैसे ही हम नम्बर वन बन जाते हैं, कोई हम से स्पर्धा रख रहा होगा और वह व्यक्ति हम से अच्छा कार्य करके दिखा देता है।

खेल के विषय में सोचें; एक खिलाड़ी जो रिकार्ड बनाता है उसे दूसरा खिलाड़ी आ कर तोड़ देता है। मनोरंजन के क्षेत्र में क्या होता है। कोई कलाकार कुछ ही समय के लिए शिखर पर रहता है और फिर कोई नया कलाकार आ कर उसका स्थान ले लेता है। ऐसा सोचना कि हम सदैव हर एक से आगे रहें और वहीं बने रहे, कितना भयानक धोखा है।

बहुत समय पहले परमेश्वर ने मुझे यह बात याद रखने के लिए बतायी थी कि "टूटता हुआ तारा" शीघ्रता से ऊपर उठता है और सब का ध्यान अपनी

ओर आकर्षित कर लेता है परन्तु ऐसा क्षणिक होता है जितनी शीघ्रता से वह ऊपर उठता है उतनी ही शीघ्रता से नीचे गिरे जाता है। उसने मुझे बताया कि अच्छा होगा कि हम अधिक देर तक वहाँ रहें और अपनी पूरी योग्यता से वह कार्य करें जिसे उसने हमसे करने के लिए कहा है। उसने मुझे यह निश्चय दिया है कि वह मेरा आदर बनाए रखेगा। मैंने यह निर्णय लिया है कि जो भी वह मुझसे चाहता है और जैसा भी वह मुझे बनाना चाहता है वह मेरे लिए ठीक है। क्यों? क्योंकि वह जानता है कि मैं क्या क्या भली भांति सम्भाल सकती हूँ।

हो सकता है आपके मन में इस क्षेत्र में बहुत वर्षों से गढ़ बने हुए हों। हर बार जब आप किसी ऐसे व्यक्ति के सम्पर्क में आते हों, जो आप को अपने से आगे दिखाई देता हो, आप के अन्दर ईर्ष्या और डाह की भावना आ जाती है और आप उस व्यक्ति के साथ स्पर्धा रखने लगते हैं। यदि ऐसा है तो मैं आप को प्रेरित करती हूँ कि आप एक नयी मानसिकता रखें।

इस प्रकार का मन रखें कि दूसरे आप से आनन्द प्राप्त करें और परमेश्वर पर भरोसा रखें। इसमें थोड़ा समय लगेगा, परन्तु जब वह पुराना गढ़ टूट जाता है और परमेश्वर का वचन उसका स्थान ले लेता है तब आप जंगल से निकल कर प्रतिज्ञा वाले देश में पहुँच जाते हैं।

अध्याय

25

"मैं इसे अपने ढंग से करूँगा या बिलकुल नहीं करूँगा।"

जंगल की मानसिकता # 10

“मैं इसे अपने ढंग से करूँगा या बिलकुल नहीं करूँगा।”

जंगल की मानसिकता # 10

अध्याय 25

जिससे वे परमेश्वर का भरोसा रखें और परमेश्वर के बड़े कामों को भूल न जाएँ, परन्तु उसकी आज्ञाओं का पालन करते रहें;

और अपने पितरों के समान न हों, क्योंकि उस पीढ़ी के लोग तो हठीले और झगड़ालू थे और उन्होंने अपना मन स्थिर न किया था, और न उनकी आत्मा परमेश्वर की ओर सच्ची रही।

भजन संहिता 78:7–8

इस्त्राएली भी जब जंगल में थे तब वे भी हठीले और झगड़ालू स्वभाव के थे। और इसी कारण वे वहाँ मर गए। परमेश्वर उनसे जो करने के लिए कहता था वे वह नहीं करते थे! जब वे किसी समस्या में फंस जाते थे तब वे चिल्लाकर परमेश्वर से कहते थे कि उन्हें इस समस्या से बाहर निकाले। वे तब तक उसके निर्देशों का पालन करते थे जब तक परिस्थितियाँ अच्छी नहीं हो जाती थीं। और फिर वे तुरन्त विद्रोही बन जाते थे।

यह क्रम बार बार चलता रहता था और इसका विवरण हम अनेक बार पुराने नियम में पाते हैं कि इसका विश्वास नहीं होता। हम भी यदि बुद्धि के साथ नहीं चल रहे हैं तो हम भी अपने जीवन में वही कार्य कर रहे हैं।

मैं जानती हूँ कि हम में से कुछ लोग स्वभाव ही से दूसरों से अधिक हठीले और विद्रोही होते हैं। और फिर हमें अपनी जड़ों पर ध्यान देना होगा और इस बात को सोचना होगा कि जीवन का आरम्भ हमने किस प्रकार किया था क्योंकि यहीं हम पर प्रभाव डालता है।

मैंने दृढ़ व्यक्तित्व ले कर जन्म लिया था और हर एक कार्य को *अपने ढंग से ही करती थी* परन्तु कुछ वर्षों जो मेरे साथ दुर्व्यवहार किया गया और मुझ पर कठोर नियंत्रण रखा गया इससे मेरा व्यक्तित्व और भी दृढ़ हो गया और मेरे अन्दर ऐसी मानसिकता का निर्माण हो गया कि मुझे लगने लगा कि कोई भी मुझे यह नहीं बताएगा कि मुझे क्या करना है।

इससे पहले कि, परमेश्वर अपने कार्य के लिए मुझे इस्तेमाल करे उसे मेरे इस बुरे स्वभाव का कुछ प्रबंध करना था।

परमेश्वर चाहता है कि हम अपने ढंग से कार्य करना छोड़ें और लचीला बन कर अपने आप को उसके हाथों में सौंप दें। जब तक हम हठीले और विद्रोही रहेंगे वह हमें इस्तेमाल नहीं कर सकता।

"हठीले" का अर्थ मैं समझती हूँ: किसी के साथ कार्य करने में कठिनाई का सामना करना, और विद्रोही का अर्थ: नियत्रंण का विरोध करना, नियम का विरोध करना, अनुशासनहीनता। मेरे अन्दर यह सारी बातें थीं।

आरम्भिक जीवन में मेरे साथ जो दुर्व्यवहार हुआ था उससे मेरा स्वभाव अधिकार के प्रति असंतुलित हो गया था। परन्तु जैसा मैंने पहले भी कहा था कि मुझे अपने इस विद्रोही स्वभाव का बहाना अपना भूतकाल नहीं बना देना है। जयवन्त जीवन चाहता है कि परमेश्वर की आज्ञा का हम तुरन्त पालन करें। अपनी इच्छा को अलग रख दें और उसकी इच्छा पूरी करें। इस क्षेत्र में उन्नति करना अति आवश्यक है।

ऊँचे स्थान पर पहुँच कर यह सोचना काफी नहीं है, "मुझे जहाँ जाना था वहाँ मैं पहुँच गया हूँ।" हमें हर बात में आज्ञाकारी बनना चाहिए, अपने जीवन में प्रभु के लिए कोई भी द्वार बन्द नहीं रखना चाहिए। हम सब के जीवन में कुछ ऐसे क्षेत्र अवश्य होते हैं जिन्हें हम छोड़ना नहीं चाहते, परन्तु मैं आपको यह याद दिला कर उत्साहित करना चाहती हूँ कि थोड़ा सा खमीर पूरे गूंधे हुए आटे को खमीर कर देता है। (1 कुरिन्थियों 5:6)

परमेश्वर आज्ञाकारिता चाहता है, बलिदान नहीं

शमूएल ने कहा (राजा शाऊल से), क्या यहोवा होमबलियों और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है, जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है? सुन, मानना तो बलि चढ़ाने से, और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है।

देख, बलवा करना और भावी कहनेवालों से पूछना एक ही समान पाप है, और हठ करना मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है। तू

ने जो यहोवा की बात को तुच्छ जाना, इसलिये उसने तुझे राजा होने के लिये तुच्छ जाना है।

1 शमूएल 15:22–23

शाऊल के जीवन का परीक्षण करने से हमें स्पष्टरूप से पता चल जाता है कि उसे राजा बनने का एक अवसर दिया गया था। परन्तु वह अपने हठीले, और विद्रोही स्वभाव के कारण अधिक दिनों तक राजा न रह सका। वह अपने ढंग से हर एक बात को सोचा करता था।

एक बार जब भविष्यद्वक्ता शमूएल शाऊल को समझा रहा था क्योंकि शाऊल निर्देशानुसार कार्य नहीं कर रहा था, तो शाऊल का उत्तर था, "मैंने सोचा।" और फिर उसने अपनी भावना बतायी कि किस प्रकार वह सोचता है कि कार्य किस प्रकार होना चाहिए। (1 शमूएल 10:6–8; 13:8–14) शमूएल ने राजा शाऊल को उत्तर दिया कि परमेश्वर आज्ञाकारिता चाहता है न कि बलिदान।

परमेश्वर जो हम से कहता है प्रायः हम उसे नहीं करना चाहते, और फिर हम आज्ञा न मानने के बदले कुछ अन्य कार्य करने का प्रयत्न करने लगते हैं।

कितनी ऐसी परमेश्वर की सन्तान हैं जो "राजाओं की भाँति जीवन" जीने में असफल हो जाते हैं (रोमियों 5:17, प्रकाशितवाक्य 1:6) क्योंकि वे हठीले और झगड़ालू होते हैं।

एम्पलिफाइड बाइबल में सभोपदेशक की पुस्तक की प्रस्तावना में लिखा है, "इस पुस्तक का उद्देश्य जीवन का अनुसंधान करना है और अन्त में विश्लेषण के बाद यह सिखाना है कि परमेश्वर के आदर और भक्ति के बिना यह जीवन निरर्थक है।"

हमें यह समझ लेना चाहिए कि आज्ञाकारिता के बिना उचित आदर और भक्ति नहीं होती है। बहुत से बच्चे जो आज विद्रोही स्वभाव दिखाते हैं उसका कारण है कि उनके हृदय में अपने माता–पिता के प्रति उचित सम्मान, आदर और भक्ति नहीं होती। इसके दोषी उनके माता पिता ही हैं क्योंकि अपने बच्चों के सामने उन्होंने आदर्शपूर्ण जीवन नहीं बिताया है जिससे कि बच्चों के अन्दर उनके प्रति आदर और भक्ति नहीं उत्पन्न हो सकी।

बहुत से विद्वानों का यह मानना है कि सभोपदेशक की पुस्तक को लिखने वाला राजा सुलैमान था जिसे परमेश्वर ने सब मनुष्यों से अधिक बुद्धि दी थी।

यदि सुलैमान इतना बुद्धिमान था तो फिर उसने अपने जीवन में इतनी अधिक दुःखपूर्ण त्रुटियाँ क्यों कीं। उत्तर बहुत सरल हैः यह सम्भव है कि हमारे पास जो है उसका उपयोग हम न करें। हमारे पास मसीह का मन है परन्तु क्या हम सदैव उसका उपयोग करते हैं? परमेश्वर की ओर से यीशु को हमारे लिए बुद्धि बनाया गया है, परन्तु क्या हम सदैव बुद्धि का उपयोग करते हैं?

सुलैमान हर कार्य को अपने ही ढंग से करना चाहता था। उसने अपना सारा जीवन कभी इस कार्य को करने में तो कभी उस कार्य को करने में ही बिता दिया। उसके पास हर एक चीज़ थी जिसे खरीदा जा सकता हो—अच्छे से अच्छा सांसारिक वैभव और आनन्द—और फिर भी पुस्तक के अन्त में उसने अपना यह निर्णय दियाः

सब कुछ सुना गया; अन्त की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है।

सभोपदेशक 12:13

इस पद से जो मैं समझी हूँ उसे मैं अपने शब्दों में व्यक्त कर रही हूँः

मनुष्य की सृष्टि का उद्देश्य यह है कि उसकी आज्ञा मानने के द्वारा उसकी भक्ति और सम्मान करे। ईश्वरीय स्वभाव की जड़ आज्ञाकारिता में होनी चाहिए—सारी खुशियों की नींव यही है। परमेश्वर की आज्ञा मानने के बिना कोई भी मनुष्य खुश नहीं रह सकता। हमारे जीवन की कोई भी चीज़ जो अव्यवस्थित हो, आज्ञाकारिता के द्वारा व्यवस्थित हो जाती है। आज्ञा मानना ही मनुष्य का कर्तव्य है।

मेरे लिए यह एक अद्‌भुत पद है, और मैं आपको उत्साहित करती हूँ कि आप इसे पढ़ते रहिए और इस पर मनन करते रहिए।

आज्ञा मानना और आज्ञा न मानना: दोनों के परिणाम हैं

क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे।

रोमियों 5:19

हमारा आज्ञा मानना या न मानने से न केवल हम ही प्रभावित होते हैं परन्तु बहुत से दूसरे लोग भी उससे प्रभावित होते हैं। जरा इसे सोचिए: यदि इस्त्राएली परमेश्वर की आज्ञा मान लेते तो उनके जीवन कितने महत्वपूर्ण होते। उनमें से बहुत से लोग और उनके बच्चे जंगल में ही मर गए क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं को नहीं माना। उनके निर्णय का प्रभाव उनके बच्चों पर पड़ा और यही हमारे साथ भी है।

कुछ दिनों पहले मेरे सबसे बड़े बेटे ने कहा, "मम्मी, मैं आपको कुछ बताना चाहता हूँ, हो सकता है मुझे रोना भी आ जाए, परन्तु आप मेरी बात सुनिए।" फिर उसने कहा, "मैं आपके और डैडी के विषय में सोच रहा हूँ और उन वर्षों के बारे में जो आप लोगों ने इस सेवकाई के कार्य में व्यतीत किए हैं, और हर समय आप लोग परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं और कभी कभी यह आप लोगों के लिए सरल नहीं होता। मैं यह महसूस करता हूँ कि आप दोनों ऐसी चीज़ों से गुज़रे हैं जिन्हें अन्य कोई नहीं जानता और परमेश्वर ने इस सुबह मुझे इस बात से अवगत कराया है कि आप लोगों की आज्ञाकारिता के कारण मुझे बहुत लाभ पहुँचा है और मैं इसके लिए धन्यवादित हूँ।"

उसने जो कुछ भी कहा वह मेरे लिए बहुत अर्थ रखता था, और इस से मुझे रोमियों 5:19 याद आ गया।

परमेश्वर की आज्ञा मानने के आप के निर्णय से दूसरे लोगों पर उसका प्रभाव पड़ता है। जब आप परमेश्वर की आज्ञा न मानने का निर्णय करते हैं तो इस से भी अन्य लोगों पर इसका प्रभाव पड़ता है। आप परमेश्वर की आज्ञा न मान कर जंगल में ही रहना चुन लेते हैं,परन्तु कृपया कर के मन में यह बैठा लें कि यदि आप के पास बच्चे हैं या भविष्य में होंगे, आपका यह निर्णय आप के साथ उन्हें भी जंगल में ही रखेगा। हो सकता है बड़े हो कर वह उस जंगल से निकलने में सफल हो जाएँ परन्तु मैं आपको निश्चय दिलाती हूँ कि आपके आज्ञा न मानने का एक बड़ा मूल्य उन्हें चुकाना होगा।

आपका जीवन एक बेहतर दशा में अब हो सकता है यदि आपके भूतकाल में किसी ने परमेश्वर की आज्ञा मानी हो।

आज्ञाकारिता का एक दूरगामी परिणाम है; यह नरक के द्वारों को बन्द कर स्वर्ग की खिड़कियों को खोल देता है।

मैं आज्ञाकारिता विषय पर पूरी एक पुस्तक लिख सकती हूँ परन्तु अभी मैं केवल इतना ही कह रही हूँ कि आज्ञा न मानने का जीवन गलत सोच का ही फल है।

हर एक विचार को मसीह का केदी बनाएँ

क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं।

इसलिये हम कल्पनाओं का, और हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।

2 कुरिन्थियों 10:4-5

हमारे विचार ही हमें समस्याओं में बहुधा डाल देते हैं। यशायाह 55:8 में परमेश्वर कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है... आप और मैं चाहें जो भी सोचें, परमेश्वर ने अपने विचारों को हमारे लिए अपनी पुस्तक में लिख दिया है जिसको हम बाइबल कहते हैं। परमेश्वर के वचन के प्रकाश में हमें अपने विचारों का परीक्षण करना चाहिए अपने विचारों को उसके विचारों के वश में कर देना चाहिए क्योंकि उसके विचार श्रेष्ठ हैं।

यही बात 2 कुरिन्थियों 10:4-5 में बताई गयी है। आपके मन में क्या है सावधानी से इस पर विचार करें। यदि यह परमेश्वर के विचारों (बाइबल) के अनुकूल नहीं तब आप अपने विचारों को त्याग दें और उसके विचारों को अपना लें।

लोग जो अपने मन के झूठे अभिमान में रहते हैं न केवल वे अपने को नष्ट करते हैं परन्तु जो लोग उनके चारों ओर रहते हैं उनका भी विनाश करते हैं।

मन एक युद्ध भूमि है!

शैतान ने जो युद्ध छेड़ रखा है उसे आपको अपने मन की युद्ध भूमि में ही लड़ कर हराना है। मैं हृदय से प्रार्थना करती हूँ कि यह पुस्तक आपको अपनी कल्पनाओं को समाप्त करने में, हर एक ऊँची चीज़ जो अपने को परमेश्वर के ज्ञान से श्रेष्ठ समझती है उसको हटाने में, और हर एक विचार को मसीह का कैदी बना कर उसका आज्ञाकारी बना देने में, आपकी सहायता करेगी।

Notes

Chapter 7

1. W. E. Vine, Merrill Unger, and William White Jr., eds., *Vine's Expoditory Dictionary of Biblical Words* (Nashville: Thomas Nelson, 1985), 662.
2. James Strong, *Strong's New Exhaustive Concordance of the Bible* (Nashville: Thomas Nelson, 1984), "Greek Dictionary of the New Testament," 24.
3. *Webster's II New Riverside University Dictionary*, s.v. "meditate."
4. Vine, Unger, and White, *Vine's Expository Dictionary of Biblical Words,* 400.

Chapter 9

1. *Webster's II New Riverside University Dictionary,* s.v. "reason."
2. Ibid, s.v. "wonder."

Chapter 11

1. W. E. Vine, *Vine's Expository Dictionary of Old and New Testament Words* (Old Tappan, NJ: Fleming H. Revell, 1981), Vol. A. A-Dys, 335.
2. Ibid., Vol. 4: Set-Z, 165.

Chapter 12

1. *Webster's II New Riverside Dictionary,* s.v. "worry."
2. *Random House Dictionary,* s.v. "worry."

Chapter 13

1. Vine, *Vine's Expository Dictionary of Old and New Testament Words,* Vol. 2: E-Li, 281.
2. Ibid., 280.

Chapter 15

1. *Webster's II New Riverside University Dictionary,* s.v. "depress."
2. Ibid., s.v. "depressed."
3. Vine, *Vine's Expository Dictionary of Old and New Testament Words,* Vol. 2: E-li, 60.
4. Ibid., Vol. 3: Lo-Ser, 55.
5. Strong, *Strong's New Exhaustive Concordance of the Bible,* "Hebrew and Chaldee Dictionary," 32.

Chapter 23

1. *Webster's II New Riverside Dictionary,* s.v. "reproach."

Chapter 24

1. Vine, *Vine's Expository Dictionary of Old and New Testament Words,* Vol. 2: E-Li, 37.
2. *Webster's II New Riverside Univesity Dictionary,* s.v. "jealousy."

सन्दर्भ सूची

स्ट्रोंग, जेम्स, *न्यू स्ट्रोंग्स एक्सहोसिटिव कोनकोर्डेंस आफ द बाइबल*, नेशविलेः थॉमस नेल्सन प्रकाशन, 1984

वाइन, डब्लू.ई;उंगर, मेरिल; व्हाईट, विलियम जूनियर, एडिशन, *वाइन्स एक्सपोजिट्री डिक्शनेरी आफ बिबलिकल वर्डस*, नेशविलेः थॉमस नेल्सन, इंक, प्रकाशन 1985

वाइन, डब्लू.ई.*वाइन्स एक्सपोजिट्री डिक्शनेरी आफ ओल्ड एण्ड न्यू टेस्टामेन्ट वर्डस*। ओल्ड टप्पनः फ्लेमिंग एच. रेवेल कम्पनी, 1981

वेब्सटर्स II न्यू रिवरसाइड यूनिवर्सिटी डिक्शनेरी, बोस्टन : हाऊटन मिफ़लिन कम्पनी, 1984

लेखिका के विषय में

जॉयस मेयर 1976 से परमेश्वर का वचन सिखाती रहीं हैं और 1980 से पूर्णकालिक सेवा में हैं। पूर्व में सेंट लुईस, मिसौरी स्थित लाईफ क्रिश्चियन चर्च्र, मिसौरी में सहायक पास्टर रहते हुए आपने "लाईफ इन द वर्ड" नामक एक साप्ताहिक सभा विकसित, संयोजित किया है। पाँच से अधिक वर्षों के पश्चात् उन्हे अपनी स्वयं की सेवा स्थापित करने हेतु परमेश्वर ने एक निष्कर्य पर पहुँचाया और इसे "***लाईफ इन द वर्ड, इंक***" के नाम से जाना जाता है।

अब उनका ***लाईफ इन द वर्ड*** नामक रेडियो और टी वी कार्यक्रम संयुक्त राज्य और संसार भर में करोड़ों लोगों द्वारा देखा जाता है। जॉयस की शिक्षाओं के टेप अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सुने जाते हैं और वह ***लाईफ इन द वर्ड*** सम्मेलनों का आयोजन करते हुए बहुत सी यात्रायें करती हैं।

जॉयस और उनके पति, डेव, जो लाईफ इन द वर्ड में व्यवसायिक प्रशासक हैं, पैंतीस से अधिक वर्षों से विवाहित हैं। वे सेंट लुईस, मिसौरी में रहते हैं और चार बच्चों के माता पिता हैं। सभी चार बच्चे विवाहित हैं और अपने जीवनसाथियों सहित सेवकाई में जॉयस और डेव के साथ कार्य करते हैं।

यह विश्वास करते हुए कि अपने जीवन में परमेश्वर की बुलाहट विश्वासियों को वचन में स्थापित करने की है, जॉयस कहती हैं, "यीशु बन्दियों को छुड़ाने के लिये मरा, और अब भी बहुत से मसीही अपने प्रतिदिन के जीवन में बहुत कम या बिल्कुल भी विजय नहीं रखते हैं।" बहुत वर्षों पूर्व अपने आप को समान स्थिति में पाते हुए और परमेश्वर के वचन को लागू करने के द्वारा विजय में जीने की स्वतंत्रता पाते हुये जॉयस बन्दियों को छुड़ाने और राख को सुंदरता से उभरने के लिये सुसज्जित है। वह विश्वास करती है कि विजय में चलने वाला प्रत्येक व्यक्ति विजय की ओर बहुतों की अगुवाई करता है। उनका जीवन पारदर्शक है और उनकी शिक्षायें व्यवहारिक है और प्रतिदिन के जीवन में प्रयोग किया जा सकता हैं।

प्रभु के साथ एक व्यक्तिगत संबंध के लिए प्रार्थना

अगर आपने कभी यीशु मसीह जो शांति का राजकुमार है उसको कभी अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रुप में ग्रहण नही किया है तो मैं आपको निमंत्रित करती हूँ कि आप इस समय ऐसा करें। आप निम्नलिखित प्रार्थना को करें और अगर आप इस बात के प्रति वाकई ईमानदार हैं तो आप मसीह में एक नए जीवन को अनुभव करेंगे।

हे पिता,

आपने इस जगत से ऐसा प्रेम रखा कि आपने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनंत जीवन पाए।

आपका वचन कहता है कि हम विश्वास के द्वारा अनुग्रह से ही बचाए गए हैं और यह आपकी ओर से एक दान है। हम उद्धार को कमाने के लिए कुछ भी नही कर सकते हैं।

मै विश्वास करता हूँ और अपने मूँह से अंगीकार करता हूँ कि यीशु मसीह आपका पुत्र और जगत का उद्धारकर्त्ता है। मैं विश्वास करता हूँ कि क्रूस पर वह मेरे लिए मारा गया और मेरे सारे पापों को उठा कर उनकी कीमत को चुकाया। मुझे अपने हृदय में इस बात का विश्वास है कि आपने यीशु को मृतकों में से जिलाया है।

मैं आपसे अपने पापों की क्षमा माँगता हूँ। मैं अंगीकार करता हूँ कि यीशु मेरा प्रभु है। आपके वचनानुसार, मेरा उद्धार हो गया है और मैं अनन्त काल आपके साथ व्यतीत करुँगा। धन्यवाद पिता, मैं बहुत आभारी हूँ। यीशु के नाम से, आमीन।

इन पदों को देखो यूहन्ना 3:16; इफिसियों 2:8,9; रोमियों 10:9,10; 1 कुरिन्थियों 15:3,4; यूहन्ना 1:9; 4:14-16; 5:1,12,13

Other Books By Joyce Meyer
Books Available In English

A Celebration of Simplicity
Approval Addiction
Battlefield of the Mind - KIDS
Battlefield of the Mind - TEENS
Battlefield of The Mind - Devotional
Be Anxious for Nothing
Be Healed in Jesus Name
Beauty for Ashes
Do it Afraid
Don't Dread
Eat and Stay Thin
Enjoy where you are on the way…
Expect a move of God Suddenly
Eat the Cookie, Buy the Shoes
Filled with the Holy Spirit
Healing the Brokenhearted
Help Me! I'm Married
Help Me, I'm Afraid
How to Succeed at Being Your Self
I Dare you
If not for the Grace of God
In Pursuit of PEACE
Knowing God Intimately
Life in the Word - Devotional
Life in the Word - Journal
Life in the Word - Quotes
Look Great Feel Great
Managing Your Emotions
Me and My Big Mouth
Never Lose Heart
Nuggets of Life
PEACE
The Penny
Power of Simple Prayer
Prepare to Prosper
Power Thoughts
Reduce me to Love
Secrets to Exceptional Living
Seven Things That Steal Your Joy
Start Your New Life Today
Teenagers are People Too
Tell them I Love Them
The Confident Woman
The Every Day Life BIBLE
The Joy of Believing Prayer
The Secret to True Happiness
When God When
Why God Why
Woman to Woman

Books Available In Hindi

Approval Addiction
A Leader in the Making
Battle Field of the Mind - Devotional
Battlefield of the Mind
Beauty For Ashes
Reduce me to Love
Secrets To Exceptional Living
Knowing God Intimately
The Battle Belongs To The Lord
The Power of Simple Prayer
The Secret Power of Speaking God's Word
The Love Revolution
The Confident Woman
New Day New You
Never Give Up
Power Thoughts

To contact the author in the United States, please write:
Joyce Meyer Ministries
P.O. Box 655,
Fenton, Missouri 63026
or call: (636) 349-0303
or log on to: www.joycemeyer.org

To contact the author in India, please write:
Joyce Meyer Ministries
Nanakramguda,
Hyderabad - 500 008
or call: 2300 6777
or log on to: www.jmmindia.org